आधुनिक कविता: प्रगतिवाद तक

POST GRADUATE PROGRAMME
HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

Self Learning Material

M23HD04DC

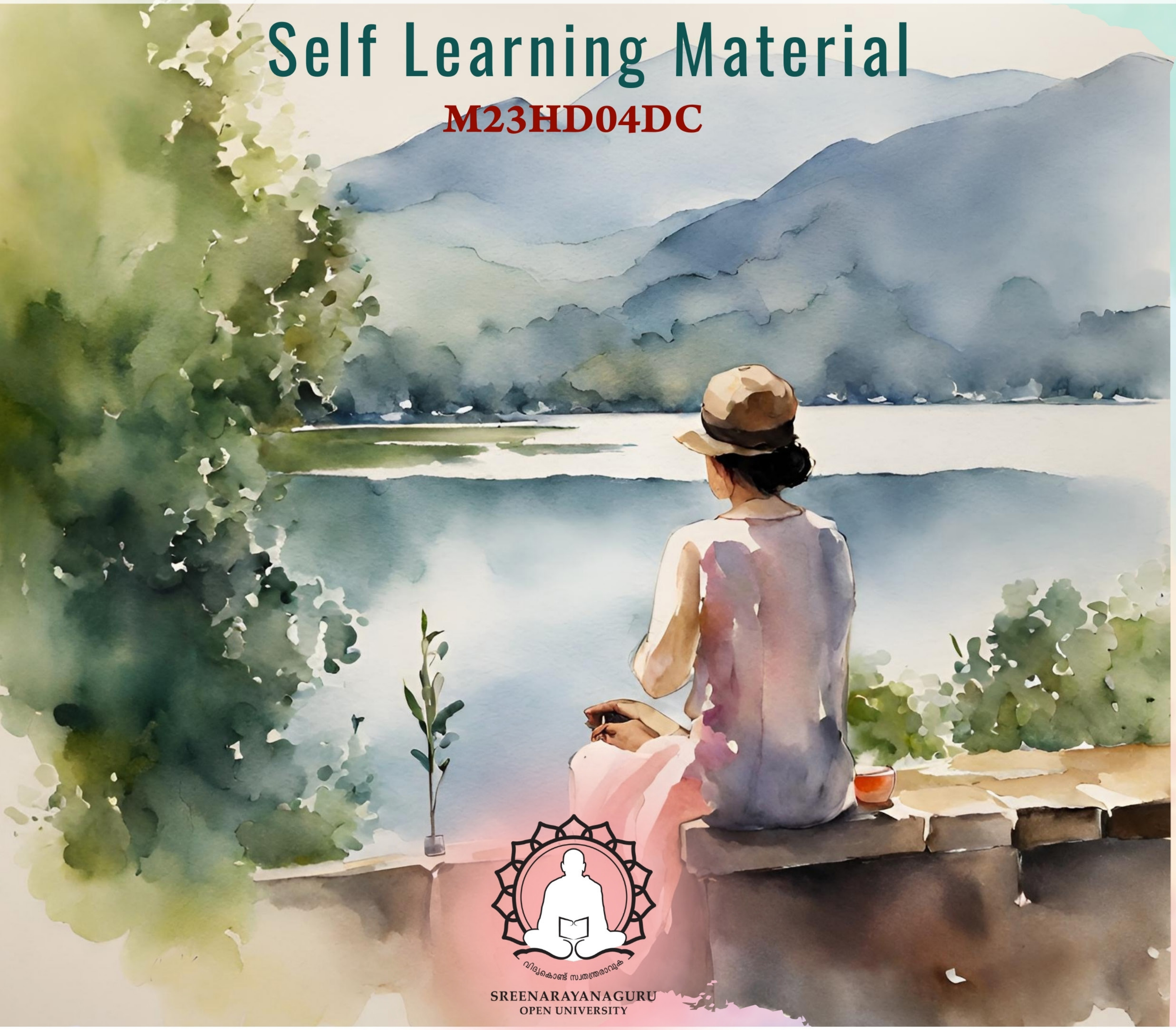

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY
The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

आधुनिक कविताः प्रगतिवाद तक

Course Code: M23HD04DC

Semester-I

Discipline Core Course
MA Hindi Language and Literature
Self Learning Material

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Documentation

M23HD04DC

आधुनिक कविताः प्रगतिवाद तक

Semester I

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

ISBN 978-81-966843-4-1

9 788196 684341

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Pramod Kovapurath
Dr. R. Sethunath
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. B. Ashok
Dr. Vijayakumar B.

Development of the content

Dr. Sandhya Menon, Dr. Anagha A.S., Dr. Veena J.

Review

Content : Dr. Reshma P.P.
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Dr. Reshma P.P.

Edit

Dr. Reshma P.P.

Scrutiny

Dr. Sophia Rajan, Dr. Karthika M.S., Dr. Indu G. Das, Dr. Sudha T., Krishnapreethi A.R.

Co-ordination

Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Production

December 2023

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2023

Message from Vice Chancellor

Dear,

I greet all of you with deep delight and great excitement. I welcome you to the Sreenarayanaguru Open University.

Sreenarayanaguru Open University was established in September 2020 as a state initiative for fostering higher education in open and distance mode. We shaped our dreams through a pathway defined by a dictum ‘access and quality define equity’. It provides all reasons to us for the celebration of quality in the process of education. I am overwhelmed to let you know that we have resolved not to become ourselves a reason or cause a reason for the dissemination of inferior education. It sets the pace as well as the destination. The name of the University centers around the aura of Sreenarayanaguru, the great renaissance thinker of modern India. His name is a reminder for us to ensure quality in the delivery of all academic endeavors.

Sreenarayanaguru Open University rests on the practical framework of the popularly known “blended format”. Learner on distance mode obviously has limitations in getting exposed to the full potential of classroom learning experience. Our pedagogical basket has three entities viz Self Learning Material, Classroom Counselling and Virtual modes. This combination is expected to provide high voltage in learning as well as teaching experiences. Care has been taken to ensure quality endeavours across all the entities.

The university is committed to provide you stimulating learning experience. The post graduate programme in Hindi has a unique blend of language and literature. The focus of the programme is on enhancing the capabilities of the learners to undergo a deeper comprehension of the sociology of the forms in literature although the required credits are in place to learn other aspects of Hindi literature. Care has been taken to expose the students to recent trends in Hindi literature. We assure you that the university student support services will closely stay with you for the redressal of your grievances during your studentship.

Feel free to write to us about anything that you feel relevant regarding the academic programme.

Wish you the best.

Regards,

Dr. P.M. Mubarak Pasha 01.12.2023

Contents

BLOCK-01 द्विवेदी युगीन काव्य **01**

इकाईः 1 आधुनिकता के उदय की पृष्ठभूमि 02

इकाईः 2 राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के प्रमुख कवि- माक्खनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरणगुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान 13

इकाईः 3 साकेत (नवम सर्ग) Detailed Study 27

इकाईः 4 साकेत की ऊर्मिला, ऊर्मिला का विरह-वर्णन, गुप्त जी की नारी भावना, साकेत का काव्य सौष्ठव 37

BLOCK-02 छायावाद और हिन्दी काव्य **51**

इकाईः 1 छायावाद अर्थ और परिभाषा, छायावाद की वैचारिक पृष्ठभूमि, छायावाद काव्य की प्रमुख विशेषताएँ व प्रवृत्तियाँ 52

इकाईः 2 जयशंकर प्रसाद का जीवन दर्शन, प्रसाद का सौदर्य बोध, प्रसाद का समरसता सिद्धांत 60

इकाईः 3 कामायनी (चिंता सर्ग) 68

इकाईः 4 कामायनी का महाकाव्यत्व, कामायनी में रूपक तत्व 93

BLOCK-03 छायावाद के प्रमुख कवि और काव्य **104**

इकाईः 1 छायावाद की शैलीगत और विचारगत प्रवृत्तियाँ 105

इकाईः 2 निराला-राम की शक्ति पूजा 110

इकाईः 3 सुमित्रानंदन पंत- प्रथम रश्मि, पंत का प्रकृति चित्रण, पंत की काव्य-भाषा, पंत के काव्य में कोमल कल्पना, पंत की काव्य यात्रा के विविध सोपान 153

इकाईः 4 महादेवी वर्मा- मैं नीर भरी दुःख की बदली Detailed Study 170

BLOCK-04 प्रगतिवादी काव्य **183**

इकाईः 1 प्रगतिवादी काव्य की सामाजिक दृष्टि 184

इकाईः 2 प्रगतिवाद और चेतना, प्रगतिवादी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ- मार्क्सवाद और रूस की क्रांति में विश्वास, पूँजीवादी व्यवस्था से घृणा और शोषितों के प्रति संवेदना 193

इकाईः 3 प्रमुख प्रगतिवादी कवि- नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, बालकृष्ण शर्मा नवीन 204

इकाईः 4 डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद, हालावाद की प्रेरक पृष्ठभूमि 218

Model Question Paper Sets **226**

द्विवेदी युगीन काव्य

BLOCK-01

Block Content

Unit 1: आधुनिकता के उदय की पृष्ठभूमि

Unit 2: राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के प्रमुख कवि- माक्खनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरणगुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान

Unit 3: साकेत (नवम सर्ग) Detailed Study

Unit 4: साकेत की ऊर्मिला, ऊर्मिला का विरह-वर्णन, गुप्त जी की नारी भावना, साकेत का काव्य सौष्ठव

इकाई : 1

आधुनिकता के उदय की पृष्ठभूमि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में द्विवेदी युग का महत्व को समझता है
- खड़ीबोली के परिशोधन और परिष्करण में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान को अवगत होता है
- द्विवेदी युग और भारतेंदु युग के बारे में समझता है
- एक युग विधायक के रूप में द्विवेदी जी के व्यक्तित्व से परिचित होता है
- द्विवेदी युगीन प्रवृत्तियों से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरंभ उस समय हुआ जबकि रीति कविता उपवन उजड़ चुका था। यह सब कुछ बदलते हुए युग का नतीजा था। सन् 1850 में अंग्रेजी शासन पूर्णतः प्रतिष्ठित हो चुका था, इसी कालखंड में आधुनिक युग का सूत्रपात हुआ। इस नवीन विदेशी शासन के संपर्क से भारत में एक नवीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं साहित्यक चेतना का स्वस्थ आविर्भाव हुआ। पूर्व और पश्चिम के सांस्कृतिक संपर्क से जो नई चेतना पैदा हुई, उससे जिस विचार स्वातंर्त्र्य का जन्म हुआ, उसके प्रभाव में हमारे साहित्य ने रूढ़ि के बंधनों को तोड़ विकास की एक नई दिशा में प्रवेश किया। नतीजा यह हुआ कि हमारे साहित्य में भाव, कथ्य, शैली, शिल्प और काव्य रूप सभी क्षेत्रों में परिवर्तन नज़र आया। आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रत्येक युग में यह प्रवृतियाँ थोड़ी बहुत अंतर से पुष्पित, पल्लवित और विकसित होती रहीं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आधुनिक हिन्दी साहित्य, पुनर्जागरण, नवजागरण, खड़ीबोली, पत्रकारिता, राष्ट्रीयता का भाव, सुधारवादी मनोवृत्ति सामाजिक सांस्कृतिक चेतना, कुप्रथाओं का खंडन, साहित्य में जनजीवन

Discussion / चर्चा

1.1.1 हिन्दी पुनर्जागरण और भारतेंदु

भारतीय इतिहास में सन् 1857 की राज्य क्रांति को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नाम से जाना जाता है। इस राज्य क्रांति के पहले ही सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया चल रही थी। प्रेस

की स्थापना और पत्रकारिता के उद्भव से विचार स्वतंत्र को प्रोत्साहन मिल रहा था। शिक्षित व्यक्ति जागरूक हो रहे थे। ब्रह्म समाज और फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हो चुकी थी, देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी थी। इसी समय हिन्दी जगत में भारतेंदु जी एक नक्षत्र के समान उदित हुए। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चंद्र के उदय से एक नवीन क्रांति का श्रीगणेश हुआ। हिन्दी गद्य का पहला युग (1868 -1900) भारतेंदु के नाम से ही जाना जाता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में युग निर्माता भारतेंदु हरिश्चंद्र उन महान लेखकों में से एक हैं जो जिस समय इतिहास में होते हैं उसी समय इतिहास भी बदल रहे होते हैं। भारतेंदु एक जागृत एवं कालदृष्टा साहित्यकार थे। भारतेंदु ने हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी जगत में पुनर्जागरण के आंदोलन को एक नई दिशा दी। 'अगर तोप सामने हो तो अखबार निकालो' इस उक्ति को भारतेंदु ने विदेशी शासन के ख़िलाफ़ समाज में जन-जागरण लाने के लिए अपनाया था। एक पत्रकार के रूप में उनका मुख्य उद्देश्य यही था, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति एवं स्वाभिमान को जगाना। इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण से सामाजिक कुरीतियों के प्रति सुधार की भावना विकसित हुई। भारतीय नवजागरण की चेतना को हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम समग्र रूप से प्रतिबिंबित करने का श्रेय भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनके मंडल के लेखकों को जाता है। भारतेंदु मंडल के लेखकों में पंडित बालकृष्ण भट्ट, पंडित प्रताप नारायण मिश्र, लाला श्रीनिवास दास, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, बाबू बालमुकुंद गुप्त, किशोरी लाल गोस्वामी के नाम उल्लेखनीय हैं। उनकी लेखनी में साहित्य समाज और देश को लेकर काफी गहरी चिंता दिखलाई पड़ती है। उनकी कविताएँ राष्ट्रीयता के भाव की प्रेरणा भूमि है। इनमें सुधारवादी मनोवृति, स्वदेशी भावना और विदेशी शासन के प्रति हास्यपूर्ण व्यंग्य व्यक्त हुआ है। नाटक, निबंध और पत्रकारिता के उन्नयन में भारतेंदु की विशेष रुचि रही नाटकों में अभिनय भी किया तथा अनेक नाट्य मंडलियों की स्थापना कर उन्हें संरक्षण भी दिया। पाश्चात्य शैली के दुखांत नाटकों की रचना हिन्दी में सर्वप्रथम भारतेंदु ने ही की थी। भारतेंदु के नाटकों में नवजागरण के प्रयासों का जीवंत रूप देखने को मिलता है। वस्तुतः नवजागरण की चेतना की प्रभावी अभिव्यक्ति उनके नाटकों में मिलती है। भारतेंदु ने अपने नाटकों से जनता का मनोरंजन भी किया और अंग्रेजों के शोषण और दमनकारी नीति तथा अन्याय पूर्ण व्यवस्था का विरोध भी किया। राष्ट्रीय भावना और नवजागरण की चेतना के सशक्त संवाद के रूप में भारतेंदु के 'अंधेर नगरी' जैसे नाटक आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

- हिन्दी साहित्य क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चंद्र के उदय से एक नवीन क्रांति का श्रीगणेश हुआ

भारतेंदु ने 'कवि वचन सुधा', 'हरिश्चंद्र मैगजीन', तथा 'बालबोधिनी' पत्र पत्रिकाएँ निकालकर हिन्दी पत्रकारिता को लोकमानस तक पहुँचाया। वे अभिव्यक्ति के तमाम ख़तरों का सामना करते हुए भी मृत्युपर्यंत राष्ट्रीय चेतना का प्रचार-प्रसार करते रहे। भारतेंदु ने 'निज भाषा' कहकर केवल हिन्दी का ही समर्थन नहीं किया, बल्कि अंग्रेजी के विरोध में सभी भारतीय भाषाओं को आगे आने का आह्वान किया। उनका उर्दू से कभी कोई विरोध नहीं रहा, उन्होंने 'रसा' उपनाम से उर्दू में गजलें लिखीं। उनकी गजलों का संग्रह 'गुलजारपुर बहार' के नाम से प्रकाशित हुआ था। भारतेंदु ने खड़ीबोली हिन्दी को गद्य का सशक्त माध्यम बनाया। उन्होंने निबंध और नाटक विधा में भी अपना मौलिक योगदान दिया, उनके निबंधों का मुख्य उद्देश्य जनता में नई चेतना को जागृत करना था।

- भारतेंदु ने 'निज भाषा' कहकर केवल हिन्दी का ही समर्थन नहीं किया, बल्कि अंग्रेजी के विरोध में सभी भारतीय भाषाओं को आगे आने का आह्वान किया

उनके साहित्य में जन-जीवन का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखलाई पड़ता है। महामारी, अकाल, टैक्स, आर्थिक शोषण, देश प्रेम, सामाजिक दुरवस्था और कुप्रथाओं का खंडन, विधवाओं की

> ▶ भारतेंदु हरिश्चंद्र हिन्दी साहित्य में नवजागरण की चेतना के अग्रदूत बन गये

दयनीय दशा, बाल विवाह विरोध, धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों का खंडन, स्त्री शिक्षा, स्वतंत्रता आदि सामाजिक विषय उनकी रचनाओं में शामिल हैं। इस प्रकार भारतेंदु हरिश्चंद्र अपने छोटे से जीवन काल में ही हिन्दी साहित्य में नवजागरण की चेतना के अग्रदूत बन गये। उन्होंने अपनी प्रखर मेधा से भाषा, साहित्य, समाज और धर्म सभी क्षेत्रों में नई चेतना को जागृत किया।

1.1.2 महावीर प्रसाद द्विवेदी और नवजागरण

भारतेंदु हरिश्चंद्र के पश्चात हिन्दी गद्य के क्षेत्र में एक महान व्यक्तित्व आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का आगमन हुआ। हिन्दी गद्य के दूसरे युग (1900 - 1920) का नामकरण उन्हीं के नाम पर हुआ। हिन्दी के सर्वांगीण विकास के लिए नवजागरण काल में जो बीजारोपण भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया था उसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से विशाल वट वृक्ष के रूप में साकार किया। सरस्वती के संपादन द्वारा उन्होंने साहित्य के लिए नए मूल्यों और आदर्शों की प्रतिष्ठा के साथ ही ज्ञान के विविध क्षेत्रों इतिहास, अर्थशास्त्र, विज्ञान, पुरातत्व, चिकित्सा, राजनीति, जीवनी आदि से सामग्री लेकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। सन् 1903 से 1920 तक द्विवेदी जी 'सरस्वती' मासिक पत्रिका के संपादक रहे। 17 वर्षों के संपादन काल में सरस्वती के माध्यम से संपादन कला के नए आयामों की प्रतिष्ठा की। संपादक के रूप में हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के लिए उनकी साधना ऐतिहासिक महत्व रखती है। कहानी, जीवनी, निबंध, सूचनापरक लेख, वैज्ञानिक और पुरातात्विक लेख नाटक, गीतिनाट्य, व्यंग्य आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं के द्वारा उन्होंने हिन्दी गद्य को समृद्ध किया। द्विवेदी जी ने सरस्वती को साहित्य और ज्ञान की पत्रिका के रूप में प्रतिष्ठित किया साथ ही उसे नवजागरण की चेतना का संवाहक भी बनाया। एक संपादक के रूप में अपने समकालीन लेखकों कवियों को प्रोत्साहित करने, उन्हें मार्गदर्शन देने से कवियों और लेखकों की एक ऐसी नई पीढ़ी सामने आई जो द्विवेदी जी के व्यक्तित्व और साहित्यिक मूल्यों के पथ पर अग्रसर रही।

> ▶ सरस्वती के संपादन द्वारा उन्होंने साहित्य के लिए नए मूल्यों और आदर्शों की प्रतिष्ठा की

भाषा व साहित्य के प्रति द्विवेदी जी की दृष्टि आलोचनात्मक रही है। आप की आलोचनात्मक दृष्टि आधुनिकता से पूर्ण और रूढ़िवादिता की विरोधी रही है। द्विवेदी जी की प्रेरणा से और प्रयासों से काव्य रचना में ब्रजभाषा का एकछत्र अधिकार समाप्त हो गया और खड़ी बोली हिन्दी कविता की मुख्य भाषा बनने में सफल हो सकी। कविता में श्रृंगार रस के प्रति कवियों के अतिरिक्त मोह को वे साहित्य को भीतर से खोखला करना मानते थे। इसी प्रकार अलंकार, छंद के संदर्भ में भी द्विवेदी जी की मान्यताएँ रीतिकालीन काव्य रूढ़ियों के विरुद्ध और सर्वथा नवीन थी। भारतेंदु जी की इस स्थापना के बावजूद कि 'सब विषय काव्योपयुक्त हो सकते हैं', काव्य के विषय सीमित ही रहे। द्विवेदी जी ने 'कवि कर्तव्य' लेख में भारतेंदु की इस मान्यता को दृढ़ता से स्थापित किया। उनका मानना था कि चींटी से लेकर हाथीपर्यंत पशु, भिक्षुक से लेकर राजा पर्यन्त मनुष्य, बिंदु से लेकर समुद्रपर्यन्त जल, अनंत आकाश, अनंत पृथ्वी, अनंत पर्वत- सभी पर कविता हो सकती है 'महावीर प्रसाद द्विवेदी ने काव्य-विषय की विविधता के साथ शिक्षाप्रद, उद्देश्य पूर्ण काव्य रचना पर भी बल दिया। आचार्य द्विवेदी ने प्रबंध काव्य रचना पर जोर दिया। छंद विधान में आचार्य द्विवेदी की मौलिक देन है अतुकांत छंद को प्रोत्साहन। उन्होंने गद्य साहित्य और काव्य रचना में एक ही भाषा की प्रतिष्ठा पर बल दिया। भारतीय भाषाओं का समर्थन किया। लिखित भाषा में व्याकरण के

> ▶ द्विवेदी जी की प्रेरणा से और प्रयासों से काव्य रचना में ब्राजभाषा का एकछत्र अधिकार समाप्त हो गया और खड़ी बोली हिन्दी कविता की मुख्य भाषा बनने में सफल हो सकी

अनुशासन पर ध्यान दिया, हिन्दी भाषा को स्थिर रूप प्रदान करने का बेजोड़ प्रयास किया। द्विवेदी जी का महत्व विशेषकर इस बात में है कि उन्होंने हिन्दी भाषा को परिमार्जित और परिष्कृत करने का सफल प्रयास किया।

उन्होंने हिन्दी गद्य की त्रुटियों की ओर साहित्यकारों का ध्यान आकर्षित किया। अपरिपक्व लेखकों की भाषा शैली की आलोचना की और उन्हें सुझाव दिए तथा नए लेखकों को प्रोत्साहित भी किया। इस प्रकार द्विवेदी जी की प्रेरणा और प्रोत्साहन से उच्च कोटि के साहित्य का सृजन हुआ। स्वयं द्विवेदी जी ने कला इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, पुरातत्व और प्राचीन साहित्य पर श्रेष्ठ रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इस प्रकार 'युग विधायक' महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास को नई दिशा प्रदान की। निश्चय ही द्विवेदी जी साहित्य के परिष्कार तथा प्रसार के उद्देश्य को लेकर ही अवतरित हुए थे। निबंधकार, समीक्षक और श्रेष्ठ आलोचक के रूप में उन्होंने हिन्दी साहित्य की महान सेवा की। वे सच्चे अर्थों में 'आचार्य' पद के योग्य थे।

> ▶ निबंधकार, समीक्षक और श्रेष्ठ आलोचक के रूप में द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्य की महान सेवा की

1.1.3 काव्य भाषा के रूप में खडीबोली की प्रतिष्ठा

खड़ी बोली की पदावली के परिष्कार कार्य में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। इस प्रकार द्विवेदी जी ने खड़ी बोली के रूप को स्थिरता प्रदान की, उसमें स्वच्छता और परिपक्वता आई इस समय से खड़ी बोली कविता की शैली उत्तरोत्तर स्वच्छ, शक्तिशाली और अभिव्यक्तिपूर्ण होती गई। द्विवेदी जी ने काव्य रचना के क्षेत्र में काव्य भाषा को परिमार्जित एवं स्थिर रूप देने के लिए कार्य किया। एक समर्थ आलोचक की भाँति उन्होंने विभिन्न रचनाकारों की रचना को सुधारा। भाषा को सजाने-संवारने का कार्य उन्होंने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से ही किया। गद्य और पद्य की एक भाषा के लिए द्विवेदी जी ने अथक परिश्रम किया।

> ▶ द्विवेदी जी ने खड़ी बोली के रूप को स्थिरता प्रदान की

उनकी लगन से ही खड़ी बोली का परिमार्जित रूप उभर कर सामने आया और पद्य और गद्य की भिन्न भाषा का झगड़ा दूर हो गया। मुख्य रूप से उन्होंने भाषा को प्रसाद गुण से युक्त, व्याकरण संबंधी अशुद्धियों से दूर, अभिव्यंजना शक्ति से पूर्ण बनाने का प्रयत्न किया। रचनाकारों को उन्होंने, शब्दाडम्बर के साथ-साथ अश्लील और ग्राम्य शब्द प्रयोग से बचने का भी सुझाव दिया। उन्होंने लेखकों को देशज शब्द के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया। मुहावरों का प्रयोग तथा स्वाभाविक अलंकारों के प्रयोग के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार एक कठोर शासक के समान उन्होंने भाषा के क्षेत्र में लेखकों को नियंत्रित किया। यह नियंत्रण उन्होंने सम्पादक होने से पहले ही प्रारंभ कर दिया था।

> ▶ भाषा को प्रसाद गुण से युक्त, व्याकरण संबंधी अशुद्धियों से दूर, अभिव्यंजना शक्ति से पूर्ण बनाने का प्रयत्न द्विवेदी जी ने किया

1901 ई. में 'सरस्वती' में प्रकाशित अपने कवि-कर्तव्य शीर्षक लेख में उन्होंने लिखा था-

"कविता का विषय मनोरंजन एवं उपदेशात्मक होना चाहिए। यमुना के किनारे केलि-कौतूहल का अद्भुत-अद्भुत वर्णन बहुत हो चुका। . . . . . चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त जीव, भिक्षु से लेकर राजा पर्यन्त मनुष्य, बिंद्र से लेकर समुद्र पर्यन्त जल, अनंत आकाश, अनंत पृथ्वी, अनंत पर्वत-सभी पर कविता हो सकती है, सभी से उपदेश मिल सकता है और सभी के वर्णन से मनोरंजन हो सकता है। यदि 'मेघनादवध' अथवा 'यशवंतराव महाकाब्य' वे नहीं लिख सकते तो उनको ईश्वर की निस्सीम सृष्टि में से छोटे-छोटे सजीव अथवा निर्जीव पदार्थों को चुनकर उन्हीं पर छोटी-छोटी कविताएँ करनी चाहिए।"

इस प्रकार द्विवेदी जी ने खड़ी बोली के रूप को स्थिरता प्रदान की, उसमें स्वच्छता और परिपक्वता आई। इस समय से खड़ी बोली कविता की शैली उत्तरोत्तर स्वच्छ, शक्तिशाली और अभिव्यक्तिपूर्ण होती गई। खड़ी बोली को परिमार्जित करने, संस्कारित करने तथा व्याकरणिक शुद्धता प्रदान करने में 'सरस्वती' पत्रिका का अविस्मरणीय योगदान है। आचार्य द्विवेदी के भाषा परिष्कार पर टिप्पणी करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है- "खड़ी बोली के पद्य विधान पर द्विवेदी जी का पूरा-पूरा असर पड़ा। बहुत से कवियों की भाषा शिथिल और अव्यवस्थित होती थी। द्विवेदी जी ऐसे कवियों की भेजी हुई कविताओं की भाषा आदि दुरुस्त करके 'सरस्वती' में छापा करते थे। इस प्रकार कवियों की भाषा साफ होती गई और द्विवेदी जी के अनुकरण में अन्य लेखक भी शुद्ध भाषा लिखने लगे।"

▶ खड़ी बोली को परिमार्जत करने, संस्कारित करने तथा व्याकरणिक शुद्धता प्रदान करने में 'सरस्वती' पत्रिका का अविस्मरणीय योगदान है

1.1.4 द्विवेदी युगीन परिस्थितियाँ

आधुनिक काल का प्रवेश द्वार यदि भारतेंदु युग मान लिया जाए तो द्विवेदी युग उसका विस्तृत प्रांगण कहा जा सकता है। इस युग का नामकरण सुप्रसिद्ध पत्रकार, निबंधकार, आलोचक एवं सर्व स्वीकृत साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के गरिमामंडित व्यक्तित्व को केंद्र में रखकर किया गया है। द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' भी कहा जाता है। भारतीय इतिहास में यह समय ब्रिटिश शासन के दमन चक्र कूटनीति और गुलामी का काल है। तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों ने उस काल-खंड के साहित्य को पूरी तरह से प्रभावित किया था। द्विवेदी युगीन काव्य प्रवृत्तियों के अध्ययन से पहले उस समय की परिस्थितियों को समझ लेना समीचीन होगा।

▶ द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' भी कहा जाता है

1.1.4.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ

द्विवेदी युगीन कवियों ने राष्ट्रीय भावों की अभिव्यक्ति कर भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता के प्रति अदम्य लालसा ही नहीं जगाई बल्कि उसको पाने के लिए जनता को संघर्षरत भी किया। निश्चय ही इसमें द्विवेदी युग की राजनीतिक परिस्थितियों का विशेष योगदान था। 'स्वराज' की मांग और स्वदेशी आंदोलन आरंभ हो चुका था। बाल गंगाधर तिलक के उद्घोष 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' और गांधीजी के राष्ट्रीय क्षितिज पर आने के साथ ही संपूर्ण परिवेश राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत हो गया था। 'करो या मरो' की भावना ने भारतीय जनता को त्याग और बलिदान के लिए प्रेरित किया था। इसी समय जलियांवाला बाग कांड से अंग्रेजी शासकों के दमन और शोषण के प्रति विद्रोह और आक्रोश सारे देश में फैल गया। यही आक्रोश और विद्रोह एवं देश के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर देने का भाव तत्कालीन काव्य में भी बड़ी दृढ़ता के साथ उभरकर सामने आया। राष्ट्रीय घटनाओं की मुखर अभिव्यक्ति अपने समग्र प्रभाव और प्रेरणा स्रोत के रूप में द्विवेदी युग के काव्य में परिलक्षित होती है।

▶ स्वराज की मांग और स्वदेशी आंदोलन आरंभ हो चुका था

1.1.4.2 सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ

इस बात में कोई शक की गुंजाइश ही नहीं है कि द्विवेदी युगीन काव्य में जो समाज सुधार और राष्ट्रीय जागरण का भाव अभिव्यक्त हुआ है वह तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का ही परिणाम था। लोकमान्य तिलक जी ने कर्मयोगी जो व्याख्या प्रस्तुत की उसने मातृभूमि पर मर मिटने की प्रेरणा का साकार रूप ले लिया। बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालव्य जैसे समाजसेवियों ने देशवासियों के स्वाभिमान को जगाया और अपनी भारतीय परंपरा के प्रति निष्ठावान बनाने का सफल प्रयास किया। स्वामी दयानंद ने धार्मिक दृष्टि से भारतीय गौरव की स्थापना कर

▶ द्विवेदी युगीन काव्य में जो समाज सुधार और राष्ट्रीय जागरण का भाव अभिव्यक्त हुआ है, वह तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का ही परिणाम था

दी थी। गांधीजी ने हरिजनों का उद्धार किया। समाज सुधारकों ने जनता के साथ समाज की कुरीतियों, अंधविश्वासों का जो विरोध किया वह तत्कालीन साहित्य में भी नज़र आने लगा।

1.1.4.3 आर्थिक परिस्थितियाँ

आर्थिक दृष्टि से अंग्रेजों की नीति नीतियाँ भारत के लिए अहित कर रही थी। भारत के उद्योग धंधे की ब्रिटिश सरकार की तरफ से पूर्ण उपेक्षा ही हुई देश का धन निरंतर बाहर जाने से भारत लगातार निर्धन होता जा रहा था परतंत्रता और देश में पढ़ने वाले अकाल ने भी देशवासियों का जीना ही मुश्किल कर दिया था। ब्रिटिश शासन काल में ऐसे अनेक कानून बने जो आम जनता के ख़िलाफ़ थे। इसीलिए जनता में आक्रोश बढ़ता ही जा रहा था। भारतीय जनता के पास पूर्ण स्वतंत्रता की मांग के अलावा और कोई चारा नहीं था।

- अंग्रेज़ों की नीतियाँ भारत के लिए अहितकर थीं। देश का धन निरंतर बहार जाने लगा

1.1.4.4 साहित्यिक परिस्थितियाँ

नवीन राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक चेतना के जाग्रत होने से द्विवेदी युगीन साहित्य में भी नवजागरण का शंखनाद सुनाई देने लगा। अंग्रेजों के अत्याचार से मुक्ति ही जीवन का परम लक्ष्य बन गया। कवि अपनी कविता के माध्यम से दीप से दीप जलाने को प्रेरित हुए क्योंकि हर भारतवासी के मन में जगी चिंगारी ही भारत को आज़ादी दिला सकती थी। यह पुनीत कर्तव्य तत्कालीन कवियों ने पूरी प्रतिबद्धता के साथ निभाया। इसके लिए उन्होंने हर भारतवासी के मन में देश-प्रेम की पुण्य ज्योति जलाने का पुण्य कर्म बड़ी ही तन्मयता के साथ संपन्न किया। द्विवेदी काल के साहित्य में अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से स्वच्छंद भावना का विकास हुआ। साहित्य की प्रत्येक विधा में नैतिकता का साम्राज्य स्थापित होने लगा। अब कवियों की दृष्टि जीवन के नवीन मूल्यों और आदर्शों के प्रति उन्मुख हुई साहित्य में पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाओं और चरित्रों को राष्ट्रीय आदर्श भावना की दृष्टि से शामिल किया जाने लगा। अपने आप को भारतीय कहलाना उस समय गौरव की बात समझी गई। इस भावना को तत्कालीन साहित्य में अनेक प्रकार से अभिव्यक्ति मिली।

- द्विवेदी काल के साहित्य में अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से स्वच्छंद भावना का विकास हुआ

1.1.5 द्विवेदी युगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1.1.5.1 देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावना

द्विवेदी युगीन कवियों की सबसे बड़ी विशेषता है कि उनमें देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। कवि अपनी अपनी शैली में मातृभूमि के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त कर रहे थे नाथूराम शर्मा शंकर की पंक्तियां देश पर मर मिटने की प्रेरणा देती है:

"देशभक्त वीरों मरने से नेक नहीं डरना होगा
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा"

गया प्रसाद शुक्ल स्नेही ने बड़ी ही धीरता के साथ कहा जिसके अंदर देश प्रेम नहीं वह मृतक के समान है:

"जिसको न निज गौरव बनाने देश का अभिमान है
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक के समान है"

श्रीधर पाठक जी की दो पंक्तियाँ भी दृश्य हैं:

- देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना

"सुखधाम अभिराम गुन निधि नौमि नित प्रिय भारतम्"

1.1.5.2 मानवतावादी दृष्टिकोण

द्विवेदी युगीन कवियों का मानना था कि मानव प्रेम के रास्ते पर चलकर ही ईश्वर को पाया जा सकता है। इस कालखंड में ऐसे महाकाव्य रचे गए जिनके नायक आदर्श मानव होने के साथ जनता के सेवक भी थे। नारी को भारतीय संस्कृति की साकार मूर्ति माना गया। उसे देश सेविका, विश्व सेविका, लोक सेविका के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। प्रियप्रवास की राधा, यशोधरा की यशोधरा तथा साकेत की उर्मिला स्वाभिमान पूर्ण गरिमामय व्यक्तित्व की झांकी प्रस्तुत करती हैं। मानवतावाद के आदर्श के कारण कविता में पीड़ित, शोषित, दुर्बल और दलित के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित हुई। कवि का विश्वास है कि ईश्वर की प्राप्ति मानव प्रेम से संभव है उसे दुखियों के आंसू और करूण विलाप में ईश्वर प्राप्ति संभव प्रतीत होने लगी। इस प्रकार का ईश्वर प्रेम मानवता प्रेम और विश्व प्रेम में बदल गया। ठाकुर गोपाल शरण सिंह के शब्दों में:

▶ नायक आदर्श मानव होने के साथ-साथ जनता के सेवक भी थे

"जग की सेवा करना ही बस है अब सारों का सार

विश्व प्रेम के बंधन ही में मुझको मिला मुक्ति का द्वार॥"

1.1.5.3 सामाजिक कविता

समाज की सर्वांगीण उन्नति अभीष्ट थी। इन्होंने सामाजिक कुरीतियों और कुलीनता आदि पर व्यंगात्मक कविताएँ लिखी है इस काल के कवियों ने स्त्री सुधार एवं उद्धार पर अपनी लेखनी चलाई है इस दिशा में मैथिलीशरण गुप्त का नाम विशेष उल्लेखनीय है उन्हें समाज की सर्वांगीण सामाजिक तथा सांस्कृतिक उन्नति अभीष्ट है और यह कार्य इन्होंने अतीत के गौरव गान द्वारा संपन्न किया है।

▶ स्त्री सुधार पर लेखनी चलाई

1.1.5.4 इतिवृत्तात्मकता

द्विवेदी युग की अधिकांश कविता श्रृंगार रस से मुक्त है। द्विवेदी जी की आदर्शवादिता, सात्विकता और संयम के प्रभाव के साथ-साथ आर्य समाज तथा दूसरी संस्थाओं के प्रभाव के परिणाम स्वरूप श्रृंगार रस की अश्लीलता को कविता क्षेत्र से बाहर कर दिया गया। इस वजह से कविता में इतिवृत्तात्मकता की प्रवृत्ति बढ़ती गई। कविता में इतिवृत्तात्मकता (Matter of fact) की प्रवृत्ति के फलस्वरूप उसमें लाक्षणिकता और वक्रता कम होती गई।

▶ कविता के क्षेत्र से श्रृंगार रस बाहर

1.1.5.5 प्रकृति चित्रण

द्विवेदी युग के कवियों का ध्यान प्रकृति के यथा तथ्य वर्णन पर था। श्रीधर पाठक, हरिओम गुप्तजी, रामचंद्र शुक्ल, रामनरेश त्रिपाठी के नाम इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय हैं। श्रीधर पाठक ने कश्मीर और देहरादून की सुषमा का रमणीय वर्णन किया है-

"प्रकृति जहाँ एकांत बैठी निजी रूप संवारती"

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध जी ने अपने महाकाव्य 'प्रियप्रवास' का प्रारंभ ही प्रकृति वर्णन से किया है:

"दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला
तरु शिखा पर थी अब राजती
कमलिनी कुल बल्लभ की प्रभा"

1.1.5.6 बौद्धिकता की प्रधानता

इस युग के कवि पाश्चात्य संस्कृति के बौद्धिक तत्वों से अत्यंत प्रभावित हैं। इस युग के कवि ने अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति की बौद्धिक व्याख्या की। गुप्त के राम अवतारी राम न होकर आदर्श मानव हैं जो कि कोई दिव्य संदेश नहीं लाए बल्कि निज कर्मों से इस भू को स्वर्ग बनाने आए हैं। हरिऔध के कृष्ण और राधा भी आदर्श समाज सुधारक और नेता हैं। इस प्रकार इन कवियों ने राम और कृष्ण की कथा में एक नवीन तत्व का समावेश किया जिसका लक्ष्य एकमात्र देश के हितैषियों को देश उन्नति का मार्ग प्रदर्शित करना है।

1.1.5.7 देश का अतीत गौरव और संस्कृति

▶ कविता में विश्व प्रेम एवं लोक रक्षा की भावना

द्विवेदी युगीन कविता में लोक सेवा, विश्व प्रेम, लोक रक्षा, कर्तव्य क्या नेतृत्व की अनेक भावनाएँ मिलती है। कवि ने अतीत के गौरव का स्मरण दिलाकर वर्तमान के निर्माण का उत्साह भरना चाहा है इस युग के कवि ने अतीत के दर्शन, कला, साहित्य, विज्ञान और समृद्धि सब का विशद गान किया है। बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति के साथ गुप्त जी ने भारत वर्ष की श्रेष्ठता की उद्घोषणा की है-

"संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है

उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन? भारत वर्ष है"

1.1.5.8 अनुवाद कार्य

▶ गद्य और पद्य में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा

इस काल में देशी और विदेशी भाषाओं के साहित्य की कविताओं का हिन्दी खड़ी बोली में अनुवाद भी हुआ। आचार्य द्विवेदी का उद्देश्य हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध बनाना था। उन्होंने अनुवाद की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहन दिया। इस काल में अंग्रेजी साहित्य की कविताओं के अनुवाद की परंपरा खूब चली। श्रीधर पाठक ने गोल्डस्मिथ के 'हरमिट' का 'एकांत वासी योगी', 'ट्रैवलर का श्रांत पथिक', 'डैज़र्टिड विलेज' का 'उजड़ ग्राम' के रूप में सुंदर अनुवाद प्रस्तुत किया। इस काल में यह अनुवाद कार्य हिन्दी साहित्य के पद्य और गद्य दोनों क्षेत्रों में बराबर चलता रहा इससे हिन्दी साहित्य में और भी अधिक व्यापकता आई।

1.1.5.9 काव्य रूपों में अनेकता

इस काल में प्रबंध काव्य, खंड काव्य और मुक्तकों की भी रचना हुई। गद्य में घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, ऐतिहासिक और पौराणिक उपन्यास और कहानियों की रचना हुई। श्रेष्ठ समालोचना और निबंधों की भी रचना हुई।

1.1.5.10 खड़ी बोली की प्रतिष्ठा

द्विवेदी युगीन कवियों ने ब्राजभाषा को काव्य क्षेत्र से बाहर कर साहित्य के दोनों क्षेत्रों गद्य और पद्य में खड़ी बोली को प्रतिष्ठित किया।

1.1.5.11 नीति और आदर्श

द्विवेदी युगीन काव्य आदर्शवादी और नीतिपरक है। रचनाओं में असत पर सत की विजय दिखाई गई है। कुसंग के विषय में रामचरित उपाध्याय के विचार द्रष्टव्य हैं:

"सबसे नीतिशास्त्र कहता है, दुष्ट संग दुःख का दाता है

जिस पय में पानी रहता है, वही ख़ूब औटा जाता है"

इस युग के कवियों ने प्रेम के आदर्श स्वरूप का गुणगान किया-

"प्रेम स्वर्ग है स्वर्ग प्रेम है, प्रेम अशंक अशोक।

ईश्वर का प्रतिबिम्ब प्रेम है, प्रेम हृदय आलोक॥"

▶ यह युग भारतेंदु युग से प्रभावित हुआ और इसने अग्रिम युग को प्रभावित किया। द्विवेदी युग भारतेंदु युग और छायावादी युग के बीच की कड़ी है

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि समाज सुधार और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत द्विवेदी युगीन कवियों ने जीवन और समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मनसा, वाचा, कर्मणा निभाया था। उपदेश, आत्मकथा और बौद्धिकता को लेकर इन रचनाओं की आलोचना भले ही की जाए, लेकिन उदार विचारों से सुसमृद्ध द्विवेदी युगीन रचनाओं ने हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि ही की है और हिन्दी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग का, उस कालखंड की रचनाओं का और साहित्यकारों का अपना विशेष ही स्थान है।

1.1.6 द्विवेदी युग के प्रमुख कवि

नाथूराम शर्मा शंकर, श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', राय देवी प्रसाद पूर्ण, गया प्रसाद शुक्ल सनेही, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, बालमुकुंद गुप्त, लाला भगवान दीन, लोचन प्रसाद पांडे आदि।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

इस युग के सभी साहित्यकारों ने हिन्दी भाषा को विकसित करने के महायज्ञ में अपना योगदान दिया अपनी रचनाओं की सामग्री को इस यज्ञ में समर्पित किया। परिणाम यह हुआ कि इस महायज्ञ की ज्वाला से हिन्दी साहित्य का प्रांगण प्रकाशमान हो उठा और आगे आने वाले कवियों का मार्ग भी प्रशस्त हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा और प्रोत्साहन से इस कालखंड में उच्च कोटि के साहित्य का सृजन हुआ स्वयं द्विवेदी जी ने कला, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, पुरातत्व और प्राचीन साहित्य पर श्रेष्ठ रचनाएँ प्रस्तुत कीं। शब्द भंडार की वृद्धि के अतिरिक्त गद्य की विविध शैलियों के लिए भी द्विवेदी युग स्मरणीय रहेगा।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. द्विवेदी युग की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
2. द्विवेदी युग की परिस्थितियों पर चर्चा कीजिए।
3. हिन्दी साहित्य को महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के योगदान पर प्रकाश डालिए।
4. काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा पर टिप्पणी लिखिए।
5. पुनर्जागरण में भारतेंदु जी के योगदान पर चर्चा कीजिए।
6. आधुनिकता के उदय की पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. आधुनिक हिन्दी काव्य भाषा, डॉ. रामकुमार सिंह
3. आधुनिक कविता का मूल्यांकन, इन्द्रनाथ मदान

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियाँ, डॉ शिवकुमार शर्मा
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल

अन्तर्जाल सन्दर्भ:

1. www.subhashita .com
2. www.deshbandhu.co. in
3. www.sahitykunj .net
4. www.Hindi.lok.com

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के प्रमुख कवि- माक्खनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरणगुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय काव्य धारा से परिचित होता है
- द्विवेदी युगीन कवियों की काव्यगत विशेषताओं के बारे में अवगत होता है
- द्विवेदी युगीन कवियों की प्रमुख रचनाओं की जानकारी प्राप्त करता है
- द्विवेदी युगीन प्रमुख कवियों की परिचय प्राप्त होता है

Background / पृष्ठभूमि

राष्ट्रीयता का संबंध राष्ट्र की आत्मा या चेतना की पहचान से होता है। यह चेतना स्थिर ना होकर गतिशील रहती है अर्थात् नव-नव परिस्थितियों में नए-नए कोण उभारती रहती है और पुराने कोण छोड़ती रहती है। संस्कृति का संबंध इसी आत्मा या चेतना से होता है यह संस्कृति जहाँ इतिहास के रूप में हमारे लिए प्रेरणा और पृष्ठभूमि बनती है वहीं वर्तमान चेतना से स्पंदित होकर हमारा जीवन बन जाती है। प्रतिभावान और नव दृष्टि संपन्न कवियों ने संस्कृति के उदात्त अतीत रूप को वर्तमान जीवन संदर्भ में संयोजित कर स्वीकार किया है। द्विवेदी युग में राष्ट्रीयता का जो सबसे स्थूल रूप है वह है विदेशी शासन के अत्याचारों और जन यातनाओं तथा जनता के मन में उठते हुए क्रोध एवं असंतोष का चित्रण। इस प्रकार की राष्ट्रीय कविताओं का शंखनाद सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सियारामशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि कवियों की कृतियों में सुनाई पड़ता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

राष्ट्रीय काव्यधारा, राष्ट्रीय कविताएँ, राष्ट्रीयता का संबंध, भावपक्ष और कला पक्ष।

Discussion / चर्चा

2.1.1 राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि

2.1.1.1 बालकृष्ण शर्मा नवीन

'नवीन' उपनाम से लोकप्रिय बालकृष्ण शर्मा देश की राजनीति से सक्रिय रूप से संबंद्ध रहे हैं। इनका जन्म 8 दिसंबर 1897 मध्य भारत के शाजापुर परगना के मियाना नामक गांव

▶ लौकिक राग चेतना आलौकिक सत्ता में बदलती नज़र आती है

में एक वैष्णव ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - कुंकुम, रश्मिरेखा, अपलक, क्वासी, विनोबा स्तवन, उर्मिला, प्राणार्पन, हम विषपाई जन्म के। सन् 1918 में उनकी एक कहानी 'संतू' सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इन्होंने माखनलाल चतुर्वेदी जी के पत्र 'प्रभा' का संपादन किया था। 'प्रताप' नामक पत्र का भी इन्होंने संपादन किया था। उर्मिला नामक प्रबंध काव्य पर उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया गया था। 29 अप्रैल सन् 1960 के दिन नवीन जी का स्वर्गवास हो गया। आपके काव्य की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं-

1. भावपक्ष।
2. कलापक्ष।

भावपक्षः

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के काव्य में चार प्रमुख भाव धाराएँ प्रवाहित हैं।

1. वैयक्तिक रागात्मकता
2. आध्यात्म चिंतन
3. राष्ट्रीय चेतना
4. मानवतावाद

1. **वैयक्तिक रागात्मकताः**

इसके अंतर्गत नवीन जी की निजी प्रेम विरह प्रधान अनुभूतियाँ चित्रित हुई हैं। यह राग चेतना कहीं प्रेम के उन्माद के रूप में, कहीं विरह ताप के रूप में और कहीं एकाकी साधना के रूप में व्यक्त हुई है। नवीन जी की दृष्टि में प्रेम ही मुक्ति का माध्यम है।

प्रेम से विमुख होकर रहा ही नहीं जा सकताः

"मानवों की मुक्ति है इस राग और अनुराग में ही छूट सके क्या राग जब वह आ पड़े हैं भाग में ही"

प्रेम की यह प्यास अदम्य है जो मात्र विरल कणों से नहीं बुझ सकती कभी का मानस तो न केवल स्वयं प्रेम प्रवाह में डूब जाना चाहता है बल्कि पूरे संसार को उसमें निमग्न देखने का भी अभिलाषी है

"कूजे दो कूजे में बुझने वाली मेरी प्यास नहीं
बार-बार ला ला कहने का समय नहीं अभ्यास नहीं
अरे बहा दे अविरल धारा बूंद-बूंद का कौन सहारा
मन भर जाए जिया उतराए, डूबे जग सारा का सारा"

2. **आध्यात्म चिंतनः**

बालकृष्ण शर्मा नवीन जी की लौकिक राग चेतना धीरे-धीरे अलौकिक सत्ता के अनुसंधान में प्रवृत्त दिखाई देती है। उनकी व्यक्तिगत अनुराग भावना विश्वमय हो उठती है :

"जैसे अपने तन में मुझको
भाषित होता है अपनापन
जैसे अपनों को पाकर यह
हिमकर उठता है झन -झन

वैसे ही मैं देख सकूं इस
निखिल विश्व के सब जड़ - चेतन
प्रिय त्वम मय कर दो तन मन॥"

आत्मा द्वारा परम सत्ता की खोज की लालसा आदिकाल से ही भारतीय साहित्य का प्रतिपाद्य रही है। नवीन जी की कविता में भी यही आत्मा अज्ञात प्रिय से मिलने को आतुर है:

"डोला लिए चलो तुम झटपट छोड़ो अटपट चाल रे
सजन भवन पहुँचा दो हमको, मन का हाल बेहाल रे॥"

3. **राष्ट्रीय चेतना**

▶ अपनी कविताओं के द्वारा जन मानस में जागृति पैदा की

'नवीन' जी के काव्य का अधिकांश उनकी वैयक्तिक राग चेतना से परिपूर्ण है फिर भी नवीन जी को एक राष्ट्रवादी कवि के रूप में पहचाना जाता है। उनकी कविता स्वाधीनता की वेदी पर न्यौछावर होने वाले देशभक्त को एक नई ऊर्जा प्रदान करती है:

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए॥"

बालकृष्ण शर्मा नवीन जी अपनी कविताओं के माध्यम से जन-जन में जागृति पैदा करते रहे :

"चढ़ चल, चढ़ चल, रुक मत रे बलिदानों के पुंज !
देख कहीं ना लुभावें तुझको यह जीवन की कुंज !"

कवि राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रति पूर्ण आशावादी थे। अतः उन्होंने भावी भारत के स्वर्णिम चित्र की कल्पना करते हुए लिखा है :

"फिर आएगी उषा हँसती,
फिर होगा विहार चिर सुंदर
फिर से नव भैरवी छिड़ेगी
फिर होगी पंखों की फर-फर॥"

4. **मानवतावादः**

▶ कवि राष्ट्रवादी से मानववादी हो जाते हैं

राष्ट्रीय चेतना जब राष्ट्र की सीमित परिधि से निकलकर मानव मात्र की मुक्ति की कामना में बदल जाती है तो कवि राष्ट्रवादी से मानववादी हो जाता है।

नवीन जी जब आम जनजीवन की दुर्दशा को देखते हैं तो काफी विचलित हो जाते हैं दुनिया भर के इंसानों की मजबूर जिंदगी देखकर वे बौखला जाते हैं:

"लपक चाटते झूठे पत्ते जिस दिन देखा मैंने नर को
उस दिन सोचा क्यों न लगा दे आज आग इस दुनिया भर को॥"

'नवीन' जी की राष्ट्रीय चेतना और प्रगतिशील दृष्टि ने ही विश्व मानवता का रूप ले लिया है:

"हमें खींचकर स्वर्ग,
कहीं यदि उसका और ठिकाना है,
इस धरती पर लाना है"

कला पक्षः

बालकृष्ण शर्मा नवीन जी की कविताओं का अनुभूतिपक्ष श्रेष्ठ तो है ही अभिव्यक्ति पक्ष भी उतना ही श्रेष्ठ है। नवीन जी लोक जीवन के बहुत निकट से साक्षी रहे अतः उनकी कविता में लोकगीतों की सी कोमलता और मधुरता सहज ही दिखाई देती है। एक उदाहरण दृष्टव्य है:

> ▶ कविताओं की अभिव्यक्ति पक्ष श्रेष्ठ

"बरखा ऋतु में सब सहेलियाँ मैके पहुंची आय रे
बाबुल घर से आज चलीं हम, पिया घर लाज विहाय रे !"

भाषा- नवीन जी की काव्यभाषा में ब्रजभाषा और खड़ीबोली के दो भिन्न छोर दिखाई देते हैं। उनकी ब्रजभाषा ठेठ न होकर, पर्याप्त परिनिष्ठित है:

"कारे द्रुम,कारी लता, कारौ सब संसार।

कारौ कारौ है रहो, हिय बिछोह संसार॥"

खड़ी बोली के प्रयोग में भी एक विशेष परिनिष्ठित एवं तत्सम प्रधानता के दर्शन होते हैं। भावों के अनुरूप नवीन जी सुगम व्यावहारिक और देशज शब्दावली का प्रयोग करते हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

- तुम व्रत रत, तुम उपवास निष्ठ, तुम नित ससंग तुम यज्ञ धाम !
- हमरे बलम कोई न जगइयो, कोई जनि गाइयो मलार रे !

नवीन जी की कविता में माधुर्य एवं प्रसाद गुण की प्रधानता है। नवीन जी की कविता में अलंकारों का प्रयोग बड़ा ही सहज और स्वाभाविक है। अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि प्रचलित अलंकारों का समावेश उनकी वाणी में अनायास ही हुआ है। दोहा, सोरठा, चौपाई, कुंडलिया आदि विविध छंदों का प्रयोग भी बड़ी सहजता के साथ किया गया है।

निःसन्देह बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। मनुजता, सहृदयता पर दुखकातरता और उदारता उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं। वह फकीर बादशाह थे। वह आत्म प्रदर्शन और यश लालसा से सर्वथा रहित थे उन्होंने आध्यात्मिक गीत भी लिखे और युग चेतना से संबंधित रचनाएँ भी प्रस्तुत कीं। वास्तव में वे बड़े भावुक, प्रेमी और सौंदर्यासक्त सहृदय होने के साथ-साथ अपने परिवेश के प्रति प्रतिबद्ध भी थे। उन्होंने जीवन में जैसा अनुभव किया वैसा ही काव्य बद्ध भी किया। वह आंतरिक प्रेरणा से प्रेरित होकर लिखते थे। खरी अनुभूतियों के कवि होने के कारण उनकी कविताओं में स्वाभाविकता और सच्चाई है। मर्म को छूने की अपार शक्ति है। जन आंदोलनों में भाग लेने के कारण उनकी रचनाओं में युग चेतना भी है और यही युग चेतना आगे चल कर मानववाद में परिणित भी हो जाती है।

> ▶ 'नवीन' जी भावुक, सहृदय होने के साथ-साथ अपने परिवेश के प्रति प्रतिबद्ध कवि थे

2.1.1.2 सियाराम शरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त जी के छोटे भाई सियाराम शरण गुप्त का जन्म उत्तरप्रदेश के जिला झांसी के चिरगाँव में सन् 1895 में हुआ था। गुप्त जी का व्यक्तित्व एक सीधे-सादे भारतीय नागरिक-सा था। वे एक ख्याति प्राप्त कवि ही नहीं बलिक एक श्रेष्ठ उपन्यासकार, कहानीकार और निबन्धकार भी थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं:

प्रबन्ध काव्य	-	मौर्यविजय, अनाथ, नकुल
चरित काव्य	-	आत्मोत्सर्ग, बापू, अमृतपुत्र

गीतिनाट्य	-	उन्मुक्त
आख्यान गीति	-	खिलौना, एक फूल की चाह
संस्मरण-काव्य	-	दैनिकी, नो आखली।
स्फुट काव्य संग्रह	-	आर्द्रा, विषाद, दूर्वादल, पाथेय, मृण्मयी, जय हिन्द, गोपिका।
कथा-साहित्य	-	मानुषी (कहानी संग्रह)गोद, अन्तिम आकांक्षा, नारी (उपन्यास)
नाटक	-	पुण्य पर्व
निबन्ध संग्रह	-	झूठ-सच अनुवाद गीता संवाद, हमारी प्रार्थना, बुद्ध वचन

श्री सियाराम शरण गुप्त जी के काव्य की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

- भाव पक्षीय विशेषताएँ
- कला पक्षीय विशेषताएँ

भाव पक्षीय विशेषताएँ: गांधीवादी श्री सियाराम शरण गुप्त हिन्दी जगत में प्रायः गांधीवादी साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध है अहिंसा का उपदेश उनकी कविताओं में भी मिलता है:

"मिला हमें फिर सत्य आज यह नूतन होकर हिंसा का ही एक अहिंसा ही है उत्तर"

गांधी जी कहा करते थे वैष्णव जन तो तेने कहिए पीर पराई जाने रे श्री सियाराम शरण ऐसे ही वैष्णव भक्त थे जिनके हृदय में विश्व मंगल की कामना हिलोरें लेती थीं। कविवर गुप्तजी ने अपनी रचनाओं में हमारे समाज के अछूत समझे जाने वाले वर्ग की वेदना को वाणी दी है ।

राष्ट्रीयता:

कवि सियारामशरण गुप्त ने राष्ट्रीयता के आंतरिक तत्व- देश प्रेम, स्वातंर्त्य भावना, जातीय सौहार्द, अतीत गौरव स्मरण आदि की व्यंजना अपने काव्य के माध्यम से की है।

संवेदनशीलता:

सियारामशरण गुप्त ने अपनी कविताओं के माध्यम से पाठकों के हृदय में दलित दरिद्र जन के प्रति करुणा एवं संवेदना जागृत करने का प्रयास किया है।

मानवतावाद:

कवि गुप्त जी ने प्रायः अपने काव्य में मानव मूल्यों को ही वाणी देने का प्रयास किया है महात्मा बुद्ध, ईसा, विवेकानंद और गांधी उनकी आदर्श मानव मूर्तियाँ हैं। इन महापुरुषों के सिद्धांतों की उन्होंने समकालीन परिवेश के संदर्भ में व्याख्या की है।

- अहिंसा का उपदेश सियाराम शरण गूप्त की कविताओं में मिलता है

कर्मठ्ता:

जीवन के प्रति अनन्य निष्ठा से ही मानव सुख और सफलता का अधिकारी बन सकता है। अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना मानव की सबसे बड़ी पहचान है। इस तथ्य को उन्होंने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से कुछ इस प्रकार से व्यक्त किया है:

"पंख कहाँ से लाऊँ मैं !
अरे ! पैर ही क्या कुछ कम है ?

क्यों ना अभी बढ़ जाऊं मैं !
उत्तरीय का क्या, यह तनु भी
क्षत- छिन्न हो जाने दूँ।
इन शत-शत कांटों में बिंध कर
लक्ष्य लाभ निज पाऊँ मैं
. . . .
अपने इन पद चिन्हों पर ही
नूतन मार्ग बनाऊँ मैं ! ”

कलापक्षीय विशेषताएँ:

▶ सियाराम शरण गुप्त का काव्य लोग मंगल का काव्य

कविवर गुप्त जी ने काव्य के प्रायः सभी प्रचलित रूपों में अपनी लेखनी की सामर्थ्य का परिचय दिया है। प्रबंध काव्य, आख्यान काव्य, चरित-काव्य, गीतिनाट्य एवं गीतिकाव्य आदि विभिन्न विधाओं में उन्होंने काव्य रचना की है। श्री सियाराम शरण गुप्त जी की काव्य भाषा अत्यंत सरल, प्रांजल एवं जन व्यवहार के अनुकूल है।

सभी जगह कवि अभिधात्मक शब्दावली का ही प्रयोग करते हैं। सरल भाषा में उपदेश भी बोझिल नहीं जान पड़ता। एक उदाहरण प्रस्तुत है:

‘तुच्छ कभी तुम नहीं एक पल को भी जानो,
पल-पल से ही बना हुआ जीवन को मानो॥
इसके सद्व्यय रूप नीर सिंचन के द्वारा,
हो सकता है सफल जन्म तरु यह तुम्हारा।

गुप्त जी की काव्य की एक और विशेषता यह है कि भाषा में तत्सम शब्दावली का प्रयोग होने पर भी उसमें दुरूहता बिल्कुल भी नहीं आती। अलंकारों का सहज और सुंदर प्रयोग भी गुप्त जी के रचनाओं की विशेषता है। इसमें अनुप्रास, रूपक, उपमा आदि अलंकारों का सहज प्रयोग हुआ है। एक उदाहरण दृष्टव्य है:

“अंजलि जल से वक्ष बाहु कच भिगो भिगोकर,
जलधारा में पसर गई वह लम्बी होकर।”

इस प्रकार श्री सियाराम शरण गुप्त राष्ट्रीयता के चिंतक और चितेरे थे। उन्होंने अपनी कविता को समसामयिक राजनीति की परिधि में ही सीमित नहीं रखा बल्कि गांधीजी के कट्टर भक्त होने के नाते उन्होंने उनके आध्यात्मिक चिंतन सामाजिक एवं मानवीय संवेदना वाले पक्ष को स्वीकार किया। उनकी रचनाओं में गांधीवाद, राष्ट्रीयता, दरिद्रों के प्रति सहानुभूति, अछूतों का उद्धार, दलित कल्याण, ग्राम विकास के साथ-साथ अतीत की गाथाओं से प्रेरणा का भाव नज़र आता है। देश की ज्वलंत घटनाओं और समस्याओं का इन्होंने बड़ा जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है, किंतु संस्कृति के उदात्त तत्वों के प्रति गहरी आस्था रखने वाले सियाराम शरण जी इन घटनाओं, अवस्थाओं और समस्याओं को तात्कालिक तथ्य के रूप में न देखकर उन्हें बृहत्तर मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं और संदर्भों से जोड़ देते हैं। इसलिए इनके काव्य की पृष्ठभूमि अतीत हो या कि वर्तमान, उनमें आधुनिक मानवता की करुणा, यातना और द्वंद का

▶ आपका काव्य गांधीवाद, राष्ट्रीयता, अछूतों का उद्धार, ग्राम विकास, अतीत से प्रेरणा मानवीय संवेदना से संपन्न है

समन्वित रूप उभरा हुआ है। वह सच्चे अर्थों में मानव संस्कृति के पुजारी थे। अस्तु सियाराम शरण गुप्त का काव्य लोकमंगल का काव्य है।

2.1.1.3 माखनलाल चतुर्वेदी

क्रांति के अमर गायक माखनलाल चतुर्वेदी जी 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से जाने जाते हैं। इनका जन्म सन् 1889 में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद के बावई नामक स्थान पर हुआ था। इन्होंने कुछ समय तक अध्यापन कार्य किया तत्पश्चात खंडवा से 'कर्मवीर' नामक साप्ताहिक पत्र निकालना प्रारंभ किया। सन् 1913 में वे सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के संपादक नियुक्त हुए। इनकी कविताएँ देशप्रेम के मतवाले युवकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। माखनलाल चतुर्वेदी जी में देश प्रेम की प्रबल भावना विद्यमान थी। वे आजीवन देशप्रेम और राष्ट्र कल्याण के गीत गाते रहे। राष्ट्रवादी भावनाओं पर आधारित इनके काव्य में त्याग, बलिदान, कर्तव्य भावना और समर्पण के भाव निहित हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों को देखकर इनका अन्तर्मन अत्यंत दुखी होता था। अपनी कविताओं में प्रेरणा, हुंकार, प्रताड़ना, उद्‌बोधन और मल्हार के भावों को भरकर भारतीयों की सुप्त चेतना को जगाते रहे। भारतीय संस्कृति, प्रेम, सौंदर्य और आध्यात्मिकता पर भी इन्होंने अनेक हृदयस्पर्शी चित्र अंकित किए हैं।

▶ 'एक भारतीय आत्मा'- माखनलाल चतुर्वेदी

रचनाएँ:

काव्यसंग्रह	-	हिमकिरीटनी, हिम तरंगिणी समर्पण, युगचरण, वेणु लो गूंजे धरा
कहानी संग्रह	-	कला का अनुवाद
निबंध संग्रह	-	साहित्य देवता
नाटक	-	कृष्णार्जुन - युद्ध
सम्मान	-	हिमतरंगिनी पर साहित्य अकादमी पुरस्कार (1955)
		सागर यूनिवर्सिटी से डी. लिट की उपाधि (1959)
		पद्म भूषण (1963)

भारत के पोस्ट और टेलीग्राम डिपार्टमेंट ने माखनलाल चतुर्वेदी को सम्मान देते हुए पोस्टेज स्टाम्प की शुरुआत की (1977) मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा देश के श्रेष्ठ कवियों को माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार दिया जाता है।

उपनाम - एक भारतीय आत्मा

चतुर्वेदी जी की सबसे प्रसिद्ध कविता

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूंथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ
चाह नहीं,सम्राटों के शव

पर, हे हरि डाला जाऊँ।

चाह नहीं, देवों के सर पर,

चढू भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़ लेना वनमाली,

उस पथ पर तुम देना फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढाने

जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

भावार्थः कवि माखनलाल चतुर्वेदी कहते हैं कि पुष्प के मन में अन्य किसी भी प्रकार का सम्मान पाने की अभिलाषा नहीं है। पुष्प कहता है कि मेरी इच्छा नहीं है कि मैं किसी देव कन्या के आभूषणों में गुँथकर सुख प्राप्त करूँ, यह भी चाहत नहीं है कि किसी प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका के लिए बनाई गयी माला में बंध कर उसे आकर्षित करूँ। न मैं सम्राटों के शव पर चढ़ाया जाकर सम्मान पाना चाहता हूँ और ना देवी-देवताओं के मस्तक पर चढ़कर अपने भाग्य पर गर्व करना चाहता हूँ।

पुष्प अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहता है कि हे माली तुम मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक देना जिस मार्ग से होकर जवान अपनी मातृभूमि के लिए प्राण समर्पित करने जाएँ। इस प्रकार एक फूल भी अपनी जन्मभूमि के लिए समर्पित रहना चाहता है।

▶ माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में त्याग, बलिदान और संघर्ष की भावना

माखनलाल चतुर्वेदी जी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे वह कई बार जेल भी गए इसीलिए उनकी कविता में त्याग, बलिदान और संघर्ष की आवेगमयी भावना दिखाई पड़ती है। राष्ट्रप्रेम, आत्मोत्सर्ग इनके काव्य की मूल भावना है। माखनलाल चतुर्वेदी जी के काव्य के अनुभूति एवं अभिव्यक्ति दोनों ही पक्ष श्रेष्ठ है। अनुभूति पक्ष की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

1. **क्रांतिकारी चेतनाः**

चतुर्वेदी जी की कविताओं का स्वर क्रांतिकारी है। उनकी कविता युवा वर्ग के लिए प्रेरणादायक रही है-

"आग अंतर में लिए पागल जवानी

. . . .

पहन ले नर मुंड माला उठा स्वयंभू सुमेरु कर ले"

2. **देश प्रेम की भावनाः**

चतुर्वेदी जी की कविताओं में देश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। कविवर अपने देश के लिए आत्म बलिदान की प्रेरणा देते हैं।

"मैं यह चला पत्थरों पर चढ़,

मेरा दिलबर वही मिलेगा,

फूंक जला दे सोना चांदी,

तभी क्रांति का सुमन खेलेगा।"

एक सिपाही का देशप्रेम 'सिपाही' कविता में देखिए। - "बना लक्ष्य आराध्य

मैं हूँ एक सिपाही, बलि है

मेरा अन्तिम साध्य !"

3. **त्याग और बलिदान की भावनाः**

माखनलाल चतुर्वेदी जी की 'अमर राष्ट्र', 'पुष्प की अभिलाषा', 'बलि पंथी से' आदि कविताएँ अपनी मातृभूमि के लिए मर मिटने की प्रेरणा देती हैं:

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,

उस पथ पर तुम देना फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढाने

जिस पथ जाएँ वीर अनेक।"

'मुक्त गगन है मुक्त पवन है' कविता की पंक्तियाँ भी इस संदर्भ में दृष्टव्य हैं:

हो नन्हीं दुनिया के हाथों कोटि कोटि जयमाला

मस्तक पर दायित्व, हृदय में वज्र, दृगों में ज्वाला

तीस करोण धड़ों पर गर्वित, उठे, तने, ये शिर हैं

तुम संकेत करो, कि हथेली पर शत शत हाज़िर हैं।

▶ काव्यों में गरीबों की वेदना को अभिव्यक्ति प्रदान की

4. **शोषितों के प्रति सहानुभूतिः**

जो नेता ऊँचे -ऊँचे पदों पर बैठे हुए थे वे आम जनता की जरूरतों को नजरअंदाज कर रहे थे जनता कई समस्याओं से जूझ रही थी कवि गरीबों की वेदना को देखकर बेचैन हो गए और अपनी कविताओं में गरीबों की वेदना को अभिव्यक्ति प्रदान करने लगे।

5. **प्रेम और सौंदर्य का चित्रणः**

माखनलाल चतुर्वेदी जी के काव्य में प्रेम और सौंदर्य का भी बड़ा ही सहज रूप से चित्रण हुआ है। कुंज कुटीरें, यमुना तीर आदि कविताएँ प्रेम भावना से परिपूर्ण हैं। इन कविताओं में अलौकिक प्रेम और मानवता की सुगंध व्याप्त है।

6. **प्रकृति प्रेमः**

कवि अपने मन की अनुभूतियों को प्रकृति के माध्यम से बड़े ही सहज रूप में अभिव्यक्त करते हैं:

"महावर तुझे लगाती संध्या शोभा वारे

रानी रजनी पल-पल दीपक से आरती उतारे"

7. **माखनलाल चतुर्वेदी जी की कविताओं का अभिव्यक्ति पक्षः**

माखनलाल जी की कविताओं की कलागत विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

1. **भाषाः**

माखनलाल जी की भाषा प्रवाहमयी और संवेदनशील है तत्सम, तद्भव, देशज सभी शब्दों का प्रयोग बड़ी ही सहजता के साथ हुआ है। भाषा में गतिशीलता और मधुरता बनी रहती है।

2. **शैलीः**

भावों की सरस्वता और रोचकता के कारण चतुर्वेदी जी की शैली भावात्मक शैली कही जाती है। इसमें चिंतन की भी प्रधानता रही है। चित्रात्मकता के भी दर्शन होते हैं।

3. **रसः**

माखनलाल चतुर्वेदी जी की कविताओं में वीर, रौद्र, भयानक, श्रंगार और करूण रस का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। वात्सल्य रस का एक अनुपम उदाहरण देखिएः

"आज बेटी जा रही है

मिलन और वियोग की दुनिया नवीन बसा रही है

तेरे विदा दिवस पर हिम्मत ने कैसी हिम्मत हारी है।

कैसा पागलपन है मैं बेटी को भी कहता हूँ बेटा।

. . . .

तुझे विदा कर एकाकी, अपमानित- सा रहता हूँ बेटा !"

4. **अलंकारः**

चतुर्वेदी जी की कविताओं में अलंकारों का बड़ा ही सहज और सुंदर प्रयोग हुआ है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, वक्रोक्ति, संदेश, मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग आपने किया है। मानवीकरण अलंकार आपको को सर्वाधिक प्रिय है। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में बड़ा ही दुख-दर्द पाया लेकिन उसे मधुर वाणी में परिवर्तित कर दिया। उनका मन ऐसा निर्झर है जहाँ से सुंदर कविता प्रवाहित होती रही है। आप जानते हैं- पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी एक जागरूक और कर्तव्यनिष्ठ पत्रकार भी थे। इसी वजह से उनके नाम पर पत्रकारिता को समर्पित एशिया की पहली यूनिवर्सिटी 'माखनलाल चतुर्वेदी नेशनल यूनिवर्सिटी आफ जर्नलिज्म एंड कम्युनिकेशन' का नाम रखा गया। माखनलाल चतुर्वेदी जी 'पंडित जी' के नाम से भी विख्यात है।

- उपनाम- एक भारतीय आत्मा, पंडित जी।
- जागरूक और कर्तव्यनिष्ठ पत्रकार

2.1.1.4 सुभद्रा कुमारी चौहान

स्वतंत्रता संग्राम की सक्रिय सेनानी, राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका तथा वीर रस की एकमात्र हिन्दी कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 में इलाहाबाद के एक संपन्न परिवार में हुआ था वह प्रयाग क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज की छात्रा थी। 15 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हुआ। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से प्रभावित होकर वे पढ़ाई-लिखाई छोड़ कर देश सेवा के लिए तत्पर हो गईं तथा राष्ट्रीय कार्यों में सक्रिय भाग लेती रहीं। देश की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने कई बार जेल यात्रा भी की। सुभद्रा जी की 'झांसी की रानी' और 'वीरों का कैसा हो बसंत' कविता आज तक लाखों युवकों के हृदय में वीरता की ज्वाला धधक आती रही है सन् 1948 में एक मोटर दुर्घटना में स्वतंत्रता की पुजारिन की असामयिक मृत्यु हो गई। सुभद्रा जी की रचनाएँः

काव्य संग्रह	-	मुकुल, त्रिधारा
कहानी संकलन	-	सीधे-साधे चित्र, बिखरे मोती, उन्मादिनी
प्राप्त पुरस्कार	-	'मुकुल' काव्य संग्रह पर आपको सेकसरिया पुरस्कार प्रदान किया गया

सुभद्रा कुमारी चौहान अपने बचपन से ही अद्भुत प्रतिभा की धनी थी तथा उन्हें शुरू से

ही कविताओं व कहानियों से लगाव था। वह अपनी बाल्यावस्था में ही कविताएँ लिखने के लिए विख्यात थीं। 9 साल की आयु में उन्होंने अपनी पहली कविता 'नीम' लिखी जो 'मर्यादा' पत्रिका (1913) में प्रकाशित हुई। सुभद्राजी देश प्रेम की भावना को काव्यात्मक स्वर प्रदान करने वाली कवयित्री के रूप में विख्यात हैं उनकी ओजपूर्ण वाणी ने भारतीयों में नव चेतना का संचार किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान देने के लिए प्रेरित किया मात्र 'झांसी की रानी' शीर्षक पर आधारित उनकी कविता ही उन्हें अमर कर देने के लिए पर्याप्त हैं। सुभद्रा जी ने इस कविता को बुंदेलखण्ड शैली में लिखा। इनकी यह कविता वीर रस से भरपूर है, जिसमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के देशप्रेम और वीरता की गौरवमय गाथा है। सुभद्रा जी के 'मुकुल' नामक काव्य संग्रह में उनकी 'झाँसी की रानी' नामक कविता प्रकाशित हुई थी।

इस कविता ने प्रत्येक भारतीय में देशभक्ति की भावना को अत्यधिक तीव्र कर दिया। उनकी यह कविता युवाओं को प्रेरित करती है। इसकी लोकप्रियता अधिक बढ़ने के कारण अंग्रेजी सरकार ने 'झाँसी की रानी' कविता की पुस्तकों को अपने अधिकार में ले लिया था। 'झांसी की रानी' कविता की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं:

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटि तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सब ने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सब ने मन में ठनी थी।।
चमक उठी सन सत्तावन में, वो तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हम ने सुनि कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी।।

. . . .

रानी गई सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता-नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।"

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित काव्य के सृजन के साथ ही सुभद्रा जी ने वात्सल्य भाव पर आधारित कविताओं की रचना भी की कविताओं में उनका नारी सुलभ मात्र भाव दर्शनीय है

'मेरा नया बचपन' की कुछ पंक्तियाँ इस सन्दर्भ में दृष्टव्य हैं:

"बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।।

हमारे देशवासियों पर हो रहे अत्याचारों को देखकर उनके हृदय में बहुत ही पीड़ा होती थी। जलियाँवाला बाग में हुए भीषण नरसंहार से उनका मन काफ़ी दुखी हुआ था। तभी तो उनकी कलम ये कहती है कि:

"यहाँ कोकिला नहीं, काग हैं, शोर मचाते,
काले काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से,
वे पौधे, व पुष्प शुष्क हैं अथवा झुलसे।
परिमल-हीन पराग दाग़ सा बना पड़ा है,
हा! यह प्यारा बाग़ खून से सना पड़ा है।"

▶ वीररस और राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका। आपकी 'झाँसी की रानी' कविता अत्यधिक लोकप्रिय

सुभद्रा जी की भाषा सरल और सुबोध है। रचना शैली में ओज, प्रसाद और माधुर्य भाव का समन्वय देखने को मिलता है। सुभद्राकुमारी चौहान का अनुभूति और अभिव्यक्ति पक्ष हिन्दी साहित्य में अपनी अलग पहचान रखता है। 'झांसी की रानी' कविता बच्चे-बच्चे को मुँह ज़ुबानी याद है और पूरे उत्तर भारत में लोकप्रिय है। शायद ही ऐसा कोई विद्यार्थी होगा जिसकी जुबान पर यह पंक्ति न हो-

"बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।"

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी हिन्दी भाषा के परिष्कार तथा प्रसार के उद्देश्य को लेकर अवतरित हुए थे उनकी प्रेरणा से ही नए लेखकों को प्रोत्साहन मिला सभी के संयुक्त प्रयास से ओजपूर्ण तथा प्रभावपूर्ण खड़ी बोली में श्रेष्ठ और अनुपम रचनाएँ प्रकाश में आए और हिन्दी भाषा विकास के पथ पर अग्रसर है। अस्तु भाषा परिष्कार और कला पक्ष की नवीनता ही नहीं बल्कि द्विवेदी युगीन कवियों का अनुभूति पक्ष भी अनुपम और भव्य रहा है उनके द्वारा पुराण कथाओं को नवीन संदर्भ से जोड़कर वर्तमान समाज में चेतना जागृत कर भविष्य निर्माण का पुनीत प्रयास और देश भक्ति तथा देश प्रेम की अलख जगाना वाकई काबिल-ए-तारीफ है। द्विवेदी युग के सभी साहित्यकारों का योगदान हमेशा स्मरणीय रहेगा ।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. माखनलाल चतुर्वेदी जी का साहित्यिक परिचय दीजिए।
2. पुष्प की अभिलाषा का भावार्थ बताइए।
3. बालकृष्ण शर्मा नवीन का साहित्यिक परिचय दीजिए।
4. झांसी की रानी कविता का भावार्थ लिखिए।
5. सुभद्रा कुमारी चौहान का परिचय दीजिए।
6. सियारामशरण गुप्त के काव्य की विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
7. माखनलाल चतुर्वेदी जी की कविताओं की विशेषताएँ बताइए ।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. द्विव्दी युग का हिन्दी काव्य, डॉ. रामसकल राय शर्मा
3. नवजागरण और छायावाद, डॉ. महेन्द्र नाथ राय

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियाँ, डॉ शिवकुमार शर्मा
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल

अन्तर्जाल सन्दर्भः

1. www.subhashita .com
2. www.deshbandhu.co. in
3. www.sahitykunj .net
4. www.Hindi.lok.com

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3

साकेत (नवम सर्ग)

Detailed Study

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- साकेत महाकाव्य के नवम सर्ग के बारे में समझता है
- मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं से परिचित होता है
- गुप्त जी को साकेत लिखने की प्रेरणा कैसे मिली, यह जानकारी प्राप्त करता है
- गुप्त काव्य में चित्रित उर्मिला विरह से अवगत हो जाता है

Background / पृष्ठभूमि

बारह सर्गों में रचित महाकाव्य 'साकेत' गुप्त जी की श्रेष्ठतम रचना है। शुरू के सर्गों में श्रीराम को वनवास, अयोध्या वासियों का करुण रुदन और वन गमन, राम भरत का चित्रकूट में मिलन, लक्ष्मण-उर्मिला के मिलन का चित्रण है। उर्मिला का विरह वर्णन, उर्मिला की स्मृति कथाओं के रूप में बचपन, जनक राजधानी की पुष्पवाटिका में सीता-राम के समान उर्मिला लक्ष्मण के प्रथम दर्शन में प्रेमोदय, विवाह आदि का वर्णन, चौदह वर्ष की अवधि समाप्त होने पर लंका से सीता राम लक्ष्मण का लौटना और उर्मिला से पुनर्मिलन के वर्णन के साथ साकेत काव्य सम्पूर्ण हो जाता है। काव्य की दृष्टि से 'साकेत' नवम सर्ग अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत यूनिट में साकेत के नवम सर्ग के महत्वपूर्ण पद्यांशों को शामिल किया गया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

साकेत, उर्मिला, लक्ष्मण, विरहिणी, षटऋतु, आदर्श प्रेम, पतिव्रता, व्यथा, समाधान

Discussion / चर्चा

व्याख्या भाग

1. मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप
जलती सी उस विरह में, बनी आरती आप
आंखों में प्रिया-मूर्ति थी, भूले थे सब भोग
हुआ योग से भी अधिक उसका विरह वियोग

आठ पहर चौंसठ घड़ी स्वामी का ही ध्यान

छूट गया पीछे स्वयं उससे आत्मज्ञान।

सन्दर्भ व प्रसंगः प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित महाकाव्य 'साकेत' के नवम सर्ग से अवतरित हैं। इन पंक्तियों में कवि लक्ष्मण के ध्यान में लीन विरहाकुल उर्मिला की दशा का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

व्याख्याः कवि कहते हैं कि उर्मिला ने अपने हृदय रूपी मंदिर में अपने प्रिय पति लक्ष्मण की मूर्ति को स्थापित कर लिया है। विरह के कारण जलती हुई उर्मिला इस मूर्ति के सम्मुख स्वयं ही आरती बनकर जलती रहती है अर्थात जैसे मंदिर में भगवान की मूर्ति के सम्मुख आरती की बाती जलती रहती है, उसी प्रकार वह लक्ष्मण के विरह में जलती रहती है। उसके नेत्रों में सदैव प्रियतम की मूर्ति ही समाई रहती है। वह सांसारिक सुखों को भी त्याग चुकी है। उसकी विरह व्यथा उसके लिए योग साधना से भी अधिक बढ़कर है। उर्मिला सब कुछ भूल कर आठ पहर चौंसठ घड़ी अर्थात रात-दिन अपने प्रियतम की ही याद में डूबी रहती है। यहाँ तक कि उसने अपने आपको भी भुला दिया है।

▶ उर्मिला की विरह व्यथा उसके लिए योग साधना से भी अधिक बढ़कर है

विशेषः उर्मिला की विरह व्यथा का बड़ा ही सहज और स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

अलंकारः रूपक, उपमा, अनुप्रास।

2. करुणे, क्यों रोती है? 'उत्तर' में और अधिक तू रोई मेरी विभूति है जो, उसके उसको भवभूति क्यों कहे कोई?

सन्दर्भ एवं प्रसंगः पूर्ववत

व्याख्याः कभी कहते हैं कि हे करुणा तू क्यों रोती है भवभूति के उत्तररामचरित में तो तू पहले ही अधिक आँसू बहा चुकी है इसके उत्तर में करुणा कहने लगी कि भवभूति को लोग संसार की विभूति बताते हैं किंतु वास्तव में वह मेरी ही विभूति है।

विशेषः

1. यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जब किसी रोते हुए व्यक्ति से उसके रोने का कारण पूछा जाए तो उत्तर में वह और अधिक रोने लगता है।
2. कवि के अनुसार भवभूति के 'उत्तररामचरित ' के पश्चात भी साकेत के नवम सर्ग में करुणा का रोना अनुचित तो नहीं है।

▶ करुणा का मानवीकरण

करुणे, तू क्यों रोती है में मानवीकरण अलंकार है।

3. उस रुदंती विरहिणी के रुदन रस के लेप से
   और पाकर तब उसके प्रिय विरह विक्षेप से
   वर्ण वर्ण सदैव जिनके हो विभूषण कर्म के
   क्यों न बनते कविताओं की ताम्रपत्र सुवर्ण के?

सन्दर्भ व प्रसंगः पूर्ववत

व्याख्याः कवि कहते हैं कि जिस प्रकार 'रुदंती' नामक जड़ी विशेष से ताँबे के पत्र पर लेप करके अग्नि में तपा कर सोना बनाया जाता है, फिर उस सोने से कानों की शोभा को बढ़ाने वाले मनचाहे आभूषण तैयार किए जाते हैं, उसी प्रकार रोती हुई उर्मिला के आँसुओं के लेप

से विरहाग्नि के ताप से कवियों के ताम्र पत्र के समान सामान्य अक्षर सोने के अक्षरों के समान सुंदर व श्रेष्ठ काव्य में क्यों ना परिवर्तित हो जाएँ। भाव यह है कि उर्मिला का विरह व्यापक, आदर्श और सात्विक है कि यदि कोई कवि उसका चित्रण करता है तो उसकी रचना स्वयंमेव ही श्रेष्ठ रचना बन जाएगी।

▶ उर्मिला का विरह व्यापक, सात्विक और गरिमामय है

विशेषः उक्ति तथा अलंकारिक चमत्कार।

अलंकारः रूपक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, अनुप्रास।

4. वेदने, तू भी भली बनी
 पाई मैंने आज तुझी में अपनी चाह घनी,
 नई किरण छोड़ी है तूने, तू वह हीर-कनी,

 सजग रहूँ मैं साल हृदय में, सो प्रिय-विशिख अनी। ठंडी होगी देहब न मेरी, रहे दृगम्बु, सनी
 तू ही उसे उष्ण रखेगी मेरी तपन मनी।
 आ, अभाव की एक आत्मजे, और अदृष्टि जनी,
 तेरी ही छाती है सचमुच उपमोचितस्तनी
 अरी वियोग - समाधि, अनोखी तू क्या ठीक- ठनी, अपने को, प्रिय को, जगती को देखूँ खिंची तनी
 मन-सा मानिक मुझे मिला है तुझ में उपल - खनी, तुझे तभी छोडूँ जब सजनी पाऊँ प्राण-धनी।

सन्दर्भः पूर्ववत

प्रसंगः पति लक्ष्मण के वन चले जाने पर उर्मिला वेदना का भी स्वागत करती है क्योंकि यह उसके प्रिय द्वारा प्रदत्त है ।

व्याख्याः वेदना को संबोधित करती हुई उर्मिला कहती है कि हे वेदने! मेरे लिए तो तू वास्तव में बहुत अच्छी है क्योंकि मैंने तुझ में ही अपनी समस्त इच्छाओं को पाया है। तेरा साथ होने के कारण ही में प्रिय के प्रति प्रेम की प्रगाढ़ता को जान पाई हूँ। तू मेरे लिए हीरे की उस कली के समान है जिसने मेरे हृदय में आशा की एक नवीन ज्योति जगा दी है। ओ प्रिय की स्मृति रूपी बाण की नोक के समान हृदय में चुभने वाली वेदने! तू सदा ही मेरे हृदय में चुभती रह, जिससे मैं सदैव चेतन रहूँ और मेरे हृदय में प्रिय की स्मृति सदैव बनी रहे। मेरा यह शरीर कभी भी ठंडा नहीं होगा, चाहे यह मेरे इस निरंतर बहने वाले आँसुओं से कितना ही भीग जाए क्योंकि हे मेरी सूर्यकांत मणि! तू उसे सदा ही अपनी उष्णता से गर्म रखेगी। उर्मिला कहती है कि हे प्रिय के अभाव में जन्म लेने वाली वेदने! तू अभाव की एकमात्र पुत्री है, प्रिय के दिखाई ना देने पर ही तेरा जन्म होता है। वास्तव में तेरी छाती की उपमा ही दूध के स्तनों से भी जा सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार माँ अपने बच्चे को स्तनपान कराती रहती है, उसी प्रकार वेदना प्रिय के चले जाने पर उर्मिला की देखभाल करती है।

▶ वेदना का मानवीकरण

हे वेदने तू एक अनोखी वियोग की समाधि है। तेरे कारण ही मैं स्वयं को, अपने प्रिय लक्ष्मण को और इस संसार को कभी आसक्ति के भाव से देखती हूँ और कभी अनासक्ति के

भाव से देखती हूँ। वेदना को पत्थर की खान कहकर संबोधित करती हुई उर्मिला कहती है कि तुझी में मुझे अपने मन जैसा माणिक्य मिला है, तुझे मैं तभी छोड़ सकती हूँ, जब मेरे प्राणों के धन लक्ष्मण मुझे मिल जाएंगे।

▶ वेदना का मानवीकरण करके उसके कठोर और कोमल दोनों रूपों की व्यंजन हुई है

विशेषः वेदना का मानवीकरण किया गया है। 'हीरे की कनी, विशिख-अनी और ऊपलखनी आदि विशेषण उसके कठोर रूप की व्यंजना करते हैं' तो नई किरण, उपमोचितस्तनी और माणिक आदि उसके कोमल रूप की व्यंजना करते हैं।

अलंकारः मानवीकरण, रूपकातिशयोक्ति, रूपक उपमा

5. दोनों ओर प्रेम पलता है।

सखि, पतंग भी जलता है हा! दीपक भी जलता है!
सीस हिलाकर दीपक कहता-
'बन्धु वृथा ही तू क्यों दहता?'
पर पतंग पड़ कर ही रहता
कितनी विह्वलता है!
दोनों ओर प्रेम पलता है।
बचकर हाय! पतंग मरे क्या?
प्रणय छोड़ कर प्राण धरे क्या?
जले नही तो मरा करे क्या?
क्या यह असफलता है!
दोनों ओर प्रेम पलता है।
कहता है पतंग मन मारे-
'तुम महान, मैं लघु, पर प्यारे,
क्या न मरण भी हाथ हमारे?
शरण किसे छलता है?'
दोनों ओर प्रेम पलता है।
दीपक के जलनें में आली,
फिर भी है जीवन की लाली।
किन्तु पतंग-भाग्य-लिपि काली,
किसका वश चलता है?
दोनों ओर प्रेम पलता है।
जगती वणिग्वृत्ति है रखती,
उसे चाहती जिससे चखती;
काम नहीं, परिणाम निरखती।
मुझको ही खलता है।

दोनों ओर प्रेम पलता है।

सन्दर्भः पूर्ववत

प्रसंगः

प्रस्तुत पंक्तियों में प्रेम के प्रतीक के रूप में पतंगे और दीपक के माध्यम से प्रेम के दोनों पक्षों को स्पष्ट किया गया है।

व्याख्याः

उर्मिला अपनी सखी से कहती है कि प्रेम दोनों ओर यानी कि आराधक और आराध्य समान रूप से पल्लवित होता है। हे सखी इस बात का प्रमाण यह है कि पतंगा भी जलता है और दीपक भी। दीपक लौ हिला-हिला कर पतंगे से कहता है कि हे वधू तू व्यर्थ ही अपने को क्यों जला रही है परंतु फिर भी पतंगा दीपशिखा में पड़कर जलकर मर जाता है। जब तक पतंगा दीपशिखा में जल नहीं जाता तब तक वह बेचैन ही रहता है, इसलिए प्रेम दोनों ओर समान रूप से पल्लवित होता है। उर्मिला आगे कहती है कि प्रेम की वेदी पर किए जाने वाले आत्मसमर्पण से अपनी रक्षा करना तो पतंगे के लिए मृत्यु से भी कठोर है, वह जलने में ही अपना जीवन सार्थक समझता है। प्राणों की रक्षा करने के लिए प्यार का पथ नहीं त्यागता। जले नहीं तो भला पतंगा और करे क्या? सर्वस्व न्योछावर कर देना क्या उसकी असफलता माना जा सकता है? नहीं यह तो उसके जीवन की महान सफलता है। पतंगा मन मारकर दबे स्वर में दीपक से कहता है 'तुम महान हो और मैं लघु परंतु हे प्रिय क्या हम तुम्हारे लिए तुम्हारे प्रेम के लिए अपने को न्योछावर भी नहीं कर सकते?' शरण किसे खलता है यानी कि जिसकी शरण ली जाती है वह धोखा नहीं देता। प्रेम दोनों ओर समान रूप से पल्लवित होता है। उर्मिला सखी से कहती है कि सखी दीपक के तो जलने में भी जीवन की लाली अर्थात गरिमा है परंतु पतंगे का भाग्य तो देखो उज्ज्वल ना होकर काला ही है अर्थात दीपक जलकर प्रकाश बिखरता है और पतंगा जलकर राख हो जाता है, इस सच्चाई को कौन बदल सकता है, वैसे प्रेम दोनों ओर समान रूप से पल्लवित होता है।

उर्मिला आगे संसार की सच्चाई को बताती हुई कहती है कि संसार में बदले की भावना ही मुख्य है। लोग तो उसी को पसंद करते हैं जिससे उन्हें कुछ लाभ होता है अर्थात दीपक से लाभ होता है तो सब उसकी प्रशंसा करते हैं, पतंगे से उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुंचता तो पतंगे के महानतम त्याग की बिल्कुल भी सराहना नहीं करते। संसार काम नहीं देखता, परिणाम देखता है। प्रेम का कोई मूल्य नहीं समझता। मुझे यह बात अखरती है। प्रेम तो दोनों और समान रूप से पल्लवित होता है।

- पतंगे के त्यागमय प्रेम का चित्रण हुआ है

विशेष- इस गीत में प्रेम के समभाव पर प्रकाश डाला गया है और पतंगे की गणना आदर्श प्रेमियों में की गई है।

6. निरख सखी, ये खंजन आये,

   फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाये!

   फैला उनके तन का आतप, मन-से सर सरसाये,

   घूमें वे इस ओर वहाँ, ये हंस यहाँ उड़ छाये!

   करके ध्यान आज इस जन का निश्चय वे मुस्काये,

फूल उठे हैं कमल, अधर-से ये बंधूक सुहाये!
स्वागत, स्वागत, शरद, भाग्य से मैंने दर्शन पाये,
नभ ने मोती वारे, लो, ये अश्रु अर्ध्य भर लाये!

सन्दर्भः पूर्ववत

प्रसंगः

वर्षा ऋतु के बीत जाने पर शरद ऋतु आती है और साथ ही शरद के आगमन की सूचना देने वाले खंजन पक्षी भी उड़ते दिखाई देते हैं उन्हें देखकर उर्मिला अपनी सखी से कहती है।

व्याख्याः

हे सखी! देखो यह खंजन पक्षी आ गए हैं इन्हें देख कर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे मन को आनंदित करने वाले मेरे प्रियतम लक्ष्मण ने अपने सुंदर नेत्रों को मेरी ओर घुमाया है। भाव यह है कि यह आकाश में उड़ते हुए खंजन पक्षी अयोध्या की ओर घूम आए हुए लक्ष्मण के नेत्र हैं। चारों ओर जो सुहानी धूप फैली हुई है, वह भी मुझे ऐसी प्रतीत होती है मानो प्रिय लक्ष्मण के शरीर का प्रकाश ही चारों ओर फैला हो। स्वच्छ निर्मल जल वाले सरोवरों में जो सरसता है, मेरे प्रिय के मन की ही प्रेम भरी सरसता है। आकाश में उड़ते हुए जो हंस दिखाई दे रहे हैं वह हंस नहीं है अपितु मेरे प्रिय का मुझे याद कर इस ओर घूमना है। सरोवरों में जो खिले हुए कमल और दुपहरिया के फूल दिखाई देते हैं वे कमल और दुपहरिया के फूल नहीं है, बल्कि मन ही मन मुस्कराने से अधरों पर आई मुस्कान ही यहां खिले हुए कमल और दुपहरिया के फूलों के रूप में दिखाई दे रही है। शरद के आगमन का अभिनंदन करती हुई उर्मिला आगे कहती है कि शरद ऋतु आओ तुम्हारा स्वागत है, बार-बार स्वागत है। आज मेरा सौभाग्य है कि मुझे तुम्हारे दर्शन हुए हैं तुम्हारे आने की प्रसन्नता में आज आकाश ओस बिंदु रूपी मोती तुम्हारे ऊपर न्यौछावर कर रहा है और मैं तुम्हें आँसुओं का अर्ध्य चढ़ाती हूँ।

▶ उर्मिला प्रकृति के हर उपकरण में अपने पति की छाया को देख रही है

विशेषः शरद ऋतु के आगमन पर प्रत्येक प्राकृतिक उपकरण में उर्मिला को अपने प्रियतम की छवि नज़र आती है।

▶ प्राकृतिक उपकरणों में प्रिय की छाया देखना एक साहित्यिक परंपरा रही है।

अलंकारः उपमा, रूपकातिशयोक्ति, पुनरुक्ति प्रकाश

7. मुझे फूल मत मारो,
मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो।
होकर मधु के मीत मदन, पटु, तुम कटु गरल न गारो,
मुझे विकलता, तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो।
नही भोगनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो,
बल हो तो सिन्दूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो!
रूप-दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण-धूलि उस रति के सिर पर धारो!

सन्दर्भ व प्रसंगः पूर्ववत

व्याख्याः

उर्मिला कामदेव को संबोधित कर कहती हैं हे कामदेव! मुझे पुष्प वाणों से घायल कर अपने वश में करने की कोशिश मत करो। मैं तो अबला हूँ, योगिनी भी हूँ। मेरे ऊपर कुछ तो दया विचारो। हे मदन तुम मधुर वसंत ऋतु के मित्र होकर मुझ पर विष तो मत गिराओ। मेरे प्रति तुम्हारी निष्ठुरता उचित नहीं है। तुम्हारे इस कार्य से मुझे व्याकुलता होगी किंतु तुम्हें सफलता भी नहीं मिलेगी। इसलिए यह व्यर्थ प्रयास छोड़ दो। मैं कोई विलासिनी नहीं हूँ, जिसे तुम अपने जाल में फंसाने का प्रयास कर रहे हो। यदि तुम्हारे अंदर शक्ति हो तो मेरी इस सिंदूर की बिन्दी की ओर देखो। यह तुम्हें भस्म करने वाला साक्षात शिव नेत्र ही है। हे कामदेव यदि तुम्हें अपने रूप पर गर्व है तो तुम्हारा यह रूप मेरे प्रियतम के चरणों पर न्यौछावर है। यदि तुम्हें रति के प्रेम का गर्व है तो मेरी चरण धूलि उस रति के मस्तक पर डाल दो।

काव्य सौन्दर्यः

- इन पंक्तियों में अपने पतिव्रत और अपने प्रियतम लक्ष्मण के सौंदर्य के प्रति उर्मिला का गर्व दर्शनीय है।
- वसंत ऋतु के आगमन पर विरहिणी उर्मिला कामदेव पर किस तरह से विजय प्राप्त करती है, उसका बड़ा ही गरिमामय चित्रण गुप्त जी ने इन पंक्तियों में किया है।

भाषा	-	परिष्कृत खड़ीबोली।
छंद	-	गेय पद।
अलंकार	-	श्लेष, रूपक, अनुप्रास, यमक।
रस	-	वियोग।
शैली	-	मुक्तक।

- उर्मिला आदर्श और गरिमामय व्यक्तित्व की धनी है

8. यही आता है इस मन में,
छोड़ धाम-धन जा कर मैं भी रहूँ उसी वन में।
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालूँ, रहूँ निकट भी दूर,
व्यथा रहे, पर साथ साथ ही समाधान भरपूर।
हर्ष डूबा हो रोदन में,
यही आता है इस मन में।
बीच बीच में उन्हें देख लूँ मैं झुरमुट की ओट,
जब वे निकल जायँ तब लोटूँ उसी धूल में लोट।
रहें रत वे निज साधन में,
यही आता है इस मन में।
जाती जाती, गाती गाती, कह जाऊँ यह बात-
धन के पीछे जन, जगती में उचित नहीं उत्पात।

संदर्भः पूर्ववत

प्रसंगः

इन पंक्तियों में उर्मिला अपनी विरह व्यथा व्यक्त करती हुई कहती हैं कि वह इस संसार

से ऊब चुकी हैं।

व्याख्याः

उर्मिला कहती हैं कि मेरे मन में यही आता है कि इस घर को,धन और वैभव को, सब को छोड़कर मैं भी उसी वन में जाकर रहूँ, जहाँ मेरे प्रिय रहते हैं। पर वह यह भी कहती हैं कि मैं वहाँ रहकर उनके व्रत में बिल्कुल भी बाधा नहीं बनूंगी। वन में रहना पास रहना ही होगा पर उनसे इतनी दूर ज़रूर रहूंगी कि जिससे उनके व्रत में व्यवधान ना हो। उर्मिला आगे कहती हैं कि मैं उन्हें बीच-बीच में देख लिया करूंगी। किसी झुरमुट की ओट से। और जब मेरे प्रिय वहाँ से आगे निकल जाएंगे तो मैं उस धूल में लोटपोट कर शांति पा लूंगी, पर उनके कार्य में कभी भी बाधा नहीं डालूंगी। मैं यही चाहती हूँ कि वे हमेशा अपने कर्तव्य कर्म में लगे रहें। उर्मिला यहाँ एक और बात कहना चाहती हैं कि इस संसार में धन के पीछे उत्पात मचाना बिल्कुल भी उचित नहीं है जैसा कि उत्पात राज्य कामना के लिए उनके परिवार में हुआ था।

विशेषः उर्मिला का आंतरिक द्वंद इन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है। राज्य कामना के लिए उनके परिवार में हुए अलगाव से उनका मन कितना दुखी है, यह भी यहाँ स्पष्ट हुआ है।

भाषा	-	शिष्ट और प्रौढ़ खड़ीबोली
रस	-	वियोग
अंलकार	-	अनुप्रास

राज्य कामना में परिवार किस तरह बिखर जाता है और धन के पीछे जगत में उत्पात उचित नहीं है, यही उर्मिला के मुख से गुप्त जी ने कहलवाया है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

माँ वीणापाणि के वरद पुत्र राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित महाकाव्य ‘साकेत’ हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। साहित्य के अनेक उपेक्षित प्रसंगों का सहृदय कवि की लेखनी द्वारा अन्धकार से आलोक में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। साकेत का नवम सर्ग भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पति के चौदह वर्षों की वियोगावधि में उर्मिला के अंतर को जिन भावों से होकर गुज़रना पड़ा, उनकी अभिव्यक्ति नवम सर्ग के माध्यम से हुई है। उर्मिला के संयोग के अनंतर वियोग के चित्रों का प्रदर्शन कवि को अभीष्ट था। अस्तु उन्होंने साकेत का सर्जन ही विरहिणी उर्मिला के अश्रुओं पर करुणार्द्र होकर किया था और नवम सर्ग में यह विरह चित्रण अत्यंत विस्तार के साथ हुआ है। अतः स्वाभाविक ही है कि इस सर्ग का महत्त्व अन्य सभी सर्गों से बढकर है। अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों ही दृष्टि से साकेत का नवम सर्ग निःसंदेह अत्यंत वैभवशाली है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. उर्मिला के विरह वर्णन में प्राचीनता और नवीनता समावेश है। स्पष्ट कीजिये।
2. करुणे, क्यों रोती है? 'उत्तर' में और अधिक तू रोई मेरी विभूति है जो, उसके उसको भवभूति क्यों कहे कोई? व्याख्या कीजिये।
3. नही भोगनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो, स्पष्ट कीजिए।
4. बल हो तो सिन्दूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो! व्याख्या कीजिये।
5. उर्मिला का विरह वर्णन पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. मैथिलीशरण गुप्त का काव्य, डॉ. एल. सुनीता
3. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी भावना, डॉ. मधुबाला रोहतगी

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. साकेतः एक अध्ययन, डॉ. नागेन्द्र
2. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृर्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नागेन्द्र, डॉ. हरदयाल

अन्तर्जाल सन्दर्भः

1. www.subhashita .com
2. www.deshbandhu.co. in
3. www.sahitykunj .net
4. www.Hindi.lok.com

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

साकेत की ऊर्मिला, ऊर्मिला का विरह-वर्णन, गुप्त जी की नारी भावना, साकेत का काव्य सौष्ठव

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- साकेत के नवम सर्ग के काव्य सौष्ठव से परिचित होता है
- मैथिलीशरण गुप्त जी की नारी भावना से परिचित होता है
- उर्मिला के चरित्र की विशेषताओं को जानता है

Background / पृष्ठभूमि

उर्मिला के त्याग और तपोमय जीवन का वर्णन कर कवि ने भोगवृत्ति पर त्याग की, दैहिक प्रेम पर आत्मिक प्रेम की विजय घोषित की है। प्रेम जीवन की ऊर्जा है, प्रेम शक्ति है, भक्ति है, नीति है। उर्मिला ने चौदह वर्षों तक प्रियतम से अलग रहकर अपना कर्तव्य निभाया। उधर लक्ष्मण ने अपने भाई की सेवा के महान व्रत का पालन किया। त्याग की श्रेष्ठता, कर्तव्य की वरीयता तथा प्रेम की अद्वितीयता सिद्ध करना ही कवि का उद्देश्य रहा है, साथ ही साथ हिन्दी काव्य में नारी पात्रों को स्थापित कर नारी जागरण को गति देना भी कवि का उद्देश्य है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

विरहिणी, त्याग की मूर्ति, षटऋतु वर्णन, मानसिक व्यथा, नारी भावना, काव्य सौष्ठव

Discussion / चर्चा

1.4.1 साकेत की उर्मिला

- उर्मिला के व्यक्तित्व को इतनी गरिमा और उदात्तता 'साकेत' के माध्यम से गुप्त जी ने ही प्रदान की और इसके लिए हिन्दी साहित्य गुप्त जी का हमेशा ऋणी रहेगा

'साकेत' महाकाव्य की नायिका उर्मिला मैथिलीशरण गुप्त जी की एक ऐसी सृष्टि है, जो आदरणीय भी है और अनुकरणीय भी। रघुकुल की गौरव गाथा हम सभी ने सुनी है, लेकिन यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि उर्मिला के व्यक्तित्व को इतनी गरिमा और उदात्तता 'साकेत' के माध्यम से गुप्त जी ने ही प्रदान की और इसके लिए हिन्दी साहित्य गुप्त जी का हमेशा ऋणी रहेगा। साकेत का नवम् सर्ग उर्मिला के आँसुओं से सिक्त है। उर्मिला का चरित्र हर उस भारतीय नारी के लिए प्रेरणादायक है जो विपत्ति आने पर अपने अस्तित्व को भुलाकर

निराश हो उठती है। उर्मिला के चरित्र की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

1. **विरहिणीः** नववधू उर्मिला ने जब पति संग राज महल में प्रवेश किया था तो उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि पति से चौदह वर्षों का विरह उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। विरह का वज्रपात उसने तड़प-तड़प कर सहा था-

"मानस - मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप जलती-सी उस विरह में बनी आरती आप"

. . . .

आठ पहर चौंसठ घड़ी, स्वामी का ही ध्यान!
छूट गया पीछे स्वयं, उसका आत्मज्ञान!!

चौदह वर्षों तक एक-एक दिन, एक-एक पल उर्मिला ने अपने पति की याद में बिताया था -

'अवधी शिला का उस पर था गुरु भार
तिल-तिल काट रही थी दृग-जल-धार'

2. **आदर्श गृहणीः**

▶ उर्मिला का व्यक्तित्व स्वाभिमान से भरा हुआ है

उर्मिला गृहस्थ जीवन के उत्तरदायित्व को बड़ी ही तन्मयता के साथ निभाती है। कैकयी को दिया हुआ वचन निभाने की बहुत बड़ी कीमत उर्मिला ने भी चुकाई थी। महलों में रहकर वनवास तो उर्मिला ने ही भोगा था। पति के चले जाने के बाद पति के परिवार के साथ रहकर अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाया था-

"बनाती रसोई सभी को खिलाती
इसी काम में आज मैं तृप्ति पाती"

3. **पति के वचन में बंधीः** उर्मिला चाहती तो पति के वन चले जाने के बाद राजा जनक के पास जा सकती थी। अपने माता-पिता साथ रहने से शायद उनका दुख कुछ कम हो जाता, लेकिन वह अपने पति के परिवार को ही अपना परिवार मानती है। वहीं रहकर अपने पति की प्रतीक्षा करती है।

4. **विरह का सर्जनात्मक उपयोगः**

उर्मिला विरह में केवल रोते रहने के बजाय कला के माध्यम से उसका सर्जनात्मक उपयोग करने पर बल देती है। तूलिका, वीणा से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

5. **वीरता की प्रतिमूर्तिः**

▶ उर्मिला विरह का सर्जनात्मक उपयोग करती है

उर्मिला केवल राज महल में रहने वाली सुकुमारी नहीं है, अवसर आने पर वह वीरता और धीरता का परिचय भी देती है। लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने की सूचना मिलते ही उर्मिला का रूप ही बदल जाता है-

"शत्रुघ्न समीप रुकी लक्ष्मण की रानी
प्रकट हुई ज्यों कार्तिकेय के निकट भवानी।"

6. **उदात्त गरिमामय व्यक्तित्वः**

साकेत उर्मिला का व्यक्तित्व स्वाभिमान से भरा हुआ है। अपने पति लक्ष्मण के सौंदर्य पर उर्मिला को अभिमान है और अपने पतिवृत पर गर्व भी। कामदेव से कही गई उसकी यह बात इस सन्दर्भ में दृष्टव्य है-

नहीं भोगनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो,
बल हो तो सिन्दूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो!
रूप-दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण-धूलि उस रति के सिर पर धारो!

7. **विवेकवानः**

उर्मिला सही गलत में अंतर कर सही का चुनाव करना अच्छी तरह से जानती है। उसकी यह पंक्तियाँ उसकी समझदारी का ही प्रतीक हैं-

"हम राज्य लिए मरते हैं!
प्रभु को निष्कासन मिला, मुझको कारागार,
मृत्यु-दण्ड उन तात को, राज्य, तुझे धिक्कार!"

▶ उर्मिला त्याग की साक्षात् मूर्ति

उर्मिला धन के पीछे उत्पात न मचाने को कहती है:

"जाती जाती, गाती गाती, कह जाऊँ यह बात-
धन के पीछे जन, जगती में उचित नहीं उत्पात।"

8. **त्याग की मूर्तिः**

उर्मिला त्याग की साक्षात मूर्ति है। पति के बिना राज महल के सुख और भोग का उसके लिए कोई भी महत्व नहीं है-

"यही आता है इस मन में,
छोड़ धाम-धन जा कर मैं भी रहूँ उसी वन में।"

इस प्रकार उर्मिला के चरित्र-चित्रण में गुप्त जी ने अपनी श्रेष्ठ काव्य - प्रतिभा का परिचय दिया है। वह दिव्य-सौन्दर्य की धनी, शीलवान, भावुक, मर्यादाप्रिय एवं धैर्य की सजीव प्रतिमा है। उर्मिला भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रतिष्ठित एक आदर्श गरिमामय व्यक्तित्व है। साकेत अगर हिन्दी साहित्य की धरोहर है तो उर्मिला का पात्र इस धरोहर का सबसे कीमती नगीना।

▶ उर्मिला दिव्य-सौन्दर्य की धनी

1.4.2 उर्मिला के विरह-वर्णन

सारा संसार इस बात को जानता है कि कैकयी के वचन निभाने के लिए राम, लक्ष्मण, सीता जी ने वनवास लिया था। अपने प्रियतम लक्ष्मण के बिना राजमहल में रहकर भी वनवास जिसे जीना पड़ा था उस उर्मिला के मन की वेदना से सारा संसार अनजान रहा। मैथिलीशरण गुप्त जी ने साकेत में उर्मिला के विरह का बड़ा ही मर्मस्पर्शी वर्णन किया है इस विरह वर्णन की विशेषताओं को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

1. प्राचीनता का निर्वाहः प्राचीन परंपरा निर्वाह में विरह ताप, विरह जन्य कृशता, अश्रु प्रवाह, ऋतु वर्णन की परंपरा अपनाई जाती रही है। तिल-तिल कर विरह की अग्नि में जलती उर्मिला का चित्रण भी गुप्त जी ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है:

"मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप
जलती सी उस विरह में, बनी आरती आप"

उर्मिला की हालत बड़ी ही दयनीय हो जाती है। इस अवस्था का अंकन कवि कुछ इस

प्रकार करते हैं:

"मुख कांति पड़ी पीली-पीली
आँखें अशांत नीली-नीली"

पिता का वचन निभाने के लिए श्री राम, लक्ष्मण और सीता माता ने वनवास स्वीकारा लेकिन उर्मिला ने राजमहल के उपवन को वन समझ लिया और तपस्विनी का सा जीवन बिताया। उर्मिला ने सारी वेदना को मन ही मन सहा। चौदह वर्षों तक मन को ही समझाती रही। अपने प्रियतम के कर्तव्य-पथ में वह कभी भी विघ्न नहीं पहुँचाना चाहती:

▶ उर्मिला पति के कर्तव्य-पथ में बाधा नहीं होना चाहती थी

"हे मन
तू प्रिय- पथ का विघ्न न बन"

षट्- ऋतु वर्णन की परंपरा में ऋतु परिवर्तन के साथ परिवर्तित मानसिक दशा का भी गुप्त जी ने चित्रण किया है। साकेत के षटऋतु वर्णन का प्रारंभ ग्रीष्म से होता है और वसंत में उसकी समाप्ति। उर्मिला को लगता है कि ग्रीष्म की इतनी भारी उष्णता का कारण उसके प्रियतम का तप ही है:

"इतना तप न तपो तुम प्यारे
जले आग - सी जिस के मारे"

ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु आती है। बादलों को देखकर उर्मिला संयोग की स्मृतियों में डूब जाती है। फिर शरद ऋतु का आगमन होता है। विरहिणी उर्मिला शरद ऋतु का भी स्वागत करती है:

"स्वागत स्वागत शरद्
भाग्य से मैंने दर्शन पाये"

खंजन पक्षियों को देखकर उर्मिला को अपने प्रियतम की आँखों का आभास होता है:

"निरख सखी ये खंजन आए
फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाए"

हेमन्त की सुहावनी ऋतु में उर्मिला पुरानी सुखद यादों में खो जाती है। शिशिर ऋतु के आगमन पर हर जगह कोहरा छा जाने पर उसे यह विरहाग्नि का धुआँ सा प्रतीत होता है। ऋतुराज वसन्त का आगमन उर्मिला को प्रियतम के सौन्दर्य और तप से बांधे रखता है।

▶ ऋत परिवर्तन के साथ उर्मिला के परिवर्तित मानसिक दशा का वर्णन

2. **नवीनता का समावेश:**

गुप्तजी ने साकेत में उर्मिला के विरह वर्णन में नवीनता का समावेश किया है उन्होंने उसकी विरह दशा का संवेदनात्मक और मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। उर्मिला कभी-कभी ना खाने पीने की जिद करती है लेकिन फिर वह जिद छोड़ भी देती है क्योंकि उसे अपने प्रियतम के वापस आने तक जीवित रहना भी तो है इसीलिए सखी सुलक्षणा से उर्मिला कहती है की एक बार प्रियतम के पैर पकड़कर फिर चाहे वही मर जाए लेकिन वनवास की अवधि समाप्त होने तक उसे जीवित रहना है:

"पिऊँ, ला खाऊँ ला, सखी पहन लूँ ला, सब करूँ, जिऊँ मैं जैसे हो, यह अवधि का अर्णव तरूँ।

कहे जो मानूं सो, किस विधि बता धीरज धरुँ,

अरे कैसे भी तो पकड़ प्रिय के वे पद मरूँ"

विरह की अवस्था में हृदय कोमल हो जाता है और उदारता की भावना मन में जाग उठती है। जो विरह में तड़प रहा होता है उसे सहानुभूति की इच्छा रहती है और दूसरों के प्रति भी सहानुभूति का भाव उसके मन में जागृत हो जाता है। उर्मिला का मन भी जगत के समस्त प्राणियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण हो जाता है, तभी तो वह सखी से पिंजरे में बंद पक्षी को उड़ा देने के लिए कहती है:

"सखी उड़ा दे, हों सभी मुक्ति मानी"

यहाँ तक कि वह एक मकड़ी पर भी दया करती है

"सखी, न हटा मकड़ी को
आई है वह सहानुभूति-वशा"

डॉ. नगेंद्र इस संबंध में कहते हैं कि काव्य में मकड़ी जैसे जीवों से सहानुभूति दिखाने का यह कदाचित पहला अवसर है।

3. **उर्मिला का आदर्श कुलवधू रूप:**

उर्मिला राजघराने की कुलवधू के रूप में उपस्थित हुई है भावोत्तेजना के क्षणों में भी उसे अपना पारिवारिक रूप विस्मृत नहीं हुआ है। उसने राज कुल की मर्यादा का आदि से अंत तक निर्वाह किया है।

> ▶ 'साकेत' का विरह वर्णन इतना प्रभावशाली रहा कि हर सहृदय पाठक उर्मिला के प्रति सहानुभूति रखता है और उसके त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है

4. **गीतों का समावेश:**

गीतों का समावेश इस विरह वर्णन की अनूठी विशेषता है। प्रबंध के कलेवर में गीतों को स्थान देना शैलीगत ही नहीं, बल्कि काव्यात्मक महत्व भी रखता है।

5. **आदर्श और कामना का संघर्ष:**

उर्मिला ने कर्तव्य की शिला पर बैठकर अनगिनत आँसू बहाए हैं, लेकिन वह कभी भी अपने कर्तव्य के मार्ग से विचलित नहीं हुई। पति के घर में रहकर ही वनवास समाप्ति की अवधि तक उसने अपने प्रियतम का इंतज़ार किया।

1.4.3 गुप्त जी के काव्य में नारी-भावना

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में हमारे भारतीय संस्कारों और संवेदना की अनुगूंज सुनाई देती है। गुप्त जी ने भारतीय संस्कृति के महत्व को उजागर करते हुए तत्कालीन समाज के यथार्थ को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। दलितों, किसानों और स्त्रियों की पीड़ा को काव्य में स्थान देकर उन्होंने उनके उद्धार का प्रयास किया क्योंकि मैथिलीशरण गुप्त जी अपने समाज की कुप्रथाओं का शिकार हो रही स्त्री को सामाजिक रूप से अपमानित होने से बचाना चाहते थे इसके लिए उन्होंने कथाओं की उपेक्षित स्त्री पात्रों को नई भाव भंगिमा प्रदान कर अपने काव्य में प्रस्तुत किया। सीता, द्रोपदी, उर्मिला, यशोधरा और विष्णु प्रिया जैसी स्त्री पात्रों की सृष्टि इसी बात का सशक्त प्रमाण है।

गुप्त जी के नारी संबंधी विचारों को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

1. **नारी की महत्ता की स्थापना:**

गुप्तजी अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी को अत्यधिक महत्व देते हैं-

'एक नहीं दो-दो मात्राएँ नर से भारी नारी।'

गुप्तजी ने भारतीय नारियों को त्याग, तपस्या, ममता, करुणा की प्रतिमूर्ति माना है, और अपने मन की अवधारणा के अनुसार ही स्त्री पात्रों की सृष्टि की है। विष्णु प्रिया में विष्णुप्रिया सामान्य ग्रहणी है। महाप्रभु चैतन्य धर्म प्रसार हेतु और देश कल्याण के लिए घर त्याग देते हैं और ऐसे में पत्नी विष्णु प्रिया को विरह पीड़ा भोगनी पड़ती है। मैथिलीशरण गुप्त जी विष्णु प्रिया के चरित्र को स्वाभिमान और गरिमामय व्यक्तित्व का धनी मानते हैं और उसे इस उदात्त रूप में प्रस्तुत भी करते हैं। महाप्रभु चैतन्य से कहलाते भी हैं-

"कि हाय प्यारी विष्णुप्रिया बोले हंसकर ही

तुम अवरोध ही नहीं, अब हो प्रबोधिनी विष्णु प्रिया"

गुप्त जी इस सत्य को उजागर कर देना चाहते हैं कि महापुरुष की गौरव गाथा के पीछे किसी न किसी स्त्री का त्याग, बलिदान ज़रूर होता है जिस पर कि सारा संसार ध्यान भी नहीं देता। युद्ध भूमि में वीर मृत्यु को प्राप्त हर वीर पहले अपनी माँ का ही सपूत होता है। माँ, पत्नी, बहन हर रिश्ते की अपनी गरिमा है। स्त्रियों का त्याग और प्रेरणा पुरुष की संभल हुआ करती है ऐसे ही गरिमामय व्यक्तित्व से संपन्न स्त्री पात्रों की सृष्टि गुप्त जी ने की है।

2. **पति परायणा अनुरागिनी पत्नीः**

गुप्त जी की सभी स्त्री पात्र पति परायणा और अनुरागिनी पत्नी हैं। वे पति के कर्तव्य पथ में कभी भी बाधा बनकर नहीं रहना चाहती। साथ ही अपने पति के प्रति उनके हृदय में अथाह प्रेम भाव भी है गुप्तजी ने सीता माता को भी आदर्श पत्नी के रूप में चित्रित किया है 'पति ही पत्नी की गति है'।

उर्मिला के माध्यम से कवि ने भारतीय नारी का आदर्श उपस्थित किया है। उर्मिला आदर्श भारतीय नारी का प्रतिरूप है। वह पति के कर्तव्य पथ में कभी भी बाधा नहीं बनना चाहती। इसलिए वह अपने मन को हमेशा समझाती रहती है-

▶ कर्तव्य परायण नारी के रूप में उर्मिला का वर्णन

"हे मन! तू प्रिय पथ का विघ्न न बन।"

वह आदर्श पत्नी है, लेकिन उसका प्रेम बिल्कुल भी स्वार्थी नहीं है। पति की अनुपस्थिति में भी वह परिवार के साथ रहती है।

3. **नारी का विरहिणी रूपः**

गुप्त जी ने नारी के विरहिणी रूप का भी चित्रण किया है। साकेत की उर्मिला के विर-वर्णन में कितनी संवेदनशीलता हैः

मानस - मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप जलती -सी उस विरह में बनी आरती आप।।

उर्मिला का विरह इतना तीव्र है कि उसे प्रकृति के कण-कण में, हर जीव में अपने पति की ही छवि नजर आती है-

"निरख सखी ये खंजन आए

फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाए"

4. **नारी का स्वाभिमानी रूपः**

गुप्त जी कृत यशोधरा में यशोधरा के बिरही जीवन की दारुण कथा चित्रित है गौतम

बुद्ध अपने परम लक्ष्य के पथ पर चलने के लिए गृह त्याग देते हैं अपनी जीवनसंगिनी और छोटे से पुत्र को नींद में सोता हुआ छोड़कर बिना कहे ही घर से चले जाते हैं यह यशोधरा के लिए स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने वाली बात ही तो थी यशोधरा विरह वेदना को सहन नहीं कर पाती-सिद्धि हेतु स्वामी गए यह गौरव की बात पर चोरी-चोरी गए यही बड़ा व्याघात

"सखि वे मुझसे कहकर जाते
कह तो क्या वे मुझे अपनी पथ बाधा ही पात"

उर्मिला का चरित्र भी स्वाभिमानी स्त्री का ही प्रतिरूप है। उसका कामदेव से कहा गया यह कथन इसी बात का ही प्रमाण है:

▶ "स्वाभिमानी नारी के रूप में यशोधरा और उर्मिला का चित्रण"

"नहीं भोगनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो,
बल हो तो सिन्दूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो!
रूप-दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण-धूलि उस रति के सिर पर धारो!"

5. **नारी का वात्सल्यमयी रूपः**

गुप्त जी ने नारी के वात्सल्यमयी रूप का भी चित्रण किया है। कैकयी के द्वारा अपनी भूल के लिए पश्चाताप भी वे उजागर करते हैं। शोक और आत्मग्लानि से परिपूर्ण कैकेयी के अन्दर की व्यथा इन शब्दों में व्यक्त हुई है-

"युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी,
'रघुकुल' में भी थी एक अभागिन रानी
निज जन्म-जन्म में सुने जीव यह मेरा धिक्कार!
उसे था महा स्वार्थ ने घेरा।"

तब श्री राम से कहते हैं:

"सौ बार धन्य वो एक लाल की माई
जिस जननी ने जना भरत सा भाई
पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई
सौ बार धन्य हो एक लाल की माइ"

6. **समस्त प्राणियों के प्रति सहानुभूति रखने वाली स्त्रीः**

कवि ने ऐसे नारी पात्रों को प्रतिष्ठित किया है जो संसार के समस्त प्राणियों के साथ सहानुभूति रखती हैं। साकेत की उर्मिला मकड़ी के प्रति भी सहानुभूति रखती है :-

"सखी, न हटा मकड़ी को
आई है वह सहानुभूति-वशा"

7. **विवेकशीला और जीवन मूल्यों की पक्षधर स्त्रीः**

गुप्त जी की स्त्री पात्र विवेकशीला हैं, जीवन मूल्यों की पक्षधर हैं। साकेत की उर्मिला का यह कथन इसी बात को रेखांकित करता है -

"जाती जाती, गाती गाती, कह जाऊँ यह बात
धन के पीछे जन, जगती में उचित नहीं उत्पात।"

8. **स्त्री का अर्धांगिनी रूपः**

हमारी संपूर्ण सृष्टि में पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों के पूर्ण सहयोग से ही यह दुनिया चलती है। स्त्री के अर्धांगिनी रूप को ही कवि अपनी रचनाओं में स्थापित भी करते हैं।

निज स्वामियों के कार्य में समभाग जो लेती न वे,
अनुराग पूर्वक योग जो उसमें सदा देती न वे।
तो फिर कहाती किस तरह अर्धांगिनी सुकुमारियाँ,
तात्पर्य यह अनुरूप ही थी नर वरों के नारियाँ।

▶ गुप्त जी ने नारी के उज्ज्वल, सौम्य, गरिमामय, भव्य, संघर्षशील और गौरवशाली व्यक्तित्व को उजागर किया है

इस प्रकार गुप्त जी के स्त्री पात्रों के माध्यम से हम गुप्त जी के स्त्रियों के प्रति विचारों को भलीभांति समझ सकते हैं। गुप्त जी ने अपने काव्य में नारी के आदर्श परिणिता रूप का चित्रण किया है। उन्होंने सीता, यशोधरा, उर्मिला, कौशल्या, द्रोपदी आदि पात्रों के माध्यम से नारी के उज्ज्वल, सौम्य, गरिमामय, भव्य, संघर्षशील और गौरवशाली रूप को निरूपित किया है।

1.4.4 साकेत के नवम् सर्ग का काव्य-सौष्ठव

माँ शारदा के वरद पुत्र राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। प्रस्तुत रचना में गुप्त जी ने युग-युग से कवियों द्वारा उपेक्षित उर्मिला के जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है। चिरपुरातन रामकथा में से उर्मिला के पात्र को चुनकर उसे इतनी गरिमा प्रदान करना वाकई गुप्त जो का कवि- कौशल नहीं तो भला क्या है? साकेत के नवम् सर्ग में वर्णित विरह वर्णन ने उर्मिला के व्यक्तित्व को गरिमामय और उज्ज्वल स्थान पर प्रतिष्ठित किया है।

▶ साकेत के नवम् सर्ग में वर्णित विरह वर्णन ने उर्मिला के व्यक्तित्व को गरिमामय और उज्ज्वल स्थान पर प्रतिष्ठित किया है

भाषा और भाव की दृष्टि से, कला और अभिव्यंजना की दृष्टि से, तथा कल्पना और मनोहारिता की दृष्टि से साकेत का नवम् सर्ग अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इसे हम 'साकेत' का हृदय और आत्मा कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रस्तुत काव्य-रचना का अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष दोनों ही शानदार हैं। नवम् सर्ग के काव्य-वैभव को समझने के लिए हम इसके भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों पर ही संजीदगी से विचार-विमर्श करेंगे।

1.4.4.1 भावपक्ष

गुप्त जी ने साकेत के नवम् सर्ग में ऊर्मिला विरह के अंतर्गत विरह की जितनी भी दशाएँ हो सकती है, सभी का बड़ा ही सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। उर्मिला का विरह वर्णन अत्यंत ही मार्मिक बन पड़ा है। विरह-वर्णन की परंपरागत शैली व नूतन प्रणाली दोनों ही इसमें दिखलाई पड़ती हैं। प्राचीन कवियों की रीतिबद्धता इसमें विद्यमान है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक कवियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी निहित है। विरहिणी उर्मिला अपने कर्तव्य को विस्मृत नहीं करती। स्वयं दुखी होते हुए भी दूसरों के प्रति भी उसके मन में सहानुभूति है। अस्तु यह स्पष्ट हो जाता है कि वियोग श्रृंगार की मार्मिक अभिव्यंजना की दृष्टि से साकेत के नवम् सर्ग का अपना ही एक महत्व है।

भावों को रम्य और आकर्षक बनाने के लिए कवि जन कल्पना का सहारा लेते हैं। 'साकेत' के नवम् सर्ग में भी जहाँ-तहाँ मनोहारी कल्पनाओं का आलोक झलकता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है-

"पहले आँखों में से मन में कूद मग्न प्रिय अब थे छींटे वहीं उड़े थे बड़े-बड़े अश्रु वे कब थे?"

गुप्ता जी ने भी कल्पना का सहारा भावों की उत्कृष्टता के लिए किया है। गुप्त जी की कल्पना का पक्षी भावना की उड़ान को उत्कृष्टता के आसमान में ले जाता है और काव्य की संपूर्ण भूमि को आच्छादित कर लेता है। 'साकेत' के नवम् सर्ग में प्रकृति चित्रण भी शानदार है। कवि ने बदलती हुई ऋतुओं का उर्मिला के मन पर पड़े प्रभाव को अत्यंत निपुणता के साथ अभिव्यक्त किया है। उन्होंने ऋतु की विशेषताओं के साथ-साथ वियोगावस्था का पूर्ण सामंजस्य दिखाया है। गुप्त जी के षटऋतु वर्णन में उर्मिला संपूर्ण प्रकृति में अपनी मनोभावना की छाया देख रही है। इसका अति उत्तम उदाहरण दृष्टव्य है:

"वह कोइल, जो कूक रही थी, आज हूक भरती है,
पूर्व और पश्चिम की लाली रोष-वृष्टि करती है।
लेता है निःश्वास समीरण, सुरभि धूलि चरती है,
उवल सूखती है जलधारा, यह धरती मरती है।
पत्र-पुष्प सब बिखर रहे हैं, कुशल न मेरी-तेरी,
जीवन के पहले प्रभात में आँख खुली जब मेरी,"

▶ प्रकृति संदरता का वर्णन नवम् सर्ग में किया है

प्रकृति सुंदरी के पट परिवर्तन के साथ-साथ उर्मिला का अंतर भी प्रतिक्रिया ग्रहण करता है। इन सभी का गुप्त जी ने बड़ा ही सहज चित्र प्रस्तुत किया है।

1.4.4.2 कला-सौष्ठव

न केवल भाव की दृष्टि से बल्कि कला-सौष्ठव की दृष्टि से साकेत का नवम् सर्ग अनुपम है। भाषा, शैली, रस, छंद, अलंकार, का जो वैभव हमें इसमें दिखाई पड़ता है, वह भव्य और शानदार है। कवि ने करुणा को कुछ इस तरह से संबोधित किया है-

"करुणे क्यों रोती है 'उत्तर' में और अधिक तू रोई
मेरी विभूति है जो, भवभूति क्यों कहे कोई।"

इस आर्या छंद का चमत्कार दर्शनीय है। इसमें व्यंजना का सुंदर रूप उपस्थित है। 'उत्तर' एवं 'भवभूति' शब्द श्लिष्ट है। 'उत्तर' 1. जवाब 2. उत्तर रामचरित।

भवभूति- 1. संसार की विभूति
2. शिव की विभूति अर्थात राख
3. भवभूति नामक प्राचीन कवि

उक्ति - वैचित्र्य का उदाहरण भी अति उत्तम है -

"पहले आँखों में से मन में कूद मग्न प्रिय अब थे छींटे वहीं उड़े थे बड़े बड़े अश्रु वे कब थे?"

पंक्तियों का भाव यह है कि पहले लक्ष्मण उर्मिला के नेत्रों के सामने थे, इसलिए उसकी आँखों में थे। अब वे उसके मानस में कूदकर मग्न हो गये थे, लक्ष्मण की मन रूपी सरोवर में कूदने से जो छींटे पड़े उन, छींटों को आँसू क्यों कहा जाए? यहाँ कवि का चमत्कार दर्शनीय

हैं। आँसू तभी आते हैं, जब मन में कुछ हलचल होती है। उर्मिला की आँखों के आँसू भी मन रूपी सरोवर में कूदने के फलस्वरूप पड़े हुए छींटे ही हैं।

1.4.4.3 भाषा

गुप्त जी का 'साकेत' खड़ी बोली की रचना है। नवम् सर्ग में भी खड़ी बोली का आकर्षक रूप दिखाई देता है। भाषा में संस्कृत की पदावली का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी भाषा को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए किया गया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है:

▶ साकेत नवम् सर्ग मधुर गीतों से अलंकृत है

"रहे ना हममें राम हमारे मिली ना हमको माया"

▶ **गीति-शैली:** साकेत के नवम् सर्ग का वैभव उसके मधुर गीतों में निहित हैं। ये गीत मन की गहराइयों से छलक रहे हैं। रस की धारा इनसे प्रवाहित होती ही रहती है:

"सखि, निरख नदी की धारा,
ढलमल ढलमल चंचल अंचल, झलमल झलमल तारा!
निर्मल जल अंतःस्थल भरके,
उछल उछल कर, छल छल करके,
थल थल तरके, कल कल धरके,
बिखराता है पारा!
सखि, निरख नदी की धारा"

इन गीतों की शब्द योजना भी बड़ी संगीतात्मक और मधुर है:-

"मेरी छाती दलक रही है,
मानस-शफरी ललक रही है,
लोचन-सीमा छलक रही है,

आगे नहीं सहारा!
सखि, निरख नदी की धारा।"

मधुर गीत का एक और सुन्दर उदाहरण देखिए:

काली काली कोईल बोली-
होली-होली-होली!
हँस कर लाल लाल होठों पर हरयाली हिल डोली,
फूटा यौवन, फाड़ प्रकृति की पीली पीली चोली।
होली-होली-होली!
अलस कमलिनी ने कलरव सुन उन्मद अँखियाँ खोली,
मल दी ऊषा ने अम्बर में दिन के मुख पर रोली।
होली-होली-होली!

छन्द विधानः

गुप्त जी ने अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। नवम सर्ग के प्रमुख छंद मंदाक्रांता, द्रुत विलंबित, आर्या, दोहा, गीतिका आदि हैं। परिवर्तित मनोस्थिति के अनुरूप ही छवि परिवर्तित हुए हैं। गुप्त जी के छंद विधान की एक विशेषता तुक- योजना भी है। कई ऐसी पंक्तियाँ हैं जिनमें न केवल अंतिम शब्दों में बल्कि प्रत्येक शब्द में तुक मिलती है। एक उदाहरण दृष्टव्य है:

"कैसी हिलती-डुलती अभिलाषा है, कली तुझे मिलने की"

- **अलंकार विधानः**

'साकेत' के नवम् सर्ग में अलंकार की जो छटा बिखरी हुई है, वह पाठकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। अलंकारों का प्रयोग उन्होंने इस तरह से किया है कि वे भावों की सुन्दरता को बढ़ा सकें।

कुछ अलंकारों के उदाहरण प्रस्तुत हैं-

श्लेष : हंस छोड़ आये कहाँ मुक्ताओं का देश?

पुनरुक्ति : विकल जीवन व्यर्थ बहा-बहा।

मानवीकरण : 'वेदने तू भली बनी'

रूपक : तू लीला-लोचन नलिन, ओ प्रभु-पद राजीव

उपमा : जलती -सी उस विरह में बनी आरती आप

अनुप्रास :

- काल की रुके न चाहे चाल,
  मिलन से बड़ा विरह का काल;
- जाती जाती, गाती गाती, कह जाऊँ यह बात-
  धन के पीछे जन, जगती में उचित नहीं उत्पात।

निःसंदेह साकेत के नवम् सर्ग का काव्य-सौष्ठव बड़ा ही भव्य और उत्कृष्ट है और हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। कवि ने उर्मिला के माध्यम से भारतीय नारी के आदर्श और आदरणीय रूप को प्रस्तुत किया है। भाव ही नहीं शिल्प की दृष्टि से साकेत का नवम् सर्ग बड़ा ही वैभवशाली है।

- "'साकेत' महाकाव्य ही नहीं, यह आधुनिक हिन्दी का युग- प्रवर्तक महाकाव्य है" आचार्य नंददुलारे वाजपेयी

कवि के उच्च विचारों से 'साकेत' गुरुत्व और गाम्भीर्य जैसे उदात्त गुणों से संपन्न महाकाव्य बन चुका है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

चिर पुरातन राम कथा पर आधारित गुप्त जी कृत महाकाव्य 'साकेत' हिन्दी साहित्य की दैदीप्यमान रचना है। इसमें गुप्त जी ने रामकथा को नए युग के अनुरूप नव्य उद्‌भावनाओं के साथ प्रस्तुत किया है। साकेत में गुप्त जी ने उर्मिला के चरित्र के साथ न्याय करके भारतीय काव्य में हुई उसकी उपेक्षा को कम कर दिया है। उर्मिला के माध्यम से कवि ने भारतीय नारी का आदर्श उपस्थित किया है। उस का विरह वर्णन व साकेत का नवम सर्ग इसीलिए हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। साकेत के नवम् सर्ग का काव्य सौष्ठव अत्यंत वैभवशाली है और अनुपम है। उसमें भावों की अमूल्य और कला के अनूठे रत्न विराजमान हैं जो युगों-युगों तक पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करते रहेंगे ।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. साकेत के नवम सर्ग के काव्य-सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।
2. उर्मिला के चरित्र की विशेषताएँ बताइए ।
3. गुप्त जी की नारी भावना को रेखांकित कीजिए।
4. गुप्त जी की मौलिक उद्‌भावनाओं पर चर्चा कीजिए।
5. साकेत के नामकरण पर चर्चा कीजिए ।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. मैथिलीशरण गुप्त का काव्य - डॉ. एल. सुनीता।
3. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी भावना - डॉ. मधुबाला रोहतगी।
4. साकेत की टीका - विश्वम्भर मानव।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त।
2. यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त।
3. विष्णुप्रिया, मैथिलीशरण गुप्त।
4. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी।
5. साकेतः एक अध्ययन, डॉ. नगेन्द्र।

अन्तर्जाल सन्दर्भः

1. www.subhashita .com
2. www.deshbandhu.co. in
3. www.sahitykunj .net
4. www.Hindi.lok.com

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

छायावाद और हिन्दी काव्य

BLOCK-02

Block Content

Unit 1 : छायावाद अर्थ और परिभाषा, छायावाद की वैचारिक पृष्ठभूमि, छायावाद काव्य की प्रमुख विशेषताएँ व प्रवृत्तियाँ

Unit 2 : जयशंकर प्रसाद का जीवन दर्शन, प्रसाद का सौदर्य बोध, प्रसाद का समरसता सिद्धांत

Unit 3 : कामायनी (चिंता सर्ग)

Unit 4 : कामायनी का महाकाव्यत्व, कामायनी में रूपक तत्व

इकाई : 1

छायावाद अर्थ और परिभाषा, छायावाद की वैचारिक पृष्ठभूमि, छायावाद काव्य की प्रमुख विशेषताएँ व प्रवृत्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावाद अर्थ और परिभाषा से अवगत होता है
- छायावाद की वैचारिक पृष्ठभूमि से परिचय प्राप्त करता है
- छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ व प्रवृत्तियाँ से परिचय प्राप्त होता है

Background / पृष्ठभूमि

आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग के बाद हिन्दी की जिस काव्य धारा ने हिन्दी साहित्य को आगे बढ़ाया, उसे 'छायावाद' कहते हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से स्वच्छंद प्रेम भावना, प्रकृति में मानवीय क्रियाकलापों व भाव-व्यापारों के आरोपण तथा कला की दृष्टि से लाक्षणिकता प्रधान नवीन अभिव्यंजना-पद्धति आदि छायावादी काव्य की मूल विशेषताएँ हैं। हिन्दी साहित्य में छायावादी काव्य का बहुत बड़ा स्थान है। अतः छायावाद की सभी विशेषताओं, अर्थ, परिभाषा, आदि के बारे में गहराई से जानना आवश्यक है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

छायावाद, स्वच्छंद प्रेम भावना, मानवीय क्रियाकलाप, लाक्षणिकता

Discussion / चर्चा

- मुकुटधर पाण्डेय ने सर्वप्रथम छायावाद शब्द का प्रयोग किया

छायावाद कविता की शुरुआत प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान 1916-20 में हुई थी। सबसे पहले छायावाद शब्द का प्रयोग मुकुटधर पाण्डेय ने शारदा नामक एक पत्रिका में सन् 1920 में किया था। लेकिन यह नाम उन्होंने छायावादी काव्य की अस्पष्टता (छाया-Shadow) के कारण दिया था। इसके अतिरिक्त 1921 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका में सुशील कुमार ने 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक से एक संवादात्मक निबंध लिखा था। छायावादी कविता उस समय तत्कालीन स्वच्छदतावादी आंदोलनों से जुड़ी हुई थी। यह काव्य स्वच्छंद, कल्पनापूर्ण एवं भावुक है। भाषा, भाव, छंद, शैली और अलंकार की दृष्टि से इसका पुरानी कविता से कोई मेल नहीं है। इसमें वस्तु निरूपण की जगह अनुभूति निरूपण को स्थान मिला। जयशंकर

प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा इस युग के चार स्तंभ हैं।

2.1.1 छायावाद अर्थ एवं परिभाषा

आधुनिक हिन्दी काव्य में छायावाद को 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग' कहा जा सकता है। यह युग साहित्य के क्षेत्र में एक क्रांति था जिसमें कला पक्ष तथा भाव पक्ष दोनों दृष्टिकोण से उत्कर्ष का चरम दिखाई देता है। सन् 1918 से सन् 1936 तक के काव्य को छायावाद कहा जाता है। इस प्रकार सर्वप्रथम छायावाद शब्द का प्रयोग मुकुटधर पांडेय ने किया था। छायावाद को 'मिस्टिसिजम' के अर्थ के रूप में प्रयोग किया गया था। आरंभ में छायावाद शब्द का प्रयोग व्यंग्य के रूप में किया गया था लेकिन बाद में इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया गया।

- सर्वप्रथम छायावाद शब्द का प्रयोग मुकुट धर पांडेय ने किया था

छायावाद सामान्या रूप से भावोच्छ्वास प्रेरित स्वच्छन्द कल्पना-वैभव की वह स्वच्छन्द प्रवृत्ति है जो देश- कालगत वैशिष्ट्य के साथ संसार की सभी जातियों के विभिन्न उत्थानशील युगों की आशा, आकांक्षा में निरंतर वक्त होती रही है। स्वच्छन्दता की इस सामान्य भावधारा की विशेष अभिव्यक्ति का नाम हिन्दी साहित्य में छायावाद पड़ा।

- स्वच्छन्दता की इस सामान्य भावधारा की विशेष अभिव्यक्ति का नाम हिन्दी साहित्य में छायावाद पड़ा

छायावाद शब्द के अर्थ को लेकर अलोचना जगत में काफी विवाद रहा है। इसका कारण यह है कि जहाँ यथार्थवाद, आदर्शवाद, प्रगतिवाद आदि ऐसे नाम हैं, जिनके आधार पर न वादों के अंतर्गत स्वीकृत रचनाओं के बुनियादी स्वरूप को आसानी से समझा जा सकता है, वहीं छायावाद शब्द किसी ऐसे स्पष्ट अर्थ का बोध नहीं कराता, जिसके आधार पर छायावादी काव्य की विशेषताओं को समझा जा सकता है।

- छायावादी शब्द का अर्थ समझना बहुत ज़रूरी है

छायावाद के व्यापक अर्थ में उन्होंने रहस्यवाद को भी समाविष्ट किया है। इधर प्रसाद जी ने छायावाद में स्वनुभूति की प्रवृत्ति पर बल दिया। लेकिन आज छायावाद और रहस्यवाद दो स्वतंत्र वाद माने जाते हैं। छायावाद में शैलीगत विशेषताओं के साथ-साथ प्रेम, सौंदर्य आदि भावनाओं को भी स्वीकार किया जाता है, जबकि अव्यक्त निराकर के प्रति प्रणय-निवेदन को रहस्यवाद की मूल विशेषता माना जाता है।

- आज छायावाद और रहस्यवाद दो स्वतंत्र वाद माने जाते हैं

छायावाद की परिभाषाएँ

- **आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी** के अनुसारः- "छायावाद से लोगों का क्या मतलब है कुछ समझ में नहीं आता। शायद उनका मतलब है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।"
- **डॉ रामकुमार वर्मा** भी छायावाद को रहस्यवाद से जोड़ते हैं। वे कहते हैं- "जब परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में तो यही छायावाद है।"
- **डॉ नगेंद्र** के अनुसार- "स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह ही छायावाद है।"
- **नंददुलारे वाजपेई** ने 'हिन्दी साहित्यः बीसवीं सदी' पुस्तक में इसे आध्यात्मिक छाया का भान कहा है। उनके अनुसार- "छायावाद सांसारिक वस्तुओं में दिव्य सौंदर्य का प्रत्यय है।"
- छायावाद के सुप्रसिद्ध कवि **सुमित्रानंदन पंत** ने छायावाद को 'चित्र भाषा पद्धति' कहा है।
- **जयशंकर प्रसाद** के अनुसार- "रहस्यवाद की सौदर्यमयी व्यंजना छायावाद है।"
- **हज़ारी प्रसाद द्विवेदी** के अनुसार- "बंगला में कभी छायावाद नाम पड़ा ही नहीं।"
- **बाबु गुलाबराय** के अनुसार- "प्रकृति की गोचर सीमाओं को पार कर उसमें दृश्यमान इतिवृत्तात्मक भौतिकता की अपेक्षा एक अलौकिक अगोचर मानवी भावुकता के दर्शन की प्रकृति को छायावाद कहते हैं।"

- ▶ "स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह ही छायावाद है"

- **शांतिप्रिय द्विवेदी** के अनुसार- "छायावाद एक दार्शनिक अनुभूति है।"
- **डॉ. देवराज** के अनुसार- "छायावाद गीतिकाव्य है, प्रकृति काव्य है, प्रेम काव्य है।"
- **महादेवी वर्मा** के अनुसार- "छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद है प्रकृति में चेतना का आरोप सूक्ष्म सौन्दर्य सत्ता का उद्घाटन एवं असीम के प्रति अनुरागमय आत्मविसर्जन की प्रवृत्तियों का गीतात्मक एवं नवीन शैली में व्यक्त रूप छायावाद है।"

2.1.2 छायावाद की वैचारिक पृष्टभुमी

- ▶ छायावादी कवि व्यक्ति की स्वाधीनता के साथ-साथ हर प्रकार की दासता के विरुद्ध आवाज़ उठती है

छायावादी काव्य की एक सुदृढ़ वैचारिक पृष्ठभूमी है जो द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता, नैतिकता एवं स्थूलता का विरोध करती है। भारत के अतीत गौरव के प्रति सचेत छायावादी कवि व्यक्ति की स्वाधीनता के साथ-साथ हर प्रकार की दासता के विरुद्ध आवाज़ उठती है। यह दासता आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक किसी प्रकार की भी हो सकती है। इनमें राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित है, गाँधीवादी जीवन मूल्य हैं तथा वे मानतावाद के पोषक हैं। उनका रहस्यवाद भले ही विद्वानों के अनुसार अंग्रेज़ी की रोमाण्टिक काव्यधारा से समुद्भूत रहा हो, किन्तु वे प्रकृति, प्रेम और सौन्दर्य को अपने काव्य में प्रमुखता से अभिव्यक्ति देते रहे।

- ▶ महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई एक नए रूप में लड़ी गई

अंग्रेज़ों ने इस देश को गुलाम बना कर यहाँ का आर्थिक शोषण प्रारंभ किया इसलिए उनके प्रति जनता का आक्रोश स्वाभाविक रूप से फूट पड़ा। महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई एक नए रूप में लड़ी गई। इस युद्ध के हथियार से सत्य, अहिंसा, प्रेम, सत्याग्रह, नैतिकता, असहयोग एवं कष्ट सहिष्णुता। इन हथियारों के बलवूते पर जनता में देश के लिए प्यार और बलिदान की भावना उत्पन्न करते हुए अंग्रेज़ों के विरूद्ध आक्रोश उत्पन्न किया गया।

- ▶ छायावादी रचनाओं में उच्च कोटी का कवित्व, अनुभूति की तीव्रता विद्यामान है

छायावादी रचनाओं में उच्च कोटी का कवित्व, अनुभूति की तीव्रता विद्यमान है। तथा सने परंपरागत तत्वों का समावेश करते हुए परवर्ती काव्य के विकास को भी प्रभावित किया, साथ ही जनजीवन को समग्रता के साथ, अभिव्यक्ति किया इस दृष्टि से भी छायावादी रचनाएँ ही इस काल की प्रमुख रचनाएँ मानी जा सकती है। कामयनी(प्रसाद) में छायावादी प्रवृत्तियों का पूर्ण विकास दिखाई पड़ता है।

छायावाद को समझने से पूर्व हमें तद्युगीन जीवन के उन तत्वों एवं मूल्यों को भी समझना होगा जिन्होंने उस काल कविता को प्रभावित किया उस काल में भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की आकांक्षा, राष्ट्र प्रेम, अहिंसा, गांधीवाद जैसे कुछ मूल्य व्याप्त थे। देश में अंग्रेजी शासन के प्रति आक्रोश या और अंग्रेज़ों की साम्राज्यवादी नीति से भारत को मुक्त करा लेने के जी-तोड़ प्रयास किए जा रहे थे। वस्तुतः छायावाद की राजनीतिक पृष्ठभूमि यही है। सदियों की दासता से पीड़ित जनता में स्वातंत्र्य चेतना जो मार रही थी। परिणामतः सुप्त देश की आत्मा पूरी शक्ति के साथ उद्वेलित हो उठी।

- ▶ अग्रेज़ों के शासन से भारत को मुक्त काराना इन कवियों का लक्ष्य रहा

- ▶ अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार-प्सार ने देश के बुद्धिजीवियों के सामने नए क्षितिज खोल

अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने देश के बुद्धिजीवियों के सामने नए क्षितिज खोल दिए। अब भारतीय मनीषा देश की जनता को नेतृत्व प्रदान करने की ओर अग्रसर हो गई इस काल में एक से एक धुरन्धर राजनीतिक नेताओं ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी आवाज़ बुलन्द की।

2.1.3 छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ व प्रवृत्तियाँ

छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. श्रृंगार रस का प्रयोग- छायावादी युग की कविताओं में श्रृंगार रस का प्रयोग किया गया

> ▶ श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का प्रयोग

है। इस युग का काव्य मुख्य रूप से श्रृंगारी है। यह श्रृंगार अतीन्द्रिय सूक्ष्म श्रृंगार है। छायावाद का यह श्रृंगार कौतूहल और विस्मय का विषय है। यह कोई उपभोग की वस्तु नहीं है। इसकी अभिव्यंजना में कल्पना एवं सूक्ष्मता है। छायावादी काव्य में श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग एवं वियोग का भरपूर प्रयोग हुआ है। सुमित्रानंदन पंत की रचना में प्रिया के लावण्य से आकर्षण का उल्लेख मिलता है-

"तुममें जो लावण्य मधुरिमा जो असीम सम्मोहन
तुम पर प्राण निछ्वर करने पागल हो उठता मन"

छायावादी काव्य में विरह वेदना का निरूपण भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। 'आँसू' में जयशंकर प्रसाद ने विरह का मार्मिक वर्णन किया है-

"झंझा झकोर गर्जन था, बिजली थी नीरदमाला,
पाकर इस शून्य हृदय को सबने आ डेरा डाला।" (आँसू कविता की पंक्तियाँ)

> ▶ व्यक्तिगत भावनाओं को अभिव्यक्त

2. व्यक्तिवाद की प्रधानता- छायावादी कवियों ने अपनी कविताओं में व्यक्तिगत भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। उन्होंने कविताओं के माध्यम से अपने सुख-दुख और हर्ष-शोक वाणी प्रदान करते हुए प्रस्तुत किया है।

"जो तुम आ जाते एक बार!
कितनी करुणा कितने सन्देश
पथ में बिछ जाते पराग
....
कैसे निशि-दिन कैसे सुख-दुख
आज विश्व में तुम हो यो हम!"

> ▶ छायावादी कवियों ने प्रकृति की मनोरम स्वरूप को अंकित की है

3. प्रकृति का अनूठा चित्रण- छायावादी कवियों ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का अपनी रचनाओं में चित्रण किया है। प्रकृति पर मानव व्यक्तित्व का आरोप छायावादी काव्य की अनूठी विशेषता है। छायावादी काव्य में प्रकृति को नारी के रूप में देखकर उसके सूक्ष्म सौंदर्य का वर्णन किया गया है। छायावादी कवियों ने प्रकृति की मनोरम स्वरूप को अंकित की है। सुमित्रानंदन पंत प्रकृति सौंदर्य को नारी सौंदर्य से श्रेष्ठ मानते हुए कहते है-

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले ! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?
भूल अभी से इस जग को !" (तारापथ)

> ▶ सूक्ष्म आंतरिक सौंदर्य का चित्रण

4. सूक्ष्म आंतरिक सौंदर्य का चित्रण- छायावादी काव्य में सूक्ष्म आंतरिक सौंदर्य का चित्रण किया गया है। बाह्य सौंदर्य की तुलना में आंतरिक सौंदर्य को अधिक महत्व प्रदान किया गया है। सौंदर्य के उपासक कवियों ने नारी के सौंदर्य के अलग-अलग रंगों का आवरण प्रस्तुत किया है।

5. काव्य में वेदना और करुणा की अधिकता- छायावादी काव्य में वेदना और करुणा की

हृदयगत भावों की अभिव्यक्ति

अधिकता पाई जाती है। छायावादी युग के समाज के करुणामयी होने के प्रमुख कारण हृदयगत भावों की अभिव्यक्ति की अपूर्णता, अभिलाषाओं की विफलता, प्रेयसी की निष्ठुरता, सौंदर्य की नश्वरता, मानवीय दुर्बलताओं के प्रति संवेदनशीलता, प्रकृति की रहस्यमयता आदि हैं। महादेवी वर्मा अपने जीवन का तुलना नीरभरी बदली से करती है-

"मैं नीर भरी दुःख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हंसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली!" (मैं नीर भरी दुख की बदली)

यहाँ वेदना की चरम सीमा विद्यमान है।

अज्ञात सत्ता को प्रेयसी के रूप में चित्रण

6. रहस्य भावना- अज्ञात सत्ता के प्रति छायावाद के कवियों में हृदयगत प्रेम की अभिव्यक्ति पाई जाती है। इस अज्ञात सत्ता को कवि प्रेयसी और चेतन प्रकृति के रूप में देखता है। यह ज्ञात सत्ता ब्राह्म से अलग है। इसलिए रहस्य भावना को छायावाद की एक प्रमुख प्रवृत्ति माना जाता है। सुमित्रांनंदन पंत की 'मौन निमंत्रण' कविता में रहस्यवाद की अभिव्यक्ति अत्यन्त मनोरम ढंग से हुई है। इसमें कवि को प्रकृति के उपादानों में उस अज्ञात सत्ता के मौन निमंत्रण का आभास होता है-

"न जाने कौन अये द्युतिमान !
जान मुझको अबोध, अज्ञान,
सुझाते हों तुम पथ अजान
फूँक देते छिद्रों में गान ;
अहे सुख-दुःख के सहचर मौन !
नहीं कह सकता तुम हो कौन !" (मौन निमंत्रण)

नारी को उदात्त रूप में चित्रित

7. नारी के प्रति नवीन भावना- छायावादी काव्य में श्रृंगार और सौंदर्य से तात्पर्य नारी से है। नारी केवल प्रेम की पूर्ति का साधन मात्र नहीं है। यह भाव जगत की सुकुमार देवी है। रीतिकालीन नारी के विपरीत छायावादी नारी अधिक सजग थी। उसे सम्मानजनक स्थान प्रदान किया गया था। छायावादी कवियों ने नारी को उदात्त रूप प्रदान करते हुए उसे पुरुष की प्रेरक शक्ति के रूप में स्वीकार किया। नारी दया, क्षमा, करुणा प्रेम आदि गुणों से संपन्न है। और नारी श्रद्धा की पात्र है।

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।"

भावात्मक दृष्टिकोण को अपनाया गया

8. जीवन-दर्शन- छायावाद में जीवन के प्रति भावात्मक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। काव्य का मूल दर्शन सर्वात्मवाद है। संपूर्ण जगत मानव चेतना से स्पंदित दिखाई देता है।

"मैं तुमसे हूँ एक, जैसे रश्मि प्रकाश
मैं तुमसे हूँ भिन्न, भिन्न ज्यों घन से ताडित्-विसाल"

▶ प्रतीकात्मक और लाक्षणिक शैली का प्रयोग

9. अभिव्यंजना शैली का प्रयोग- छायावादी कवियों ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने हेतु प्रतीकात्मक और लाक्षणिक शैली का प्रयोग किया है। कवियों ने भाषा में अभिधा के स्थान पर लक्षणा तथा व्यंजना का उपयोग किया है। छायावादी कवियों ने काव्य की विषय वस्तु अपने व्यक्तिगत जीवन से ही खोजने का प्रयास किया है। छायावादी कविता में वैयक्तिक सुख-दुःख की खुलकर अभिव्यक्ति हुई है। जयशंकर प्रसाद कृत 'आँसू' और सुमित्रानंदन पंत कृत 'उच्छवास' नामक कविता इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कई कविताओं में उनके व्यक्तिगत जीवन का सत्य व्यक्त हुआ है। 'राम की शक्ति पूजा' में राम की हताशा-निराशा में कवि के अपने जीवन की निराशा की अभिव्यक्ति हुई है। उन्हें जीवन भर लोगों के जिस विरोध को झेलना पड़ा वह गूँज बड़ी मार्मिक है-

"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध!" (राम की शक्तिपूजा)

▶ राष्ट्रीयता की भावना विद्यामन

10. राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति- छायावाद में राष्ट्रीयता की भावना भी विद्यामन थी। प्रसाद जी के 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' तथा माखन लाला चतुर्वेदी के गीतों में 'पुष्प की अभिलाषा' इसके उत्तम उदाहरण है।

"मुझे तोड़ लेना वनमाली।
उस पथ में देना तुम फेंक॥
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने।
जिस पथ जावें वीर अनेक" (पुष्प की अभिलाषा)

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आधुनिक हिन्दी काव्य में छायावाद युग को 'स्वर्ण युग' के नाम से अभिहित किया जाता है। द्विवेदी युग के बाद इस युग ने स्थान पाया और अपनी नवीन अभिव्यंजना पद्धति और अन्य विशेषताओं के कारण परसिद्ध हुई। छायावाद मुख्य रूप से द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता एवं स्थूलता का विरोध करती हुई सूक्ष्मता की ओर अग्रसर होती नज़र आती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. छायावाद की वैचारिक पृष्ठभूमी पर अपना मत प्रकट कीजिए।
2. छायावाद की विभिन्न परिभाषाएँ क्या-क्या है।
3. छायावाद के प्रमुख कवि एवं उनके रचनाओं के बारे में टिप्पणी लिखिए।

4. छायावाद युग विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।
5. छायावाद के उदय पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. छायावाद युग, शंभुनाथ सिंह
3. छायावाद का पतन, डॉ. देवराज
4. छायावाद, डॉ. नामवर सिंह

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. छायावादी काव्य एक विवेचना - डॉ. ओमवती देवी
2. छायावाद का पुनःपाठ - राजेश कुमार गर्ग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. छायावाद - नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

जयशंकर प्रसाद का जीवन दर्शन, प्रसाद का सौंदर्य बोध, प्रसाद का समरसता सिद्धांत

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- जयशंकर प्रसाद का जीवन दर्शन से परिचय प्राप्त होता है
- जयशंकर प्रसाद के सौदर्य बोध से अवगत कराता है
- जयशंकर प्रसाद के समरसता सिद्धांत से परिचय होता है

Background / पृष्ठभूमि

जयशंकर प्रसाद की कविताओं में छायावादी काव्य का वैभव अपनी क्लासिक पूर्णता के साथ प्रकट होता है और उनका सौंदर्य-बोध इस बात की पुष्टि करता नज़र आता है कि छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। सौंदर्य दर्शन और शृंगारिकता, स्वानुभूति, जड़ चेतन संबंध और आध्यात्मिक दर्शन, नारी की महत्ता, मानवीयता, प्राकृतिक अवयव, चित्रात्मकता आदि उनकी प्रमुख काव्य-प्रवृत्तियाँ हैं। उनकी भाषा तत्समपरक और संस्कृतनिष्ठ है। वैयक्तिकता, भावात्मकता, संगीतात्मकता, कोमलता, ध्वन्यात्मकता, नाद-सौंदर्य जैसे गीति शैली के सभी तत्त्व उनके काव्य में मौजूद हैं। उन्होंने प्रबंध और मुक्तक दोनों शैलियों का प्रयोग किया है जबकि शब्दों का अधिकाधिक मात्रा में लाक्षणिक प्रयोग, सूक्ष्म प्रतीक योजना, ध्वन्यात्मक शब्दों के प्रयोग, सतर्क शब्द चयन, वर्णप्रियता, प्रकृति का सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरीक्षण, अमूर्त उपमान योजना उनके द्वारा किए गए नए प्रयोग थे। इसलिए हिन्दी साहित्य के मशहूर साहित्यकार के रूप में जानेमाने जयशंकर प्रसाद के सौदर्यबोध, दार्शनिकता एवं समरसता सिद्धांत के बारे में अध्ययन करने की आवश्यकता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सौंदर्य बोध, अमूर्त उपमान, श्रृंगारिकता, स्वानुभूति, प्रकृति का सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरीक्षण

Discussion / चर्चा

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। प्रसाद जी ने हिन्दी काव्य में छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई। वह एक प्रयोगधर्मी रचनाकार थे। 1926 से 1929 तक जयशंकर प्रसाद के कई दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं। जयशंकर प्रसाद की कविताओं

में छायावादी कविता के सभी गुण मौजूद हैं। जयशंकर प्रसाद के सौदर्यबोध, दार्शनिकता एवं समरसता सिद्धांत पर विचार करना प्रस्तुत अध्याय का लक्ष्य है।

जयशंकर प्रसाद

2.2.1 जयशंकर प्रसाद का दर्शन

▶ कामायनी जयशंकर प्रसाद का अंतिम कृति है

जयशंकर प्रसाद का दर्शन कामायनी में बखूबी देखने को मिलती है। अतः उनके दर्शन को कामायनी के आधार पर समझना ही उचित होगा।

▶ कामायनी में आध्यात्मिक एवं लौकिक दर्शन दोनों का प्रयोग किया गया है

आध्यात्मिक चिन्तन को दर्शन कहा करते हैं। अध्यात्मिक पक्ष का चिन्तन-मनन करके अपने विचारों को व्यक्त करना दर्शन के दो भेद होते हैं- (1) आध्यात्मिक (2) लौकिक। कामायनी में आध्यात्मिक एवं लौकिक दर्शन दोनों का प्रयोग किया गया है। दर्शन में आध्यात्मिक पक्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रसाद जी ने दोनों पक्षों का मिलन किया है। आध्यात्मिक एवं लौकिक पक्ष का मिलन-यही कामायनी के दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता है।

▶ कामायनी का आध्यात्मिक दर्शन प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधारित है

कामायनी का आध्यत्मिक दर्शन प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधारित है। अन्य शैव दर्शनों से यह दर्शन बिलकुल ही भिन्न है। अन्य सभी शैव दर्शनों में शिव के साकार रूप को मात्र स्वीकार किया गया है। मगर कश्मीरी शैव दर्शन में शिव के सगुण व निर्गुण दोनों रूपों को स्वीकार किया गया है। प्रसाद जी तो खुद सगुण को छोड़कर निर्गुण की उपासना करनेवाले कवि थे। फिर भी उन्होंने कामायनी में दोनों को स्वीकारा।

प्रत्यभिज्ञा दर्शन

यह कश्मीरी शैव दर्शन है। प्रत्यभिज्ञा का मतलब है 'ईश्वर की पहचान'। जब हम परमात्मा का संपूर्ण पहचान करेंगे, तब हमे आनंद की प्राप्ति होगी। यहाँ शिव सात्विक, सर्वव्यापी, अज्ञात शक्ति, सगुण और निर्गुण का समन्वय करके शिव में निर्गुण का आरोप इसकी विशेषता है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन के सिद्धांत-

▶ प्रत्यभिज्ञा का मतलब है 'ईश्वर की पहचान'

1. विषमता का सिद्धांत
2. समरसता का सिद्धांत
3. आनन्द

1. विषमता का सिद्धांत

▶ जीवन के अनेक विपरीत तत्वों का भिन्न-भिन्न दिखाई देना ही विषमता है

जीवन के अनेक विपरीत तत्वों का भिन्न-भिन्न दिखाई देना ही विषमता है। उदाः सुख और दुख, जन्म और मृत्यु, विजय और पराजय, सृष्टि और संहार आदि। संसार विषमता से भरा हुआ है। विषमता के कारण हमें दुःख होता है, हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

2. **समरसता का सिद्धांत और आनन्द**

जीवन के विभिन्न विपरीत तत्वों को समान रूप से देखना ही समरसता है। इससे दुःख या समस्याएँ हमारे सामने नहीं आएँगी। अतः निर्वेद भाव से सुख-दुःख को देखना, स्वीकार करना या कोई प्रतिक्रिया नहीं होना-यह स्थिति मोक्ष की स्थिति है। जिसको यह स्थिति मिलती है, वह आनन्द की अवाच्य अनुभूति में पहुँच जाता है। वह खुद को भूलकर क्षण मात्र केलिए उसमें विलीन हो जाएगा। इस अनुभूति को अनन्द कहा करते हैं। योगि-सन्यासियों को सामान्यतः यह अनुभूति प्राप्त होती है। विषमता को बिना जीवन का विकास असंभव है। जिसके पास समरसता की शक्ति है, उसे अपार आनन्द की प्रिप्ति होती है। उसे नई चेतना मिल जाती है। समरसता का अधिकार सबको है। मगर जीवन की कठिनाइयों व समस्याओं के कारण साधारण लोगों को समरसता की प्राप्ति होना मुश्किल है।

> ▶ जिसके पास समरसता की शक्ति है, उसे अपार अनन्द की प्रिप्ति होती है

जयशंकर प्रसाद का मृत्यु दर्शन

> ▶ मृत्यु जीवन की सारी क्रिया-प्रतिक्रियाओं का अन्त करती है

मृत्यु चिरनिद्रा है। मृत्यु अन्धकार का अट्टहास है। मृत्यु वास्तव में छिपे हुए धन के समान है। मृत्यु जीवन की सारी क्रिया-प्रतिक्रियाओं का अन्त करती है। इसलिए मृत्यु का ताण्डव नृत्य विषम-सम के समान है। मृत्यु के बाद जीवन-स्पन्दन नहीं।

मृत्यु कहाँ से आ रही है, उसका स्थान कहाँ, पता नहीं। सब कहीं अन्धकार है। मृत्यु हमारे साथ है। वह कब आयेगी, किस रूप में आएगी, किसी को मालूम नहीं। वह छिपे हुए धन के समान है। अगर मृत्यु नहीं, सृष्टि की आवश्यकता नहीं। सृष्टि माने विकास।

"जीवन तेरा क्षुद्र अंश है
व्यक्त नील घन-माला में,
सौदामिनी सन्धि सा सुन्दर
क्षण भर रहा उजाला में।"

> ▶ अगर मृत्यु नहीं, सृष्टि की आवश्यकता नहीं। सृष्टि माने विकास

> ▶ जीवन का विनाश हम कर सकते है। लेकिन हम मृत्यु का विनाश नहीं कर सकते

जीवन मृत्यु का छोटा अंश है। जीवन मृत्यु प्रदत्त है। वह सौदामिनी सन्धि के समान है। जीवन बिजली के समान चमकती है। वही सत्य है। जीवन का विनाश हम कर सकते है। लेकिन हम मृत्यु का विनाश नहीं कर सकते। कवि मृत्यु को सत्य मानते हैं, जीवन को नहीं। मृत्यु जीवन का परम सत्य है। प्रसाद जी इस प्रकार मृत्यु को मानते हैं।

2.2.2 जयशंकर प्रसाद का सौंदर्यबोध

हिन्दी साहित्य में छायावादी सौंदर्य बोध कई विशिष्टताएँ धारण करती हैं और प्रसाद के यहाँ हम छायावादी सौंदर्य चेतना का प्रतिनिधि रूप देख सकते हैं। 'झरना', 'लहर', 'आँसू' व 'कामायनी' के आधार पर उनकी सौंदर्य चेतना के मुख्य तत्त्वों का उद्घाटन किया जा सकता है। छायावाद के अन्य कवियों की भाँति प्रसाद के यहाँ भी सौंदर्य बोध की अभिव्यिक्ति कई स्तरों पर दिखती है। संुदरता जीवन के सुखात्मक पक्षों में भी है और दुखात्मक पक्षों में भी इसी प्रकार, इसमें प्रकृति भी संुदर है, मानव भी, नारी भी और हृदय में उठने वाले भाव भी, परंतु मानव सौंदर्य सर्वोच्च स्तर पर है। प्रसाद के यहाँ सौंदर्य के भाव पक्ष को केंद्रीय महत्त्व दिया गया है। नारी का सौंदर्य भी उन्हें संुदर भावों की अभिव्यक्ति ही प्रतीत होता है। प्रसाद कामायनी में लिखते हैं-

> ▶ प्रसाद के यहाँ सौंदर्य के भाव पक्ष को केंद्रीय महत्त्व दिया गया है

"हृदय की अनुकृति बाह्य उदार, एक लंबी काया उन्मुक्त"

▶ प्रसाद के यहाँ जो नारी सौंदर्य प्रस्तुत है उसमें दिखावट नहीं बल्कि गूढ़ सौंदर्य है

प्रसाद के यहाँ जो नारी सौंदर्य प्रस्तुत है उसमें दिखावट नहीं बल्कि गूढ़ सौंदर्य है। नग्नता व अश्लीलता नहीं बल्कि संकोच व लज्जा है। नारी के सौंदर्य हेतु जिन उपमानों का प्रयोग किया गया है उनमें उत्तेजना के स्थान पर श्रद्धा जैसे भाव पैदा होते हैं-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो"

▶ प्रसाद के यहाँ नारी व मानव सौंदर्य के अलावा प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के भी दर्शन होते हैं

प्रसाद के यहाँ नारी व मानव सौंदर्य के अलावा प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के भी दर्शन होते हैं। यहाँ भी प्रसाद छायावादी सौंदर्य बोध का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। प्रसाद प्रकृति के प्रति गहरी भावुकता प्रकट करते हुए लिखते हैं-

"प्रकृति के यौवन का शृंगार,
करेंगे कभी न बासी फूल
मिटेंगे वे आकर अति शीघ्र, आह उत्सुक है उनकी धूल"

अनुभूति की सूक्ष्मता के साथ-साथ कवि की वर्णन की सजीवता देखने योग्य है। शरीर सौन्दर्य के चित्रण में भी प्रसाद ने कुशलता दिखाई है। उनकी दृष्टि विशेष रूप से आंतरिक सौन्दर्य को पहचानती है। नीलवस्त्रावृता श्रद्धा का सुकुमार सुन्दर अधखुल अंग उन्हें बिजली के फूल के समान द्युतिमान दिखाई देता है। इससे कवि की सौन्दर्यानुभूति की सूक्ष्मदर्शिता का आभास होता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित पंक्ति अविस्मरणीय हैः

शशि मुख पर घूँघट डाले
आँचल में दीप छिपाए।
संध्या की गोधूलि में
कौतूहल से तुम आए।।

मनु का शारीरिक स्वरूप भी प्रसाद की सौन्दर्य चेतना का साक्षी है जिसमें पौरुष भाव साकार दिखाई देता है।

▶ शरीर सौन्दर्य के चित्रण में भी प्रसाद ने कुशलता दिखाई है। उनकी दृष्टि विशेष रूप से आंतरिक सौन्दर्य को पहचानती है

अवयव की दृढ़ माँस पेशियाँ,
उर्जस्वित था वीर्य अपार।
स्फीत शिराएँ रक्त का,
होता था जिनमें संचार।।

▶ प्रसाद के यहाँ प्रकृति कई बार तो इतनी सुंदर हो जाती है कि उसके आगे नारी व मानव सौंदर्य भी फीका नज़र आता है

प्रसाद के यहाँ प्रकृति कई बार तो इतनी सुंदर हो जाती है कि उसके आगे नारी व मानव सौंदर्य भी फीका नज़र आता है। यही सौंदर्य चेतना निराला व पंत के यहाँ दिखाई देती है। प्रकृति के कण-कण में सौंदर्य के दर्शन प्रसाद ने किये हैं-

"समरस थे जड़ या चेतन सुंदर साकार बना था
चेतनता एक विलसती, आनंद अखंड घना था"

▶ प्रसाद जी की सौंदर्य चेतना उनकी भाषा-शैली में दृष्टिगोचर होती है

प्रसाद जी की सौंदर्य चेतना उनकी भाषा-शैली में दृष्टिगोचर होती है। आँसु को घनीभूत पीड़ा कहकर प्रसाद ने करुणा का वतावरण सजीव कर दिया। एक अन्य चित्र भी द्रष्टव्य हैः

झंझा झकोर गर्जन है, बिजली है नीरद माला।
पाकर इस शून्य हृदय को सबने आ घेरा डाला।।

उनकी भाषा सांकेतिक रूप में अर्थ व्यंजना का सामर्थ्य रखती है। चित्रमयता प्रसाद की भाषा की विशेषता है। भाषा में सरसता, स्वभाविकता और माधुर्य के साथ संवेदनशीलता भी है।

प्रसाद का सौन्दर्य बोध निश्चय ही नवीन और मौलिक है। वे नारी सौन्दर्य, प्रकृति सौन्दर्य वं भाव सौन्दर्य के कुशल चितेरा हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रसाद के सौन्दर्य बोध पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत करते हुए लिखा है, "प्रसाद के समान सौन्दर्य प्रेमी कवि विरले हैं और पार्थिव सौन्दर्य को स्वर्गिक महिमा से मण्डित करके प्रकट करने का सामर्थ्य तो इतना और किसी में है ही नहीं।" समग्र रूप में कहा जा सकता है कि प्रसाद का सौंदर्य बोध ऐसे दृष्टिकोण का प्रतिपादन करती है जहाँ सौंदर्य की सारी स्थूलताएँ नष्ट हो जाती हैं और उसके सूक्ष्म पक्ष उभरने लगते हैं।

- प्रसाद का सौन्दर्य बोध निश्चय ही नवीन और मौलिक है। वे नारी सौन्दर्य, प्रकृति सौन्दर्य वं भाव सौन्दर्य के कुशल चितेरा हैं

2.2.3 जयशंकर प्रसाद के समरसता सिद्धांत

जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में समरसता के साथ-साथ आनंदवाद की स्थापना की है। जयशंकर प्रसाद ने प्राचीन भारतीय दर्शनों का प्रयोग किया। कामायनी महाकाव्य में यह समन्वयात्मक दर्शन समरसता के नाम से जाना जाता है। उन्होंने सर्जना में अनेक स्थलों पर समरसता का वर्णन किया है। जीवन का एक प्रमुख वैषम्य सुख-दुःख संबंधी है। प्रसाद ने इस सुख-दुःख केंन्द्र का द्विविधा का निराकरण मार्मिक शब्दों में किया।

- जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में समरसता के साथ-साथ आनंदवाद की स्थापना की है

"जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल।
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
नित्य समरसता का अधिकार, उमड़ता कारण जलधि समान,
व्यथा की नीली लहरों बीच, बिखरते सुख मणिगण द्युतिमान।"

इससे यह स्पष्ट हो जाती है कि प्रसाद कामना और इच्छा के अबाध और अनियंत्रित रूप को स्वीकार न करते हुए भी उनकी नितांत वर्जन नहीं करते। वे एक सीमा में, संयम के साथ उनकी उपयोगिता स्वीकार करते हैं। आंनंद के पल्लव हेतु तृष्णा और तृप्ति का समन्वित सत्ता के वे समर्थक हैं।

अधूरी आत्मसत्ता के उपासक देह तथा प्राणशक्ति के उपासक असुरों के विरोधी-प्रवाह में भी वे समरसता की संभावना देखते हैं। इस ऐतिहासिक द्वंद्व हेतु वे श्रद्धा का उपयोग करते हैं और यह समझते हैं कि सांस्कृतिक द्वंद्व का अपवारण क्षद्धा नारी ही कर सकती हैः

- अधूरी आत्मसत्ता के उपासक देह तथा प्राणशक्ति के उपासक असुरों के विरोधी-प्रवाह में भी वे समरसता की संभावना देखते हैं

देवों की विजय दानवों की हारों का होता युद्ध रहा,
संघर्ष सदा उर अंतर में जीवित रह नित्य विरुद्ध रहा।
आंसु से भीगे अंचल पर मन का सब कुछ रखना होगा,
तुमको अपनी स्मित रेखा से यह संधि-पत्र लिखना होगा।

अधिकारी और अधिकृत, शासक और शासित के बीच भी सदा से एक दुर्भेद्य खाई रही है, जिससे संसार में महान् उत्पीड़न होते आये हैं। न दोनों में अनियंत्रित सम्बन्ध रहने के कारण ही इतिहास के पृष्ठ रक्त-रंजित हुए हैं। यद्यपि प्रसाद ने इस द्वन्द्व के निर्मूलन के अधिकारी या सत्ताधीशों को ही समाप्त कर देने का संदेश ही नहीं दिया है, बल्कि इस ऐतिहासिक द्वंद्व को

भी समरसता द्वारा शांत करने का मार्ग-निर्देश किया हैः

"तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की,
समरसता है सम्बन्ध बनी, अधिकार और अधिकारी की।"

मनु द्वारा इड़ा के सहयोग से सारस्वत प्रदेश में अनेक मानव-वर्गों का उद्भव और परस्पर संघर्ष होता है, जो बुद्धिवाद की एकांगिकता का परिचायक है। आधुनिक सभ्यता इसी बुद्धिवादी भिज्ञ थे। वे श्रद्धा से विरहित समाज के दुष्परिणामों से अवगत था। मनु का अपनी प्रजा से संघर्ष और सारस्वत प्रदेश का विद्रोह इसी एकांगी बुद्धिवाद का निर्देशक है प्रसाद इसी संदर्भ में सृजित हैं कि-

▶ मनु द्वारा इड़ा के सहयोग से सारस्वत प्रदेश में अनेक मानव-वर्गों का उद्भव और परस्पर संघर्ष होता है, जो बुद्धिवाद की एकांगिकता का परिचायक है

यह तर्कमयी तू श्रद्धामय, तू मननशील कर कर्म अभय,
इसका तू सब समताप निचय, हर ले, हो मानव भाग्य उदय।
सब की समरसता का प्रचार,
मेरे सुत सुन माँ की पुकार।

प्रसाद जी कर्म-मार्ग के विरोधी नहीं थे। वे मननशील अभयकर्म का संदेश देते हैं। परंतु वह कर्म, जो भेद-बुद्धि के आधार पर ठहरा है और श्रद्धारहित है परिणाम विनाशकारी है। इस तरह बुद्धि, हृदय, कर्म का समन्वय कामायनी में प्रदर्शित है। अतंतः जीवन के सबसे बड़े दुर्भेध विरोध कर्म, इच्छा और ज्ञान के समन्वय का संकेत प्रसाद जी ने किया है। सत्व, रज और तम त्रिगुणों में कहीं किसी ओर से एकात्मक दृष्टिगोचर नहीं होती। यथा-

"संगीत मनोहर उठता, मुरली बजती जीवन को,
संकेत कामना बनकर, बतलाती दिशा मिलन की।
प्रतिफलित हुई सब आँखें, उस प्रेम-ज्योति विमल से,
सब पहचाने से लगते, अपनी ही एक कला से।
समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती, आनंद अखंड घना था।"

▶ प्रसाद जी कर्म-मार्ग के विरोधी नहीं थे। वे मननशील अभयकर्म का संदेश देते हैं

इस प्रकार जीवन के वास्तविक विरोधों की मूलवर्तिनी सत्ताद्वारा अपहत कर जीवन में समरसता और समन्वय स्थापित करने की अपूर्व आशाप्रद कल्पना प्रसाद जी ने कामायनी काव्य में की है। यह कल्पना एक तरफ जीवन के सूक्ष्मदर्शी विज्ञान का आधार रखती है और दूसरी ओर उच्चतम भारतीय दार्शनिकता का समन्वय लेकर चलती है। मानव प्रकृति और जीवनगत द्वंद्वों का निरूपण विज्ञान पर आश्रित है, और श्रद्धा की कल्याणमयी सत्ता दर्शन की देन है। इन दोनों के सम्मिलन और संयोग-स्थल पर प्रसाद का समरसता-सिद्धांत प्रतिष्ठित है। इसे नवीन विज्ञान और चिरनवीन भारतीय दर्शन की संगम-भूमि भी कहा जा सकता है। यह समरसता ही आनंदवाद है। शैवदर्शन के प्रत्यभिज्ञा दर्शन का आधार।

▶ मानव प्रकृति और जीवनगत द्वंद्वों का निरूपण विज्ञान पर आश्रित है, और श्रद्धा की कल्याणमयी सत्ता दर्शन की देन है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

छायावादी काव्य के आधार स्तंभ जयशंकर प्रसाद जी का सौन्दर्यबोध एवं दार्शनिकता अनेकों विशेषताएँ लिए हुए है। सौन्दर्य दर्शन और श्रृंगारिकता एवं आध्यात्मिक दर्शन उनके काव्य में परिलक्षित होती नज़र आती है। उन्होंने समरसता के साथ-साथ आनन्दवाद की स्थापना की। उनका समन्व्यात्मक दर्शन समरसता के नाम से जाना जाता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. जयशंकर प्रसाद के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए?
2. जयशंकर प्रसाद की साहित्यिक तथा सास्कृतिक पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए?
3. जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व एवं रचना संसार पर विचार कीजिए।
4. छायावाद के चार स्तंभ में 'प्रसाद' का स्थान निर्धारित कीजिए।
5. जयशंकर प्रसाद के सौन्दर्यबोध पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कवि प्रसाद का काव्य साधना - रामनाथ सुमन
2. कामायनी एक पुनर्विचार - गजानन माधव मुक्तिबोध

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. छायावाद का पुनःपाठ-राजेश कुमार गर्ग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिन्दी काव्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास छायावादी युग- शैलेन्द्र कुमार मिश्र

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3

कामायनी (चिंता सर्ग)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कामायनी में चिंता सर्ग का भावार्थ एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करता है
- कामायनी की चिंता सर्ग की भाषा-शैली से परिचित हो जाता है
- चिंता सर्ग के मुख्य पात्र मनु का परिचय प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

कामायनी मनु और श्रद्धा, पुरुष और नारी की और उसके मनोंभावों के विकास की कथा है। कामायनी के कथा को पौराणिक और ऐतिहासिक आधार लेकर लिखी गई है। कामायनी का कथानक इसी खंड-प्रलय के बाद परिस्थितियों से संबंधित है। जिसके अनुसार प्रलय के बाद वैवस्वत मनु, कामायनी या श्रद्धा के साथ मिलकर मानव सभ्यता की रचना करते हैं। मनु कामायनी के प्रमुख पात्र हैं, जो जल-प्रलय के बाद जीवित बचे हैं। श्रद्धा भी उस प्रलय में बच गई है। श्रद्धा कामगोत्र की कन्या है। इसलिए उनका नाम कामायनी है। इड़ा एक और प्रमुख पात्र है जो सारस्वत प्रदेश की रानी है। मनु और श्रद्धा का पुत्र मानव है। इसके आलावा असुर पुरोहित किलात और आकुली गौण पात्र है। कथा का आरम्भ विशाल जल-प्लावन की घटना के साथ हुआ। कामायनी को हिन्दीकाव्य का महाकाव्य माना जाता है। इसमें 15 सर्ग होते हैं। चिन्ता सर्ग, आशा सर्ग, श्रद्धा सर्ग, काम सर्ग, वासना सर्ग, लज्जा सर्ग, कर्म सर्ग, ईर्ष्या सर्ग, ईड़ा सर्ग, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य, आनन्द। प्रस्तुत पन्द्रह सर्गों में से चिंता सर्ग पर इस अध्याय में गहराई से अध्ययन किया जाएगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

पौराणिक, ऐतिहासिक, प्रलय, सर्ग, सारस्वर प्रदेश

Discussion / चर्चा

'कामायनी' की कहानी चिंता सर्ग से प्रारम्भ होता है। वैदिक काल में महाप्रलय हुआ था। भयंकर प्रलय के पश्चात् समस्त सृष्टि का विनाश हो चुका था। इस महाप्रलय में केवल वैवस्वत मनु बच पाये थे। मनु पहाड़ी प्रांत में अकेले निराश जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन्हें उन देवों की याद आती है; जो मदोन्मत्त हो विलासिता के नद में तैरते रहते थे। वह स्वयं इन देवों के नेता बने भूले हुए थे। आज दुर्जेय प्रकृति ने बदला ले लिया। देव सृष्टि ध्वंस हो गयी है। सब कुछ स्वप्नवत् शून्य था। आत्म-विस्मृति के कारण सृष्टि विश्रृंखल हो रही थी। इससे आपदाओं का जन्म हो रहा था। मनु सोचते हैं: 'आज सुर बालाओं का वह मधुर श्रृंगार कहा है? उसकी ऊषा-सी मुस्कुराहट और मधुपों-सा निर्द्वन्द्व विहार आज कहाँ गया?

▶ कामायनी का प्रथम सर्ग चिन्ता

वासना की उद्वेलित सरिता कहाँ सूख गयी? चिर-किशोर तथा नित्य विलासी देवों का मधुपूर्ण बसन्त आज कहाँ तिरोहित हो गया?' सारी सृष्टि भय से विकल थी। समुद्र के जीव विकल होकर छटपटा रहे थे; जैसे सिंधु को अन्दर से कोई मथ रहा हो। कहीं कुछ दिखाई न देता था। चारों ओर जल ही जल था। किसी महामत्स्य ने नाव को एक धक्का दिया। उसी धक्के के कारण नाव बहकर उत्तर गिरि के शिखर से टकरायी और देव सृष्टि के ध्वंसावशेष मनु ने उस शिखर पर आश्रय लिया। चिंता करते-करते मनु शिथिल एवं सषुप्त हो जाते हैं। चिंता एवं निराशा की निन्द्रा बीत जाती है। आगे चिंता सर्ग के पंक्तियों के भवार्थ एवं विशेषताओं पर विचार-विमर्श करेंगे।

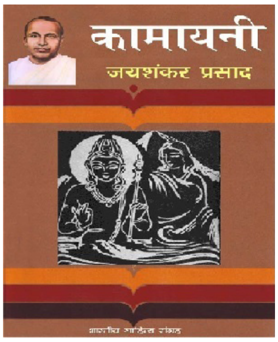

2.3.1 चिंता सर्ग

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह!

शब्दार्थ

उत्तुंग	-	ऊँची
शिखर	-	चोटी
शीतल छाँह	-	विश्रामदायी आश्रय
एकपुरुष	-	मन
भीगे नयनों	-	आँखों में आँसू भरकर

अर्थ- हिमालय की ऊँची चोटी पर किसी शिला के विश्रामदायी आश्रय में बैठा हुआ एक पुरुष उस जलराशि को नयनों में आँसू भरकर देख रहा था जो प्रलय के कारण उसकी आँखों से आँसू उमड़ रही थी।

विशेष- मनु का नाम लेकर कवि ने उन्हें 'एक पुरुष' मात्र से व्यंजित किया है। इससे कवि का लक्ष्य यहाँ अपने नायक के संबंध में उत्सुकता उत्पन्न करना है। यदि वह प्रारंभ में ही रहस्य खोल देता तो कोई कला न रहती। इन पंक्तियों को पढ़ते ही अनेक प्रकार की कल्पनाएँ मन में जग उठती हैं। यह व्यक्ति कौन है? हिमवान् की चोटी पर आश्रय लेने को वह क्यों विवश हुआ? पुरुष होकर रो क्यों रहा है? प्रलय रहस्य कैसे उपस्थित हुई? कहानी को प्रारंभ करने का यह अत्यंत उपयुक्त ढंग है जिससे चारों ओर प्रकृति की भयंकरता से आक्रांत एक चिंता-निमग्न व्यक्ति का दृश्य आँखों के सामने छा जाता है।

▶ मनु प्रकृति की भयंकरता से आक्रांत था

शिला की शीतल छाँह से तात्पर्य यह है कि मनु जहाँ बैठे थे, वहाँ न तो प्रलय की बाढ़

उन्हें कोई हानि पहुँचा सकती थी और न किसी अन्य प्रकार की असुविधा थी। वहाँ वे एकदम निश्चिंत थे।

नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था, एक सघन;
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन

शब्दार्थ

एक तत्व - जल तत्व

अर्थ- नीचे की ओर देखता है तो पानी लहरा रहा है और ऊपर दृष्टि डालता है, तो बर्फ ही बर्फ दिखाई देता है। उसे अपने चारों ओर आज प्रमुख रूप से जल-तत्व ही दृष्टिगोचर होता है। नीचे का जल तो द्रव्य (पिघले हुए) रूप में है ही, ऊपर का हिम भी वास्तव में जल ही है जो जमकर बर्फ हो गया है। एक ही जल के ये दो रूप ऐसे प्रतीत होता हैं जैसे एक ही ईश्वर जड़ प्रकृति और चेतन आत्मा के रूप में प्रतिभासित हो रहा हो।

▶ ईश्वर जड़ प्रकृति और चेतन आत्मा के रूप में प्रकट

विशेष- अद्वैतवासियों के अनुसार ब्रह्म के अतिरिक्त कहीं और कुछ नहीं है, जड़ और चेतन का विभेद दृष्टिभ्रम है- 'नाम' 'रूप' का विभेद है। जैसे कच्ची मिट्टी से बने घड़े और प्याले अपने आकार के कारण दो नाम पा गये हैं, जैसे लहर और बुलबुला अपनी आकृति के कारण भिन्न-भिन्न संज्ञाओं से सम्बोधित किये जाते हैं, पर विवेक की दृष्टि से देखो तो मूलतः मिट्टी जल के अतिरिक्त कुछ नहीं है; इसी प्रकार आत्मा के रूप में चेतनता और शरीर प्रकृति(nature) के रूप में स्थूलता एक ही परमात्मा के दो स्वरूप हैं। ज्ञानदृष्टि से देखने पर उस महाचेतन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। प्रसाद ने उस परम तत्व की व्यापकता को सिद्ध करने के लिए चेतन जल और हिम का अत्यंत उपयुक्त उदाहरण प्रसंगवश उपस्थित किया है। अध्यात्मपक्ष का यह अर्थ मुख्य विषय से संबंधित नहीं है, केवल व्यंजित होता है।

दूर-दूर तक विस्तृत था हिम, स्तब्ध उसी के हृदय समान;
नीरवता सी शिला चारण से, टकराता फिरता परमान।

शब्दार्थ

स्तब्ध - जड़ीभूत
परमान - पवन

अर्थ- जिस प्रकार उस व्यक्ति का हृदय इस समय किसी भी प्रकार की चेतना से रहित-निश्चेष्ट-था, उसी प्रकार दूर-दूर तक फैला हुआ बर्फ जड़ बना बिछा पड़ा था। शिलाएँ ऐसी शांत थीं जैसे स्वयं शांति की भावना। उन्हीं शिलाओं के चरणों में पवन निरंतर टक्कर खा रहा था।

विशेष- आधुनिक हिन्दी कविता में मूर्त्त(concrete) वस्तुओं के उपमान और अमूर्त्त(abstract) और अमूर्त्त वस्तुओं के मूर्त्त जुटाये जाते हैं। प्रसाद की कविता की तो यह एक विशेषता है। शिला एक स्थूल वस्तु है। उसकी नीरवता की समता किसी मूर्च्छित व्यक्ति अथवा शव से कर सकते थे; पर ऐसा न करके नीरवता की भावना से की, जो दिखाई देने वाली वस्तु नहीं। पंत ने भी 'पल्लव' में वृक्षों की ऊँचाई की तुलना इच्छाओं से की है- 'उच्चाकांक्षाओं

से तरुवर'।

> ▶ प्रकृति में मानवीय भावों का आशेप

प्रसाद के काव्य की दूसरी विशेषता यह है कि वे प्रकृति में मानवीय भावों का आरोप करते हैं। ऊँची और बड़ी शिलाओं के सामने अड़ जाने से पवन को आगे बढ़ने का अवकाश नहीं मिलता। इस वर्णन से इस प्रकार का दृश्य सामने आता है मानो कोई अपनी उन्नति के लिए छाटपटाने वाला व्यक्ति किसी बड़े आदमी के पैरों पर सर टकरा रहा हो और वह बड़ा आदमी इतना निष्ठुर हो कि दूसरे व्यक्ति के विकास के लिए कोई अवसर ही न देना चाहे।

तरुण तपस्वी सा वह बैठा, साधन करता सुर-श्मशान;
नीचे प्रलय सिंधु लहरों का, होता था सकरुण अवसान।

शब्दार्थ

तरुण	-	नवयुवक
शमाशानसाधन	-	तांत्रिक लोग किसी जलाशय(नदी, तालाब, समुद्र) के किनारे श्मशान-भूमी में अर्धद-रात्री के समय भूत, प्रेत और चामुंडा आदि देवियों की सिद्धि के लिए मंत्र जाप करते हैं। किसी शव को आधा जल और आधा बाहर निकालकर उस पर आसमान जमाते हैं। भोजन के लिए किसी मुर्दे की खोपड़ी में चावल राँध कर खाते हैं। इच्छित शक्तियाँ प्रसन्न होकर दर्शन देतीं और सिद्ध हो जाती हैं। इस क्रिया को श्मशान-साधक कहते हैं।
सकरुण	-	करुणाभरी ध्वनी में
अवसान	-	समाप्ति, अन्त

> ▶ देवजाति का प्रलय में विनाश

अर्थ- प्रलय के कारण देवजाति का विनाश हो गया था, केवल मनु बच रहे थे। वह भूमि जहाँ वे वे इस समय चिंतामग्न बैठे हैं देवताओं की श्मशान भूमि बन चुकी थी। अतः दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था मानो वह नवयुवक दैवी-वैभव को फिर लौटाने के लिए तपस्वी के समान सुर-श्मशान में बैठा किसी शक्ति की साधना में लीन है। नीचे प्रलय के कारण घोर वर्षा के जल ने जो समुद्र का रूप धारण कर लिया था उसकी तरंगें पर्वत से आकर टकरातीं और एक करुणा भरी गूँज उठाकर वहाँ समाप्त हो जाती थीं।

विशेष- मनु श्मशान-साधन नहीं कर रहे हैं, अतः तांत्रिक की उपर्युक्त प्रक्रियाओं से उनके चिंतन का कोई संबंध नहीं। यह सत्य है कि आगे चलकर उन्होंने मानव जाति की सृष्टि की और मानव-धर्म की प्रतिष्ठा, पर वह किसी शक्ति की सिद्धि के बल पर नहीं, वरन् अपनी प्रखर प्रतिभा के सहारे।

उसी तपस्वी से लंबे, थे, देवदारू दो चार खड़े;
हुए हिम-धवल, जैसे पत्थर, बनकर ठिठुरे रहे अड़े।

शब्दार्थ

देवदारू	-	एक प्रकार का ऊँचा सीधा वृक्ष जो विशेष रूप से पर्वतों पर उगता है
धवल	-	सफेद

अर्थ- उस तपस्वी मनु के आकार के समान ही लंबे देवदारू के कुछ वृक्ष वहाँ खड़े थे। बर्फ से ढँकने के कारण वे सफेद दिखाई देते थे और पत्थर जैसे कड़े होकर जहाँ थे वहीं अड़ रह गये थे- मानों शीत से ठिठुर गये हों।

▶ मनु चिन्तामग्न

विशेष- प्रकृति को मनुष्य के सुख-दुःख से प्रभावित होते कवि लोग दिखाया करते हैं। वह हमारे सुख के समय प्रसन्न और दुःख के समय विषाद-मग्ना चित्रित की जाती है। यहाँ दुःख-दग्ध मनु के आस-पास के वृक्ष भी हिम के प्रकोप से ठिठुरे- से खड़े हैं।

अवयव की दृढ़ मांस-पेशियाँ, ऊर्जस्वित था वीर्य्य अपार;
स्फीत शिरायें, स्वस्थ रक्त का होता था जिनमें संचार।

शब्दार्थ

अवयव	-	शरीर के अंग
मांसपेशियाँ	-	पुट्ठे
ऊर्जस्वित	-	झलक रहा था
वीर्य्य	-	शारीरिक ओज
स्फीत	-	दृढ़ और उभरी
शिराएँ	-	रक्त को वहन करने वाली नाड़ियाँ

अर्थ- उसके शारीर में भुजाओं की पुट्ठे दृढ़ थे। मुख पर (ब्रह्मचर्य का) अपार तेज झलक रहा था। उभरी हुई नसें थीं जिनमें स्वास्थ्यवर्धक युद्ध रक्त बह रहा था।

▶ मनु का यौवन उपेक्षित सा बन गया

विशेष- प्रसाद के पात्र प्रायः दीर्घ आकार के, स्वास्थ्य से युक्त और सुंदर होते हैं। वर्णन किसी बलवान आर्य का चित्र आँखों में झूलने लगता है।

चिंता-कातर बदन हो रहा पौरूष जिसमें ओत प्रोत;
उधर उपेक्षामय यौवन का बहता भीतर मधुमय स्त्रोत।

शब्दार्थ

कातर	-	अधीर
बदन	-	मुख
ओतप्रोत	-	भरा हुआ
उपेक्षा	-	ध्यान न देना
भीतर	-	हृदय में
मधुमय स्त्रोत	-	मधुर सोता, प्रेम के मधुर भाव

अर्थ- उसके मुख पर यद्यपि चिंता की अधीरता झलक रही थी, तथापि वह ओज से परिपूर्ण था। दूसरी ओर उसके हृदय में यौवनकाल की अनेक भावनाओं का सोता बह रहा था। पर ऐसी स्थिति में उस ओर ध्यान देने का उसे अवकाश न था।

विशेष- मनु एक स्वस्थ युवक हैं। यह वह समय था जब उन्हें किसी से प्रेम करना चाहिए था। पर प्रेम की सिध्दि तो निश्चिंत स्थिति में होती है। शोक के सामने प्रेम-भाव दब जाता

है। इसी से यहाँ यौवन को उपेक्षित कहा है।

▶ गहरी व्यथा का वर्णन

ये पंक्तियाँ कवि की सूक्ष्म दृष्टि की परिचायक हैं। जैसे उसने पौरुष में शोक भाव को घुले-मिले देखा है, उसी प्रकार उपेक्षित यौवन में तरंगायित मधुर भावों पर भी उसकी दृष्टि गई है।

बाँधी महा बट से नौका थी सूखे में अब पड़ी रही;
उतर चला था वह जल-प्लावन, और निकलने लगी मही।

शब्दार्थ

महा बट	-	बरगद का विशाल वृक्ष
प्लावन	-	बाढ़

अर्थ- उसकी नौका बरगद के एक विशाल वृक्ष से बाँधी हुई इस समय सूखी भूमि पर पड़ी थी। कारण यह था कि जल की बाढ़ वहाँ से कुछ हट गयी थी और पृथ्वी निकल आयी थी।

विशेष- इस नौका ने मनु के प्राणों की रक्षा की थी।

निकल रही थी मर्म वेदना, करुणा विकल कहानी सी;
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही, हँसती सी पहचानी सी।

शब्दार्थ

मर्म वेदना	-	गहरी पीड़ा
करुणा विकल	-	दर्द भरी

अर्थ- मनु अपनी गहरी व्यथा का वर्णन करने लगे। यह वर्णन एक दर्द भरी करूण कहानी जैसा था। इस कहानी को सुनने वाला वहाँ कोई प्राणी न था, एकमात्र प्रकृति थी। पर सृष्टि के प्रारम्भ से ऐसी अगणित कहानियाँ सुनने की वह अभ्यस्त थी; अतः मनु के दुःख पर उसे कोई दुःख न हुआ। मनु अपनी व्यथा करते रहे, वह मुस्कुराती रही।

विशेष- सुख-दुःख सापेक्ष भाव है। एक राजकुमार केलिए ऊँगली का घाव सुनहरी पीड़ा दे सकता है। वही पीड़ा युद्ध-क्षेत्र में शरीर पर अनेक घाव खाने वाले सैनिक केलिए हँसी की वस्तु हो सकती है। मनु जिन घटनाओं को दुहरा रहे हैं, उनका ज्ञान प्रकृति को भी है। उस कहानी में उसके लिये कोई नवीनता नहीं है। इस दृष्टि से भी वह कहानी 'पहचानी सी' है। पर यहाँ वैषम्य (contrast) से भाव को कवि उद्दीप्त करना चाहता है। मनुष्य व्यथित है और जड़ प्रकृति हँस रही है। इस हास्य की निष्ठुरता की पृष्ठभूमि-सहानुभूति की हीनता-में शोक और भी गहरा हो गया है।

▶ यहाँ वैषम्य भाव को उद्दीप्त करता है

"ओ चिन्ता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली;
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप सी मतवाली!

शब्दार्थ

व्याली	-	सर्पिणी
स्फोट	-	फटना

मतवाली	-	मस्त, जिसके कर्म से दूसरों को हानि पहुँचे

अर्थ- मनु कहने लगे-हे चिंता, मेरे अंतर में प्रथम बार आज तुम्हारी एक रेखा अंकित हुई है। तुम विश्व-उपवन की सर्पिणी हो। तुम ज्वालामुखी पर्वत के उस प्रारम्भिक कंपन के समान मतवाली हो जिसके उपरांत भयंकर विस्फोट होता है।

▶ मनु प्रथम मानव है

विशेष- देवताओं का जीवन सुख और भोग का जीवन था। चिन्ता जैसे किसी मनोविकार से उनका परिचय न था। मनु प्रथम मानव हैं जिन्होंने अपने जीवन में पहली बार इस मनोभाव का अनुभव किया। पहले उसके अशुभ पक्ष को वे स्पष्ट कर रहे हैं।

उपवन में घूमने समय यदि वहाँ सर्पिणी के अस्तित्व की आशंका रहे, तो उद्यान की शोभा का उपयोग मनुष्य निश्चित मन से नहीं कर सकता। इसी प्रकार विश्व एक अत्यंत रम्यस्थल है जहाँ चिंता के अस्तित्व के कारण उसकी रम्यता बार-बार फीकी पड़ती रहती है।

ज्वालामुखी पर्वत के मुख पर कंपन होते ही जैसे इस बात का निश्चित हो जाता है कि अब पर्वत फटकर तरल अग्नि की नदी बहाता हुआ आस-पास की सब वस्तुओं को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा, उसी प्रकार चिंता का मस्तिष्क में प्रवेश होते ही समझ लेना चाहिए कि अब कोई भारी विपत्ति आने वाली है।

हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल रेखा!
हरी-भरी सी दौड़-धूप, ओ जल-माया की चल रेखा!

शब्दार्थ

ललाट	-	मस्तक अथवा भाग्य
खल रेखा	-	क्रूर या अशुभ रेखा
हरी-भरी	-	हरियालीपन या प्रसन्नता लाने वाली
दौड़-धुप	-	दौड़धुप करने वाली
जल-माया	-	जल के संमान माया
चल रेखा	-	चंचल रेखा, यहाँ तरंग से तात्पर्य है

अर्थ- तुम किसी प्रकार के अभाव से उत्पन्न होकर मनुष्य को अस्थिर कर देती हो। तुम्हारा उत्पन्न होना मनुष्य के दुर्भाग्य का सूचक है। पर तुम्हारा एक शुभ पक्षी भी है। जब मनुष्य तुमसे आक्रांत होता है तब वह आलस्य का परित्याग कर तुम्हें मिटाने के लिए दौड़-धूप करता है और उस परिश्रम के फलस्वरूप उसका जीवन हरा-भरा हो जाता है। इस मायात्मक जगत् को यदि जल माने तो तुम उसमें तरंग के समान हो। अर्थात् पवन के आघात से जैसे जल में लहरें उठने लगती हैं, उसी प्रकार तुम्हारी प्रेरणा से मनुष्य क्रियाशील बनता है।

▶ चिंता को बड़ी सुन्दर व्याख्या दी है

विशेष- चिंता को 'अभाव की बालिका' कह कर प्रसाद ने उसकी बड़ी सुन्दर व्याख्या की है। जब भोजन, वस्त्र, स्वास्थ्य, प्रेम आदि में से किसी का अभाव होता है, तभी तो चिंता उत्पन्न होती है।

इस ग्रह कक्षा की हलचल! रे तरल गरल की लघु लहरी;
जरा अमर जीवन की, और न कुछ सुनने वाली, बहरी!

शब्दार्थ

ग्रह	-	वे तारे जो सूर्य के चारों ओर घूमते हैं, जैसे पृथ्वी, मंगल, शुक्ल आदि
कक्षा	-	वह मार्ग जिससे ग्रह भ्रमण करते हैं
तरल	-	द्रव रूप में, पिघल हुआ
गरल	-	विष
जरा	-	वृद्धावस्था

अर्थ- तुम समस्त अंतरिक्ष में, जिसमें होकर पृथ्वी, मंगल आदि लोक घूमते हैं, हल-चल मचाने वाली हो अर्थात् तुम विश्व भर में खलबली उत्पन्न कर देती हो। तुम पिघले विष की हल्की सी लहर हो, अर्थात् विष की छोटी लहर जैसे शरीर में व्याप्त होकर मनुष्य को आकुलमात्र करती है मार नहीं डालती, उसी प्रकार चिंता मनुष्य को व्यथा पहुँचाती है। तुम देवताओं के जीवन में भी अपने प्रभाव से वृद्धावस्था के लक्षण ला सकती हो। और जब तुम आती हो तब इतनी बहरी बन जाती हो कि किसी की रोकटोक नहीं मानतीं।

▶ चिंता मनुष्य को व्यथा पहुँचाती है

विशेष- अधिक विषपान से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, पर उसके थोड़े सेवन से केवल व्यथा ही पहूँचती है। सर्प के दंश से जो विष शरीर में प्रवेश करता है उससे बहुत से प्राणी बच भी जाते हैं। भारतवर्ष में ऐसे नशेबाज भी हैं जो अफीम के समान ही विष का नाश करते हैं और उसे स्वास्थ्यवर्द्धक बतलाते हैं।

देवताओं के संबंध में प्रसिद्ध है कि वे चिरयुवा रहते हैं। पर चिंता के कारण मन यौवन में भी बुड्ढा हो सकता है। यहाँ चिंता की उसी शक्ति का प्रदर्शन है। मानवों के जीवन में तो क्या, अमरों के जीवन में भी वह प्रवेश करे, तो जरावस्था ला दे।

अरी व्याधि की सूत्र-धारिणी! अरी आधि, मधुमय अभिशाप!
हृदय-गगन में धूमकेतु सी, पुण्य सृष्टि में सुन्दर पाप!

शब्दार्थ

व्याधि	-	शारीरिक रोग
सूत्र-धारिणी	-	उत्पन्न करनेवाली
आधि	-	मानसिक व्यथा
मधुमय	-	मधुर
अभिशाप	-	शाप
धूमकेतु	-	पुच्छल तारा
सुन्दर पाप	-	वह अवांछित कर्म जिसका फल सुन्दर हो

अर्थ- तुम शारीरिक रोगों को जन्म देती हो। तुम मन को व्यथा पहुँचाती हो। तुम मधुर शाप हो। गगन में पुच्छल तारे का उदित होना जैसे एक अशुभ लक्षण है, उसी प्रकार मन में तुम्हारा उदित होना। इस पवित्र सृष्टि में बह्मा दृष्टि से तुम अकल्याणकारी हो, यद्यपि तुम्हारे अस्तित्व का परिणाम अंत में भला ही सिद्ध होता है।

विशेष- चिंता कभी-कभी शारीरिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं जैसे प्रेम की घोर निराशा में प्रायः

हिस्ट्रिया और क्षय रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

▶ मधुमय अभिशाप

चिंता से मन व्याकुल रहता है इससे वह शाप तो है, पर यदि जीवन में चिंता न हो तो मनुष्य सुख के विधान के लिए प्रयत्न न करे और जीवन की मधुरता से वंचित रहे। इसी बात को दृष्टि में रखकर उसे 'मधुमय अभिशाप' कहा गया है।

ज्योतिषियों का ऐसा मन है कि पुच्छल तारे के उदित होने पर अकाल, महामारी अथवा महायुद्ध होता है। चिंता भी कभी किसी बड़े कष्ट की अग्रामिनी बनती है।

पाप शब्द का तात्पर्य है आत्मा के प्रतिकूल भाव। आत्मा आनन्दमय है। चिंता उस आनंद में व्याघात डालती है। अतः अवांछनीय होने पर भी अनिवार्य है। इसी से उसे 'सुन्दर पाप' कहा गया है।

▶ चिंता को सुन्दर पाप कहा

पाप भी कभी-कभी सुन्दर होता है। जैसे कोई कसाई यदि घने वन में किसी गौ का पीछा कर रहा हो और पूछने पर कोई महात्मा उसे अन्य दिशा में जाती हुई बता दे, तो उस तपस्वी ने झूठ बोलने का पाप तो किया, परन्तु गौ के प्राण बचाने के कारण वह पुण्य का भागी भी हुआ।

मनन करावेगीतू कितना? उस निश्चिंत जाति का जीव;
अमर मरेगा क्या? तू कितनी गहरी डाल रही है नींव।

▶ अपने स्वरूप को भूल कर माया में बद्ध होता है तभी कष्ट मिलता है

अर्थ- जीवा उस परमात्मा का अंश है जो दुःख शोक से प्रभावित नहीं होता। अतः मन को तू चाहे कितना ही चिंतित रख, प्राणियों के हृदय में तू कितनी ही गहरी प्रवेश कर जा, पर जीवात्मा को मार डालने में तू असमर्थ है। कारण- वह अमर है।

विशेष- संसार में आकर जीव जब अपने स्वरूप को भूल जाता है और माया में अपने को बद्ध समझ लेता है, तभी कष्ट उठाता है; नहीं तो वह निर्मल आनंदमय है।

आह! घिरेगी हृदय लहलहे खेतों पर करका-घन सी;
छिपी रहेगी अंतरमन में सब के तू निगूढ़ धन सी।

अर्थ- जैसे हरे-भरे खेतों पर ओलों भरे बादल छा जाते हैं, उसी प्रकार तुम आशा भरे हृदयों पर छा जाया करोगी। तुम सबके हृदय के बहुत भीतर उसी प्रकार छिपी रहोगी, जैसे पृथ्वी के भीतर मनुष्यों का धन धिपा रहता है।

▶ चिंता को आशंकाओं की जननी माना

विशेष- इन पंक्तियों में चिंता को आशंकाओं की जननी माना है। ओले भरे बादलों के घिरने का ही वर्णन यहाँ है बरसने का नहीं, यह ध्यान देने की बात है। घिरने का भाव यह है कि यदि वे बरस गए तो खेती नष्ट हो जायेगी; पर वे टल भी सकते हैं। इसी प्रकार चिंता बनी रही तो आशाएँ कुचल जायेगी।

बुद्धि, मनीषा, मति, आशा, चिंता तेरे हैं कितने नाम!
अरी पाप है तू, जा, चल, जा यहाँ नहीं कुछ तेरा काम।

अर्थ- हे चिंता तुम्हारा ही नाम बुद्धि है, तुम्हें ही मनीषा(ज्ञान) कहते हैं, तुम्हारा ही एक रूप मति है और तुम्हीं आशा का आकार धारण कर लेती हो। पर जिस रूप में तुम मेरे हृदय

में उदित हुई हो वह बहुत ही अशुभ है; अतः तुम यहाँ से चली जाओ, एकदम चली जाओ। यहाँ तुम्हारा कुछ काम नहीं।

▶ चिंतन से सत्, असत् का निर्णय होता है

विशेष- यहाँ कवि ने चिंता शब्द से चिंतन का अर्थ लिया है। चिंतन से सत्, असत् का निर्णय होता है, ज्ञान उत्पन्न होता है। चिंतन से ही मनुष्य विवादग्रस्त विषयों के सम्बन्ध में अपनी कोई धारणा बना लेता है, और जब शोक के मध्य स्थिर-बुद्धि से सोचता है, तब आशा को भी पोषित कर लेता है।

विस्मृति आ, अवसाद घेर ले, नीरवते! बस चुप कर दे;

चेतनता चल जा, जड़ता से आज शून्य मेरा भर दे।"

अर्थ- विस्मृति तू आ-जिससे मैं अतीत के उन समस्त सुखों को भूल जाऊँ जिन्हें स्मरण करके पीड़ा होती है। आज मेरा मन शिथिल हो जाय-जिससे उसमें कुछ भी सोचने का उत्साह न रहे। मेरे इस धड़कते हृदय को हे शान्ति की भावना, तू एकदम चुप कर दे। ऐ मेरी सोच-विचार की शक्ति, आज मेरे सूने हृदय को जड़ता से भर कर (जड़ बनाकर) तू कहीं चली जा।

▶ चेतना-शक्ति के कारण ही मनुष्य सुख-दुःख का अनुभव करता है

विशेष- चेतना-शक्ति के कारण ही मनुष्य सुख-दुःख का अनुभव करता है। बहुत दुःख पाने पर वह सोचता है कि इससे तो वह जड़ होता तो अच्छा था। पत्थर को तो दुःख का भान होता न? इसी प्रकार की घोर निराशामयी शोकपूर्ण स्थिति में आज मनु हैं। स्मृति खटकती है, वे विकल हो जाते हैं। चाहते हैं आज उनकी चेतना-शक्ति ही उनसे छिन जाती तो इस असह्य पीड़ा से मुक्त होने का मार्ग मिल जाता।

"चिंता करता हूँ मैं जितनी उस अतीत की, उस सुख की;

उतनी ही अनंत में बनती जातीं रेखायें दुख की।

अर्थ- बीते दिनों में देवताओं ने जो सुख भोगे थे उनको मैं जितनी बार स्मरण करता हूँ मेरे सीमाहीन हृदय में दुःख की उतनी ही रेखाएँ खींचती जाती हैं। जितना सोचता हूँ उतना दुःख बढता है।

▶ बार-बार दुहराये जाने पर सुख-दुःख और गहरे होते

विशेष- हम जो सुख-दुःख के दृश्य देखते हैं उनके मृदु-कटु भाव अपने संस्कार-चिह्न हमारे अन्तःकरण में छोड़ जाते हैं। अनुकूल स्थिति पाकर वे ही स्मृति रूप में उभरते हैं। बार-बार दुहराये जाने पर वे और गहरे होते और उसी परिणाम में सुखद-दुःखद हो जाते।

आह सर्ग के अग्रदूत! तुम

असफल हुए, विलीन हुए।

भक्षक या रक्षक, जो समझो,

केवल अपने मीन हुए।

अर्थ- कितने शोक की बात है कि जिन देवताओं का सृजन इस पृथ्वी पर सबसे पूर्व हुआ था, वे आज अपने अस्तित्व को बनाये रखने में असफल होकर नष्ट हो गये। पर इसमें अपराध किसी दूसरे का नहीं। जैसे मछलियाँ अपनी जाति की रक्षा स्वयं ही करतीं और मन में आने पर वे ही सजातीय मछलियाँ को खा जाती हैं, उसी प्रकार अपनी वीरता और बुद्धि बल से देवताओं ने अपना विकास किया और विलास में रात-दिन लीन रहकर स्वयं ही अपना

> ▶ मछलियाँ भी अपने बच्चों को निगल जाती है

विनाश कर लिया।

विशेष- प्रसिद्ध है कि सर्पिणी की भांति मछलियाँ भी अपने बच्चों को निगल जाती हैं।

अरी आँधियों! ओ बिजली की दिवा-रात्रि तेरा नर्त्तन;
उसी वासना की उपासना, वह तेरा प्रत्यावर्त्तन।

अर्थ- रात-दिन आँधियाँ चलती रहीं, बिजलियाँ गिरती रही; पर देवता लोग भोग-विलास में ही लीन रहे। यह देखकर फिर आँधियाँ लौटीं और फिर बिजलियाँ गिरीं।

> ▶ आँधी बिजली के दिन-रात

विशेष- प्रसाद के कुछ वाक्यों का गठन बड़ा विचित्र होता है। जैसे 'प्रकाश के दिन' अथवा 'अंधकार की रात्रि' का अर्थ होगा वह दिन जिसमें प्रकाश भरा हो अथवा वह रात्रि जिसमें अंधकार छाया रहे; इसी प्रकार 'आँधी बिजली के दिन-रात' का तात्पर्य हुआ वे दिन-रात जिनमें आँधियाँ और बिजलियाँ का ही दौर-दौरा हो। नर्त्तन से तात्पर्य तीव्र गति का है।

मणि-दीपों के अंधकारमय अरे निराशापूर्ण भविष्य!
देव-दम्भ के महा मेध में सब कुछ ही बन गया हविष्य।

अर्थ- देवताओं के अहंकार के महान यज्ञ में हमारा सब कुछ स्वाहा हो गया। देवताओं को इस बात का बड़ा गर्व था कि उनका विनाश कोई नहीं कर सकता; अतः प्रकृति की चेतावनी पर उन्होंने ध्यान न दिया और अन्त में उसके प्रकोप से वे विनष्ट हो गये। अब हमारा भविष्य उसी प्रकार निराशापूर्ण और अंधकार से भरा हुआ है जैसे घोर अँधेरे में मणि का दीपक कहीं रख दिया जाय तो वह बेचारा केवल अपने आस-पास ही थोड़ा प्रकाश फैला सकता है, अपने चारों ओर फैले अपार तिमिर को नहीं चीर सकता। देवताओं में से केवल मैं कुछ झिल-मिल आशाएँ लेकर बच गया हूँ, पर एकाकी क्या कर सकूँगा?

> ▶ प्रकृति की चेतावनी पर ध्यान न दिया

अरे अमरता के चमकीले पुतलो! तेरे वे जय नाद;
काँप रहे हैं आज प्रतिध्वनि बन कर मानो दीन विषाद।

अर्थ- हे यशस्वी देवता लोगों! आज तुम्हारी जय की ध्वनियाँ दीनता और विषाद की कंपित प्रतिध्वनियों में बदल गई हैं अर्थात् जहाँ कभी जयघोष होता था वहाँ अब दीनता और शोक बरस रहे हैं।

> ▶ यहाँ वचन-दोष है

टिप्पणी- 'तेरे' शब्द पुतलों के लिए आया है। यहाँ वचन-दोष है। 'पुतलों' बहुवचन में है, 'तेरे' एकवचन में। तेरे के स्थान पर किसी प्रकार तुम्हारे आना चाहिए। प्रसाद जी से ऐसी अशुद्धियाँ प्रायः हो जाती थीं। ऊपर 'दिवा रात्रि तेरा' की भी यही दशा है।

प्रकृति रही दुर्जय, पराजित हम सब थे भूले मद में;
भोले थे, हां तिरते केवल सब विलासित के नद में;

अर्थ- प्रकृति जीत गई। हम हार गए। अपनी मस्ती में हम सब कुछ भूल गए। हम इतने अजान थे कि भोग-विलास की नदी में ही तैरते रहे। इसमें डूब भी जायेंगे, यह कभी नहीं सोचा था।

"वे सब डूबे, डूबा उनका विभव, बन गया पारावार;
उमड़ रहा है देव सुखों पर दुःख जलधि का नाद अपार।"

अर्थ- वे सब देवता जो भोग-विलास में लीन रहे थे, नष्ट हो गए। उनका सारा ऐश्वर्य नष्ट हो गया। वह ऐश्वर्य पानी हो गया, इसी से उनके स्थान पर समुद्र रह गया। वह मचलता हुआ समुद्र नहीं गरज रहा; अपितु देवताओं के सुख को अपने में डूबाकर भारी दुःख ही घोर ध्वनि कर रहा है।

▶ वैभव समुद्र के रूप में परिवर्तित हो गया

विशेष- एक वस्तु के स्थान पर उसे छिपा या नष्ट कर जब दूसरी वस्तु दिखाई देती है, तब इस प्रकार सोचना अत्यंत स्वाभाविक है कि पहली वत्सु ही दूसरी वस्तु के रूप में परिवर्तित हो गई है। 'वैभव समुद्र के रूप में परिवर्तित हो गया' या 'जय ध्वनि विषाद ध्वनि बन गई' इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

"वह उन्मत्त विलास हुआ क्या? स्वप्न रहा या छलना थी!
देव सृष्टि की सुख विभावरी ताराओं की कलना थी।

▶ देवताओं के संसार के सुख-रजनी ताराओं से भरी हुई थी

अर्थ- उनका वह संयमहीन भोग-विलास कहाँ चला गया? वह कोई स्वप्न था या केवल भ्रम था? देवताओं के संसार के सुख-रजनी ताराओं से भरी हुई थी अर्थात जैसे रात में बिखरे तारागणों की कोई गिनती नहीं, वैसे ही देवताओं के सुखों की कोई सीमा न थी। विविध प्रकार के अगणित सुखों का भोग वे करते थे।

चलते थे सुरभित अंचल से जीवन के मधुमय निश्वास।
कोलाहल में मुखरित होता देव जाति का सुख-विश्वास।

▶ देवियों के वस्त्रों से सुगंध का फूटना

अर्थ- नारियों के सुगंधित अंचल से जीवन की सुखमय साँसें प्रवाहित होती थीं अर्थात देवियों के वस्त्रों से सुगंध का फूटना इस बात का परिचायक था कि वे संपन्न घरानों की हैं, क्योंकि दरिद्र घरों में दुःख का जीवन व्यतीत करने वाली स्त्रियाँ अंचल सुवासित रख ही नहीं सकतीं। इसी प्रकार आमोद-प्रमोद की जो चारों ओर ध्वनि उठती रहती थी, उससे यह पता चलता था कि देवजाति से जीवन व्यतीत कर रही है।

सुख, केवल सुख का वह संग्रह, केंद्रीभूत हुआ इतना;
छाया पथ में नव तुषार का सघन मिलन होता जितना।

अर्थ- देवताओं ने सभी स्थानों से जुटाकर विविध सुखों को अपने बीच इस प्रकार एकत्र किया, जिस प्रकार नवीन हिम के टुकड़ों के समान चमकने वाले अनंत तारे आकाशगंगा में घने रूप से सटकर समाये रहते हैं।

▶ दूधिया भाग को आकाश-गंगा या छायापथ कहते हैं

विशेष- रात को आकाश में कुछ चौड़ी और दूर तक लंबी एक ऐसी टुकड़ी दिखाई देती है मानों वहाँ दूध बिखर गया हो। वैज्ञानिकों का कहना है कि यहाँ आकाश के अन्य भागों की भांति तारे छितरे हुए नहीं हैं, वरन अत्यंत सटकर बिछे हुए हैं। इस दूधिया भाग को आकाश-गंगा या छायापथ कहते हैं।

सब कुछ थे स्वायत्त, विश्व के बल, वैभव, आनंद आपार;
उद्वेलित लहरों सा होता, उस समृद्धि का सुख-संचार।

अर्थ- संसार भर का बल, वैभव और अपार आनंद उनके अधीन था। जैसे समुद्र में अनंत लहरें उठती रहती हैं, उसी प्रकार उन्होंने जो ऐश्वर्य एकत्र किया था, उससे असंख्य रूपों में सुख उत्पन्न होता रहता था।

कीर्ति, दीप्ति, शोभा थी नचती अरुण किरण सी चारों ओर,
सप्त सिंधु के तरल कणों में, द्रुम दल में, आनंद-विभोर

अर्थ- देवताओं के यश, तेज और सौन्दर्य की छटा सूर्य की किरणों के समान सभी दिशाओं, सप्त-सरिताओं के चंचल जलकणों और वृक्ष-समूहों में आनंदपूर्वक नृत्य करती थी। तात्पर्य यह है कि गंगा और सिंधू नदी के बीच क्या जल और क्या स्थल सभी कहीं देवताओं के रूप, शौर्य और प्रताप बिखरा पड़ा था।

▶ सारस्वत प्रदेश की महारानी 'इड़ा'

विशेष- देवजाति हिमालय के नीचे उत्तरी भारत के कुछ अंशों में ही शासन करती थी। कामायनी से भी यही सिद्ध होता है। उसमें आगे चलकर इड़ा को सारस्वत प्रदेश की महारानी लिखा है। इसी से सिंधु का अर्थ यहाँ नदी है।

शक्ति रही हाँ शक्ति, प्रकृति थी पद-तल में विनम्र विश्रांत;
काँपती धरणी, उन चरणों से होकर प्रतिदिन ही आक्रांत!

अर्थ- देवताओं की भुजाओं में वास्तविक शक्ति थी। समस्त प्रकृति उनके चरणों में हारकर झुक गई। पृथ्वी पद-दलित होकर नित्य ही कांपती रहती थी।

▶ प्रकृति के झुकने का तात्पर्य यह है कि वस्तुओं पर पूर्ण अधिकार होना

विशेष- प्रकृति के झुकने का तात्पर्य है प्रकृति कि वस्तुओं पर पूर्ण अधिकार होने से। घने वनों में वे निर्भीक भाव से विचरण करते थे, सरिताओं में उनकी नौकाएं स्वच्छंदता से घूमती थीं।

स्वयं देव थे हम सब, ओ फिर क्यों न विश्रृंखल होती सृष्टि,
अरे अचानक हुई इसी से कड़ी आपदाओं की वृष्टि।

अर्थ- जब हम सब यह समझने लगे कि हम तो 'देवता' हैं अर्थात् हमारे कर्मों का कोई नियामक नहीं, जो चाहें वह करने को हम स्वतंत्र हैं, तब सृष्टि में हमारे संयमहीन कार्यों से अव्यवस्था फैलती है। यही कारण है हम पर पड़ी आपत्तियाँ सहसा बरस पडीं।

▶ सर्वशक्तिमान ने विवेकहीन जाति को सदैव के लिए सुला दिया

विशेष- प्राणी या तो विवेक से शुद्ध आचरण करता है या फिर भय से। देवताओं में न विवेक था और न उन्हें किसी का भय। पर भगवान् तो दुष्कर्मों का दंड देकर ही मानते हैं, नहीं तो उनकी सृष्टि का विकास बंद हो जाएगे। इसी से देवताओं की वासना-वृत्ति जब अपनी सीमा पार कर गई तब एक दिन प्रलय रूपी अपने तनिक से भरू-भंग से उस सर्वशक्तिमान ने इस विवेकहीन जाति को सदैव के लिए सुला दिया।

गया, सभी कुछ गया, मधुरतम सुर बालाओं का श्रृंगार;
उषा ज्योत्स्ना सा यौवन-स्मित, मधुप सदृश निश्चिंत विहार।

अर्थ- गया, सब कुछ चला गया। सुन्दर से सुन्दर अप्सराओं का श्रृंगार चला गया। उषा-सा उनका यौवन चला गया। चाँदनी-सी उसकी मुस्कान चली गयी। भोगी भौरों के समान उनका

चिंतारहित भोग-विलास चला गया।

- यौवन को उषा कहना अत्यंत सार्थक है

विशेष- उषा में कई गुण होते हैं। उनमें नवीनता होती है, स्फूर्ति होती है, उज्ज्वलता होती है। ये गुण यौवन में होते हैं। इस दृष्टि से यौवन को उषा कहना अत्यंत सार्थक है। काव्य में कुछ वस्तुओं का रंग माना जाता है जैसे प्रेम का लाल, पाप का काला, हास्य का श्वेत। मुस्कान को इसी दृष्टि से चाँदनी कहा है।

भरी वासना-सरिता का वह कैसा था मदमत्त प्रवाह,

प्रलय-जलधि में संगम जिसका देख हृदय था उठा कराह"

- 'देख हृदय कराह उठा था'

अर्थ- उनकी उमड़ती हुई वासना रूपी नदी ऐसी मस्ती और प्रचण्ड वेग से बही कि अंत में वह विनाश के समुद्र में विलीन हो गयी। इस दृश्य को देखकर मेरा हृदय कराह उठा था।

"चिर किशोर-वय, नित्य विलासी, सुरभित जिससे रहा दिगंत;

आज तिरोहित हुआ कहाँ वह मधु से पूर्ण अनन्त वसंत?

अर्थ- जैसे नवीनता लाने वाला, विलास वृत्ति को उकसाने वाला, दिशाओं को सुगन्धित करने वाला, मकरंद बरसाने वाला वसंत कुछ दिनों के उपरांत छिप जाता है, उसी प्रकार हमारे वे अपार सुख के दिन कहाँ चले गये, जब हम सदा युवावस्था का अनुभव करते थे, नित्य विलासमग्न रहते थे, जब दिशाएँ हमारे आमोद से युक्त रहती थीं और चारों ओर मधुरता बरसाती थीं?

- मकरंद बरसाने वाला वसंत

कुसुमित कुंजों में वे पुलकित प्रेमालिंगन हुए विलीन,

मौन हुई हैं मूर्च्छित तानें और न सुन पड़ती अब बीन।

अर्थ- पुष्पों से युक्त कुंजों में प्रेम के आवेश में देवता और अप्सराएँ जब एक-दूसरे को हृदय लगाते, तब रोमांचित हो जाते थे। आज वे दृश्य कहाँ? अब लयभरी तानें मूक हो गयीं और बीन की ध्वनि भी सुनायी नहीं पड़ती।

- लयभरी तानें मूक हो गयीं

विशेष- संगीत में सातों स्वरों पर दोनों ओर से ऊँगली फेरने को अर्थात् तीव्रगति से 'सा रे ग म' भरने को मूर्च्छित कहते हैं। इससे एक अद्भुत मिठास पैदा होती है।

अब न कपोलों पर छाया सी पड़ती मुख की सुरभित भाप;

भुज मूलों में, शिथिल वसन की व्यक्त न होती है अब माप।

अर्थ- अप्सराएँ निकट बैठकर जब दीर्घा से साँसें लेती थीं, तब उनके मुख से निकले सुगंधित उच्छ्वास देवताओं के कपोलों को स्पर्श करते ही ऐसे शीतल प्रतीत होते थे जैसे छाया। अधिक आवेश में उनके वस्त्र ढीले होकर जब बिखरने लगते और ऐसी दशा में जब वे एक-दूसरे का आलिंगन करते तो देवियों के वस्त्र देवताओं की बगलों में लिपट के रह जाते थे। अब यह सब कहाँ?

- देवताओं, अप्सराओं और पद्मिनी स्त्रियों के संबंध में प्रसिद्ध है

विशेष- देवताओं और अप्सराओं और पद्मिनी स्त्रियों के संबंध में प्रसिद्ध है कि उनके शरीर और सांसों से पुष्प की सी मधुर गंध निकलती है।

कंकण क्वणित, रणित नूपुर थे, हिलते थे छाती पर हार;

मुखरित था कलरव, गीतों में स्वर लय का होता अभिसार।

अर्थ- अप्सराओं का आलिंगन करते ही उनका शरीर हिल उठता। इससे उनके कंकणों से ध्वनि फूटती, घूँघरू बज उठते, हृदय का हार हिलने लगता, मधुर संगीत निनादित रहता और गीत जब गाये जाते तब उनमें स्वर और लय मिले रहते।

▶ स्वर-लय को प्रेमी-प्रेमिका के रूप में देखा है

विशेष- अभिसार का अर्थ होता है कि नायक का नायिका से छुपकर मिलने जाना। यहाँ देखने की बात यह है कि 'स्वर' पुल्लिंग में है और 'लय' स्त्रीलिंग में। मिलन-काल के संगीत में भी कवि ने स्वर-लय को प्रेमी-प्रेमिका के रूप में देखा है।

सौरभ से दिगंत पूरित था, अंतरिक्ष आलोक-अधीर

सब एक अचेत गति थी, जिससे पिछड़ा रहे समीर!

अर्थ- सुगंध से दिशाएं पूर्ण रहतीं और रात को प्रकाश से चारों ओर का वातावरण चंचल हो उठता। मलय पवन की मस्त गति की बड़ी प्रशंसा सुनते हैं, पर यहाँ जिसे देखो वह ऐसी मस्ती में था कि उसके आगे समीर भी हार मानता था।

▶ सौरभ के फैलने की संभावना

विशेष- शरीर से फूटने वाली गंध, जूड़े और हार में गूँथने वाले पुष्प, शैय्या-रचना में बिछने वाले फूल, वस्त्रों में लगने वाले इत्र, इनके अतिरिक्त और भी अनेक रूपों में सौरभ के फैलने की संभावना थी।

वह अनंग पीड़ा अनुभव सा अंग भंगियों का नर्त्तन,

मधुकर के मरंद-उत्सव सा मदिर भाव से आवर्त्तन।

अर्थ- देवताओं के समक्ष जब अप्सराएँ किसी बहाने अपने विविध अंगों को मोड़ कर दिखाती थीं, तब इस बात का संकेत मिलता था कि वे काम-क्रीड़ा का अनुभव कर रही हैं। उनकी इस दुर्बलता से लाभ उठा भौरों के समान बार-बार मस्त होकर उनके प्रेमी रसोत्सव मानने आते बार-बार उनसे प्रेम का रस प्राप्त करते।

▶ रस की भाषा में 'हाव' का अर्थ

विशेष- किसी को आकर्षित करने केलिए जब कोई युवती जान-बूझकर मुस्कराती, नाक सिकोड़ती, भौरों मरोड़ती, नेत्रों को चंचल करती या अंगडाई आदि लेती हैं, तब इसे रस की भाषा में 'हाव' कहते हैं। अंग-भंगियों के नर्तन से यहाँ ठीक यही तात्पर्य है।

सुरा सुरभिमय वदन अरुण वे नयन भरे आलस अनुराग;

कल कपोल था जहाँ बिछलता कल्पवृक्ष का पीत पराग।

अर्थ- मदिरा की गंध उनके मुख से आती थी। रात में देर तक जागने के कारण आलस्य और प्रेम से भरी उनकी आँखें लाल रहती थीं। उनके कपोल की पीली आभा के सामने कल्पवृक्ष का पीला पराग भी अपनी चिकनाहट, उज्जवलत और आभा में तुच्छ प्रतीत होता था।

विकल वासना के प्रतिनिधि वे सब मुरझाये चले गये;

आह! जले अपनी ज्वाला से, फिर वे जल में गले गये।"

अर्थ- वे देवता नहीं थे, अतृप्त वासना के प्रतीक थे। आज वे सब समाप्त हो गये। अपने अंतर में वासना की जो आग उन्होंने प्रज्ज्वलित की थी, वह उन्हें चाट गई और अंत में वे

इस जल में गलकर सदा को चले गये।

"अरे उपेक्षा-भरी अमरते! री अतृप्त! निर्बाध विलास!
द्विधा-रहित अपलक नयनों की भूख भरी दर्शन की प्यास!

▶ विलास में वे निरंतर लीन रहे

अर्थ- देवताओं ने अपने जीवन में सब की उपेक्षा की। उनका मन भोग-विलास से कभी भरा नहीं। विलास में वे निरंतर लीन रहे। किसी प्रकार की चिंता किये बिना, टकटकी लगाकर अप्सराओं के रूप को वे निरखते रहते थे जिससे हृदय के प्रेम की भूख और उन्हें आँखों के आगे बनाए रखने की प्यास टपकती थी।

बिछुड़े तेरे सब आलिंगन, पुलक स्पर्श का पता नहीं;
मधुमय चुंबन कातरतायें आज न मुख को सता रहीं।

▶ आलिंगन आज बिछुड़ गए

अर्थ- वे आलिंगन आज बिछुड़ गए। स्पर्श जो शरीर को रोमांचित कर देते थे, अब सपने हो गए। देवता लोग बड़े अधीर होकर अप्सराओं से मधुर चुम्बनों केलिए याचना करते थे और कभी-कभी तो उन चुम्बनों की सीमा यहाँ तक बढ़ जाती थी कि वे तंग हो उठती थीं।

रत्न सौध के वातायन, जिनमें आता मधु-मदिर समीर;
टकराती होगी अब उनमें तिमिंगिलों की भीड़ अधीर।

▶ 'मकरंद से मस्त पवन'

अर्थ- उन रत्न-भावनों के झरोखों में, जिनमें होकर कभी मकरंद से मस्त पवन आता था, चंचल सामुद्रिक मछलियों की भीड़ टकरा रही होगी।

विशेष- ये भवन अब जलमग्न हैं, अतः पवन के स्थान पर वहाँ मच्छलियों का टकराना स्वाभाविक है।

देव कामिनी के नयनों से जहाँ नील नलिनों की सृष्टि
होती थी, अब वहाँ हो रही प्रलायकारिणी भीषण वृष्टि।

अर्थ- सुर सुन्दरियाँ जिधर देख लेती थीं, उधर ही नीले कमलों की वर्षा होने लगती थी अर्थात देवियों के नेत्र नील कमल जैसे थे। आज देवियों की कृपादृष्टि के उन स्थानों पर प्रलय मचाने वाली भंयकर वर्षा हो रही है

वे अम्लान कुसुम सुरभित, मणि-रचित मनोहर मालायें,
बनीं श्रृंखला, जकड़ीं जिनमें विलासिनी सुर बालायें।

▶ प्रणय-क्रीड़ा

अर्थ- खिले हुए सुगन्धित पुष्पों और मणियों को लेकर मनोहर मालाएँ देवता लोग रचते थे और विलासिनी सुर-सुन्दरियों को उनसे जंजीर की तरह जकड़ देते थे।

विशेष- मालाओं से शरीर को बाँध देना एक प्रकार की प्रणय-क्रीड़ा है।

देव-यजन के पशु यज्ञों की वह पूर्णहूति की ज्वाला,
जलनिधि में बन जलती कैसी आज लहरियों की माला।

अर्थ- यज्ञ की समाप्ति पर पशुओं की अंतिम आहुति से देवताओं के यज्ञ की ज्वाला भभक उठती थी। आज अग्नि की वे लपटें समुद्र की लहरों के रूप में प्रकाशित हो रही हैं। भाव यह

कि जहाँ यज्ञ और बलि कर्म होता था, वहाँ समुद्र लहरा रहा है।

उनको देख कौन रोया यों अंतरिक्ष में बैठ अधीर!

व्यस्त बरसने लगा अश्रुमय यह प्रलय हलाहल नीर!

▶ चारों ओर विषैला पानी बरसा

अर्थ- उनकी इस वासनात्मक अधोगति को देखकर आकाश में न जाने कौन रोया कि उसके आँसुओं के रूप में प्रलय मचाने वाला चारों ओर ऐसा विषैला पानी बरसा, जिससे सब नष्ट हो गए।

हा-हा-कार हुआ क्रंदन मय कठिन कुलिश होते थे चूर;

हुए दिगंत बधिर, भीषण रव बार बार होता था क्रूर।

▶ बिजली की भीषण ध्वनि का वर्णन

अर्थ- कठोर बिजली टूट-टूटकर गिरने लगी। इससे हाहाकार मच गया और रोने की ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। बिजली की ऐसी भीषण ध्वनि बार-बार छायी कि दिशाएँ भी बहरी हो गई।

दिग्दाहों से धूम उठे, या जलधर उठे, क्षितिज तट के!

सघन गगन में भीम प्रकंपन, झंझा के चलते झटके।

▶ चारों दिशाओं में धुआँ था

अर्थ- कहा नहीं जा सकता कि यह चारों दिशाओं में आग लग जाने से उठा हुआ धुआँ था अथवा आकाश के कोनों में ही बादल घिर आये थे; पर उसी समय आँधी के जहोंके आने लगे, जिनसे आकाश में भरे मेघ वेग से डोल उठे।

अंधकार में मलिन मित्र की धुँधली आभा लीन हुई,

वरुण व्यस्त थे, घनी कालिमा स्तर-स्तर जमती पीन हुई।

अर्थ- दिग्दाहों से उठे धुएँ के मलिन अंधकार में सूर्य का प्रकाश पहले धुँधला पड़ा, फिर पूर्ण रूप से विलीन हो गया। जल-देवता इतने में क्रुद्ध हो उठे और घोर वर्षा का भय उत्पन्न करने लगे। घने धुएँ की तह पर तह जमने से कालिमा स्थूल हो गयी।

▶ सूर्य का प्रकाश पहले धुँधला पड़ा

विशेष- कालिमा की स्थूलता का दृश्य किसी भी बड़े नगर में किसी मिल की चिमनी से निकले धुएँ की तहों के जमने पर देखा जा सकता है।

पंचभूत का भैरव मिश्रण, शंपाओं के शकल-निपात,

उल्का लेकर अमर शक्तियाँ खोज रहीं ज्यों खोया प्रात।

अर्थ- पंचभूत संहारक रूप में मिल रहे थे अर्थात् पृथ्वी जो बसने के किये है, वह फट रही थी। जल जो प्यास बुझाने केलिए है, वह भवन डूबा रहा था। अग्नि जो भोजन पकाने केलिए है, वह देवताओं के शरीर को भस्म कर रही थी। बिजली टूटकर गिरने लगी; अतः विघुत-खंड ऐसे प्रतीत हुए मानों आकाश की अमर शक्तियाँ अंधकार में धिपे प्रभात को मशाल लेकर ढूंढ रही हों।

▶ पंचभूत संहारक रूप में मिल रहे थे

बार-बार उस भीषण रव से काँपती धरती देख विशेष,

मानो नील व्योम उतरा हो आलिंगन के हेतु अशेष।

▶ पृथ्वी को कंपित देख आकाश धैर्य बाँधाने केलिए नीचे उतर आया

अर्थ- दिग्दाहों के धूम से ऊपर छाये स्थूल अन्धकार को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो विद्युत की भयंकर कड़क से पृथ्वी को अत्यधिक कंपित देख सम्पूर्ण आकाश उसे छाती से

चिपटा कर धैर्य बाँधाने केलिए नीचे उतर आया हो।

उधर गरजतीं सिंधु लहरियाँ कुटिल काल के जालों सी;
चली आ रहीं फेन उगलती फन फैलाये व्यालों सी।

अर्थ- उधर कुटिल मृत्यु के जाल के समान दिखाई देने वाली समुद्र की लहरें घोर ध्वनि कर रही थीं। वे इस प्रकार बढ़ रही थीं जैसे अपने फण फैला कर झाग उगलते हुए सर्प लपके आ रहे हों।

- लम्बी पतली होने के कारण लहरें जाल के डोरों के समान दिखाई दी

विशेष- इन पंक्तियों में दोनों उपमाएँ अत्यंत उपर्युक्त सिद्ध हुई हैं। लम्बी पतली होने के कारण लहरें आकार में जाल के डोरों के समान दिखाई देती थीं। और वे देवताओं को अपने जाल में फँसाकर निगल जाती थीं, इसी से उन्हें कुटिल काल का जाल कहा जाता।

धँसती धरा, धधकती ज्वाला, ज्वाला-मुखियों के निश्वास,
और संकुचित क्रमशः उसके अवयव का होता था ह्रास।

- पृथ्वी नीचे की ओर बैठने लगी

अर्थ- पृथ्वी नीचे की ओर बैठने लगी। उसके भीतर की आग 'धक' 'धक' शब्द करती हुई ऊपर प्रकट हुई जो ज्वालामुखी पर्वत से फूटने वाली लपटों सी प्रतीत होती थी। इस प्रकार धीरे-धीरे वहां से तल की ओर सिमटने के कारण भू-भाग कम होने लगा।

सबल तरंगाघातों से उस क्रुद्ध सिन्धु के, विचलित सी।
व्यस्त महा कच्छप सी धरणी, ऊभ-चुभ थी विकलित सी।

अर्थ- उस क्रुद्ध समुद्र की लहरों के तीव्र थपेड़ों से डाँवाडोल होकर पृथ्वी इस प्रकार व्याकुल और क्षुब्ध प्रतीत हुई जैसे प्रवल तरंगों की चपेट से कोई बड़े आकार का कछुआ घबरा जाए (लुढ़के)।

बढ़ने लगा विलास वेग सा वह अति भैरव जल संघात;
तरल तिमिर से प्रलय पवन का होता आलिंगन, प्रतिघात।

- कामी मनुष्य

अर्थ- वह भयंकर जलराशि इस प्रकार बढ़ने लगी जैसे कामी मनुष्य के हृदय में भोग की लालसा तीव्र होती जाती है। इधर दिग्दाह के धुएँ से निर्मित तरल अंधकार से प्रलय का पवन टकराता और उस पर चोटी सी मार रहा है।

बेला क्षण क्षण निकट आ रही क्षितिज क्षीण, फिर लीन हुआ;
उदधि डुबाकर अखिल धरा को बस मर्यादा हीन हुआ।

अर्थ- समुद्र का किनारा प्रतिपल निकटतर होने लगा अर्थात् जो पृथ्वी बची हुई थी वह भी जल में डूबने लगी। दूर पर जहाँ आकाश पृथ्वी से मिला दिखाई देता था वहाँ की थोड़ी सी पृथ्वी भी जलमग्न हो गई और अब जल आकाश मिले दिखाई देने लगे। इस प्रकार समुद्र आज समस्त पृथ्वी को डुबाकर असीम हो गया।

- प्रलयकाल में समुद्र अपनी मर्यादा का परित्याग कर देता है

विशेष- समुद्र अपनी इस मर्यादा केलिए प्रसिद्ध है कि वह अपने तट को नहीं डुबाता और हिन्दुओं का तह भी विश्वास है कि उसका जल न घटता है और न बढ़ता है। बादलों के रूप में जो जल कम होता है, वह सरिताओं के रूप में आ जाता है। पर प्रलयकाल में समुद्र अपनी

इस मर्यादा का परित्याग कर देता है।

करका क्रंदन करती गिरती और कुचलना था सब का;
पंचभूत का यह तांडवमय नृत्य हो रहा था कब का।"

अर्थ- भीषण ध्वनि करते हुए ओले बरस रहे थे जिनके नीचे सब कुछ कुचला जा रहा था। पंचभूतों का यह विनाशकारी कर्म बहुत दिनों से चल रहा था।

"एक नाव थी, और न उसमें ड़ाँड़े लगते, या पतवार;
तरल तरंगों में उठ गिर कर बहती पगली बारम्बार!

▶ नौका चंचल लहरों के समान

अर्थ- मेरे(मनु के) पास एक नाव थी। पर उस बाढ़ में न ड़ाँड़ उसे आगे खिसका सकते थे और न पतवार किसी दिशा में मोड़ सकती थी। वह नौका चंचल लहरों के समान कभी उठती कभी अपने आप ही आगे की ओर बढ़ जाती थी।

लगते प्रबल थपेड़े, धुँधले तट का था कुछ पता नहीं;
कातरता से भरी निराशा देख नियति पथ बनी वहीं।

अर्थ- लहरों के थपेड़े उसमें लगने लगे। सामने धुंधलापन छाया हुआ था, जिसमें किनारा दिखाई नहीं देता था। मैं अधीर और निराश होकर उस समय इतना ही सोच पाया कि अब भाग्य पथ पर ले जाय, वही ठीक है।

लहरें व्योम चूमती उठतीं, चपलायें असंख्य नचतीं।
गरल जलद की खड़ी झड़ी में बूँदें निज संसृति रचतीं।

अर्थ- लहरें उठकर आकाश को छूने लगीं अर्थात् ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थीं। ऊपर अगणित बिजलियाँ नृत्य करने लगीं। बादलों से विनाशकारी मूसलाधार वर्षा हो रही थी। उससे बूँदों का एक संसार निर्मित हो गया। भाव यह कि बूँदों के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता था; अतः ऐसा प्रतीत होता था मानों यह संसार प्राणियों का निवास स्थल नहीं, बूँदों का लोक है।

चपलायें उस जलधि विश्व में स्वयं चमकृत होती थीं
ज्यों विराट बाडव ज्वालायें खंड-खंड हो रोती थीं।

अर्थ- उस फैले हुए समुद्र के जल पर जब बिजलियाँ चमकतीं, तब ऐसा लगता मानों समुद्र के भीतर की विशाल अग्नि अंशों में विभाजित होकर रो रही है।

▶ चमकृत शब्द का अर्थ

विशेष- चमकृत शब्द में चकित होने के साथ चमकने का भाव यहाँ है। हम जब किसी आश्चर्यजनक वस्तु को देखते हैं तब चौंक उठते हैं। बिजली जिस प्रकार मुड़कर लपकती है, उससे निरंतर यह भाव टपकता है कि वह किसी दृश्य पर चौंक पड़ी है।

जलनिधि के तल वासी जलचर विकल निकलते उतराते,
हुआ विलोड़ित गृह, तब प्राणि कौन ! कहाँ ! कब ! सुख पाते?

अर्थ- समुद्र के अंतर में निवास करने वाले जलजंतु व्याकुल होकर ऊपर उछल आये। जब उस जलगृह में ही खलबली मच गई, तब कौन था जो एक क्षण को भी उसके किसी भाग

में सुख पा सकता था?

विशेष- कोई भी घर उसी समय तक अपने निवासियों को सुख दे सकता है, जब तक वह स्वयं सुरक्षित है; पर जब वह स्वयं गिर पड़े, जल में डूब जाय अथवा उसमें आग लग जाय, तब वह क्या करे? समुद्र आज आँधी, बिजली, वर्षा, ओलों से क्षुब्ध है, किसी को कैसे शरण दे?

घनीभूत हो उठे पवन, फिर श्वासों की गति होती रुद्ध;
और चेतना थी बिलखाती, दृष्टि विफल होती थी क्रुद्ध?

अर्थ- पवन का चलना बन्द हो गया, मानो वह जम गया हो। इस वातावरण में श्वासों का चलना कठिन हो गया। बोध-शक्ति मारी सी गई। दृष्टि को कुछ दिखाई नहीं देता था; अतः वह क्षुब्ध हो उठी- दुःखी हो उठी।

विशेष- यह स्थिति अनुभव से सम्बन्ध रखती है। कल्पना कीजिए कि आपको एक ऐसी अँधेरी कोठरी में बंद कर दिया गया है जिसमें हवा किसी भी प्रकार से प्रवेश नहीं कर सकती। थोड़ी देर में वहाँ आपकी साँस, आपकी चेतना और आपकी दृष्टि की जो दशा होगी, उसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है।

उस विराट आलोड़न में, ग्रह तारा बुद-बुद से लगते।
प्रखर प्रलय पावस में जगमग, ज्योतिरिंगर्णो से जगते।

अर्थ- उस क्षुब्ध विशाल समुद्र के ऊपर चमकने वाले गृह और तारा या तो उसके ऊपर बहने वाले बुलबुले से प्रतीत होते थे या फिर उस प्रलयकालीन घोर वर्षा में जुगनू जैसे टिमटिमाते थे।

प्रहर दिवस कितने बीते, अब इसको कौन बता सकता!
इनके सूचक उपकरणों का चिन्ह न कोई पा सकता।

अर्थ- कितने प्रहर बीते और कितने दिन, इसे अब कौन बताता। जिन साधनों से प्रहरों और दिनों की गणना होती है, इसका तो कहीं चिन्ह भी शेष न था।

▶ प्राचीन काल में समय प्रहर और घड़ियों से सूचित होती थी

विशेष- प्राचीन काल में समय की मात्रा घंटा, मिनिट, सेकंड में सूचित न कर प्रहर और घड़ियों से सूचित होती थी। एक दिन-रात में आठ प्रहर और चौसठ घड़ियाँ होती थीं। उस खंड-प्रलय में समय की गणना करने वाले यंत्र पृथ्वी से नष्ट हो गये थे और आकाश में दिन-रात का पता देने वाले सूर्य-चन्द्रमा दिखाई नहीं दे रहे थे।

काला शासन-चक्र मृत्यु का कब तक चला न स्मरण रहा,
महा मत्स्य का एक चपेटा दीन पोत का मरण रहा।

अर्थ- मृत्यु का अत्याचार पूर्ण अधिकार कब तक रहा, स्मरण नहीं। इतने में एक विशाल सामुद्रिक मछली का चपेटा नौका में लगा। उस आघात से नौका टूट जानी चाहिए थी।

किन्तु उसी ने ला टकराया इस उत्तर-गिरी के शिर से,
देव सृष्टि का ध्वंस अचानक स्वास लगा लेने फिर से।

अर्थ- वह नौका बच गई और मत्स्य की उस टक्कर ने मुझे हिमालय की इस चोटी पर

पहुँचा दिया। जैसे किसी मुर्दे की साँस लौट आवे, उसी प्रकार देवताओं का बीजनाश होते-होते सहसा बच गया।

आज अमरता का जीवित हूँ मैं वह भीषण जर्जर दम्भ,
आह सर्ग के प्रथम अंक का अधम पात्र मय सा विष्कंभ!"

अर्थ- मैं क्या कहूँ? देवताओं के चूर्ण कर दिये गये भीषण अभिमान की बची निशानी हूँ। जैसे नाटक के पहले अंक में ही कोई पात्र अतीत की घटनाओं को दुहराये, उसी प्रकार सृष्टि के प्रारम्भ में ही देवताओं के विनाश की शोकपूर्ण कहानी दुहराने का दुर्भाग्य मुझे प्राप्त है।

▶ नाटक में घटनाएँ दो प्रकार की होती हैं

विशेष- नाटक में घटनाएँ दो प्रकार की होती हैं। कुछ मंच पर देखाई जाती हैं उन्हें 'दृश्य' कहते हैं, कुछ पात्रों द्वारा सूचित करा दी जाती हैं, उन्हें 'सूच्य' कहते हैं। क्योंकि जो घटनाएँ एक बार दिखाई जा चुकी होती हैं, उन्हें फिर दिखाने से रस क्षीण होता है और समय भी अधिक लगता है, इसी से आवश्यकता पड़ने पर 'विष्कंभ' की सृष्टि करते हैं। प्रथम अंक में घटना बढ़ भी नहीं पाती। यदि उसमें ही विकंभ हो तो इससे बड़े शोक की और क्या बात हो सकती है। मनु कहना चाहते हैं कि सृष्टि का सुख हमने अभी पूर्ण रूप से भोगा भी न था कि प्रलय मच गई और उस वैभव के विनाश की करुण कहानी को सुनाने का कार्य-भार मिला मुझ अभागे को।

"ओ जीवन की मरू मरीचिका, कायरता के अलस विषाद!
अरे पुरातन अमृत! अगतिमय मोहमुग्ध जर्जर अवसाद।

▶ मिथ्या शब्द का अर्थ सूचित किया है

अर्थ- यह जीवन धोखामात्र है। मैं कायर हूँ, आलसी हूँ, शोक से पूर्ण हूँ। मैं अत्यंत प्राचीन जाति से सम्बन्ध रख कर भी, अमर कहलाकर भी, दुर्दशाग्रस्त हूँ। मैं मोह से पूर्ण और शोक से चूर्ण हूँ।

विशेष- मरुभूमि में सूर्य की तीव्र किरणों की चमक से मृगों को जल का भ्रम हो जाता है। मिथ्या शब्द का अर्थ होता है दिखाई देने पर भी न होना।

मौन ! नाश ! विध्वंस ! अँधेरा ! शून्य बना जो प्रगट अभाव,
वही सत्य है, अरी अमरते ! तुझको यहाँ कहाँ अब ठाँव।

अर्थ- कोलाहल सत्य नहीं, मौन सत्य है। नाश सत्य है। महानाश सत्य है। अन्धकार सत्य है। जिसने सब कुछ सूना कर दिया, वह स्पष्ट दिखाई देने वाला अभाव सत्य है। मैं बलपूर्वक कहता हूँ यही सब कुछ सत्य है।हे देव जाति! तुझे हम सत्य समझते थे; पर बता तो सही इन सब कुछ के बीच तेरे लिये स्थान कहाँ है?

▶ शोक में प्राणी की बुद्धी स्थिर नहीं रहती।

विशेष- मनु जो देख रहे है उसी को सत्य समझ रहे हैं। अंधकार और मृत्यु से उनका परिचय हुआ है। उन्हें असत्य कैसे कहें? पर शोक में प्राणी की बुद्धी स्थिर नहीं रहती। सत्य जीवन ही है, मृत्य नहीं; क्योंकि मृत्य जीवन का अभाव-पात्र है, जैसे छाया प्रकाश का अभावपात्र है। इससे पहले जीवन देखा था, तब उसे सत्य समझते थे। इसके उपरान्त प्रलय-निशा की समाप्ति पर फिर नवीन जीवन देखेंगे।

मृयु, अरी चिर-निद्रे ! तेरा अंक हिमानी सा शीतल,

तू अनंत में लहर बनाती काल- जलधि की सी हलचल।

> ▶ मृत्यु तो एक व्यापक निद्रा है

अर्थ- हे मृत्यु, तू प्राणधारियों की आँखें सदैव केलिए बंद कर देती है। तेरी गोद हिमराशी जैसी शीतल है। समुद्र में हलचल मचने से जैसे लहरें उठती हैं, उसी प्रकार तेरी हलचल के उपरान्त मृत्यु के समुद्र से व्यापक विश्व में जीवन छा जाता है।

विशेष- व्यथित मनुष्य निद्रा में अपने दुःख को विस्मृत कर देता है। मृत्यु तो एक व्यापक निद्रा है। उसे प्राप्त कर उसकी पीड़ा सदैव को शांत होती जाती है।

महा-नृत्य का विषम सम, अरी अखिल स्पंदनों की तू माप,
तेरी ही विभूति बनती है सृष्टि सदा हो कर अभिशाप।

> ▶ 'सम' और 'विषम' संगीत तथा नृत्य के दो पारिभाषिक शब्द

अर्थ- हे मृत्यु तू सृष्टि में होने वाले किसी महानृत्य की कठोर पद-चाप है अर्थात जहाँ उस नर्तक के चरण का दबाव कहीं पड़ा कि वस्तु मिट गई। तू समस्त चेतना का अन्त करने वाली है। तू जब आती है तब अहितकारिणी प्रतीत होती है, पर तेरी महत्ता से ही नवीन वस्तुओं का सदैव जन्म होता है।

विशेष- 'सम' और 'विषम' संगीत तथा नृत्य के दो पारिभाषिक शब्द हैं। संगीत में बाजे अथवा तबले पर ऊँगलियाँ शीघ्रता से चलती रहती हैं तब 'विषम' और जब वे कहीं स्वर को जोर से दबाती अथवा उनकी थाप पड़ती है तब 'सम' कहलाता है। नृत्य में जब ऊँगलियाँ के बल खड़ा चरण सर्राटे से घूमता है तब 'विषम', परन्तु जब उसका पूरा दबाव पृथ्वी पर पड़ता है 'सम' कहलाता है। कवि ने यहाँ विषम का भी प्रयोग किया है, पर सामान्य अर्थ में, पारिभाषिक अर्थ में नहीं। पारिभाषिक अर्थ में केवल 'सम' शब्द का प्रयोग किया है। मृत्यु किसी चरण का वह कठोर दबाव है जिससे कुचल कर प्राणधारी जीवन खो बैठते हैं।

अंधकार के अट्टहास सी, मुखरित सतत चिरंतन सत्य,
छिपी सृष्टि के कण-कण में तू, यह सुन्दर रहस्य है नित्य।

> ▶ मृत्यू सृष्टि के कण-कण में छिपी रहती है

अर्थ- जैसे कोई अँधेरे में बैठकर जोर से हँसे तो उसका वह ठाकर हँसना सुनाई देगा, पर उस व्यक्ति को हम न देख पायेंगे। इसी प्रकार मृत्यु का आकार तो दिखाई नहीं देता, पर उसका अट्टहास प्रकट है। यह एक सत्य है। मृत्यु का सुन्दर रहस्य यह भी है कि वह सृष्टि के कण-कण में छिपी हुई है अर्थात सृष्टि का कण-कण नाशवान है।

जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त नील घन-माला में,
सौदामिनी-संधि सा सुन्दर क्षण भर रहा उजाला में।''

> ▶ मृत्यु और जीवन को बादल और बिजली के रूप में चित्रण

अर्थ- हे मृत्यु जीवन तो तेरा एक छोटा सा अंश है। जैसे सामने फैले हुए बादलों में बिजली की सुन्दर रेखा क्षण भर चमक कर छिप जाती है, उसी प्रकार जीवन भी अत्यंत अल्प काल तक प्रकाशित रह कर तुझमें विलीन हो जाता है।

विशेष- इस दृश्य के द्वारा मृत्यु की व्यापकता और जीवन की लघुता का भान होता है। जैसे बिजली छिप जाती है पर बादल बने रहते हैं, उसी प्रकार जीवन मिट जाता है, पर मृत्यु बनी रहती है। यह भावना कितनी निराशापूर्ण है।

पवन पी रहा था शब्दों को निर्जनता की उखड़ी साँस,

टकराती थी, दीन प्रतिध्वनि बनी हिम-शिलाओं के पास।

> ▶ मृत्यू के लिए साँस उखड़ना मुहावरा का प्रयोग

अर्थ- मनु के मुख से निकले शब्द पवन में समा रहे थे। उनकी ध्वनि से चारों ओर का सूनापन दूर हो गया। ये शब्द हिम-शिलाओं से जब टकराये तब वहाँ एक करुण प्रतिध्वनि गूँज उठी।

विशेष- 'साँस उखड़ना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ होता है मृत्यु। निर्जनता की मृत्यु का तात्पर्य हुआ निर्जनता नष्ट हो गई।

धू-धू करता नाच रहा था अनस्तित्व का तांडव नृत्य;
आकर्षण विहीन विध्युत्कण बने भारवाही थे भृत्य।

> ▶ 'अणवाद की रूचि प्रदर्शित'

अर्थ- विनाश का ऐसा प्रबल वेग से नृत्य हुआ कि सब कुछ मिट गया। शून्य में चक्कर काटने वाले विद्युत के परमाणुओं में अभी आकर्षण शक्ति नहीं अई थी; अतः जैसे कोई नौकर बोझा ढ़ोता फिरता है, उसी प्रकार वे अपना भार ढ़ोते घुमते थे।

विशेष- 'प्रसाद' ने अणुवाद (atomic theory) की ओर अपनी रूची प्रदर्शित की है। आगे भी कई स्थानों पर विध्युतकणों का वर्णन किया है।

मृत्यु-सदृश शीतल निराश ही आलिंगन पाती थी दृष्टि;
परम व्योम से भौतिक कण सी घने कुहासों की थी वृष्टि।

> ▶ वस्तुओ को सूक्ष्म दृष्टि से देखना

अर्थ- दृष्टि को हृदय हीन मृत्यु जैसी निराशा ही चारों ओर दिखाई देती थी। इतने में ऊपर महाकाश से जैसे स्थूलकण बरसें, उसी प्रकार घना कुहरा बरसने लगा।

विशेष- 'आलिंगन' एक वस्तु द्वारा दूसरी वस्तु को पूर्ण रूप से छूने को हैं। यहाँ दृष्टि का वस्तुओं को छूना या देखना।

वाष्प बना उजड़ा जाता था या वह भीषण जल संघात,
सौर चक्र में आवर्तन था प्रलय निशा का होता प्रात!

> ▶ 'निशा' यहाँ एक प्रतीक है

अर्थ- ऊपर से गिरती उन कुहरों को तहों को देखकर यह भी संदेह होता था कि यह भारी जल-राशि ही कहीं भाप बनकर तो नहीं उड़ी जा रही। कुछ हो, सूर्य मंडल घूमता दिखाई दिया और नवीन प्रभात के साथ प्रलय का वह विषाद पूर्ण वातावरण समाप्त हो गया।

विशेष- हिलते हुए कुहरे से स्थिर रहने पर भी सूर्य मंडल घूमता सा प्रतीत होगा। 'निशा' यहाँ एक प्रतीक है जिसका आशय विषादपूर्ण वातावरण से है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

कामायनी जयशंकर प्रसाद कृत महाकाव्य है। जिसका आधार पौराणिक है। महाकाव्य में मनु और श्रद्धा के द्वारा पुरुष और नारी के मनोभावों का क्रमिक विकास दर्शाया है। 15 सर्गों के इस महाकाव्य का आरम्भ विशाल जल-प्लवन की घटना के साथ होता है। प्रलय के विनाशकारी तांडव के बाद मनु, श्रद्धा के साथ मिलकर मानव सभ्यता की रचना करते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य 'कामायनी' के चिंता सर्ग के मूल स्वर को रेखांकित कीजिए?
2. चिता सर्ग की भाषा शैली पर विचार प्रकट कीजिए।
3. चिंता सर्ग की छन्द योजना पर टिप्पणी लिखिए।
4. चिंता सर्ग में चित्रित जीवन दृष्टि को व्यक्त कीजिए।
5. 'चिंता सर्ग' का सारांश लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कामायनी के आध्ययन की समस्याएँ - डॉ. नगेन्द्र
2. कामायनी एक पुनर्विचार - गजानन माधव मुक्तिबोध
3. छायावाद युग, शंभुनाथ सिंह

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का महत्वपूर्ण महाकाव्य कामायनी - जयशंकर प्रसाद - राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली
2. कामायनी - जयशंकर प्रसाद - लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

कामायनी का महाकाव्यत्व, कामायनी में रूपक तत्व

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कामायनी का महाकाव्यत्व पर विचार कराता है
- कामायनी का रूपक तत्व से अवगत कराता है
- कामायनी की भाषा-शैली से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

कामायनी हिन्दी भाषा का एक महाकाव्य है। इसके निर्माता जयशंकर प्रसाद हैं। यह आधुनिक छायावादी युग का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक प्रतिनिधि हिन्दी महाकाव्य है। 'प्रसाद' जी की यह अंतिम काव्य कृति 1936 ई. में प्रकाशित हुई थी। परंतु इसका कार्य लगभग 7-8 वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। चिंता से आनंद तक, इस 15-स्तंभ महाकाव्य में, मानव मन की विभिन्न वृत्तियों को कुशलतापूर्वक दर्शाया किया गया है। मानव सृष्टि की शुरुआत से लेकर वर्तमान तक जीवन के मानसिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास इसमें स्पष्ट है। यहाँ कामायनी का महाकाव्यत्व एवं उसमें निहित रूपक तत्व पर अध्ययव किया जाएगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

महाकाव्य, मानव, इतिहास, मानसिकता, सांस्कृतिक विकास, वर्तमान जीवन

Discussion / चर्चा

कामायनी की कथा मूलतः एक कल्पना, एक फैण्टसी है। जिसमें प्रसाद जी ने अपने समय के सामाजिक परिवेश, जीवन मूल्यों, सामयिकता का विश्लेषित सम्मिश्रण कर इसे एक अमर ग्रन्थ बना दिया। यही कारण है कि इसके पात्र - मनु, श्रद्धा और इड़ा - मानव, प्रेम व बुद्धि के प्रतीक हैं। इन प्रतीकों के माधयम से कामायनी अमर हो गई। क्योंकि इन प्रतीकों के माध्यम से जीवन का जो विश्लेषण कामायनी में प्रसाद जी ने प्रस्तुत किया, वह आज भी उतना ही सामयिक है, जितना कि प्रसाद जी के समय में रहा होगा। देवों का घमण्ड, स्वयं सृष्टिकर्ता के रूप में स्वयं सृष्टि ने ही उनके उच्छृंखल व्यवहार को लेकर तीनों लोकों में प्रलय कर कैसे तोड़ा यह जहाँ पौराणिक ऐतिहासिक बात है वहीं एक सबक है मनुष्यत्व के प्रति...

> ▶ मनु, श्रद्धा और इड़ा कामायनी के मुख्य पात्र है

धरती के प्रति उनके मनमाने व्यवहार के प्रति। इन कारणों से हिन्दी काव्य क्षेत्र में कामायनी को महत्वपूर्ण स्थान है। कामायनी का महाकाव्यत्व एवं उसके रूपक तत्वों का अध्ययन करना उपर्युक्त अध्याय का लक्ष्य है।

2.4.1 कामायनी का महाकाव्यत्त्व

> ▶ भारतीय काव्यशास्त्र में वर्णित महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'कामायनी' एक महाकाव्य प्रमाणित होता है

भारतीय काव्यशास्त्र में वर्णित महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'कामायनी' एक महाकाव्य प्रमाणित होता है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार महाकाव्य के प्रारम्भ में मंगलाचरण, ईश्वर-वंदना, आर्शीवचन और कथावस्तु के निर्देश के उपरान्त सज्जनों की प्रशंसा और दुर्जनों की निंदा होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त धीरोदात्तनायक, उदात्त कथानक, उदात्त चरित्र, उदात्त भाव, समकालीन जीवन का सांगोपांग चित्रण, उदात्त भाषा-शैली, छंद-योजना और सर्गबद्धता तथा नायिका के नाम के आधार पर महाकाव्य का नामकरण आदि विशेषताएँ भी महाकाव्य के लिए अनिवार्य मानी गई हैं।

उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त सभी लक्षण 15 वीं शताब्दी तक महाकाव्य की कसौटी माने जाते थे, परन्तु आज स्वच्छंदतावादी महाकाव्यों का युग है। अतः आधुनिक महाकाव्यों की परख उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर नहीं की जा सकती। विभिन्न विद्वानों, जिनमें प्रतिपाल सिंह, डॉ. गोविन्दराम शर्मा तथा डॉ. शम्भुनाथ सिंह के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, ने आधुनिक महाकाव्यों के कुछ लक्षण निर्धारित किए हैं, जिन्हें सभी ने एक मत से स्वीकार किया है। यह लक्षण निम्नलिखित हैं-

- ▶ मद्यन उद्देश्य
- ▶ गम्भीरता, गुरुत्व तथा महत्त्व
- ▶ महत् कार्य और युग-जीवन का समग्र चित्रण
- ▶ सुसंगठित और जीवन्त कथानक
- ▶ महत्त्वपूर्ण नायक
- ▶ गरिमामयी उदात्त शैली
- ▶ तीव्र प्रभावान्विति और गम्भीर रस-योजना

> ▶ डॉ. नगेन्द्र ने 'कामायनी' के महाकाव्यत्व का विश्लेषण उदात्त कथानक, उदात्त कार्य और उद्देश्य, उदात्त चरित्र, उदात्त भाव और उदात्त शैली के आधार पर किया है

डॉ. नगेन्द्र ने 'कामायनी' के महाकाव्यत्व का विश्लेषण उदात्त कथानक, उदात्त कार्य और उद्देश्य, उदात्त चरित्र, उदात्त भाव और उदात्त शैली के आधार पर किया है। पाश्चात्य विद्वान् लॉन्जाइनस ने भी उपर्युक्त तत्वों को ही स्वीकार किया है। इसके विपरीत डब्ल्यू. पी. केर, डिक्सन, बावरा आदि विद्वानों ने अंतरंग वस्तु की उदात्तता, जीवन व्यापी विशदता पर अधिक बल दिया है और शिल्पपक्षीय तत्वों की उपेक्षा की है।

उदात्त विचार -

> ▶ 'कामायनी' में कवि ने श्रद्धा और मनु के माध्यम से मानवता के विकास की कथा को प्रस्तुत किया है

विद्वानों ने उदात्त विचार को महाकाव्य का प्रमुख लक्षण माना है। यहाँ उदात्त विचार से तात्पर्य गम्भीर और महान् विचारों से है। 'कामायनी' में कवि ने श्रद्धा और मनु के माध्यम से मानवता के विकास की कथा को प्रस्तुत किया है। इसका चित्रण मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक धरातल पर किया गया है। इसके द्वारा कवि ने नए जीवन-मूल्यों की स्थापना करने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि प्रत्येक युग में मनुष्य को जीवन की विषमताओं से जूझना पड़ता है और उनसे मुक्ति के लिए आनन्दवाद की खोज करनी पड़ती है।

यही प्रत्येक युग की समस्या है, जिसे 'कामायनी' में प्रतिपादित किया है। प्रसाद ने यह

प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया है कि विज्ञान और बुद्धिवाद के माध्यम से आनन्दवाद की तलाश करना अत्यन्त कठिन है परन्तु श्रद्धा का अनुकरण करके इसे सहज ही प्राप्त किया जा सकता है।

▶ विज्ञान और बुद्धिवाद के माध्यम से आनन्दवाद की तलाश करना अत्यन्त कठिन है

इस विचारधारा में इस काव्य को एक उदात्त काव्य बना दिया है। 'कामायनी' में धर्म, दर्शन, राजनीति, मानवीय मनोभावों, विज्ञान आदि का सुन्दर चित्रण किया गया है और उनके मध्य सामंजस्य स्थापित करने का सफल प्रयास किया गया है।

▶ 'कामायनी' में धर्म, दर्शन, राजनीति, मानवीय मनोभावों, विज्ञान आदि का सुन्दर चित्रण किया गया है

उदात्त कथानक -

विद्वानों की मान्यता है कि उदात्त विचारों की अभिव्यक्ति के लिए किसी भी महाकाव्य के कथानक का उदात्त होना भी अनिवार्य है। लॉन्जाइनस ने लिखा है कि महाकाव्य के विषय में ज्वालामुखी के समान असाधारण शक्ति तथा वेग और ईश्वर के समान वैभव और ऐश्वर्य होना चाहिए। महाकाव्य का कथानक इस प्रकार का होना चाहिए कि पाठकों की स्मृति पर गहरी छाप छोड़े। 'कामायनी' की कथावस्तु इस आधार पर पूर्णतः खरी उतरती है।

▶ 'कामायनी' की कथावस्तु पाठकों की स्मृति पर गहरी छाप छोड़े हैं

यह एक ऐतिहासिक और पौराणिक कथानक है। इसका सम्बन्ध मनु (आदि पुरुष) और श्रद्धा (आदि नारी) के जीवन से सम्बन्धित है। इसकी कथा मानवीय भावनाओं के साथ-साथ मानव-चेतना का सच्चा इतिहास भी प्रस्तुत करती है। इस महाकाव्य में मनु को महाप्रलय के बाद चिंतित, उद्विग्न और निराश चित्रित किया गया है। श्रद्धा उनमें आत्मविश्वास जगाती है और संसार के प्रति आकर्षित करती है परन्तु वे अधिक समय तक उसके साथ नहीं रह पाते और उसे गर्भावस्था में अकेला छोड़कर चले जाते हैं। भटकते हुए वे सारस्वत प्रदेश पहुँचते हैं। वहाँ उनका परिचय इड़ा से होता है।

▶ यह एक ऐतिहासिक और पौराणिक कथानक है। इसका सम्बन्ध मनु (आदि पुरुष) और श्रद्धा (आदि नारी) के जीवन से सम्बन्धित है

इड़ा यहाँ बुद्धि की प्रतीक है। वह उसके सहयोग से सारस्वत प्रदेश का शासन-भार अपने हाथ में ले लेते हैं परन्तु उन्हें शान्ति नहीं मिलती। अंततः विभिन्न आन्तरिक संघर्षों और मनोव्यथाओं से जूझते हुए वे पुनः श्रद्धा से मिलते हैं। इस प्रकार उनके जीवन में समरसता आती है और काव्य में आनन्दवाद की सृष्टि होती है। महाकाव्य का कथानक जीवन्त और सुगठित है। इसमें भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति की गई है और श्रद्धा, मनु तथा इड़ा के अन्तर्द्वन्द्व भी सजीव और मर्मस्पर्शी रूप में चित्रित किए गए हैं। इस प्रकार यह एक सफल महाकाव्य है।

▶ महाकाव्य का कथानक जीवन्त और सुगठित है

उदात्त चरित्र -

'कामायनी' में प्रसाद ने उदात्त चरित्रों की योजना की है। श्रद्धा, मनु और इड़ा इस महाकाव्य के प्रमुख पात्र हैं। कवि ने मनु को आदि पुरुष और श्रद्धा को आदि नारी के रूप में चित्रित किया है। यद्यपि मनु में कवि ने धीरोदात्तनायक के गुणों का समावेश नहीं किया है, क्योंकि इस महाकाव्य में उनका उद्देश्य मानवता के विकास को चित्रित करना तथा मनुष्य के आन्तरिक संघर्ष से गुजरते हुए उसे आनन्दवाद तक पहुँचाना रहा है।

▶ श्रद्धा, मनु और इड़ा इस महाकाव्य के प्रमुख पात्र हैं

यदि वे मनु के रूप में एक धीरोदात्तनायक की कल्पना करते, तो सम्भवतः महाकाव्य का उद्देश्य ही नष्ट हो जाता। इसलिए कवि ने मनु को एक सामान्य मानव के रूप में चित्रित किया है। 'कामायनी' की चरित्र-योजना का सम्पूर्ण विकास हमें श्रद्धा के व्यक्तित्व में देखने को मिलता है। उसका चरित्र पूर्णतः महिमा-निष्कामता आदि गुण विद्यमान है। यही कारण है

▶ 'कामायनी' की चरित्र -योजना का सम्पूर्ण विकास हमें श्रद्धा के व्यक्तित्व में देखने को मिलता है

कि वह मनु को समरसता के मार्ग पर आगे बढ़ाती है।

▶ श्रद्धा के माध्यम से ही मनु को अखण्ड आनन्द प्राप्त होता है। इडा यहाँ बुद्धि की प्रतीक है, जो मानवीय अन्तर्द्वन्द्व की जनक है

श्रद्धा के माध्यम से ही मनु को अखण्ड आनन्द प्राप्त होता है। इडा यहाँ बुद्धि की प्रतीक है, जो मानवीय अन्तर्द्वन्द्व की जनक है। कवि ने इस प्रकार के पात्रों की सृष्टि कर यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि आत्मविश्वास और भावनाएँ जीवन में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होती है। यदि हृदय और बुद्धि में सामंजस्य स्थापित हो जाए, तो जीवन की सभी विषमताएँ समाप्त हो जाती है और समरसता की स्थापना हो जाती है।अन्य पात्रों में मानव, आकुलि, किलात, देवगण आदि उल्लेखनीय हैं।

उदात्त भाव -

▶ 'कामायनी' में शांतरस की प्रधानता है और शृंगार, वीर, वात्सल्य, भयानक, वीभत्स आदि अंगीरस है

प्राचीन भारतीय आचार्यों ने कहा है कि किसी भी श्रेष्ठ महाकाव्य में शृंगार, वीर अथवा शांतरस में से किसी भी एक रस की प्रधानता होनी चाहिए। इस कसौटी पर भी 'कामायनी' खरी उतरती है, क्योंकि उसमें शांतरस की प्रधानता है और शृंगार, वीर, वात्सल्य, भयानक, वीभत्स आदि अंगीरस हैं। यहाँ शांतरस निर्वेद या सममूलक नहीं है बल्कि हृदय की आनन्दावस्था या उदात्त अवस्था का द्योतक है। इसलिए इसे आनन्दरस भी कहा गया है।

▶ 'कामायनी' में संकल्पनात्मक शांतरस की सहज स्थिति की अभिव्यक्ति हुई है

प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार 'कामायनी' में इस रस का स्वरूप निर्धारित किया गया है। यदि प्रसाद जी के शब्दों में काव्य को आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति माना जाये, तो यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि 'कामायनी' में संकल्पनात्मक शांतरस की सहज स्थिति की अभिव्यक्ति हुई है। इस प्रकार स्पष्ट है कि 'कामायनी' उदात्त भाव-योजना और रस-प्रयोग की दृष्टि से एक श्रेष्ठ महाकाव्य है।

युग जीवन एवं प्रकृति के विविध पक्षों का चित्रण -

▶ 'कामायनी' में आधुनिक मानव-जीवन की गम्भीरतम समस्याओं को उठाया गया है और उनके समाधान आनन्दवाद के रूप में प्रस्तुत किए गए है

'कामायनी' में आधुनिक मानव-जीवन की गम्भीरतम समस्याओं को उठाया गया है और उनके समाधान आनन्दवाद के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। 'कामायनी' में कवि ने यह चित्रित किया है कि आज सम्पूर्ण विश्व में मानव-जीवन आत्मवाद, अनात्मवाद, बुद्धिवाद, भौतिकवाद तथा संघात्मक विचारधाराओं से त्रस्त है। यह महाकाव्य अपने समकालीन जन-जीवन का अच्छा चित्र प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि इसे आधुनिक युग की प्रतिनिधि कृति के साथ-साथ एक क्रांतिदर्शी ग्रंथ के रूप में भी पहचान मिल गई है।

प्रकृति चित्रण की दृष्टि से भी यह एक उल्लेखनीय ग्रंथ है। इसमें स्थान-स्थान पर कवि ने आलम्बन, उद्दीपन, भावावृत्त, रहस्य, दर्शन, उपदेश, सूचिका, प्रतीक, अलंकार, अन्योक्ति, समासोक्ति तथा मानवीकरण आदि सभी रूपों में प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन किया है। कहा जा सकता है कि 'कामायनी' में प्रकृति कथावस्तु का एक अभिन्न अंग बनकर उपस्थित हुई है। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

▶ कवि ने आलम्बन, उद्दीपन, भावावृत्त, रहस्य, दर्शन, उपदेश, सूचिका, प्रतीक, अलंकार, अन्योक्ति, समासोक्ति तथा मानवीकरण आदि सभी रूपों में प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन किया है

नवकोमल आलोक बिखरता, हिम-संसृति पर भर अनुराग,
सित सरोज पर क्रीडा करता, जैसे मधुमय पिंग पराग।
धीरे-धीरे हिम-आच्छादन, हटने लगा धरातल से,
जगीं वनस्पतियाँ अलसाई, मुख धोती शीतल जल से।

उदात्त भाषा-शैली -

किसी भी श्रेष्ठ महाकाव्य के लिए उदात्त भाषा-शैली का प्रयोग अनिवार्य माना गया है। 'कामायनी' में एक श्रेष्ठ महाकाव्य का यह गुण भी उत्कृष्ट रूप में देखने को मिलता है। 'कामायनी' की भाषा लालित्यपूर्ण, उपयुक्त, प्रभावी पद-विन्यास से युक्त, भव्य, गरिमापूर्ण, ओजपूर्ण एवं सौन्दर्यशाली है। इस प्रकार की भाषा के प्रयोग से मृतप्रायः वस्तुएँ भी जीवित हो उठती हैं, कवि के भावों का तो कहना ही क्या। प्रसाद जी ने 'कामायनी' में सम्यक छंद-योजना का प्रयोग किया है।

> ▶ 'कामायनी' की भाषा लालित्यपूर्ण, उपयुक्त, प्रभावी पद-विन्यास से युक्त, भव्य, गरिमापूर्ण, ओजपूर्ण एवं सौन्दर्यशाली है

उन्होंने लक्षणा एवं व्यंजना शब्द-शक्तियों का सुन्दर प्रयोग किया है। यही कारण है कि कुछ विद्वान 'कामायनी' की गिनती ध्वनि-काव्य के रूप में करते हैं। इस गुण के आधार पर भारतीय आचार्यों ने 'कामायनी' को एक श्रेष्ठ काव्य के रूप में एक स्वर से स्वीकार किया है। इतना ही नहीं इस ग्रंथ में कवि ने अप्रस्तुत योजनाओं का रूप, गुण, धर्म, प्रकृति, रंग और प्रभाव आदि की दृष्टि से भी समीचिन प्रयोग किया है।

> ▶ लक्षणा एवं व्यंजना शब्द-शक्तियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। यही कारण है कि कुछ विद्वान 'कामायनी' की गिनती ध्वनि-काव्य के रूप में करते हैं

'कामायनी' का यह गुण उसकी महाकाव्यगत गरिमा को बढ़ा देता है। इस काव्य में छायावादी कविता की कलागत विशेषताएँ अपने चरमोत्कर्ष पर दिखाई देती हैं। इसकी भाषा में लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता, ध्वन्यर्थता, उपचारवक्रता, प्रतीकात्मकता आदि गुण भी देखने को मिलते हैं। इस काव्य की वस्तु-योजना युग प्रभाव के अनुकूल भाव प्रधान ही है। इस काव्य में वर्णनात्मक तथा इतिवृत्तात्मक अंशों का अभाव है।

> ▶ 'कामायनी' की भाषा में लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता, ध्वन्यर्थता, उपचारवक्रता, प्रतीकात्मकता आदि गुण भी देखने को मिलते हैं

सम्पूर्ण कथा का विकास कवि ने आत्मचिंतन, संवाद, स्वगत-कथन, स्वप्न या प्राकृतिक दृश्य-विधानों के माध्यम से किया है, जिनके कारण यह एक कलात्मक कृति बन गई है। 'कामायनी' में सूक्ष्म, व्यापक, मूर्त और अमूर्त, मानसिक और भौतिक सभी प्रकार के सजीव चित्र देखने को मिलते हैं। प्रवाहशीलता 'कामायनी' की शैली की एक उल्लेखनीय विशेषता है। उसमें सर्वत्र तीव्रता, उत्कटता, भव्यावेग और संवेदनशीलता देखने को मिलती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'कामायनी' उदात्त भाषा-शैली की दृष्टि से भी एक सफल महाकाव्य है।

> ▶ 'कामायनी' में सूक्ष्म, व्यापक, मूर्त और अमूर्त, मानसिक और भौतिक सभी प्रकार के सजीव चित्र देखने को मिलते हैं

भारतीय महाकाव्य के निर्धारित लक्षणों के अनुसार 'कामायनी' के प्रत्येक सर्ग में आद्यंत एक ही छन्द का समस्त प्रयोग भी किया गया है। छन्द-योजना पूर्णतः वस्तु अनुरूपिणी है। 'नातिस्वल्पा नातिदीर्घा' के ही हिसाब से 'कामायनी' में कुल 15 सर्गों का विधान किया गया है।

> ▶ भारतीय महाकाव्य के निर्धारित लक्षणों के अनुसार 'कामायनी' के प्रत्येक सर्ग में आद्यंत एक ही छन्द का समस्त प्रयोग किया गया है

सर्गों का नामकरण उनमें निहित मूल भावना, व्यापारों के आधार पर ही किया गया है। कुछ सर्गों के अन्त में अगले सर्ग की कथा का पूर्वाभास भी व्यंजनात्मक रूप से प्रस्तुत कर दिया गया है, यथा-चिन्ता, काम, स्वप्न आदि सर्गों में। इस प्रकार छंद-विधान एवं सर्गबद्धता की दृष्टि से भी 'कामायनी' महाकाव्य की गरिमा से रहित नहीं है।

> ▶ कामायनी में सर्गों का नामकरण उनमें निहित मूल भावना, व्यापारों के आधार पर ही किया गया है

निष्कर्ष -

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'कामायनी' में मंगलाचरण, आर्शीवचन, गुरु-वंदना, सुसंगठित कथानक, धीरोदात्तनायक जैसे महाकाव्य के गुण भले ही न मिलते हों, परन्तु उसमें महाकाव्य के अन्य तत्व पूर्ण गरिमा और वैभव के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। ऐसी स्थिति में 'कामायनी' के महाकाव्यत्व पर प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता।

> ▶ 'कामायनी' में मंगलाचरण, आर्शीवचन, गुरु-वंदना, सुसंगठित कथानक, धीरोदात्तनायक जैसे महाकाव्य के गुण भले ही न मिलते हों, परन्तु उसमें महाकाव्य के अन्य तत्व पूर्ण गरिमा और वैभव के साथ अभिव्यक्त हुए हैं

2.4.2 कामायनी में रूपक तत्व

आधुनिक युग का प्रतिनिधि महाकाव्य कामायनी है। प्रसाद जी ने इस कथा के साथ-साथ सांकेतिक रूप में एक और कथा का निर्वाह किया है। इसी सांकेतिकता एवं प्रतीकात्मकता के कारण कामायनी को रूपक कहा जाता है।रूपक को हमारे साहित्य क्षेत्र में दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है। एक तो साधारण तथा समस्त दृश्य काव्य को निरूपक कहते हैं। दूसरे रूपक साम्यमूलक अलंकार का नाम है जिसमें प्रस्तुत का प्रस्तुत पर अभेद आरोप रहता है। इन दोनों से इतर रूपक का तीसरा अर्थ यह भी है जो अपेक्षाकृत अधुनातन है और इस नवीन अर्थ में रूपक अंग्रेज़ी के एलिगरी का पर्याय है। एलिगरी एक प्रकार के कथा रूपक को कहते हैं। इस प्रकार की रचना में प्रायः एक, दो अर्थ देनेवाली कथा होती है, जिसका एक अर्थ प्रत्यक्ष और दूसरा अर्थ गूढ़ होता है इस प्रकार की रचना को अन्योक्ति कहा जाता है। रूपक के इस नवीन अर्थ में वास्तव में संस्कृत के रूपक और अन्योक्ति दोनों अलंकारों का योग है। इसमें जहाँ एक तरफ साधारण अर्थ के अतिरिक्त एक अन्य अर्थ-गूढ़ार्थ रहता है, वहाँ अप्रस्तुत अर्थ का प्रस्तुत अर्थ पर श्लेष, साम्य आदि के आधार पर अभेद आरोप भी रहता है। कहने का मतलब यह है कि रूपक अलंकार में जहाँ प्रायः एक वस्तु का दूसरी कथा पर अभेद आरोप होता है, वहाँ कथा-रूपक में कथा दूसरी कथा पर अभेद आरोप होता है। वहाँ भी एक कथा प्रस्तुत और दूसरी अप्रस्तुत रहती है। प्रस्तुत कथा स्थूल, भैतिक रचनामयी होती है और अप्रस्तुत कथा सूक्ष्म सैद्धान्तिक होती है। डॉ. नगेन्द्र की सम्मति में यह सैद्धान्तिक कथा दार्शनिक, नैतिक, राजनैतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आदि किसी प्रकार की हो सकती है, परन्तु इसका अस्तित्व मूर्त नहीं होता। वह प्रायः प्रस्तुत कथा का अन्य अर्थ ही होता है जो उससे होता है, किसी प्रबंध काव्य के प्रासंगिक कथा की भाँति जुड़ा हुआ नहीं होता। इस तरह से विशिष्ट अर्थ में रूपक से तात्पर्य एक ऐसी द्वयर्थक कथा से है, जिसमें किसी सैद्धान्तिक अप्रस्तुत अर्थ अथवा किसी अन्य अर्थ का प्रस्तुत अर्थ पर अभेद आरोप होता है।

- ▶ सांकेतिकता एवं प्रतीकात्मकता के कारण कामायनी को रूपक कहा जाता है

कामायनी में रूपक तत्व के संदर्भ में कवि ने कृति के आरंभ में वर्णित किया है कि, "आर्य- साहित्य में मानवों के आदि पुरुष मनु का इतिहास वेदों से लेकर पुराण और इतिहास में बिखरा हुआ मिलता है।......वैवस्वत मनु को ऐतिहासिक पुरुष ही इसलिए मानना उचित है।" वे आगे कहते हैं कि, "यदि श्रद्धा और मनु अर्थात् मनन भावमय और श्लाघ्य है। वह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है।" वे कहते हैं कि, "यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है। इसलिए मनु, श्रद्धा और इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। मनु अर्थात् मन के दोनों पक्ष हृदय और मस्तिष्क का संबंध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है।.....इन सभी के आधार पर कामायनी की सृष्टि हुई है।"

- ▶ "आर्य- साहित्य में मानवों के आदि पुरुष मनु का इतिहास वेदों से लेकर पुराण और इतिहास में बिखरा हुआ मिलता है।......वैवस्वत मनु को ऐतिहासिक पुरुष ही इसलिए मानना उचित है"

इसका मतलब यह है कि, कामायनी को कवि ने मूलतः एक ऐतिहासिक काव्य के रूप में लिखा है, परंतु इसकी कथा में रूपक की संभावनाएँ निहित हैं और यदि इसे रूपक मानकर अध्ययन किया जाए तो कवि को वह अस्वीकार्य नहीं। अर्थात् कामायनी में प्रत्यक्षतः नहीं तो परोक्षतः रूपकत्व का निर्वाह है। 'कामायनी' के पात्रों का प्रतीकमय सांकेतिक व्यक्तित्व तथा उसकी मुख्य घटनाओं का श्लेषगर्भित गूढ़ार्थ दोनों ही इस मत की पुष्टि करते हैं।

- ▶ कामायनी में प्रत्यक्षतः नहीं तो परोक्षतः रूपकत्व का निर्वाह है

▶ अहंकार की क्लेषमयी स्थिति से समरसता की आनंदमयी स्थिति तक मनोमय कोश से आनंदमय कोश तक जीव का विकास सका अप्रस्तुत-पक्ष है

डॉ. नगेन्द्र की सम्मति में, "कामायनी की व्यक्त कथा में आदिम पुरुष मनु और उसकी सहचरी आदिम नारी श्रद्धा के संयोग से मानव सृष्टि के विकास का वर्णन है। अहंकार की क्लेषमयी स्थिति से समरसता की आनंदमयी स्थिति तक मनोमय कोश से आनंदमय कोश तक जीव का विकास उसका अप्रस्तुत-पक्ष है। कथा का प्रस्तुत पक्ष ऐतिहासिक पौराणिक है और अप्रस्तुत पक्ष मनोवैज्ञानिक-दार्शनिक है, और इस प्रकार दोनों पक्षों में निकट संबंध है जो इस कथा की एक विशेषता है- अन्यथा रूपकों में साधारणतः इस तरह का निकट संबंध रहता नहीं है।"

▶ पात्रों में प्रमुख है- मनु, श्रद्धा, इड़ा। इनके अतिरिक्त अन्य पात्र हैं- मनु-श्रद्धा का पुत्र कुमार और असुर-परोहित आकुलि और किलात। काम और लज्जा अशरीरी पात्र हैं

पात्रों में प्रमुख है- मनु, श्रद्धा, इड़ा। इनके अतिरिक्त अन्य पात्र हैं- मनु-श्रद्धा का पुत्र कुमार और असुर-पुरोहित आकुलि और किलात। काम और लज्जा अशरीरी पात्र हैं। वे मूलतः सांकेतिक हैं। मनु, मन का मनोमय कोश में स्थित जीव-प्रतीक है। 'कामायनी' में मनु के व्यक्तित्व का स्थायी आधार निस्संदेह यही अहंकार है-

"मैं हूँ यह वरदान सदृष क्यों
लगा गूंजने कानों में
मैं भी कहने लगी, मैं रहूँ,
शाश्वत नभा के गानों में।' (आशा सर्गः पृ.27)

X X X X

यह जलन नहीं सह सकता मैं
चाहिए मुझे मेरा ममत्व;
इस पंच भूत की रचना में
मैं रमण करूँ वन एक तत्व।"(ईर्ष्यासर्ग, पृ.153)

▶ 'कामायनी' की दूसरी प्रमुख पात्र श्रद्धा है। श्रद्धा प्रसाद जी के अपने शब्दों में हृदय का प्रतीक है

'कामायनी' की दूसरी प्रमुख पात्र श्रद्धा है। श्रद्धा प्रसाद जी के अपने शब्दों में हृदय का प्रतीक है। कामायनी में स्थान-स्थान पर उसके इस रूप की स्पष्ट प्रतिकृति मिलती है। यथा-

"हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लम्बी काया उन्मुक्त।"

▶ उसके व्यक्तित्व के मूल तत्व एक तरफ सहानुभूति, दया, ममता, मधुरिमा, त्याग और क्षमा है और दूसरी ओर अगाध विश्वास, उत्साह, प्रेरणा, स्फूर्ति आदि, जो हृदय के कोमल और सबल पक्षों की विभूतियाँ हैं

श्रद्धा गंधर्वों के देश में हृदय सत्ता का सुंदर सत्य खोजने हेतु आती है। उसके व्यक्तित्व के मूल तत्व एक तरफ सहानुभूति, दया, ममता, मधुरिमा, त्याग और क्षमा है और दूसरी ओर अगाध विश्वास, उत्साह, प्रेरणा, स्फूर्ति आदि, जो हृदय के कोमल और सबल पक्षों की विभूतियाँ हैं। शुक्ल जी ने श्रद्धा को इसीलिए 'विश्वासमयी रागात्मिका वृत्ति' कहा है। श्रद्धा को काम और रति की पुत्री कहा गया है और वह इस सृष्टि में प्रेम-कला का संदर्भ सुनाने हेतु अवतरित हुई है-

"यह लीला जिसकी विकास चली
वह मुल शक्ति थी प्रेमकला;
उसका संदेश सुनाने को
संसृति में आयी वह अमला।"

कामायनी में प्रसाद ने तीसरा पात्र इड़ा सृजित की है, इड़ा बुद्धि का प्रतीक है। कवि ने व्यक्त रूप में उसके व्यक्तित्व का प्रतीकात्मक चित्र अंकित किया है-

"बिखरी अलकें ज्यों तर्क-जाल, ...भरी ताल।"(इड़ा सर्ग-168)

उपर्युक्त चित्र में बुद्धि के तर्क, भौतिक ज्ञान-विज्ञान, त्रिगुण आदि का समावेश-सभी तत्वों का किया गया है। अनुशासित है। जीवन की अखण्डता के स्थान पर वह वर्ग विभाजन और अभेद के स्थान पर भेद की व्याख्या करती है। परोक्ष रूप में आनेवाले पात्रों में श्रद्धा-मनु पुत्र कुमार आता है। जिसका नामकरण संस्कार तक नहीं होता। वह नवमानव का प्रतीक है। पिता से मननशीलता, माता से श्रद्धा और इड़ा से वह बुद्धि ग्रहण कर व्यक्तित्व सृजन करता है। असुर-पुरोहित किलात एवं आकुलि असुर वृत्तियों के प्रतीक हैं। ज्यों ही मनु(मन) पाप (हिंसायज्ञ) की ओर आकृष्ट होते हैं, किलात एवं आकुलि उसको दुष्प्रेरणा देने केलिए तुरंत ही उपस्थिति हो जाते हैं और उसे दुष्कर्म में प्रवृत्त करते हैं। इनके अतिरिक्त देव इन्द्रियों के, श्रद्धा का पशु जीव दया, करुणा अर्थात् अहिंसा का और सोमलता भोग का प्रतीक है। वृषभ धर्म का प्रतीक है।

▶ कामायनी में प्रसाद ने तीसरी पात्र इड़ा सृजित की है, इड़ा बुद्धि का प्रतीक है

इनके अतिरिक्त तीन-चार प्रतीक शेष रह जाते हैं। जिनमें जल-प्लावन, त्रिलोक और मानसरोवर। जल-प्लावन का सांकेतिक अर्थ है कि जब मानव अबाध इन्द्रिय लिप्सा का दास हो जाता है, अर्थात् जब मन ऊपर विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश की ओर बढ़ने के स्थान पर निम्नतम अन्नमय कोश में ही रम जाता है, तो चेतना पूर्णतः उस माया में डूब जाती है।

त्रिलोक में प्रचान त्रिपुरदाह के रूपक से प्रेरणा ग्रहण की हई है। इसका प्रतीकार्थ अत्यंत व्यक्त है। तीन लोग-भोवलोक, कर्मलोक तथा ज्ञान लोक-चेतना की तीन अंगभूत प्रवृत्तियों-भाववृत्ति, कर्म-वृत्ति और ज्ञान-वृत्ति के प्रतीक हैं। जब तक ये वृत्तियाँ अलग-अलग कार्य करती हैं मन आशांत और उद्विग्न रहता है। यथा-

"ज्ञान दूर कुछ किया भिन्न है,
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से मिल न सके,
यह विडम्बना है जीवन की।"

▶ मानसरोवर। जल-प्लावन का सांकेतिक अर्थ है कि जब मानव अबाध इन्द्रिय लिप्सा का दास हो जाता है, अर्थात् जब मन ऊपर विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश की ओर बढ़ने के स्थान पर निम्नतम अन्नमय कोश में भी रम जाता है, तो चेतना पूर्णतः उस माया में डूब जाती है

परन्तु जब श्रद्धा के द्वारा इनका समन्वय हो जाता है तो समरसता की स्थिति को प्राप्त कर लेता है-

"स्वप्न, स्वाप, जगरण भस्म हो
इच्छा, क्रिया, ज्ञान, मिल लय थे;
दिव्य अनाहत पर विवाद में,
श्रद्धायुत मनु बस तन्मय वे।"

कैलास समरसता का प्रतीक है-

"समरस वे या चेतन, सुन्दर साकार बना था
समरसता एक विलसती, आनंद अखण्ड घना था।"

> प्रसाद जी ने कथा के मूल तत्वों को ऐतिहासिक मानते हुए उनके आधार पर ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना का उपक्रम किया था

नगेन्द्र ने कामायनी की कथा का विश्लेषण कर कहा कि, "इस प्रकार 'कामायनी' निस्संदेह ही रूपक है। प्रसाद जी ने कथा के मूल तत्वों को ऐतिहासिक मानते हुए उनके आधार पर ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना का उपक्रम किया था। किन्तु कथा का सांकेतिक रूप उनके मन में आरंभ से अंत तक वर्तमान था और मन के विकास का प्रचीन वैदिक रूपक उनको वैसे भी अत्यंत प्रिय था।"

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

1936 में प्रकाशित जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' छायावादी युग का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। 15 सर्गों का यह महाकाव्य मानव मन की विभिन्न वृत्तियों को कुशलतापूर्वक दर्शाता है। प्रसाद ने अपने समय के सामाजिक परिवेश और जीवन मूल्यों का समावेश कर इस महाकाव्य को अमर बना दिया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'कामायनी' के आधुनिक बोध का स्वरूप स्पष्ट कीजिए?
2. कामायनी के रूपक तत्त्व का विश्लेषण करते हुए उसमें प्रतिपादित जीवन दर्शन को स्पष्ट कीजिए?
3. छायावाद की प्रमुख विशेषताओं के आधार पर 'कामायनी' का मूल्यांकन कीजिये।
4. रूपक तत्त्व की दृष्टि से 'कामायनी' की विवेचना करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिये।
5. 'कामायनी' को चेतना का सुंदर इतिहास और अखिल मानव भाव का सत्यशोधक काव्य क्यों कहा गया है अपने विचार प्रस्तुत कीजिए
6. छायावादी धारा के महाकाव्य के रूप में 'कामायनी' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. छायावाद और प्रगतिवाद, सं देवेन्द्रनाथ शर्मा
2. छायावाद का पतन, डॉ. देवराज
3. जयशंकर प्रसाद, नन्द दुलारे वाजपेयी
4. प्रसाद का काव्य, डॉ. प्रेम शंकर
5. प्रसाद की कला, डॉ. गुलाब राय

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी मूल पाठ, समीक्षा एवं व्याख्या - डॉ. अशोक तिवारी - पैपर बैक
2. कामायनी मूल पाठ एवं टीका - विश्वभर मानव - लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

छायावाद के प्रमुख कवि और काव्य

BLOCK-03

Block Content

Unit 1: छायावाद की शैलीगत और विचारगत प्रवृत्तियाँ

Unit 2: निराला-राम की शक्ति पूजा

Unit 3: सुमित्रानंदन पंत- प्रथम रश्मि, पंत का प्रकृति चित्रण, पंत की काव्य-भाषा, पंत के काव्य में कोमल कल्पना, पंत की काव्य यात्रा के विविध सोपान

Unit 4 : महादेवी वर्मा- मैं नीर भरी दुःख की बदली

इकाई : 1

छायावाद की शैलीगत और विचारगत प्रवृत्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावाद की शैलीगत विशेषताएँ समझता है
- छायावाद की प्रवृत्तियों से अवगत होता है
- छायावाद की विभिन्न शैलियों से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता का श्रेष्ठतम काव्यान्दोलन है। इस दौर में गुण और परिणाम दोनों ही दृष्टियों से अतिशय उत्कृष्ट तथा विपुल काव्य-रचना हुई है। इसकी श्रेष्ठता को लक्षित करके ही इसे आधुनिक हिन्दी का 'स्वर्ण युग' तक कहा गया है। छायावाद हिन्दी काव्य जगत में स्थूल के प्रति सूक्ष्म के विद्रोह के भाव लेकर आनेवाली विचार धारा है। छायावादी कवियों का विद्रोह भावपक्ष और कलापक्ष को भी प्रभावित करता है। छायावाद के चारों कवि प्रसाद, पंत, निराला तथा महादेवी के योगदान को हिन्दी काव्य जगत् हमेशा याद करेगा। यहाँ छायावाद की शैलीगत विशेषताओं एवं विचारगत प्रवृत्तियों से आप परिचित होंगे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

काव्यन्दोलन, स्थूल, सूक्ष्म, विद्रोह, भावपक्ष, कला पक्ष

Discussion / चर्चा

- द्विवेदी युग के बाद छायावादी युग का आर्विभाव

हिन्दी साहित्य के आधुनिक चरण में, द्विवेदी युग के बाद, हिन्दी काव्य की धारा, जिसने मुक्त प्रेम, प्रकृति में मानवीय क्रिया और प्रकृति पर भावनाओं के आरोपण का रूप ले लिया, अभिव्यक्ति की एक नई विधा थी जो आलंकारिक भाषा पर हावी थी, कला के परिप्रेक्ष्य को छायावाद के नाम से जाना जाता है। छायावादी काव्य की अनेक विशेषताएँ हैं। इनमें से सबसे प्रमुख शैलीगत विशेषताएँ हैं। उपरोक्त अध्याय में इसका विस्तार से अध्ययन करेंगे।

3.1.1 छायावाद की शैलीगत और विचारगत प्रवृत्तियाँ

छायावादी काव्य विषय वस्तु एवं शिल्प विधान दोनों हीं दृष्टियों से नवीन है। लाक्षणिक भाषा, प्रतीकात्मक शैली, नवीन अलंकार विधान, मुक्तक गीति शैली, उपचार वक्रता आदि

के कारण इस काव्यधारा का शिल्प बेजोड़ बन गया है। इन कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी को सुकुमार, ललित एवं मधुर बनाकर इसे काव्य-भाषा के लिए उपयुक्त बना दिया।

▶ प्रकृति का मानवीकरण

1. प्रतीकात्मकताः प्रतीकात्मकता छायावादियों के काव्य की कला पक्ष की प्रमुख विशेषता है। प्रकृति पर सर्वत्र मानवीय भावनाओं का आरोप किया गया और उसका संवेदनात्मक रूप में चित्रण किया गया, इससे यह स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व से विहीन हो गई और उसमें प्रतीकात्मकता का व्यवहार किया गया। उदाहरणार्थ, फूल सुख के अर्थ में,शूल दुख के अर्थ में, उषा प्रफुल्लता के अर्थ में,संध्या उदासी के अर्थ में, झंझा-झकोर गर्जन मानसिक द्वन्द्व के अर्थ में, नीरद माला नाना भावनाओं के अर्थ में प्रयुक्त हुए। दार्शनिक अनुभूतियों की अभिव्यंजना एवं प्रेम की सूक्ष्मातिसूक्ष्म दशाओं के अंकन में भी इस प्रतीकात्मकता को देखा जा सकता है।

2. चित्रात्मक भाषा एवं लाक्षणिक पदावलीः अन्य अनुपम विशिष्टताओं के अतिरिक्त केवल चित्रात्मक भाषा के कारण हिन्दी वाङ्मय में छायावादी काव्य को स्वतंत्र काव्य धारा माना जा सकता है। कविता के लिए चित्रात्मक भाषा की अपेक्षा की जाती है और इसी गुण के कारण उसमें बिम्बग्राहिता आती है। छायावादी कवि इस कला में परम विदग्ध हैं। "छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति तत्त्व को मिलाया, निराला ने उसे मुक्तक छंद दिया, पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुड़ौल और सरस बनाया तो महादेवी ने उसमें प्राण डाले, उसकी भावात्मकता को समृद्ध किया।" प्रसाद की निम्नांकित पंक्तियों में भाषा की चित्रात्मकता की छटा देखते ही बनती है;-

शशि मुख पर घूंघट डाले, अंचल में दीप छिपाए।
जीवन की गोधूलि में, कौतूहल से तुम आए।

छायावादी कवि ने सीधी सादी भाव संबंधित भाषा से लेकर लाक्षणिक और अप्रस्तुत-विधानों से युक्त चित्रमयी भाषा तक का प्रयोग किया और कदाचित इस क्षेत्र में उसने सर्वाधिक मौलिकता का प्रदर्शन किया। छायावादी कवि ने परम्परा-प्राप्त उपमानों से संतुष्ट न होकर नवीन उपमानों की उद्‌भावना की। इसमें अप्रस्तुत-विधान और अभिव्यंजना-शैली में शतशः नवीन प्रयोग किए। मूर्त में अमूर्त का विधान उसकी कला का विशेष अंग बना। निराला जी विधवा का चित्रण करते हुए लिखते हैं- "वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी"। यही कारण है कि छायावादी काव्यधारा के पर्याप्त विरुद्ध लिखने वाले आलोचक रामचंद्र शुक्ल को भी लिखना पड़ गया कि "छायावाद की शाखा के भीतर धीरे-धीरे काव्य शैली का बहुत अच्छा विकास हुआ,इसमें संदेह नहीं।" इसमें भावावेश की आकुल व्यंजना, लाक्षणिक वैचित्र्य, मूर्त-प्रत्यक्षीकरण, भाषा की वक्रता, विरोध चमत्कार, कोमल पद विन्यास इत्यादि काव्य का स्वरूप संगठित करने वाली प्रचुर सामग्री दिखाई पड़ी। उन्होंने पंत काव्य के कुछ उदाहरण भी उपन्यस्त किए-

▶ अभिव्यंजना शैली में नवीन प्रयोग

"धूल की ढ़ेरी में अनजान। छिपे हैं मेरे मधुमय गान।

मर्म पीड़ा के हास। कौन तुम अतुल अरूप अनाम।"

3. गेयताः छायावादी कवि केवल साहित्यिक ही नहीं वरन संगीत का भी कुशल ज्ञाता है। छायावाद का काव्य छंद और संगीत दोनों दृष्टियों से उच्च कोटि का है। इसमें प्राचीन छंदों के प्रयोग के साथ-साथ नवीन छंदों का भी निर्माण किया गया। इसमें मुक्तक छंद और अतुकांत

कविताएँ भी लिखी गई। छायावादी कवि प्रणय, यौवन और सौंदर्य का कवि है। गीति-शैली उसके गृहीत विषय के लिए उपयुक्त थी। गीति-काव्य के सभी गुण-संक्षिप्तता, तीव्रता, आत्माभिव्यंजना, भाषा की मसृणता आदि उपलब्ध होते हैं। गीति-काव्य के लिए सौंदर्य-वृत्ति और स्वानुभूति के गुणों का होना आवश्यक है, सौभाग्य से सारी बातें छायावादी कवियों में मिलती हैं। दूसरी एक और बात भी है कि आधुनिक युग गीति-काव्य के लिए जितना उपयुक्त है उतना प्रबंध-काव्यों के लिए नहीं। छायावादी साहित्य में, प्रगीत, खंड काव्य और प्रबंध काव्य भी लिखे गए और वीर गीति, संबोध गीति, शोकगीति, व्यंग्य गीति आदि काव्य के अन्य रूप विधानों का प्रयोग किया गया। छायावादी कवियों की भाषा और छंद केवल बुद्धिविलास, वचन भंगिमा, कौशल या कौतुक वृत्ति से प्रेरित नहीं रहा बल्कि उनकी कविता में भाषा भावों का अनुसरण करती दीखती है और अभिव्यंजना अनुभूति का।

4. अलंकार-विधानः अलंकार योजना में प्राचीन अलंकारों के अतिरिक्त अंग्रेजी साहित्य के दो नवीन अलंकारों-मानवीकरण तथा विशेषणविपर्यय का भी अच्छा उपयोग किया गया है। प्राकृतिक घटनाओं प्रातः, संध्या, झंझा, बादल और प्राकृतिक चीजों सूर्य, चंद्रमा आदि पर जहाँ मानवीय भावनाओं का आरोप किया गया है वहाँ मानवीकरण है। विशेषण विपर्यय में विशेषण का जो स्थान अभिधावृत्ति के अनुसार निश्चित है, उसे हटाकर लक्षणा द्वारा दूसरी जगह आरोप किया जाता है। पंत ने बच्चों के तुतले भय का प्रयोग उनकी तुतली बोली में व्यंजित भय के लिए किया है। इसी प्रकार "तुम्हारी आंखों का बचपन खेलता जब अल्हड़ खेल।" छायावादी कवि ने अमूर्त को मूर्त और मूर्त को अमूर्त रूप में चित्रित करने के लिए अनेक नवीन उपमानों की उद्‌भावना की है; जैसे- "कीर्ति किरण सी नाच रही है" तथा "बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल।" इसके अतिरिक्त उपमा, रूपक, उल्लेख, संदेह, विरोधाभास, रूपकातिशयोक्ति तथा व्यतिरेक आदि अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग किया गया है।

वह आज हो गयी दूर तान

इसलिए मधुर वह और गान (उपमा अलंकार)

5. कला कला के लिएः- स्वातंत्र्य तथा आत्माभिव्यक्ति के अधिकार की भावना के परिणामस्वरूप छायावादी काव्य में "कला कला के लिए" के सिद्धांत का अनुपालन रहा है। वस्तु-चयन तथा उसके प्रदर्शन कार्य में कवि ने पूर्ण स्वतंत्रता से काम लिया है। उसे समाज तथा उसकी नैतिकता की तनिक भी चिंता नहीं है। यही कारण है कि उसके काव्य में 'सत्' और 'शिव' की अपेक्षा 'सुंदर' की प्रधानता रही है। छायावादी काव्य इस "कला कला के लिए" के सिद्धांत में पलायन और प्रगति दोनों सन्निहित हैं। एक ओर अंतर्मुखी प्रवृत्ति के कारण जहाँ जन-जीवन से कुछ उदासीनता है तो दूसरी ओर काव्य और समाज में मिथ्या रूढ़ियों के प्रति सबल विद्रोह भी। अतः छायावाद पर केवल पलायनवाद का दोष लगाना न्याय संगत नहीं होगा।

- प्रतीकात्मकता, चित्रात्मक भाषा एवं लाक्षणिकता, गेयता, अलंकार विधान, कला कला केलिए, लाक्षणिकता एवं धन्यात्मकता

6. लाक्षणिकता एवं ध्वन्यात्मकताः इस युग के कवियों ने लाक्षणिक शब्दों का प्रयोग किया है। द्विवेदी युग में अभिधा की प्रधानता थी, परन्तु छायावाद में लक्षणा और व्यंजना को प्रधानता मिली। इन कवियों ने छन्द के बन्धन को स्वीकार किया। तथा मुक्त छन्द की नवीन शैली में रचनाएँ कीं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

छायावाद युग को आधुनिक हिन्दी का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह इस युग में देखा गया। छायावादी काव्य वस्तु एवं शिल्प दोनों दृष्टियों में नवीनता लिए हुए है। नवीन अलंकार विधान, प्रतीकात्मक शैली, गीति शैली आदि के कारण इसका शिल्प बेजोड़ बना।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. छायावाद जिन राष्ट्रीय परिस्थितियों के बीच उदित हुआ उनकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए?
2. छायावाद में प्रतीकात्मकता पर प्रकाश डालिए?
3. छायावादीन प्रवृत्तियों पर टिप्पणी लिखिए

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. छायावाद : काव्य तथा दर्शन, डॉ. हरनारायण सिंह
2. छायावाद और रहस्यवाद : गंगाप्रसाद पाण्डेय
3. छायावाद का काव्य शिल्प, डॉ. प्रतिमा

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. छायावादी काव्य एक विवेचना - डॉ. ओमवती देवी
2. छायावाद का पुनःपाठ - राजेश कुमार गर्ग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. छायावाद - नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

निराला-राम की शक्ति पूजा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवि निराला से परिचित होता है
- 'राम की शक्तिपूजा' कविता समझता है
- भावार्थ समझकर शैली जानता है
- विभिन्न अलंकारों से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

राम की शक्ति पूजा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता है। निराला जी ने 23 अक्टूबर 1936 को इसका निर्माण पूरा कराया। कहा जाता है कि इसका प्रकाशन पहली बार 26 अक्टूबर 1936 को इलाहाबाद (प्रयागराज) से प्रकाशित दैनिक 'भारत' में हुआ था। इसका उद्‌भव निराला के काव्य संग्रह 'अनामिका' के प्रथम संस्करण में सामने आया। इस अध्याय के माध्यम से राम की शक्तिपूजा कविता का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

शक्तिपूजा, प्रथम संस्करण, उद्‌भव, प्रयागराज

Discussion / चर्चा

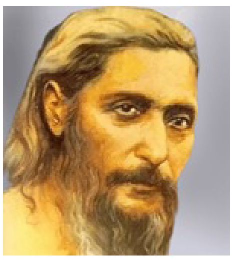

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

निराला की राम की शक्ति पूजा अंधकार से होकर प्रकाश में आने की कविता है। यहाँ कवि निराला ने अतीत वर्तमान एवं भविष्य को एक साथ जीया है। 1936 में कवि निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' कविता लिखी। इस कविता में निराला जी ने राम-रावण युद्ध के प्रसंग का प्रयोग किया है। जैसे कि रावण बहुत शक्तिशाली है। वह बहुत ही दैविक एवं अलौकिक शक्तियों का धनी था। उसने तपस्या द्वारा शिव से वरदान प्राप्त किया था। इस वरदान की फलस्वरूप युद्ध में रावण की सहायता करने के लिए बहुत सी दैवीय शक्तियाँ उसकी मदद कर रही थी। जिसमें देवी शक्ति प्रमुख थी। जो स्वयं परम शक्ति की ही रूप थी। इस देवी शक्ति के ही कारण उस दिन राम के सभी बाण पदभ्रष्ट हो रहे थे। एक भी बाण रावण को छू भी नहीं पा रहा था। सब कुछ उस महान दैवीय शक्ति के अंतर समाहित हो रहा था। यह देखकर श्रीराम अत्यन्त व्याकुल हो गए थे। ऐसे में राम को कोई उपाय नहीं दिख रहा था और उन्हें सीता की चिंता होने लगी कि सीता किस दशा में होगी। राम को अपनी हार का डर भी सताने लगता है। वे सोचते है कि वे कैसे अपनी जीत सुनिश्चित कर पाएंगे। ऐसे में जामवंत उन्हें शक्ति की आराधना करने की सलाह देते हैं। फिर राम शक्ति का आराधना करने और शक्ति को 108 कमल चढ़ाने का निर्णय करते हैं। शक्ति उनकी परीक्षा लेती है और एक कमल को छुपा लेती है। तब राम को याद आता है कि उनकी माता उनको राजीव नयन कहती थी। ऐसे सोचकर वे अपने एक आँख शक्ति को अर्पित करने का निर्णय करते हैं। तभी शक्ति प्रकट होती है और दर्शन देती है। तथा राम को विजय होने का वरदान देती है। यही इस कविता का सार है। फिर इस पाठ का उद्देश्य इस कविता की पंक्तियों के माध्यम से कविता को गहराई से समझने का प्रयास करना है।

▶ राम-रावण युद्ध प्रसंग

3.2.1 राम की शक्तिपूजा(कविता)

राम की शक्ति पूजा- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(1) रवि हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का तीक्ष्ण शर-विधृत-क्षिप्रकर, वेग-प्रखर,
शतशेलसम्वरणशील, नील नभगर्ज्जित-स्वर,
प्रतिपल - परिवर्तित - व्यूह - भेद कौशल समूह
राक्षस - विरुद्ध प्रत्यूह,-क्रुद्ध - कपि विषम हूह,
विच्छुरित वह्नि - राजीवनयन - हतलक्ष्य - बाण,
लोहितलोचन - रावण मदमोचन - महीयान,

राघव-लाघव - रावण - वारण - गत - युग्म - प्रहर,
उद्धत - लंकापति मर्दित - कपि - दल-बल - विस्तर,
अनिमेष - राम-विश्वजिद्दिव्य - शर - भंग - भाव,
विद्धांग-बद्ध - कोदण्ड - मुष्टि - खर - रुधिर - स्राव,
रावण - प्रहार - दुर्वार - विकल वानर - दल - बल,
मुर्छित - सुग्रीवांगद - भीषण - गवाक्ष - गय - नल,
वारित - सौमित्र - भल्लपति - अगणित - मल्ल - रोध,
गर्जित - प्रलयाब्धि - क्षुब्ध हनुमत् - केवल प्रबोध,
उद्गीरित - वह्नि - भीम - पर्वत - कपि चतुःप्रहर,
जानकी - भीरू - उर - आशा भर - रावण सम्वर।

सन्दर्भ- कवि निराला राम-रावण के अनिर्णीत संग्राम का वर्णन करते हैं।

भावार्थ- (दिन भर राम-रावण के घमासान युद्ध के पश्चात्) सूर्य अस्त हो गया। दिन के हृदय पर आज की पराक्रमपूर्ण रण-गाथा सदा के लिए अंकित हो गई। राम-रावण का युद्ध अनिर्णीत रहा। दोनों ओर के योद्धा तीव्र गति से प्रहार करनेवाले, तीक्ष्ण बाणों को अपने हाथों में धारण करते हुए अत्यंत तेजी के साथ एक दूसरे पर चलाते थे। वे सैनिक सैकड़ों भालों के एक ही साथ होने वाले आघातों को रोकने में समर्थ थे और उनके गर्जन से नीला आकाश, गुंजायमान था। प्रत्येक क्षण नवीन प्रकार की व्यूह रचना की जाती थी। उसमें विपक्षियों के घेरों को तोड़ने की अद्‌भुत कुशलता थी। कुछ वानरों के समूह अपने विरोधी रावण के सेना के राक्षसों के आक्रमणों को विफल करने के लिए भयंकर गर्जन कर रहे थे। कमल नयन भगवान राम ने अपने तथा अपने साथ के वीरों द्वारा छोड़े गए बाणों को जब लक्ष्यभ्रष्ट होते देखा, तो उनके नेत्रों से क्रोध की अग्नि निकलने लगी। उधर क्रोधोद्धत रावण के नेत्रों के दर्प कोप का उन्माद प्रकट होने लगा। श्रेष्ठ राम अत्यंत कुशलता के साथ आक्रमण करते थे और रावण उनके आक्रमणों को विफल कर देता था। इस प्रकार (उनके मध्य युद्ध होते हुए) दो पहर बीत गए। दुस्साहसी रावण विशाल वानर सेना के बल का विनाश कर रहा था। विश्व को जीतने की सामर्थ्य रखनेवाले राम अपने दिव्य वाणों की लक्ष्य भ्रष्टता आश्चर्य-चकित होकर देख रहे थे। राम का शरीर रावण के वाणों से विंधा हुआ था, उन्होंने धनुष की मूठ को अपने हाथों से दृढ़तापूर्वक पकड़ रखा था और उनके शरीर के विभिन्न अंगों से रक्त की तेज धार बह रही थी। वानरों की सेनाएँ रावण के दुर्निवार अत्यंत भयानक प्रहारों को रोक न सकने के कारण विफल हो रही थी। सुग्रीव, अंगद, गवाक्ष, नल आदि वीर सेनानी मूर्च्छित हो गए थे।

▶ राम-रावण युद्ध अनिर्णीत रहा

लक्ष्मण और जाम्बवान के प्रहारों को रावण बीच में ही अपने बल से रोक देता था। रणक्षेत्र में मारो-काटो का कोलाहल हो रहा था, मानो प्रलय काल का समुद्र उद्वेलित होकर गर्जन कर रहा हो। उस कोलाहल के बीच केवल हनुमान ही ऐसे थे जिनकी चेतना ठिकाने पर थी। उनके क्रोधपूर्ण मुख को देखकर ऐसा लगता था मानो किसी विशाल ज्वालामुखी पर्वत से अग्नि की लपटें निकल रही हों। इस प्रकार हनुमान चार पहर तक रावण के साथ निरंतर युद्ध करते रहे और भयभीत जानकी के लिए आशंकित राम के हृदय में आशा का संचार करते रहे।

अलंकार- ज्योति के पत्र, राजीवनयन (रूपक) उद्गीरित वन्हि (उत्प्रेक्षा) राघव-लाघव (यमक)

विशेष -

▶ लाक्षणिक शैली

1. लाक्षणिक शैली है। भाषा नवीन विच्छित्त मंडित है।
2. भाषा में ध्वन्यात्मकता है। व्यूह, समूह, प्रत्यूह, हूह आदि ध्वनि-प्रधान विम्बों के निर्माण के लिए प्रयुक्त हुए हैं।
3. भाषा में ओजगुण की दीप्ति दृष्टव्य है।
4. वीर, रौद्र तथा भयानक रसों की संश्लिष्ट सबलता देखते ही बनती है।
5. राम -रावण के युद्ध का सजीव एवं चित्रात्मक वर्णन है। यह वर्णन वीरगाथा -काव्य के वीररसात्मक वर्णनों का स्मरण कराता है।

(**2**) लौटे युग - दल - राक्षस - पदतल पृथ्वी टलमल,
बिंध महोल्लास से बार-बार आकाश विकल।
वानर वाहिनी खिन्न, लख निज - पति - चरणचिह्न
चल रही शिविर की ओर स्थविरदल ज्यों विभिन्न।
प्रशमित हैं वातावरण, नमित - मुख सान्ध्य कमल
लक्ष्मण चिन्तापल पीछे वानर वीर - सकल
रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा - मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार
चमकतीं दूर ताराएं ज्यों हों कहीं पार।

सन्दर्भ- कवि राम-रावण के युद्ध का वर्णन करता है। राम की सेना युद्ध से विरत होकर अपने शिविर की ओर गमन कर रही है। इसी समय का अवसादपूर्ण चित्रण है।

भावार्थ- दोनों सेनाएँ अपने-अपने डेरों की ओर लौटीं। राक्षसगण अपने भारी पैरों से पृथ्वी को कंपा रहे थे। उनके महान् हर्ष के भारी कोलाहल से गूँथकर आकाण बार-बार विकल हो रहा था। बन्दरों की साना उदास और दुःखी थी। वह अपने स्वामी श्रीराम के चरण-चिह्नों को देखकर इस प्रकार शांति के साथ लौट रही थी, जैसे बौद्ध साधुओं का कोई दल दीन असहाय दशा में अपने निवास स्थान ती ओर जा रहा हो।

▶ राक्षसगण पृथ्वी को कंपा रहे थे

वातावरण एकदम शान्त था। सन्ध्या के समय झुके हुए कमल के समान मुख झुकाये हुये चिन्तातुर लक्ष्मण चले जा रहे थे और उनके पीछे समस्त वानर वीर चले रहे थे। आगे-आगे राम अपने मखन के समान कोमल चरणों को पृथ्वी पर टेकते हुए चले जा रहे थे। राम के धनुष की डोरी ढीली पड़ी हुई थी, तरकश रखने का कमरवन्द भी ढीला हो गया। कसकर बाँधा गया जटाओं का मुकुट भी अस्त-व्यस्त हो चुका था। नके बालों की प्रत्येक लट खुल गई थी तथा उनकी पीठ पर, बाहुओं पर और विशाल वक्षस्थल पर बाल बिखर रहे थे, मानो

किसी दुर्गम पर्वत पर रात्री का अन्धकार उतर आया हो। पर्वत के पीछे दूर से मन्द-मन्द चमकने वाले तारों की भांति राम की उदास आँखें चमक रही थीं।

अलंकार-

1. पदमैत्री- दल तल टलमल, गुण धाण।
2. पुनरुक्ति प्रकाश- बार-बार
3. मानवीकरण-आकाश विकल, नैशान्धकार
4. रूपक-मुख, संध्याकाल
5. उत्प्रेक्षा-उतरा ज्यों....कहीं पार।

विशेष-

1. प्रायः छन्दः (क) के समान
2. इस छंद में बिम्ब-योजना विशेष रूप से दृष्टव्य है
3. अनुभावों का चित्रण दृष्टव्य है।
4. धरती और आकाश का बिंधना तथा व्याकुल होना संस्कृति तथा हिन्दी के वीर काव्य और युद्ध चित्रण की बरबस याद दिला देते हैं। चन्दवदाई तथा भूषण ने भी इसी प्रकार युद्ध के वर्णन किये हैं।

(**3**) आये सब शिविर, सानु पर पर्वत के, मन्थर
सुग्रीव, विभीषण, जाम्बवान आदिक वानर
सेनापति दल - विशेष के, अंगद, हनुमान
नल नील गवाक्ष, प्रात के रण का समाधान
करने के लिए, फेर वानर दल आश्रय स्थल।

संदर्भ- कवि राम तथा उनकी सेना शिविर में लौट आने के पश्चात् का वर्णन करता है।

▶ राम और उनकी सेना शिविर में लौट आते हैं

भावार्थ- पर्वत-शिखर पर स्थित शिविर में (राम, लक्ष्मण, हनुमान आदि) सब लौट आये। सुग्रीव, विभीषण, जाम्बवान आदि तथा विविध सेनाओं के वानर-समूह, सेनापतिगण-अंगद, हनुमान, नल, नील गवाक्ष आदि प्रमुख वीर वानरों की सेनाओं को उनके विश्राम करने के स्थलों पर पहुँचा कर रावण से अगले दिन युद्ध करने के उपाय पर विचार करने के लिए राम से मंत्रणा करने केलिए आये।

(**4**) बैठे रघु-कुल-मणि श्वेत शिला पर, निर्मल जल
ले आये कर - पद क्षालनार्थ पटु हनुमान
अन्य वीर सर के गये तीर सन्ध्या - विधान
वन्दना ईश की करने को, लौटे सत्वर,
सब घेर राम को बैठे आज्ञा को तत्पर,
पीछे लक्ष्मण, सामने विभीषण, भल्लधीर,
सुग्रीव, प्रान्त पर पाद-पद्म के महावीर,
यूथपति अन्य जो, यथास्थान हो निर्निमेष
देखते राम का जित-सरोज-मुख-श्याम-देश।

संदर्भ- कवि राम तथा उनकी सेना शिविर में लौट आने के पश्चात् का वर्णन करता है।

भावार्थ- रघुकुल के मणि श्री राम श्वेत पत्थर की शिला पर बैठ गये। चतुर हनुमान हाथ-पैर धोने केलिए स्वच्छ पानी ले आए। अन्य वीर संध्या कालीन विधान तथा ईश्वरोपासना करने के लिए तालाब के किनारे पर चले गये और वहाँ से शीघ्र ही लौट आये। वे राम को घेरकर बैठ गये और उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। पीछे, लक्ष्मण थे, सामने विभीषण, धैर्यवान जाम्बवान तथा सुग्रीव थे। भगवान राम के चरण कमलों के समीपस्थ हनुमान विराजमान थे। अन्य सेनापति यथास्थान बैठे हुये थे। वे सब के सब राम के उस मुख को एकटक देखने लगे, जिसके मुख की श्यामलता नील कमल को भी तिरस्कृत करने वाली थी।

▶ हनुमान की दास्य भक्ति का चित्रण

अलंकार-

1. रूपक-पाद-पद्म।
2. प्रतीप-जित सरोज मुख
3. स्वाभावोक्ति- पूरा छन्द।

विशेषण-

1. हनुमान की दास्य भक्ति अभिव्यंजित है।
2. नाम परिगणनात्मक शैली का प्रयोग है।
3. वर्णन में नाटकीयता है।

(**5**) है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन-चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल।

संदर्भ- राम अपने सेनापतियों के साथ मन्त्रणा कर रहे हैं। उस अवसर पर रात्रि का वर्णन कवि निराला करते हैं।

भावार्थ- अमावस्या की रात है। आसमान गहरा अन्धार उगल रहा है। अंधेरे के कारण दिशाओं का ज्ञान नष्ट हो रहा है, अर्थात् यह नहीं मालूम पड़ता है कि कौन किधर है। हवा का बहना शांत है, अर्थात् चारों ओर सायं-सायं भरा सन्नाटा है। पीछे की तरफ विशाल समुद्र लगातार गर्जन कर रहा है। पर्वत किसी ध्यान-मग्न तपस्वी की भाँति शांत है और वहाँ केवल एक मशाल जल रही है।

▶ प्रकृति का मानवीकरण

अलंकार-

1. मानवीकरण- गगन, अम्बुधि एवं भूधर
2. स्वाभावोक्ति-पूरा छन्द
3. पमा- ज्यों ध्यान-मग्न।

विशेष-

1. आलम्बन के रूप में प्रकृति का भयंकर रूप चित्रित है।
2. भयानक रस की गर्जन है। वातावरण की भयानकता सजीव हो उठी है।

(**6**) स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय
रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय,

जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु-दम्य-श्रान्त,
एक भी, अयुत-लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार-बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार-हार।

संदर्भ- कवि निराला अवसादग्रस्त के अन्तर्द्वन्द का अंकन करते हैं।

भावार्थ- स्वभाव से ही शान्त रघुवंश में इन्द्र के समान राम को युद्ध में पराजित हो जाने की शंका बार-बार विचलित कर देती है। वे इस जग के जीवन में रावण की विजय के भय से काँप उठते हैं। शत्रुओं का दमन करने वाला राम का हृदय जो आज तक कभी विचलित नहीं हुआ और जो अकेली ही दस-दस सहस्र और लाखों शत्रुओं के बीच दुर्दमनीय बना रहा, यह सोच-सोच कर आकुल व्याकुल हो रहा था कि कल रणभूमि में किस प्रकार युद्ध कर सकेगा। उनका मन बार-बार लड़ने को तैयार भी बार-बार अपने आपको असमर्थ मानकर अपनी पराजय स्वीकार कर रहा था।

▶ अवसादग्रस्त के अन्तर्द्वन्द्व का अंकन

अलंकार-

1. परिकरंकुर-राधवेन्द्र
2. पुनरुक्तिप्रकाश-फिर -फिर, बार-बार
3. वीप्सा-रह-रह, हार-हार

विशेष-

1. राम को मानव के रूप में ग्रहण किया गया है।
2. मनोवैज्ञानिक चित्रण की दृष्टि से यह स्थल अत्यन्त मार्मिक है।
3. भावानुकूल पद-विन्यास दृष्टव्य है।

(7) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का, -प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरू मलय-वलय,-
ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय,-ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

संदर्भ- निराशा के क्षणों में राम को यकायक अपने और सीता के प्रथम मिलन की याद आ जाती है। कवि निराला इसी का वर्णन करते हैं।

▶ राम सीता के प्रथम मिलन की याद करते हैं

भावार्थ- निराशा और अवसाद के इन क्षणों में यकायक राम को कुमारी जानकी की सुन्दरता का स्मरण उसी प्रकार हो आया, जिस प्रकार गहरे काले बादलों के मध्य एकाएक बिजली

चमक जाती है। इन्हें राजा जनक का वह पवन याद आ गया जिसमें वह सीता के एकटक देखते रह गये थे। वहीं लताओं के झुरमुट के मध्य उनकी आँखें चार हुई थीं उनके नेत्रों ने ही प्रेम की कथा को एक-दूसरे से कहा था पहली बार ही वे पलकें प्रेम से भरी नवीन पलकों के रूप में उठी थीं और झुकीं। वहाँ छेटे-छोटे पत्ते हिल रहे थे। पराग हर्षपूर्वक झर रहा था, मानो स्वर्ण का कोई झरना झर रहा था। सीता के सुन्दर नयनों में इस प्रथम मिलन के कारण एक प्रकार की पुलक दौड़ गई थी, जो तुरीयावस्था के समान आत्मविस्मृत करने वाली थी।

अलंकार-

1. उपमा-जैसे विद्युत
2. परिकरांकुर-अच्युत
3. विभावना-नयनों के नयनों से सम्भाषण ष
4. अनुप्रास- पलकों......पतन।

विशेष-

▶ कवि अपनी विरह-वेदना का वर्णन राम के माध्यम से करते हैं

1. यहाँ विप्रलम्भ श्रृंगार रस की व्यंजना है। स्मृति, संचारी भाव के माध्यम से 'स्मरण' दशा का अंकन किया गया है।
2. राम के माध्यम से कवि ने अपनी विरह-वेदना का वर्णन किया है।
3. अंधकार पूर्ण रात्रि को उद्दीपन विभावान्तर्गत ग्रहण किया गया है।

(**8**) सिहरा तन, क्षण-भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता ध्यान-लीन राम के अधर,
फिर विश्व-विजय-भावना हृदय में आयी भर,
वे आये याद दिव्य शर अगणित मन्त्रपूत,-
फड़का पर नभ को उड़े सकल ज्यों देवदूत,
देखते राम, जल रहे शलभ ज्यों रजनीचर,
ताड़का, सुबाहु, बिराध, शिरस्त्रय, दूषण, खर;
फिर देखी भीम मूर्ति आज रण देखी जो
आच्छादित किये हुए सम्मुख समग्र नभ को,
ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ बुझ कर हुए क्षीण,
पा महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन;
लख शंकाकुल हो गये अतुल बल शेष शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन;
फिर सुना हँस रहा अट्टहास रावण खलखल,
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल।

▶ राम अपने पराक्रम का सहज स्मरण करते हैं

संदर्भ- सीता की कौमारिक छवि की झांकी पाते ही राम को अपने पराक्रम का सहज स्मरण हो जाता है। कवि निराला इसी मनोवैज्ञानिक स्थिति का वर्णन करते हैं।

भावार्थ- सीता की छवि का स्मरण आते ही राम का समस्त तन रोमांचित हो गया, उनका तन हर्षातिरेक से भर गया और उनका हाथ अपने आप ही इस प्रकार ऊपर को उठ गया, जैसे वह फिर दुबारा शिव के धनुष को तोड़ना चाहते हों। सीता के ध्यान में निमग्न राम के होठों पर सहसा ही आशा और विश्वास की मुस्कान प्रकट हो गई और उनके हृदय में विश्व-विजय की भावना भर आई। उन्हें अपने उन दिव्य और मन्त्रों द्वारा पवित्र किये हुए अगणित वाणों की याद आ गई जो आकाश में उसी प्रकार उड़े थे, जिस प्रकार अपने पंखों को फड़फड़ाते हुए देवदूत उड़ते हैं। अपनी कल्पना में तब राम ने देखा कि ताड़का, सुबाहु, विराध, त्रिशिरा, दूषणखर आदि आदि समस्त राक्षस उनके वाणों की आग में पतंगों की भाँति जल रहे थे। इसके बाद उन्हें वह विशाल मूर्ति याद आई जो आज उन्होंने रण में देखे थे। वह मूर्ति अपनी विशालता से समस्त आकाश को ढके हुए थी और जिसमें लग-लग कर उनके समस्त अग्निवाण नष्ट हो गये थे- क्षीण होकर बुझ गये थे। वे वाण उस प्रलय-रूपी विशाल मूर्ति के तन में क्षण-भर में समा गये थे। इस दृश्य को देखकर अपार बलशाली तथा विष्णु के अवतार राम अपनी पराजय की शंका से व्याकुल हो उठे और उनकी आँखों में सीता के नेत्र झाँकने लगे, जिनमें राम की मूर्ति समाई हुई थी, अर्थात् वह सोचने लगे कि अब मैं अपनी प्रेमिका सीता को कैसे प्राप्त कर सकूँगा। इसके बाद उन्हें अपने सामने विजय दृप्त रावणा का खल-खल करता हुआ अट्टहास सुनाई पड़ा। भावातिरेक के कारण राम के नेत्रों से मोती जैसे दो टपक पड़े।

▶ राम के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से करते हैं

अलंकार-

1. उत्प्रेक्षा-ज्यों उठा हस्त।
2. उपमा-उड़े ज्यों देवदूत, ज्यों पतंग।
3. रूपक-तन महानिलय में।
4. दृष्टान्त-महानिलय ......लीन।
5. पुनरुक्तिप्रकाश- बुझ-बुझ कर

विशेष-

1. इन पंक्तियों में वीर एवं रौद्र रस श्रृंगार रस के सहायक होकर आए हैं। उनके पश्चात् भयानक रस में पर्यवसान बहुत ही सटीक बन गया है।
2. राम के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण सर्वथा मनोवैज्ञानिक है।
3. अवसाद और नैराश्य के क्षणों में प्रियतमा की-मूर्ति का बादलों में बिजली के समान चमक जाना बहुत ही सार्थक है।
4. छायावादी कवि नारी को प्रेयसी और प्रेरणा मानते हैं। इन पंक्तियों में सीता का यही रूप चित्रित है।
5. राम को मानव-रूप में ग्रहण किया गया है। राम के चरित्र को अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए कवि ने उनके चरित्र की मानवोचित दुर्बलता का भी तन्मयता के साथ चित्रित किया है।

▶ राम को मानव-रूप में चित्रण किया है

(**9**) बैठे मारुति देखते राम-चरणारविन्द-
युग 'अस्ति-नास्ति' के एक रूप, गुण-गण-अनिन्द्य;
साधना-मध्य भी साम्य-वाम-कर दक्षिणपद,
दक्षिण-कर-तल पर वाम चरण, कपिवर गद् गद्

पा सत्य सच्चिदानन्द रूप, विश्राम-धाम,
जपते सभक्ति अजपा विभक्त हो राम-नाम।
युग चरणों पर आ पड़े अस्तु वे अश्रु युगल,
देखा कपि ने, चमके नभ में ज्यों तारादल;
ये नहीं चरण राम के, बने श्यामा के शुभ,-
सोहते मध्य में हीरक युग या दो कौस्तुभ;
टूटा वह तार ध्यान का, स्थिर मन हुआ विकल,
सन्दिग्ध भाव की उठी दृष्टि, देखा अविकल
बैठे वे वहीं कमल-लोचन, पर सजल नयन,
व्याकुल-व्याकुल कुछ चिर-प्रफुल्ल मुख निश्चेतन।

संदर्भ- सीता के ध्यान में मग्न राम को हनुमान जी भक्ति विह्वल होकर देख रहे हैं। कवि निराला इसी स्थिति का निरूपण करते हैं।

भावार्थ- हनुमान बैठे राम के चरण कमलों को देख रहे थे। वे अपनी सम्पूर्ण गुण-गरिमा के कारण अनिन्द्य शोभा से युक्त थे। ये दोनों चरण सम्पूर्ण ब्रह्म चिंतन का प्रतिनिधित्व करते हैं या नहीं। ये चरण साधक की समरसता का संदेश देने वाले हैं। यह सोचकर हनुमान ने राम की ओर देखा। राम का बायाँ हाथ दाहिने पैर पर तथा दाहिने हाथ की दथेली पर बाँया पैर रखा हुआ था। तात्पर्य यह है कि राम पदमासन लगाकर बैठे हुए थे। हनुमान राम में सत्-चित्-आनन्द स्वरूप ब्रह्म की उपलब्धि हो रही थी। भगवान राम का यह पावन स्वरूप हनुमान जी के लिए परम शान्तिदायक मुक्तिलोक बना हुआ था। राम की इस भावमयी तथा गम्भीर मुद्रा को देखकर हनुमान भक्ति-भावना के साथ द्वैत मूलक उपासना में तल्लीन थे। यद्यपि तत्वतः ब्रह्म और जीव के अभिन्नत्व के कारण वह राम से पृथक नहीं थे, तथापि व्यवहारतः वह उनसे पृथक होकर द्वैतमूल भक्ति में लीन होकर सहज भाव से- स्वतः सम्भूत रूप से- राम-नाम का जप कर रहे थे।

▶ हनुमान राम में सत्-चित्-आनन्द स्वरूप ब्रह्म की उपलब्धि पाता है

इसी समय हनुमान ने देखा कि उनके आराध्य राम के चरणों पर उनकी वेदना-विकल आँखों से आँसुओं की बूँदें टपक पड़ी। आँसुओं को देखकर हनुमान को प्रतीत हुआ मानो आकाश में तारों का समूह चमक अठा है। हनुमान को प्रतीत होता था कि वे चरण राम के न होकर स्वयं देवी शक्ति कालिका के शुभ चरण हैं और उनके मध्य में गिरकर सुशोभित होने वाली आँसुओं की दो बूँदें दो हीरे हैं अथवा दो कौस्तुभ मणियाँ हैं।

अलंकार-

1. रूपक-चरणारविंद, कमल लोचन।
2. सन्देह-अस्ति-नास्ति, हीरक या कौस्तुभ।
3. विरोधाभास-जपते....रामनाम, टूटा तार स्थिर मन हुआ चिर प्रभुल्ल मुख निश्चेतन।
4. पदमैत्री-गुण गण विश्राम धाम, कर पर कपिवर
5. विषम- चरणारविन्द के मध्य हीरक

विशेष-

1. हनुमान की परम्परागत दास्य भाव की भक्ति का चित्रण अत्यन्त सहज रूप में किया

गया है।

> ▶ हनुमान के चिन्ता के द्वारा कवि निराला की रहस्यात्मक जिज्ञासा की अभिव्यक्ति

2. राम की मुद्राओं का चित्रण बहुत ही स्वाभाविक है।
3. देवी शक्ति के प्रति कवि की आस्था स्पष्टतः अभिव्यक्त है।
4. छन्द में धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिवेश का सहज समावेश है।
5. हनुमान के चिन्तन द्वारा छायावादी कवि निराला की रहस्यात्मक जिज्ञासा की स्पष्ट ही अभिव्यक्ति हुई है।

(**10**) 'ये अश्रु राम के' आते ही मन में विचार,
उद्वेल हो उठा शक्ति - खेल - सागर अपार,
हो श्वसित पवन - उनचास, पिता पक्ष से तुमुल
एकत्र वक्ष पर बहा वाष्प को उड़ा अतुल,
शत घूर्णावर्त, तरंग - भंग, उठते पहाड़,
जल राशि - राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसन्ध धरा हो स्फीत वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष,
शत-वायु-वेग-बल, डूबा अतल में देश - भाव,
जलराशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव
वज्रांग तेजघन बना पवन को, महाकाश
पहुँचा, एकादश रूद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।

सन्दर्भ- राम के क्लेश का कारण शक्ति को अनुमानित करके हनुमानजी शक्ति से इसका प्रतिशोध लेने का निश्चय करते हैं।

भावार्थ- राम की आखों में आंसू हैं- बस, इतना सा विचार मन में आते ही आपार शक्ति के साथ खेलने वाला तथा सागत सदृश्य अथाह बलशाली हनुमान उत्तेजित हो उठे। उनकी उत्तेजना द्वारा प्रेरित होकर उनके पिता 'मरूत' की ओर से भयंकर गर्जन करते हुए उनचासों पवन एक साथ मिलकर चलने लगे। समुद्र के विशाल वक्षस्थल पर एकत्र वाष्पराशि को उन पवनों ने उड़ा दिया, अर्थात समुद्र पर एकत्र समस्त भाप उड़कर बादल रूप में घिर आई, और सैकड़ों भयंकर चक्कर लगाती हुई लहरें चलने लगीं। पानी की लहरें पहाड़ों की तरह उठती थीं और वे एक दूसरे के ऊपर पछाड़ खाकर गिरती थीं। पानी का यह अथाह प्रवाह पृथ्वी की सीमा को तोड़ कर सागर के हृदय (फाट) को विस्तृत करने लगा। सागर शक्तिशाली होकर दिग्विजय करने के लिए प्रतिक्षण आगे की ओर बहने लगा, अर्थात सागर मर्यादाहीन हो गया है और चारों ओर पानी-ही-पानी दिखाई देने लगा। समुद्र का जल सैकड़ों वायुओं के तीव्र वेग से बहने लगा और स्थान का ज्ञान समाप्त हो गया, अर्थात कहीं पर भी जमीन नहीं दिखाई देती थी। जलराशि को मथता हुआ वायु भयंकर शब्द कर रहा था। इस प्रकार भयंकर दृश्य उपस्थित हो जाने पर व्रज के सामान दृढ अंग वाले तथा एकादश रूद्र के अवतार हनुमान जो क्रुद्ध होकर अटटहास करते हुए वायु को अधिकाधिक भयंकरता प्रदान करके महाकाश में पहुँच गये।

> ▶ हनुमान की राम भक्ति एवं विपुल शक्ति का सजीव वर्णन

अलंकार-

1. मानवीकरण- जलराशि
2. रूपक- एकादश रूद्र

विशेष-

1. हनुमान की राम भक्ति एवं विपुल शक्ति का सजीव चित्रण है।
2. भाषा का नाथ सौंदर्य द्रष्टव्य है
3. भयंकर रस के व्यंजक महाप्राण शब्दों का चयन कवि के भाषाधिकार का साक्षी है। वीर तथा भयानक रसों की मिली-जुली छटा पंक्तियों में विशेष रूप से द्रष्टव्य है।

(**11**) रावण - महिमा श्यामा विभावरी, अन्धकार,
यह रूद्र राम - पूजन - प्रताप तेजः प्रसार;
उस ओर शक्ति शिव की जो दशस्कन्ध-पूजित,
इस ओर रूद्र-वन्दन जो रघुनन्दन - कूजित,
करने को ग्रस्त समस्त व्योम कपि बढ़ा अटल,
लख महानाश शिव अचल, हुए क्षण-भर चंचल,
श्यामा के पद तल भार धरण हर मन्द्रस्वर
बोले- "सम्बरो, देवि, निज तेज, नहीं वानर
यह, -नहीं हुआ श्रृंगार-युग्म-गत, महावीर,
अर्चना राम की मूर्तिमान अक्षय - शरीर,
चिर - ब्रह्मचर्य - रत, ये एकादश रूद्र धन्य,
मर्यादा - पुरूषोत्तम के सर्वोत्तम, अनन्य,
लीलासहचर, दिव्यभावधर, इन पर प्रहार
करने पर होगी देवि, तुम्हारी विषम हार;
विद्या का ले आश्रय इस मन को दो प्रबोध,
झुक जायेगा कपि, निश्चय होगा दूर रोध।"

सन्दर्भ- आकाश के ऊपर जाकर हनुमान देखते हैं कि वह कौन-सी शाक्ति है जो रावण केलिए विजय-कवच का काम कर रही थी।

भावार्थ- हनुमान ने महाकाश में पहुँचकर देखा कि वहाँ एक ओर तो रावण की महिमा को बनाये रखने वाली तथा रात के अंधकार के समान श्यामवर्ण वाली महाशक्ति थी, तथा दूसरी ओर अपने प्रभु राम के तेजस्व और प्रतापाग्नि का प्रसारण करनेवाले रूद्र-रूप-धारी हनुमान थे। उस ओर राम के द्वारा पूजित शिव कि शक्ति थी और इस ओर राम के द्वारा उच्चारण की हुई शिव की वंदना थी, जिसके बल पर होकर हनुमान समस्त आकाश को निगलने का साहस कर रहे थे। भावी महानाश को देखकर अचल शिव क्षणभर केलिए चंचल हो गये और काली के पदतल का भार धारण करनेवाले शिव मंद स्वर में बोले- "हे देवी! अपना तेज रोको। यह वानर नहीं है। यह कभी काम द्वारा पीड़ित होकर किसी नारी के प्रेम पाश में आवद्ध नहीं हुआ है। यह महावीर है। यह राम की शरीर धारिणी साक्षात अखंडित अर्चना है। इसका ब्रह्मचर्य

> ▶ हनुमान के वर्चस्व तथा तेजपूर्ण व्यक्तित्व का निरूपण सबल भाषा में

अखंड है। ये एकादश रुद्र के समान धन्य है अर्थात उन्हीं के अवतार है। ये मर्यादापुरुषोत्तापम राम के एकनिष्ठ, सर्वोत्तम और अनन्य भक्त हैं। यह उनकी लीला के सहचर है और यह दिव्य भावों को धारण करनेवाले हैं। हे देवी! इन पर प्रहार करने से तुम्हारी बुरी तरह हार होगी। तुम इस समय विद्या का सहारा लेकर इनको ज्ञानोपदेश दो। बन्दर हनुमान झुक जायेगा और तुम्हारे मार्ग की बाधा दूर हो जाएगी।"

अलंकार-

1. रूपक- रावण महिमा प्रसार पदतल, भार।
2. विरोधाभास- अचल चंचल।
3. पदमैत्री- ग्रस्त समस्त, वंदन रघुनंदन, अचल चंचल।

विशेष-

1. हनुमान के वर्चस्व तथा तेजपूर्ण व्यक्तित्व का निरूपण सबल भाषा में किया गया है।
2. तमोगुण के ऊपर सत्वगुण की श्रेष्ठता का प्रतिपादन है।

(**12**) कह हुए मौन शिव, पतन तनय में भर विस्मय
सहसा नभ से अंजनारूप का हुआ उदय।
बोली माता "तुमने रवि को जब लिया निगल
तब नहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल,
यह वही भाव कर रहा तुम्हें व्याकुल रह रह।
यह लज्जा की है बात कि माँ रहती सह सह।
यह महाकाश, है जहाँ वास शिव का निर्मल,
पूजते जिन्हें श्रीराम उसे ग्रसने को चल
क्या नहीं कर रहे तुम अनर्थ? सोचो मन में,
क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ श्री रधुनन्दन ने?
तुम सेवक हो, छोड़कर धर्म कर रहे कार्य,
क्या असम्भाव्य हो यह राघव के लिये धार्य?"
कपि हुए नम्र, क्षण में माता छवि हुई लीन,
उतरे धीरे धीरे गह प्रभुपद हुए दीन।

सन्दर्भ- शिव की शक्ति शिवजी के मतानुसार मातृरूप धारण करके हनुमान के सम्मुख उपस्थित होती है।

भावार्थ- इतना कहकर शिवजी चुप हो गए। हनुमान के मन में विस्मय भाव भर्ती हुई यकायक आकाश में हनुमान की माता अंजना के रूप का प्रादुर्भाव हुआ। माता अंजना कहने लगी, जब पहले तुमने सूर्य को निगल लिया था, तब तुम निरे बालक थे और तुमको उस समय (औचित्यनौचित्य का) ज्ञान नहीं था। वही बचपन तुम्हें परेशान कर रहे हैं। तुम्हारी उस उद्दंडता के कारण मुझको लज्जा आती रहती है। तुम क्या चाहते हो कि मैं जन्म भर तुम्हारी उद्दंडता के कारण लज्जा से मरती रहूँ। यह महाकाश है जहाँ उन शिवजी का निवास स्थान है, जिनकी पूजा तुम्हारे आराध्य श्रीराम भी करते हैं। तुम उसी महाकाश को निगलने केलिए

> ▶ आकाश में अंजना माता की मूर्ती की उदय को माध्यम बनाकर कवि ने हनुमान के अंतर्द्वंद की अभिव्यक्ति किया है

अग्रसर होकर क्या अनुचित कार्य नहीं कर रहे हो? तुम अपने मन में तो विचार करो। तुम सेवक धर्म का परित्याग करके यह कार्य कर रहे हो। इस अनुचित कार्य को क्या रम्म स्वीकार कर सकेंगे? बन्दर हनुमान तत्कालीन विनीत बन गए। उसी क्षण अंजना माता रूपी शक्ति अन्तर्द्धान हो गए। हनुमान धीरे-धीरे पृथ्यु पर उतर आये उन्होंने अत्यन्त दीन भाव से प्रभु राम के चरणों को ग्रहण कर लिया।

अलंकार- पुनरुक्तिप्रकाश- रह-रह, सह-सह, धीरे-धीरे। वक्रोक्ति- क्या नहीं कर रहे अनर्थ क्या दी आज्ञा रघुनन्दन ने, क्या असंभाव्य... धार्य।

विशेष- 1, आकाश में अंजना माता की मूर्ती की उदय को माध्यम बनाकर कवि ने वस्तुतः हनुमान के अंतर्द्वंद की मार्मिक अभिव्यक्ति की हैं। हनुमान का मानसिक संघर्ष सजीव हो उठा है।

(**13**) राम का विषण्णानन देखते हुए कुछ क्षण,
“हे सखा” विभीषण बोले “आज प्रसन्न वदन
वह नहीं देखकर जिसे समग्र वीर वानर
भल्लुक विगत-श्रम हो पाते जीवन निर्जर,
रघुवीर, तीर सब वही तूण में हैं रक्षित,
है वही वक्ष, रणकुशल हस्त, बल वही अमित,
हैं वही सुमित्रानन्दन मेघनादजित् रण,
हैं वही भल्लपति, वानरेन्द्र सुग्रीव प्रमन,
ताराकुमार भी वही महाबल श्वेत धीर,
अप्रतिभट वही एक अर्बुद सम महावीर
हैं वही दक्ष सेनानायक है वही समर,
फिर कैसे असमय हुआ उदय यह भाव प्रहर।
रघुकुलगौरव लघु हुए जा रहे तुम इस क्षण,
तुम फेर रहे हो पीठ, हो रहा हो जब जय रण।
कितना श्रम हुआ व्यर्थ, आया जब मिलनसमय,
तुम खींच रहे हो हस्त जानकी से निर्दय!
रावण? रावण लम्पट, खल कल्म्ष गताचार,
जिसने हित कहते किया मुझे पादप्रहार,
बैठा उपवन में देगा दुख सीता को फिर,
कहता रण की जय-कथा पारिषद-दल से घिर,
सुनता वसन्त में उपवन में कल-कूजित पिक
मैं बना किन्तु लंकापति, धिक राघव, धिक्-धिक्?

सन्दर्भ- उदास राम से विभीषण कहते हैं।

व्याख्या- राम के उदास मुख क्षणों तक देखने के पश्चात् विभीषण बोले, है सखा! आपका वह प्रसन्न मुख नहीं है जिसको देखकर समस्त बन्दर और भालु आदि समस्त थकान को भूलकर जीवन की नवस्फूर्ति पुष्ट करते थे। है रघुवीर! तुम्हारे तरकश में आज भी वे ही सब तीर मौजूद हैं। जिनसे आपने इतने दुष्टों का वध किया है। साहस भरा हुआ वक्षस्थल भी वही है, रण-युक्त हाथ भी वे ही हैं और तुम्हारा अपार बल है, मेघनाथ को जीतने वाले लक्ष्मण भी वही हैं, जामबवान हैं, वानरों के राजा प्रसन्न मन वाले सुग्रीव भी वही हैं, श्वेत रंग वाले धैर्य, बल एवं महाबल को धारण करने वाले अंगद भी वहीं हैं, एक अरब योद्धाओं के बल को धारण करनेवाले अद्वितीय सेनानी हनुमान भी वही हैं, वे ही कुशल सेनानायक भी हैं, वही युद्ध-स्थल है, तब कुसमय में तुम्हारे मन में यह निराशा का भाव क्योंकर उदय हुआ है? हे रघुकुल के गौरव! तुम इस समय लघुता का अनुभव करने लगे हो। जब युद्ध में विजय होने वाली है, उस समय युद्ध से मुह मोड़ रहे हो। अर्थात् स्वयं अपना पराजय स्वीकार कर रहे हो। तुम्हारे इस प्रकार के आचारण द्वारा कितना परिश्रम(खून-पसीना) व्यर्थ हो जाएगा? जब जानकी से मिलने का समय आया है तब तुम कठोर बनकर उनकी ओर से जानकी सी मुक्ति से अपना हाथ खींच रहे हो? और रावण! रावण तो धूर्त, पापी, दुष्ट और भ्रष्ट है। उसने भले बात कहते हुए मुझ में पैर की ठोकर मारी थी। वह पवन में बैठकर फिर सीता को अनेक प्रकार के दुख देगा और अपने दरबारियों से घिरकर अपनी विजय गाथा को सुनाएगा और वह बसन्त ऋतु में कोयल की मधुर वाणी द्वारा गुँजित उपवन में आनन्द से दिन व्यतीत करेगा। किन्तु मैं लंकापति बनता रह गया। है राघव! इसके लिये इतिहास आपकी विगर्हणा करेगा।

▶ विभीषण को राम के एक सच्चे मित्र के रूप में चित्रण

अलंकार-

1. बृत्यानुप्रास-वीर वानर वह वदन, कलकूर्जित
2. वक्रोक्ति- तीर सब वह्मभाव प्रहर
3. उपमा-अर्बुद सम।

विशेष-

1. शैली में सहजता एवं व्यग्य का पुट है।
2. इन पंक्तियों में विभीषण को राम के एक सच्चे मित्र के रूप में चित्रित किया गया है।

(14) सब सभा रही निस्तब्ध
राम के स्तिमित नयन
छोड़ते हुए शीतल प्रकाश देखते विमन,
जैसे ओजस्वी शब्दों का जो था प्रभाव
उससे न इन्हें कुछ चाव, न कोई दुराव,
ज्यों हों वे शब्दमात्र मैत्री की समनुरक्ति,
पर जहाँ गहन भाव के ग्रहण की नहीं शक्ति।

सन्दर्भ- विभीषण के कथन की कोई भी प्रतिक्रिया राम पर नहीं हुई। वह पूर्ववत् उदास बैठे रहे। कवि निराला राम की इसी उदासी का वर्णन करते हैं।

भावार्थ- विभीषण के कथन करने के पश्चात् समस्त सभा आश्चर्य स्तम्भित हो गई। राम के अधखुले नयन शीतल प्रकाश विकीर्ण करते हुए और उदास भाव को लिये हुए देखते रहे।

▶ राम की उदासी का वर्णन कवि निरालाजी कुशलता से करते है

विभीषण के शब्दों में निहित ओजस्वी भाव के प्रति राम के मन में न तो किसी प्रकार का लगाव था और न दुराव था। मानों वे मैत्री को प्रकट करने वाले शब्द मात्र थे- मानो विभीषण अपने कथन रूप में अर्थ रहित शब्दों का ध्वनि-समूह मात्र था। उनमें हृदय को स्पर्श करने की तथा हृदय को झंकुर करने की क्षमता ही प्रतीत नहीं होती थी।

अलंकार-

1. विरोधाभास- छोड़ते शीतल प्रकाश देखते विमन।
2. विशेषोक्ति- ओजस्वी..दुराव। (उत्प्रेक्षा)- ज्यों होवे।

विशेष-

1. विषादग्रस्त राम की मानसिक स्थिति का बड़ा ही स्वाभाविक चित्रण है।
2. सरल भाषा में मनोभावों के चित्रण तथा उनकी प्रतिक्रिया की सूक्ष्मता के अंकन में कवि को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

(**15**) कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर,
बोले रघुमणि- "मित्रवर, विजय होगी न समर,
यह नहीं रहा नर-वानर का राक्षस से रण,
उतरीं पा महाशक्ति रावण से आमन्त्रण,
अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति।" कहते छल छल
हो गये नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल,
रुक गया कण्ठ, चमका लक्ष्मण तेजः प्रचण्ड
धँस गया धरा में कपि गह युगपद, मसक दण्ड
स्थिर जाम्बवान, समझते हुए ज्यों सकल भाव,
व्याकुल सुग्रीव, हुआ उर में ज्यों विषम घाव,
निश्चित सा करते हुए विभीषण कार्यक्रम
मौन में रहा यों स्पन्दित वातावरण विषम।

सन्दर्भ- विभीषण के वचनों की प्रतिक्रिया स्वरूप उठने वाले भावों को कवि निराला अभिव्यक्त करते हैं।

भावार्थ- कुछ क्षण तक चुप रहने के पश्चात् राम अपने सहज कोमल स्वर से बोले, "हे मित्रवर विभीषण! अब युद्ध में हमारी विजय नहीं होगी। यह मनुष्यों और बन्दरों के मध्य होनेवाला युद्ध नहीं रह गया है। रावण का निमन्त्रण प्राप्त करके महाशक्ति उसकी सहायतार्थ अवतरित हुई हैं। जिधर अन्याय है उधर शक्ति है।" यह कहते हुए राम की आँखों से आँसु छलक आये और उनकी आँखों से आँसु की कुछ बूँदें ढलक कर गिर पड़ी और उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। वह आगे कुछ न कह सके। राम की यह दशा देखकर लक्ष्मण अपनी प्रचण्ड तेज से चमक उठे। हनुमान राम के दोनों चरणों को पकड़ करके (लज्जा के मारे) पृथ्वी में धँस गये और पुष्ट भुजाओं वाले जाम्बवान जहाँ-के तहाँ रह गये। इन समस्त भावों को समझने वाले सुग्रीव व्याकुल हो गये, मानो उनके हृदय में भयंकर घाव लगा हो। विभीषण आगे का कार्य निश्चित-सा करते हुए दिखाई दिये। इस प्रकार वह समस्त वातावरण मौन रूप से स्पंदित

▶ विभिन्न पात्रों को मानसिक द्वंन्द्व का चित्रण

हो उठा, अर्थात् उनका मौन ही सब कुछ कहे दे रहा था।

अलंकार-

1. पुनरुक्तिप्रकाश- छल-छल
2. उत्प्रेक्षा- ज्यों विषम घाव
3. विरोधाभास- अन्याय जिधर है उधर शक्ति
4. स्वभावोक्ति- पूरा छन्द

विशेष-

1. विशेष-विपर्यय चमक लक्ष्मण तेज।
2. विभिन्न पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का बड़ा सजीव एवं प्रभावशाली वर्णन है। इससे कवि राम के प्रति पाठक की सहानुभूति प्राप्त करने में समर्थ हुआ है।
3. इन पंक्तियों में राम के अनुभवों का विधान बहुत ही सफल है।

(**16**) निज सहज रूप में संयत हो जानकी-प्राण
बोले-"आया न समझ में यह दैवी विधान।
रावण, अधर्मरत भी, अपना, मैं हुआ अपर,
यह रहा, शक्ति का खेल समर, शंकर, शंकर!
करता मैं योजित बार-बार शर-निकर निशित,
हो सकती जिनसे यह संसृति सम्पूर्ण विजित,
जो तेजः पुंज, सृष्टि की रक्षा का विचार,
हैं जिसमें निहित पतन घातक संस्कृति अपार।
शत-शुद्धि-बोध, सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन का विवेक,
जिनमें है क्षात्रधर्म का धृत पूर्णाभिषेक,
जो हुए प्रजापतियों से संयम से रक्षित,
वे शर हो गये आज रण में, श्रीहत खण्डित!
देखा हैं महाशक्ति रावण को लिये अंक,
लांछन को ले जैसे शशांक नभ में अशंक,
हत मन्त्रपूत शर सम्वृत करतीं बार-बार,
निष्फल होते लक्ष्य पर क्षिप्र वार पर वार।
विचलित लख कपिदल क्रुद्ध, युद्ध को मैं ज्यों ज्यों,
झक-झक झलकती वह्नि वामा के दृग त्यों-त्यों,
पश्चात्, देखने लगीं मुझे बँध गये हस्त,
फिर खिंचा न धनु, मुक्त ज्यों बँधा मैं, हुआ त्रस्त!"

सन्दर्भ- विभीषण के प्रति राम के उत्तर का वर्णन कवि निराला करते हैं।

भावार्थ- राम संयत होकर अपने स्वाभाविक रूप से कहने लगे- मेरी समझ में यह ईश्वरीय नियम नहीं आया कि रावण अधर्म में लगा हुआ है, फिर भी महाशक्ति ने उसको अपना समझ

लिया है और उसके लिए मैं गैर (दूसरा) हो गया हूँ। यह युद्ध तो महाशक्ति का खेल हो गया है। हे शंकर! रक्षा करो! मैं सान पर चढ़ाए हुए उन तीक्ष्ण बाणों का बार-बार संधान करता हूँ, जिनके द्वारा सम्पूर्ण संसार को जीता जा सकता है, जो तेज के समूह हैं और जिनमें सृष्टि कि रक्षा का वर्चस्व निहित है, जिनमें उद्धार करनेवाली संस्कृति निहित है, जिनमें पूर्णतया शुद्ध ज्ञान है, जिनमें सूक्ष्म से सूक्ष्म मन विवेक है, जो छात्र धर्म का पूर्ण अभिषिक्त रूप धारण किये हुए है, जो प्रजापतियों के संयम द्वारा रक्षित है, वे ही बाण आज रण में शोभा से विहीन एवं टूक-टूक हो गए। मैंने स्वयं रण में देखा है कि महाशक्ति रावण को गोद में इस तरह लिए हुए थी कि जैसे आकाश स्थित चन्द्रमा निशंक होकर लांछन (कालिमा) को धारण किये हुए हैं। मन्त्रों से पवित्र किये हुए मेरे वाणों को वह बार-बार तोड़ रही थी। मैं बार-बार शीघ्रता से अपने लक्ष्य पर प्रहार करता था, किन्तु मेरे संधार बार-बार व्यर्थ हो जाते थे। मैं युद्ध में वानर समूह को विचलित देखकर क्रुद्ध होकर ज्यों-ज्यों युद्ध करता था त्यों-त्यों उस महाशक्ति कि आखों से अग्नि निकलती थी। इसके बाद वह मेरी ओर देखने लगी। मेरे हाथ बंध गए। मुझसे धनुष नहीं खींचा गया मैं मुक्त होते हुए भी बंध गया था। इस स्थिति के कारण मैं भयभीत हो गया।

▶ विभीषण के प्रति राम का उत्तर निरालाजी चमत्कारपूर्वक दिया

अलंकार-

1. विरोधाभास- रावण अधर्मरत.... अपर। मुक्त ज्यों बंध।
2. अनुप्रास- निकर निशित, शंकर-शक्ति शद शुद्धि, झकझक झलकती।
3. पुनरुक्तिप्रकाश- बार-बार।

विशेष-

1. बंगाल की संस्कृति का प्रभाव स्वष्टतः परिलक्षित है। बंगाल काली-पूजा का प्रभाव स्पष्ट है। निराला कि कवि हृदय ने सदैव शक्ति कि पूजा की।
2. महाशक्ति के अंक में अशंक रावण केलिए चन्द्रमा कि गोद में खेलनेवाले कालिमा के कलंक चिह्न का उपमान अत्यन्त सुन्दर और सटीक है।

(17) कह हुए भानुकुलभूष्ण वहाँ मौन क्षण भर,
बोले विश्वस्त कण्ठ से जाम्बवान-"रघुवर,
विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरुषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सकता त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!
तब तक लक्ष्मण हैं महावाहिनी के नायक,
मध्य भाग में अंगद, दक्षिण-श्वेत सहायक।
मैं, भल्ल सैन्य, हैं वाम पार्श्व में हनुमान,
नल, नील और छोटे कपिगण, उनके प्रधान।

सुग्रीव, विभीषण, अन्य यथुपति यथासमय
आयेंगे रक्षा हेतु जहाँ भी होगा भय।"

सन्दर्भ- जांबवान ने श्री रामचंद्र को शक्ति की पूजा करने की सम्मति देते हैं।

भावार्थ- ऐसा कहकर सूर्यवंश की शोभा श्रीराम क्षण-भर के लिए चुप हो गया। तब जाम्बवान विस्वास भरी वाणी में बोले- "हे रघुवर! मेरी समझ में ऐसा कोई कारण नहीं आता है जिससे आप विचलित हों, अर्थात् मेरी राय में तो आप अनावश्यक रूप में घबड़ा गए हैं। हे पुरुषसिंह! तुम भी इस शक्ति को धारण करो। उपासना का उत्तर दृढ़ उपासना से दो, अर्थात् रावण की भाँति उपासना करके आप भी महाशक्ति को अपने वश में कर लें। आप अपनी शक्ति को संयत करके शक्ति पर विजय प्राप्त करें। यदि रावण दुराचारी होकर भी महाशक्ति को अपने वश में करके आपको भयभीत कर सकता है तो, आपको महाशक्ति के द्वारा उसको नष्ट ही कर देंगे। आप महाशक्ति को नए सिरे से कल्पना कीजिए और उसकी पूजा कीजिए। हे रघुनन्दन! जब तक महाशक्ति को सिद्ध न कर लो, तब तक आप यद्ध से विरत हो जाइये- युद्ध करने न जाइये और तब तक लक्ष्मण ही इस विशाल सेना का सेनापति हो जाएँ, जो मध्य भाग में रहेंगे। श्वेत शरीरवाले अंगद दाहिने भाग में रहकर उनके सहायक होंगे। मैं भालुओं की सेना का संचालन करूंगा। बाएँ भाग में हनुमान होंगे। जहाँ भी भय का अवसर होगा (खटका होगा), वहीं नल, नील, छोटे-छोटे वानरों के समूह, उनके प्रधान सुग्रीव, विभीषण तथा अन्य सेनापति यथासमय रक्षा के लिए पहुँच जाएँगे।

▶ बंगाल में प्रचलित शक्ति की उपासना का वर्णन

अलंकार-

1. रूपक- पुरुषसिंह
2. अनुप्रास- प्राणों से प्राणों पर।

विशेष-

1. बंगाल में प्रचलित शक्ति की उपासना यहाँ स्पष्ट है।
2. भाषा भावानुकूल है। व्यास शैली के प्रयोग द्वारा भावों की कुशल अभिव्यक्ति हुई है।

(**18**) खिल गयी सभा। "उत्तम निश्चय यह, भल्लनाथ!"
कह दिया वृद्ध को मान राम ने झुका माथ।
हो गये ध्यान में लीन पुनः करते विचार,
देखते सकल-तन पुलकित होता बार-बार।

संदर्भ- जाम्बवान का प्रस्ताव सुनकर सब प्रसन्न हो जाते हैं।

▶ जाम्बवान के प्रस्ताव सुनकर सब लोग बहुत पुलकित हो गये

भावार्थ- जाम्बवान का प्रस्ताव सुनकर समस्त उपस्थित जनों के मुख प्रसन्नता से खिल उठे। राम ने बूढ़े जाम्बवान की बात मानते हुए मस्तक झुकाकर कह दिया, हे भालुओं के स्वामी! आपका निश्चय सुन्दर है। राम विचार करते हुए पुनः ध्यान-मग्न हो गये। जाम्बवान के प्रस्ताव का अनुमोदन हो जाने से सब लोग बार-बार पुलकायमान हो रहे थे।

अलंकार- पुनरुक्तिप्रकाश-बार-बार

विशेष-

1. रोमांचनुभाव का वर्णन है।

2. लक्षणा-खिल गयी सभा।

(19) कुछ समय अनन्तर इन्दीवर निन्दित लोचन
खुल गये, रहा निष्पलक भाव में मज्जित मन,
बोले आवेग रहित स्वर सें विश्वास स्थित
"मातः, दशभुजा, विश्वज्योति; मैं हूँ आश्रित;
हो विद्ध शक्ति से है खल महिषासुर मर्दित;
जनरंजन-चरण-कमल-तल, धन्य सिंह गर्जित!
यह, यह मेरा प्रतीक मातः समझा इंगित,
मैं सिंह, इसी भाव से करूँगा अभिनन्दित।"

संदर्भ- राम माता दुर्गा को संबोधित करते हुए शक्ति-साधना का अपना निर्णय सुनाते हैं।

भावार्थ- कुछ समय पश्चात् नीलकमल को लज्जित करनेवाले राम के नेत्र खुल गए, किन्तु उनका मन अब भी निर्निमेष रूप से भावों की गहराई में डूबा हुआ था। वह आवेग रहित(शान्त) तथा विश्वास-भरे स्वर में बोले, हे मातेश्वरी! तुम दशा भुजाएँ धारण करने वाली हो, तुम संसार को प्रकाश प्रदान करती हो, मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। तुम्हारी शक्ति से विंध कर महिषासुर नामक राक्षस चूर हो गया था। मनुष्यों को आनन्द देने वाले तुम्हारा चरणकमलों के नीचे गर्जन करने वाला सिंह धन्य है। है माता! मैं तुम्हारे संकेत समझ गया हूँ। यह सिंह ही मेरा प्रतीक है, अर्थात् मैं भी इस वीर सिंह की तरह आपके चरणों में बैठ कर आपकी आराधना करूँगा।

▶ दुर्गास्तुति का वर्णन राम के द्वारा निरालाजी करते हैं

अलंकार-

1. व्यतिरेक-इन्दीवर-निंदित-लोचन।
2. रूपक-चरण कमल।

विशेष-

दुर्गा-स्तुति की संस्कृत और हिन्दी साहित्य में एक दीर्घ-परम्परा रही है। निराला ने अनेक कविताओं-बसन्त श्री, आवाहन तथा तुलसीदास में- इस प्रकार के विराट चित्रों की अवधारणा की है।

(20) कुछ समय तक स्तब्ध हो रहे राम छवि में निमग्न,
फिर खोले पलक कमल ज्योतिर्दल ध्यान-लग्न।
हैं देख रहे मन्त्री, सेनापति, वीरासन
बैठे उमड़ते हुए, राघव का स्मित आनन।
बोले भावस्थ चन्द्रमुख निन्दित रामचन्द्र,
प्राणों में पावन कम्पन भर स्वर मेघमन्द्र,
"देखो, बन्धुवर, सामने स्थिर जो वह भूधर
शोभित शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुन्दर,
पार्वती कल्पना हैं इसकी मकरन्द विन्दु,

गरजता चरण प्रान्त पर सिंह वह, नहीं सिन्धु।
दशदिक समस्त हैं हस्त, और देखो ऊपर,
अम्बर में हुए दिगम्बर अर्चित शशि-शेखर,
लख महाभाव मंगल पदतल धँस रहा गर्व,
मानव के मन का असुर मन्द हो रहा खर्व।"

सन्दर्भ- राम अपने कल्पित दुर्गा के स्वरूप का वर्णन उपस्थित साथियों के सम्मुख करते हैं।

भावार्थ- राम कुछ समय तक दुर्गा की कल्पित मूर्ति की शोभा में निमग्न हुए अवाक् रहे। फिर उन्होंने प्रकाश से आपूरित कमल की पंखुड़ियों के समान एवं दुर्गा के ध्यान में लीन अपनी पलकें खोलीं। समस्त मन्त्री और सेनापति वीरासन से बैठे हुए व्याकुलतापूर्वक राम के मुस्कराहट से परिपूर्ण मुख को देख रहे थे। चन्द्रमुख को अपने मुख की शोभा से तिरस्कृत करने वाले राम भावातिरेक के कारण अपने प्राणों में सात्विक अनुभव- रोमंच का अनुभव करते हुए मेघ-सदृश मन्द स्वर में बोले- "हे बन्धुवर देखो! सामने जो पर्वत स्थित है, जो सैकड़ों हरे-भरे कुंजों से शोभित है, जो श्यामस और सुन्दर है, वह पार्वती का ही काल्पनिक रूप है। उन सघन नील कुंजों तथा झाड़ियों में से परागराशि निरन्तर स्रवित होती रहती है। उस पर्वत-रूपी पार्वती के चरण प्रान्त में जो क्रुद्ध समुद्र गर्जन करता है, वह वस्तुतः समुद्र न होकर देवी पार्वती के चरणों में बैठा हुआ सिंह ही है।"

▶ छायावादी सौंदर्य चेतना की अभिव्यक्ति का स्पष्ट चित्रण

दशों दिशाएँ ही दुर्गा के दश हाथ हैं; और ऊपर की ओर देखो! वहाँ आकाश में दिगम्बर वेशधारी मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाले पूजनीय शिव जी सुशोभित हैं। उनके मंगलकारी भाव को देखकर गर्व उनके चरणों के नीचे दवा जा रहा है। मानव के मन की आसुरी वृत्तियाँ रूपी राक्षस का नाश हो रहा है।

अलंकार-

1. रूपक- पलक कमल, मन का असुर।
2. प्रतीप- पलक कमल ज्योतिर्दल।
3. उपमा- दशा दिशि हस्त है।

विशेष-

1. महाशक्ति तथा शंकर के चित्रण की कल्पना सर्वथा मौलिक, विराट और उदात्त है। शंकर और पार्वती के रूपक को बाह्य प्रकृति में रूपान्तरित देखने का प्रयत्न सर्वथा मौलिक है।
2. 'छवि में निमग्न' द्वारा छायावादी सौन्दर्य चेतना की अभिव्यक्ति दृष्टव्य है। सूक्ष्म भावों का मूर्त विधान उल्लेखनीय है। सूक्ष्म भावों की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

(21) फिर मधुर दृष्टि से प्रिय कपि को खींचते हुए
बोले प्रियतर स्वर सें अन्तर सींचते हुए,
"चाहिए हमें एक सौ आठ, कपि, इन्दीवर,
कम से कम, अधिक और हों, अधिक और सुन्दर,
जाओ देवीदह, उषःकाल होते सत्वर
तोड़ो, लाओ वे कमल, लौटकर लड़ो समर।"

अवगत हो जाम्बवान से पथ, दूरत्व, स्थान,
प्रभुपद रज सिर धर चले हर्ष भर हनुमान।
राघव ने विदा किया सबको जानकर समय,
सब चले सदय राम की सोचते हुए विजय।

सन्दर्भ- राम हनुमान से दुर्गा-पूजन में सहायक होने के लिए कहते हैं।

भावार्थ- इसके उपरान्त राम अपनी मधुर दृष्टि से हनुमान को अपनी ओर आकर्षित करते हुए अत्यंत स्नेह-भरे स्वर से हनुमान के हृदय को आप्लावित करते हुए उनसे बोले हमें कम-से-कम एक-सौ आठ कमल-पुष्प चाहिए। यदि अधिक हो, तो और भी अधिकसुन्दर रहे। प्रातः काल होते ही तुम शीघ्रता-शीघ्र पूर्वक देवीदह नामक सरोवर की ओर जाओ और वहाँ से कमल-पुष्पों को तोड़कर लाओ, और लौटने पर विश्वासपूर्वक युद्ध करो।

▶ राम के आज्ञानसार हनुमान कमल-पुष्प केलिए देवीदह नामक स्थान की ओर जाते हैं

हनुमान ने उस दूर पर स्थित स्थान के मार्ग की जानकारी जाम्बवान से प्राप्त की और प्रभु राम के चरणों की धूलि सिर पर धारण करके हनुमान प्रसन्नता से भर कर चल दिए। विश्राम का समय जानकार राम ने सबको विदा किया और सब लोग मन में दयालू राम की विजय कामना करते हुए चले गए।

अलंकार- स्वाभावोक्ति- पूर्ण छंद।

विशेष-

1. भाषा का सरल एवं प्रवाहपूर्ण रूप दृष्टव्य है।
2. राम का हनुमान के प्रति विश्वास द्रष्टव्य है।
3. फल-प्राप्ति का नाटकीय पूर्वाभास कवि के वर्णन चातुर्य का द्योतक है।
4. "अधिक और हों अधिक और सुन्दर"- अधिकस्य अधिकम् फलम् अतिकोक्ति का सफल रूपान्तर है।

(**22**) निशि हुई विगतः नभ के ललाट पर प्रथम किरण
फूटी रघुनन्दन के दृग महिमा ज्योति हिरण।
हैं नहीं शरासन आज हस्त तूणीर स्कन्ध
वह नहीं सोहता निविड़-जटा-दृढ़-मुकुट-बन्ध,
सुन पड़ता सिंहनाद,-रण कोलाहल अपार,
उमड़ता नहीं मन, स्तब्ध सुधी हैं ध्यान धार,
पूजोपरान्त जपते दुर्गा, दशभुजा नाम,
मन करते हुए मनन नामों के गुणग्राम,
बीता वह दिवस, हुआ मन स्थिर इष्ट के चरण
गहन-से-गहनतर होने लगा समाराधन।

▶ छायावादी प्रतीकात्मक चित्रण

सन्दर्भ- हनुमान कम-से-कम एक सौ आठ कमल लेने के लिए देवीदह जा चुके हैं और समस्त सेनापतियों को विजय का विश्वास हो गया है। कवि निराला बताते हैं कि रात्रिकालीन अवसाद समाप्त हो रहा था तथा प्रभात-कालीन विश्वास का आगमन हो रहा है।

भावार्थ- रात्रि समाप्त हुई और आकाश के ललाट पर सूर्य की प्रथम किरण चमकने लगी, अर्थात् उषाकाल हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो राम के नेत्रों में से उनकी महिमा रूपी सुनहरी किरण निकल कर चारों ओर विकीर्ण हो रही थी। आज राम के हाथ में धनुष और कन्धे पर तरकश नहीं है। और न आज उनके सिर पर जटाओं का कसकर बाँधा हुआ मुकुट ही शोभा दे रहा है। अपने चारों ओर युद्ध के सिंह गर्जन सदृश्य कोलाहल को सुनकर उनका मन उत्साहित होता है। ज्ञानी राम महाशक्ति के ध्यान में निश्चल होकर पूर्णतः निमग्न हैं। वे पूजा के बाद दस भुजाओं वाली दुर्गा के नाम का जप कर रहे हैं और मन-ही-मन उसके असंख्य गुणों का मनन कर रहे हैं। इस प्रकार वह दिन व्यतीत हो गया। राम का मन अपनी इष्ट देवी के चरणों में एकाग्र हो गया था। उनकी आराधना क्रमशः अधिकाधिक गम्भीर होती जा रही थी।

▶ राम का मन अपनी इष्ट देवी के चारणों में एकत्र हो गया था

अलंकार-

1. मानवीकरण- नाद का ललाट।
2. रूपक- महिमा रूपों में होने से।

विशेष-

1. निशि हुई विगत-प्रतीकात्मक शैली के द्वारा मानव-भावना सापेक्ष प्रकृति का वर्णन है।
2. छायावादी प्रतीकात्मक शैली है। उषा काल आशा का प्रतीक है। नभ ललाट पर किरण का चमकना नव आशा का संकेत करता है।
3. बिम्ब तथा चित्रमयी शैली का प्रयोग।
4. इन पंक्तियों में चिन्तन, मनन, नाम-स्मरण आदि नवधा भक्ति की कोटियों की ओर अच्छा संकेत है।

(**23**) क्रम-क्रम से हुए पार राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र मन बढ़ता गया ऊर्ध्व निरलस,
कर-जप पूरा कर एक चढाते इन्दीवर,
निज पुरश्चरण इस भाँति रहे हैं पूरा कर।
चढ़ षष्ठ दिवस आज्ञा पर हुआ समाहित-मन,
प्रतिजप से खिंच-खिंच होने लगा महाकर्षण,
संचित त्रिकुटी पर ध्यान द्विदल देवी-पद पर,
जप के स्वर लगा काँपने थर-थर-थर अम्बर।
दो दिन निःस्पन्द एक आसन पर रहे राम,
अर्पित करते इन्दीवर जपते हुए नाम।
आठवाँ दिवस मन ध्यान-युक्त चढ़ता ऊपर
कर गया अतिक्रम ब्रह्मा-हरि-शंकर का स्तर,
हो गया विजित ब्रह्माण्ड पूर्ण, देवता स्तब्ध,
हो गये दग्ध जीवन के तप के समारब्ध।
रह गया एक इन्दीवर, मन देखता पार
प्रायः करने हुआ दुर्ग जो सहस्रार,

द्विप्रहर, रात्रि, साकार हुई दुर्गा छिपकर
हँस उठा ले गई पूजा का प्रिय इन्दीवर।

सन्दर्भ- राम दुर्गा की आराधना में लीन हैं। कवि निराला योग-साधना की भाषा में राम की साधना का वर्णन करते हैं।

भावार्थ- इस प्रकार दुर्गा का आराधना करते हुए एक-एक करके पाँच दिन हो गए। उनका मन पूरी तत्परता के साथ एक के बाद दूसरे चक रूपी सोपान पर चढ़ते हुए ऊपर की ओर बढ़ता गया, अर्थात् उनका मन क्रमशः अधिकाधिक उदात्त होता गया। वह एक माला पूरी करके कमल का एक फूल चढ़ाते थे। इस प्रकार वह अपना स्तोत्र पाठ पूरा करते जाते थे। छठे दिन उनका मन आज्ञा चक्र पर जाकर स्थिर हो गया। जैसे-जैसे जप चल रहा था, वैसे-वैसे उनके भीतर एक प्रकार की आकर्षण शक्ति विकसित होती जा रही थी। उनका ध्यान भौंहों के बीच में त्रिकुटी नामक स्थान पर आकर केन्द्रित हो गया। दो पखारियों के सदृश उनका सुन्दर नेत्र देवी के चरण युगल पर लगे हुए थे। राम के मुख से निकलने वाले जय के स्वर के साथ आकाश थर-थर कांपने लगा था। राम बिना हिले-डुले दो दिन तक एक ही आसन से बैठे रहे और दुर्गा के नाम का जप करते हुए, कमल-पुष्प चढ़ाते रहे। आठवें दिन उनका ध्यान ऊपर की ओर बढ़कर ब्रह्मा विष्णु और महेश के चेतना-स्तरों को भी पार कर गया। इस प्रकार राम के मन ने सम्पूर्ण ब्राह्माण्ड पर विजय प्राप्त कर ली थी। राम की कठोर तपस्या को देखकर समस्त देवता आश्चर्य-चकित हो गए। इस तपस्या के द्वारा राम ने जो तप किया था, उससे उनके समस्त संस्कार- कर्म के बन्धन-जल कर नष्ट हो गए, अर्थात् राम पूर्णतः जीवन-मुक्त हो गए।

▶ बंगाल में प्रचलित दुर्गा-पूजा की अनुष्ठानिक विधि का निरूपण

अन्त में चढ़ाने के लिए केवल एक कमल-पुष्प शेष रह गया। राम का मन साधना के अंतिम सोपान सहस्त्रार चक रूपी अवरोध को पार करने के लिए प्रस्तुत होकर इसे आगे बढ़ने के लिए उत्सुक था। रात्रि का दूसरा पहर था। रात्रि के इस अन्धकार में दुर्गा छिप कर वहाँ साक्षात रूप में प्रकट हुई और हँस कर पूजा के लिए रखा हुआ अन्तिम कमल-पुष्प उठा कर ले गई।

अलंकार-

1. यमक - कर-कर।
2. पुनरुक्तिप्रकाश - खिंच-खिंच थर थर-थर
3. सार - प्रति जप महाकर्षण
4. मानवीकरण - अम्बर का भय में कंपना
5. व्यतिरेक - अतिक्रम ब्रह्मा-हरि-शकर का स्तर
6. पदमैत्री - थर-थर...अम्बर।

विशेष-

1. ध्वन्यात्मक - थर-थर-थर।
2. बंगाल में प्रचलित दुर्गा-पूजा की अनुष्ठानिक विधि का निरूपण दृष्टव्य है। यह तान्त्रिक अनुष्ठान है। "रस ब्राह्मारंघ्र से अझर झरै" अथवा "आकासे मुख औंधा कूआ पाताले पनिहारि" आदि पंक्तियों में कबीर ने हठ-योग की इसी साधना का वर्णन किया है।
3. पुरश्चरण, त्रिकुटी, ब्रह्माण्ड, चक्र, सहस्त्रार आदि योगपरक पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग

के कारण 'अप्रतीत्व' दोष आ गया है।

4. हठयोग, तांत्रिक साधना तथा वैष्णव भक्ति का समन्वित रूप द्रष्टव्य है।
5. दुर्गा द्वारा कमल का चुरा ले जाना बड़ा नाटकीय है। वास्तव में फूल को चुराने में राम की निष्ठा की परीक्षा का भाव निहित है।

(**24**) यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल।
देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गये नयनद्वय,
"धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युतगति हतचेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन।
'कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन।
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"

संदर्भ- साधना की समाप्ति के समय दुर्गा राम की पूजा का कमल चुरा कर ले जाती है। राम अपनी आँख चढ़ाकर अनुष्ठान पूरा करना चाहते हैं।

भावार्थ- यह जाब का अन्तिम भाग है- यह सोचकर राम ने दुर्गा के दोनों चरणों में ध्यान लगाया और नीला कमल लेने के लिए हाथ बढ़ाया। लेकिन उनके हाथ कुछ न लगा। राम का स्थिर मन यकायक चलायमान हो गया। उनका ध्यान भंग हो गया उन्होंने अपनी निर्मल पलकें खोलीं और देखा कि कमल वाला स्थान खाली पड़ा था। सोच कर कि यह जप के पूर्ण होने का समय है और आसन छोड़ने से साधना भंग हो जायगी, राम के दोनों नेत्रों में आँसू भर आये। वे अपने आपसे कहने लगे, मेरे जीवन को धिक्कार है जिसे सदैव विरोधों का सामना करते रहना पड़ा है और उन सिद्धि के साधनों को धिक्कार है जिनकी खोज में मैं सदैव प्रयत्नशील रहा हूँ। हे जानकी! मुझे धिक्कार है कि मैं तुझ जैसी अपनी प्रिया को रावण के बन्धन से मुक्त नहीं कर सका।

▶ साधना की समाप्ति के समय दुर्गा रामकी पूजा कमल चुराकर ले जाती है तो राम अपनी आँख चढ़ाकर पूजा पूरा करना चाहते है

कवि कहता है कि निराश होने वाला मन ऊपरी मन का मानस था। उनका एक अन्य मन बुद्धि मानस भी था, जो हतोत्साहित नहीं था। संश्लेषात्मक मन न तो पुरुषार्थहीनता जानता था और न पराजय को स्वीकार करना जानता था। वह मन माया के समस्त आवरणों को पार

करके जय-पराजय, सुख-दुःख आदि के विभेदों पर विजय प्राप्त कर चूका था। वह शुद्ध बुद्धि के स्तर को प्राप्त कर चूका था। उनकी निष्क्रिय चेतना को बुद्धि ने झकझोर कर जगा दिया। मेघों में यकायक कौंध जाने वाली बिजली की तरह उन्हें एक दम एक उपाय सूझ गया। उस विवेक बुद्धि के जाग्रत होते ही उनका मन स्वस्थ और प्रसन्न हो गया। राम विवेक धीमे गम्भीर स्वर से कह उठे, आ गई समझ में तरकीब। संकट से उद्धार का उपाय यह है। मेरी माता मुझे सदैव कमल जैसी आँखों वाला कहा करती थीं। मेरे पास अभी तो ये दो नील कमल पुष्प शेष हैं। हे माता! अपना एक नेत्र अर्पित करके मैं अभी इस स्त्रोत के अधिष्ठान को पूरा करता हूँ।

▶ वेदान्त दर्शन तथा राजयोग साधना का सुन्दर समन्वय किया है

अलंकार-

1. भेदकातिशयोक्ति- एक और मन।
2. व्यतिरेक- जो—जय।
3. रूपक- बुद्धि के वर्ग, राजीवनयन।
4. उपमा- ज्यों मद्रित घन।
5. स्मरण- कहती थीं माता।

विशेष-

1. जो नहीं जानता दैन्य-विनय-अर्जुन विश्वचेतना स्वरूप कृष्ण के अनुगामी थे। उनका भी बुद्धि मनस जागरूक रहता था, अर्थात् उनकी चेतना विज्ञानमय कोष में अवस्थित रहती थी। उनका भी यही प्रण था-

    आयुर्रक्षित मर्माणि आयुर्अन्नम प्रयच्छति।

    आजुर्नस्य प्रतिज्ञ दवे न दैन्य न पलायनम।

2. वेदान्त दर्शन तथा राजयोग साधना का सुन्दर समन्वय है।

काम मनस का स्वभाव चंचलता है, क्योंकि वह विश्लेषणात्मक हैव् बुद्धि मानस संश्लेशानात्मक होने के कारण स्थिर स्वभाव वाला है। प्रायः प्रथम ही क्रियाशील रहता है द्वितीय के क्रियाशील हो जाने पर जीवन की ऋतू ही बदल जाती है। नयी आँखें मिलती है। एक नया संसार दिखाई देने लगता है, सब आत्मीय ही प्रतीत होने लगते हैं।

(**25**) "यह है उपाय", कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन-
कहकर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक,
ले लिया हस्त, लक-लक करता वह महाफलक।
ले अस्त्र वाम पर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गये सुमन
जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय-
"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम!"
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।

संदर्भ- राम दुर्गा पर अपना नेत्र चढाने को उद्यत होते हैं। दुर्गा प्रकट होकर उनका हाथ पकड़ लेती है। कवि निराला ने इन पंक्तियों में इसी भाव दृश्य का मार्मिक वर्णन किया है।

भावार्थ- [मैं अपनी आँख चढ़ाकर मन्त्र का जाप पूरा करता हूँ] यह कहकर राम ने अपने

अपने तरकस की ओर देखा। उसमें ब्रहम मन्त्रों से अभिषिक्त बाण झलक रहा था। राम ने ललकाता हुआ वह बड़े और तेज फल वाला बाण अपने हाथ में ले लिया। उन्होंने बाएं हाथ में वह अस्त्र पकड़ा और दाएँ हाथ में दायें आँख ली और और अपनी आँख को उस पुष्प के स्थान पर अर्पित करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक तैयार हो गए। जिस क्षण के द्वारा आँख को बेधने का पक्का इरादा राम ने किया, उसी समय समस्त ब्रह्माण्ड काँप उठा और देवी दुर्गा अविलम्ब प्रकट हो गई। देवी दुर्गा ने यह कहते हुए राम का हाथ पकड़ लिया कि- हे साधक वीर और धर्म को सर्वस्व माने वाले राम! राम धन्य हो। तुम पवित्र हो। तुम्हारा कल्याण हो।

▶ महाशक्ति के मातृ पक्ष का सटीक चित्रण हुआ

अलंकार -

1. स्वभावोक्ति - पूरा छंद।
2. रूपक - पद-पदम्
3. मीलित - महाशक्ति बदन में हुई लीन।
4. प्रतीप - विश्व की श्री लज्जित।

विशेष -

1. महाशक्ति के मातृ पक्ष का सटीक चित्रण है।
2. कथानक को सुखान्त रूप में परिघटित किया है।
3. दृष्टाव्य - इसका रचना काल सन् 1936।

अलंकार-

1. पूनरुक्तिप्राकाश - लक-लक
2. सभाँग फ़्द यमक - लक-लक
3. श्लेष - सुमन, महाफलक
4. अनुप्रास - साधु-साधु साधक
5. वीप्सा - साधु-साधु
6. स्वाभावोक्ति - पूरा छंद
7. उदात्त - दक्षिणालोचन

विशेष-

1. नाटकीय कौतूहल है तथा कथानक की चरमसीमा के दर्शन होते है। अनेक क्रियाएँ एक साथ जल्दी-जल्दी घटित होती है। इससे वर्णन में क्रियात्मकता आ गई है।
2. अन्तरबाहय घटनाओं का समन्वयक दृष्टाव्य है।
3. प्रतिक्रियाओं का रूपायन अत्यन्त स्वाभाविक है।
4. ब्रह्मशर के प्रसादन के लिए राम के दक्षिण नेत्र से अधिक सुन्दर उपर्युक्त और महान नैवेध्य और क्या हो सकता है।

(**26**) देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर-स्कन्ध पर, रहा दक्षिण हरि पर।
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित।
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बायें रणरंग राग,

मस्तक पर शंकर! पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वर वन्दन कर।
"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।"
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

सन्दर्भ- देवी दुर्गा राम को विजयी होने का आशीर्वाद देती है ।

भावार्थ- राम ने देखा कि सामने परम तेजस्विनी श्री दुर्गा उपस्थित थीं। उनका बायाँ पैर महिषासुर के कंधे पर सिंह के ऊपर टिका हुआ था। देवी का यह रूप अत्यन्त प्रकाशवान था। उनके दशों हाथ विविध प्रकार के आयुधों से सुसज्जित थे उनके मुख पर मंद मुस्कान थी। उनको देखकर समस्त विश्व की रूप लक्ष्मी लज्जित होती थी। उनकी सीधी ओर लक्ष्मी थीं और बायीं ओर सरस्वती विराजमान थीं। उनकी सीधी गोदी में गणेश थे और बाँयी ओर गोदी में उनके दूसरे पुत्र कार्तिकेय थे, जिनका व्यक्तित्व रण-कौशल से युक्त था। उनके मस्तक पर शंकर विराजमान थे। श्री राघव मन्द स्वर से वन्दना करते हुए वी दुर्गा के चरणों में श्रद्धापूर्वक झुक गए। हे नवीन पुरूषोत्तम श्री राम! तुम्हारी विजय होगी। तुम्हारी विजयी होगी, यह कह कर वह महाशक्ति राम के मुख-मण्डल में समा गई।

▶ देवी दुर्गा राम को विजयी होने का आर्शिवाद

अलंकार-

1. स्वभावोक्ति - पूरा छंद।
2. रूपक - पद-पदम्
3. मीलित - महाशक्ति बदन में हुई लीन।
4. प्रतीप - विश्व की श्री लज्जित।

विशेष-

1. महाशक्ति के मातृ पक्ष का सटीक चित्रण है।
2. कथानक को सुखान्त रूप में परिघटित किया है।
3. दृष्टाव्य - इसका रचना काल सन् 1936।

3.2.2 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की सामाजिक दृष्टि-हिन्दी साहित्य में छायावादयुग को दूसरा 'स्वर्णकाल' के नाम से भी जाना जाता है। छायावादी युग के चार प्रमुख कवियों में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जो कि छायावाद के चार स्तम्भों में से एक प्रमुख कवि माने जाते हैं। इन्होंने अपनी कविताओं में रहस्यवाद, परम्परावादी व स्वच्छंदता, यथार्थवाद एवं प्रगतिवाद आदि पर विभिन्न प्रकार से अपनी लेखनी को सुशोभित किया है। इनकी साहित्यिक प्रतिभा बहुमुखी थी। इन्होंने विभिन्न साहित्य-रूपों में उत्कृष्ट रचनाएँ प्रदान की हैं। काव्य, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, आलोचना आदि विविध क्षेत्रों में इनकी लेखनी गतिशील रही। इनको सर्वाधिक प्रसिद्धि कविताओं से प्राप्त हुई। इनका जन्म बसंत पंचमी को 21 फरवरी 1899 को मेदिनीपुर (पश्चिम बंगाल) में हुआ। इनके बचपन का नाम सूर्यकुमार था। पंडित रामसहाय तिवारी जो महिषादल में सिपाही की नौकरी किया करते थे। इनकी आयु जब तीन वर्ष की हुई तब इनकी माँ का देहांत हो गया। महायुद्ध के समय महामारी अत्यंत रूप से

चारों ओर फैली हुई थी। उसमें पहले इनकी पत्नी (मनोहरा) की, फिर एक-एक करके चाचा, भाई, भाभी की मृत्यु हो गई। इनका जीवन अत्यंत उथल-पुथल एवं संघर्षों का जीवन रहा है। इनका व्यक्तिगत संघर्ष इनके युग संघर्ष का अंग रहा है। अंततः इस महान कवि का देहांत 25 अक्टूबर 1961 को इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) में हुआ। "निराला ने अपनी स्वतंत्र काव्यदृष्टि से भारतीय मानसिकता की गहरी जड़ों कोसमझकर युग-जीवन की विभिन्न समस्याओं को अपनी लम्बी कविताओं में संकेतित और ध्वनित किया है।"

- निराला का व्यक्तिगत संघर्ष इनके युग संघर्ष का अंग रहा है
- जिस समाज में कवि रहते थे उस समाज के वास्तविक जीवन का चित्रण अपनी विभिन्न कविताओं बखूबी किया है

कवि व्यक्ति-सत्य के आधार पर सामंती रूढ़ियों के प्रति विद्रोह करते हैं और साथ ही सामाजिक व्यंग्य के स्वर को भी उभारते हैं। इनकी व्यक्तिमूलक, विद्रोहात्मक और द्वंद्वग्रस्त जीवन दृष्टि, इनकी सौंदर्यपरक कविताओं, करुणात्मक रचनाओं तथा रहस्यात्मक अनुभूतियां काव्य के मूल में हैं। जिस समाज में वो रहते थे उस समाज के वास्तविक जीवन का चित्रण अपनी विभिन्न कविताओं बखूबी किया है। अपनी कविताओं में समाज का वास्तविक दर्पण झलकाया है। समाज में हो रहे अत्याचार, शोषक का शोषित के प्रति दृष्टिकोण एवं विसंगतियों को अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के लोगों को अवगत कराया है।

"निराला की अपनी साहित्य चिंता बिल्कुल दूसरे स्तर और धरातल की वस्तु थी। रूप को भेदकर सत्य को देखने की आदि उनकी दृष्टि इस बदसूरती के बावजूद उसके भीतर जीवित जन की आत्मा का सौंदर्य परखने से नहीं चूक सकती थी।"

- 'विधवा', 'भिक्षुक', 'दीन', 'वहतोड़तीपत्थर', 'कुकुरमुत्ता', 'सरोज-स्मृति', 'रामकीशक्तिपूजा', 'रानी और कानी' एवं 'डिप्टी साहब आए' इन सभी रचनाओं में सामाजिक संदर्भों में उभरे नए यथार्थ की समस्याओं को नई दृष्टि से चित्रण किया गया है

'विधवा', 'भिक्षुक', 'दीन', 'वह तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता', 'सरोज-स्मृति', 'राम की शक्तिपूजा', 'रानी और कानी' एवं 'डिप्टी साहब आए' इन सभी रचनाओं में सामाजिक संदर्भों में उभरे नए यथार्थ की समस्याओं को नई दृष्टि से चित्रण किया गया है जिसमें गतानुगत सामाजिक मान्यताओं के परिवर्तन की प्रक्रिया स्पष्ट हो उठती है।

'परिमल' काव्य में विधवा, भिक्षुक, दीन जैसी कविताओं में सामाजिक यथार्थ को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। भारतीय हिन्दू समाज ने यहाँ की विधवाओं के साथ जो अत्याचार किया है वह किसी से छिपा नहीं है। भारतीय विधवाएँ ही हैं जो अपनी समस्त आकांक्षाओं को अपने में समेट सिसकी भरती हुई अपने शरीर को अतृप्ति की अग्नि में झोंक देती हैं-

"वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी
वह दीप-शिखा-सी शांतभाव में लीन
वह क्रूर काल-तांडव की स्मृति-रेखा सी
वह टूटे तरु की छूटी लता-सी दीन
दलित भारत की ही विधवा है...।"

- 'परिमल'काव्य में विधवा, भिक्षुक, दीन जैसी कविताओं में सामाजिक यथार्थ को हमारे सामने प्रस्तुत किया है

यहाँ विरोध न केवल अनिष्ट यथार्थ और इष्ट देव के मंदिर की पूजा का है बल्कि एक जीवित स्त्री का अनुपस्थित इष्ट देवता के मंदिर में पूजा की तरह समर्पित होना पवित्र, उज्ज्वल किन्तु निरर्थक होने की अभिव्यक्ति है।

निराला ने अपने आसपास के जगत् को खुली आँखों से देखा इनकी 'भिक्षुक' कविता वर्तमान स्थिति के लिए जिम्मेदार व्यवस्था के प्रति एक गहरा सक्रिय आक्रोश व्यक्त करती है-

"वह आता

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलाकर है एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठीभर दाने को-भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता
दो टूक कलेजे...।"

'दीन' नाम की कविता निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। वह निम्न वर्ग का व्यक्ति मूक भाव से अनेक कष्टों को झेलते हुए सब कुछ सह जाता है-

"सह जाते हो
उत्पीड़न की क्रीड़ा सदा निरंकुश नग्न,
हृदय तुम्हारा दुर्बल होता भग्न,
अंतिम आशा के कानों में
स्पंदित हम सबसे प्राणों में
अपने उर की तप्त व्यथाएँ
क्षीण कंठ की करुण कथाएँ
कह जाते हो...।"

कवि ने अनामिका काव्य में 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में सामाजिक विसंगतियों पर जमकर प्रहार किया। सामाजिक शोषण का पर्दाफाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इसमें सामान्य श्रमशील जनता का प्रतीक महिला के माध्यम से समाज की यथार्थ स्थिति को सामने रख दिया है-

"कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन भरा बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत-मन,
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु-मलिका अट्टालिका, प्राकार...।"

- निराला की कविताओं में समाज में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों और कष्टों से जूझ रहे लोगों का चित्र देखने को मिलता है

वह बार-बार प्रहार की चोट सिर्फ पत्थर पर ही नहीं करती, तरु-मलिका अट्टालिका पर भी करती है। पूरी कविता में मूक मजदूरनी का कंठ अंत में 'वह तोड़ती पत्थर' सारी विषमताओं कटुताओं के बावज़ूद कर्म की निरन्तरता जीवन के यथार्थता को उभारता है।

'कुकुरमुत्ता' कविता में उच्च वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग के साथ जो अमानवीय व्यवहार किया जाता है। इस कविता के माध्यम से साम्यवादी सिद्धांतों पर घातक प्रहार किया गया है। निम्न वर्ग की बस्ती का यथार्थवादी चित्र उपस्थित करते हुए गोली और बहार की कथा बताई

गई है। गोली बाग़ की मालिन की लड़की थी और बहार नवाब की नवाबज़ादी। दोनों में साहचर्य-जन्य प्रेम उत्पन्न हो गया था-

“साथ-साथ ही रहती दोनों,
अपनी-अपनी कहती दोनों
दोनों के थे दिल मिले,
आँखों के तारे खिले...।”

साम्यवादी विचारधारा के अनुसार दो विरोधी वर्ग में पैदा होकर इनकी मैत्री की सम्भावना नहीं हो सकती किन्तु मानवता के अनुसार मनुष्य-मनुष्य का हृदय सामीप्य और एक दूसरे के प्रति बराबरी का व्यवहार करना चाहता है चाहे वह किसी भी वर्ग में पैदा क्यों न हो। कुकुरमुत्ता निराला के सामाजिक यथार्थ का वह केंद्र बिंदु है जिसमे तत्कालीन वर्गीय दृष्टियाँ अपने सही रूप का इज़हार करती हैं।

- कुकुरमत्ता निराला के सामाजिक यथार्थ का वह केंद्र बिंदु है

‘सरोज-स्मृति’ इनकी महत्वपूर्ण कविता है। यह कविता दुखों के पहाड़ के विस्फोट में क्षत-विक्षत निराला की आत्मकरुणा का चित्र है जिसके रंगों को गहराई देने का काम अनेकानेक विषम सामाजिक सन्दर्भों ने किया है। “निराला ने आत्मकरुण कथा को सार्वजानिक व्यथा-कथा बना दिया जो व्यक्तिगत संवेदन को सामाजिक संवेदन से जोड़ने की निराला की अद्भुत क्षमता का परिचय देती है।” उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति में एक सरोज की ही नहीं अपितु हज़ारों लाखों सरोजों की कहानी कही है। जिनके अभाववश उनकी चिकित्सा का थोड़ा सा भी प्रबंध नहीं करा पाते वे अपने जीवन की असहाय एवं निरर्थकता पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं-

“धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका!
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय
लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर...।”

- ‘सरोज-स्मृति’ में विभिन्न समाजिक दुविधाएँ विद्यमान है

‘राम की शक्ति पूजा’ राम और रावण की कथा के बहाने जहां एक और आधुनिक जीवन और समाज में व्याप्त द्वंद्व एवं अंतर्विरोधों को गहराई और व्यापकता के साथ चित्रित करती है। “असहाय, थके हुए, निराश और संशयग्रस्त राम के जो भी चित्र हम कविता में देखते हैं उनमें निराला की ही प्रतिछाया दिखाई देती है। अन्याय और विरोधों से जूझते हुए निराला न जाने कितनी ही बार आहत हुए।” इसलिए कविता पढ़ते-पढ़ते कभी राम के रूप में स्वयं निराला हमारे सामने उपस्थित हो जाते हैं-

“धिक् जीवन को जो पाता ही आया है विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।”

‘नए पत्ते’ काव्य की पहली रचना ‘रानी और कानी’ कुरूपता यथार्थ की विषमता के चित्रण की वजह से कविता के स्तर पर बहुत विश्वसनीय लगती है। यह कविता हमारी संवेदनाओं को झकझोरने वाली है-

"माँ उसको कहती है रानी
आदर से, जैसा है नाम,
लेकिन उसका उल्टा रूप,
चेचक के दाग, काली, नक-चिप्टी
गंजा सर, एक आंख कानी...।"

अपनी एक आँख कानी, चेचक के दाग वाली कन्या को आदर से रानी कहना यथार्थ को देखकर भी अनदेखा करती माँ की ममता का सूचक है। पड़ोस की औरत के ताने से विचलित माँ अपनी 'कानी रानी' के ब्याह न होने की बात सुन मन मसोस कर रह जाती है।कुरूप रानी की पीड़ा और शारीरिक कमी दोनों ही सजीव हो उठती है। इससे उसकी जो प्रतिक्रिया होती है वह यहाँ व्यक्त होती है।

"सुनकर कानी का दिल हिल गया,
कांपे कुल अंग
दाई आँख से
आंसू भी बह चले माँ के दुःख से...।"

उस समय समाज के जमींदारों के द्वारा निम्नवर्ग का शोषण किया जाता था। कवि ने उस सामाजिक यथार्थ को अपनी कविताओं के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया है और उन पर व्यंग्य भर्त्सना की है। जमींदारों के हथकंडे और भी निराले होते हैं। लगान लेकर किसी दूसरी वस्तु का प्रतिशोध लेने के लिए दावा कर देना, नज़राना लेना साधारण बात थी। वे अनेक प्रकार के हथकंडे भी काम में लाते थे, इसलिए कवि ने यहाँ तक लिख दिया है-

"जमींदार की बनी,
महाजन धनी हुए हैं
जग के मूर्ति पिशाच
धूर्त गण गनी हुए हैं...।'

▶ निराला ने अपनी रचनाओं में वर्ग-चरित्र को उभारने के साथ वर्ग-संघर्ष का भी आभास देते हुए समाज की वास्तविक स्थिति को दर्शाया है

"डिप्टी साहब आए कविता में डिप्टी, जमींदार, दारोगा मिलकर शोषण करने वाले हैं। ये लोग गांव के किसानों से छल एवं झूठे गवाहों से किसानों के बाग़-खेत जमींदार के पक्ष में ले लेते हैं।" इस कविता में निराला ने वर्ग-चरित्र को उभारते हुए एवं वर्ग-संघर्ष का भी आभास देते हुए समाज की वास्तविक स्थिति को दर्शाया है।

कवि का प्रमुख ध्येय यही होता है कि अपनी रचनाओं के माध्यम से सभी को समाज की वास्तविक स्थिति से अवगत करवाएं। कवि ने समाज में हो रही जातिगत संकीर्णता, ऊंच-नीच का भेद-भाव, निम्नवर्ग की अक्षमता, ज़मींदारों के अत्याचार, महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण आदि सभी गंभीर सामाजिक मुद्दों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। कवि ने अपनी आँखों से जो देखा, अनुभव किया, साथ ही स्वयं भी जिन परिस्थितियों से गुजरे उन्हें हमारे समक्ष प्रदर्शित किया है। विधवा, भिक्षुक, दीन, वह तोड़ती पत्थर, कुकुरमुत्ता सरोज-स्मृति, रानी और कानी सभी में किसी न किसी समस्या से जूझ रहे उन निम्न-वर्ग के लोगों का चित्रण किया है। सभ्य समझा जानेवाला आज का ये समाज अपने ही निम्न-वर्ग के साथ अनुचित व्यवहार

> ▶ विधवा, भिक्षुक, दीन, वह तोड़ती पत्थर, कुकुरमुत्ता सरोज-स्मृति, रानी और कानी सभी में किसी न किसी समस्या से जूझ रहे उन निम्न-वर्ग के लोगों का चित्रण किया है

करता है तथा आज भी निम्न-वर्ग को उपेक्षित व्यवहार का सामना करना पड़ता है। आज भी कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में उच्च-वर्ग द्वारा निम्न-वर्ग को प्रताड़ित किया जाता रहा है। अतः आज हमें इन सभी से ऊपर उठकर सभी के साथ समान व्यवहार एवं सही दृष्टि कोण अपनाने की ज़रूरत है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की सांस्कृतिक दृष्टि- भारत की सास्कृतिक धारा ने सदैव जागरण में महती भूमिका निभायी है। पूरब से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक सुन्दर वनांचलों और तटीय क्षेत्रों में रहने वाले देशवासियों को एकता की डोर में पिरोने का काम संस्कृति ने किया है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला भारतमाता के अमर सपूत हैं। माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्याः का स्वर उनकी कविता भावना का आधार है। 'जननी-जन्मभूमि' के प्रति उनके मन में अपार श्रद्धा का भाव विद्यमान है। वे अपनी माटी से अत्यधिक प्रेम करते हैं। भारत की पराधीनता उन्हे असहनीय है। वे 'स्वतंत्र रव' का गुंजार करके भारतीय स्वतंत्रता का मन्त्र फूँकते हैं, इसके लिए वह एक बार पुनः भारत के सांस्कृतिक जागरण का आह्वान करते हैं, भारत का झंड़ा उठाकर आगे बढ़ते हैं। इसके लिए वे आत्मविस्मृत, पराभूत, पराजित भारती पुत्रों को जाग्रत करते हैं, उन्हें ललकारते हैं। स्वर्णभूमि तथा स्वर्णभूमि भारत के गत गौरव तथा वैभवशाली अतीत का स्मरण कराने से भी नहीं चूँकते हैं। अपनी पहली कविता जन्मभूमि में ही निराला जन्मभूमि की वन्दना करते हुए विह्वल भाव से कह उठते हैं-

"बन्दूण मैं अमल कमल-
चिरसेवित चरण युगल-
शोभामय शांतिनिलय पापा ताप हारी,
मुक्त बंध, घनानन्द, मुदमंगलकारी।।
बधिर विश्व चकित भीत सुन भैरव वाणी।
जन्मभूमि मेरी है जगन्महारानी।।"

> ▶ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला भारतमाता के अमर सपूत हैं। माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्याः का स्वर उनकी कविता भावना का आधार है

कवि हृदय निराला में भारत माता के प्रति यह अपार प्रेम, भक्ति से पूरित है। निराला को यह ज्ञात है कि जब तक राष्ट्रवन्दन के माध्यम से राष्ट्र जागरण नहीं होगा, तब तक राष्ट्रमुक्ति संभव नहीं है।

निराला अपनी दिल्ली कविता में प्राचीन भारत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता, भीष्म, भीम, अर्जुन आदि की कीर्ति तथा वीरता की ओर देशवासियों का ध्यान खींचते हैं। इस कविता में कवि ने भारत के धन-धान्य सम्पन्नता की चर्चा की है और यह बताया है कि इसकी समृद्धि के कारण ही विदेशी आततायियों ने इस पर आक्रमण किया-

"क्या यह वही देश है-
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र,
चिरकुमार भीष्म की पताका, ब्राह्मचार्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमण्डल में
उज्जवल, अधीर और चीरनवीन?

श्रीमुख से कृष्ण के सुना था जहाँ भारत ने
गीता-गीत सिहंनाद
मर्मवाणी जीवन-संग्राम की
सार्थक समन्वय ज्ञान-कर्म-शक्ति योग का?"

> निराला अपनी दिल्ली कविता में प्राचीन भारत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता, भीष्म, भीम, अर्जुन आदि की कीर्ति तथा वीरता की ओर देशवासियों का ध्यान खींचते हैं

निराला भारत की कल्पना एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में की है। वे राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना भारतीय को ललकारते हुए कहते हैं, देश के वीर शेरों चुप क्यों हो, डर क्यों रहे हो, डरने का कोई कारण नहीं है, तुम सिंह हो, तुम्हारे घर में चोर दरवाजे से अँग्रेज़ सियार चोरी से छुपकर घुस आया है। शासक बन गया है, तुम्हें उससे डरना नहीं है, तुम अमृत पुत्र हो, तुम्हारे अन्दर भय- नहीं होना चाहिए तुम महान हो-

"वीर-जन-मोहन अति
दर्जन संग्रम-राग,
फाग का खेला रण,
बारहों महीनों में
शेरों की माँद में
आय- है आद स्यार
जागो फिर एक बार।
महामन्त्र- ऋषिय- का
अजुओं- परमाणुओं में फूँका हुआ
तुम हो महान तुम सदा हो महान।"

> निराला भारत की कल्पना एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में की है

सांस्कृतिक जागरण की भेरी यहीं नहीं रुकती है। निराला निरंन्तर पल भर विश्राम किए बिना आगे बढ़ते जाते हैं। हर गलि, कुचों, गाँवों, नगरों महानगरों में जागे और अनजागे हुए सभी के कानों में स्वतंत्रता का मंत्र फूँकते हैं। इसके लिए प्रचीन ध्वंसावशेषों, महापुरुषों की स्मृतियों, स्थानों की ओर ध्यान दिलाना भी नहीं भूलते हैं। उनकी 'खण्डहर' शीर्षक कविता इस दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। 'खण्डहर' प्राचीन गौरव का प्रतीक है। सका संवाहक है। भारत उस ज्ञान सम्पदा का जनक है, जहाँ जैमिनी-पतंजली और व्यास जैसे ऋषि पैदा हुए। यह इस परम्परा का वाहक है, जहाँ राम-कृष्ण, भीम-अर्जुन तथा भीष्म से वीर-त्यागी महापुरुष उत्पन्न हुए-

"किंवा, हे यशोराशि!
कहते हो आँसु बहाते हुए-
आर्त भारत! जनक हूँ मैं
जैमिनि-पतंजलि- व्यास-ऋषियों का,
मेरी ही गोद पर शैशव- विनोद कर
तेरा है बढ़ाया मान
राम-कृष्ण भीमार्जुन-भीष्म नरदेवों ने।"

> ▶ निराला निरंतर पल भर विश्राम किए बिना आगे बढ़ते जाते हैं। हर गलि, गाँवों, नगरों महानगरों में जागे और अनजागे हुए सभी के कानों में स्वतंत्रता का मंत्र फूँकते हैं

निराला का राष्ट्रीय-सांस्कृतिक जागरण देशकाल से सम्बद्ध है। इसका संबंध पराधीन भारत से है, जो किसी काल-खण्ड में विश्व-गुरु था। जो ज्ञान में, धन में, त्याग में तथा सम्पन्नता में विश्व का नेतृत्व करता था, विश्वबन्धुता और मानुष प्रेम का मन्त्र सारे विश्व को सिखाया था।

तुलसीदास कविता में निराला का सांस्कृतिक चिन्तन पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है। यहाँ कवि का जीवन संघर्ष अधिक सघन हो उठता है। वे सोचते हैं कि देशवासियों के मन में जब तक सांस्कृतिक श्रेष्ठता, जातीय गौरव, पूर्वजों के त्याग, बलिदान और शक्ति सम्पन्नता का भाव-बोध नहीं जगाया जायेगा तब तक स्वाधीनता सम्भव नहीं है-

"करना होगा यह तिमिर पार
देखना सत्य का मिहिर-द्वार
बहना जीवन के प्रखर ज्वार में निश्चय
लड़ना विरोध के द्वन्द-समर,
रह सत्य मार्ग पर स्थित निर्भर
जाना भिन्न भी देह, निज घर निःसंशय।"

> ▶ तुलसीदास कविता में निराला का सांस्कृतिक चिन्तन पराकाष्ठा पर पहूँच जाता है। यहाँ कवि का जीवन संघर्ष अधिक सघन हो उठता है

यहाँ तुलसीदास के अन्तरतम में देशभाव जाग्रत करने में रत्नावली का योगदान विशेष चित्रित है। वह जोगिनी के रूप में कवि का मार्गदर्शन कराती है।

> ▶ निराला की सांस्कृतिक भाव-धारा राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत है। मानवता, प्रेम तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए वे सतत संघर्ष करते हैं

निराला की सांस्कृतिक भाव-धारा राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत है। मानवता, प्रेम तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए वे सतत संघर्ष करते हैं। सांस्कृतिक जागरण, राष्ट्र जागरण के लिए किया गया प्रयत्न है। राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने के लिए उन्होंने देश के स्वर्णिम अतीत, समन्वित संस्कृति तथा अतीत वैभव का गान किया।

3.2.3 निराला की प्रगति चेतना

> ▶ युग-चेतना से प्रेरित कवि निराला ने रूढ़िवाद का खण्डन, ब्रिटिश शासन की दमन नीतियाँ, अछूत प्रथा, जातिवाद एवं सांप्रदायिकता, नारी विमोचन, आर्थिक असन्तुलन एवं शोषण से प्रेरित मज़दूर आन्दोलन एवं किसान आन्दोलन, नव साहित्यन्दोलन आदि प्रगतिशील तत्वों को अपनी कविताओं में विशेष महत्व दिया

काव्य-प्रयोजन संबंधी व्यक्त धारणाओं को सामने रखकर निराला ने अपनी प्रगतिशील कविताओं का प्रणयन किया। "निराला के काव्य में प्रगतिशील और प्रयोगशील तत्व तो आरंभ से ही विद्यमान थे।" समाज-हित को लक्ष्य करने वाले कवि की अधिकांश कविताएँ प्रगतिशील तत्वों का उन्नायन करने वाली हैं। युग-चेतना से प्रेरित कवि ने रूढ़िवाद का खण्डन, ब्रिटिश शासन की दमन नीतियाँ, अछूत प्रथा, जातिवाद एवं सांप्रदायिकता, नारी विमोचन, आर्थिक असन्तुलन एवं शोषण से प्रेरित मज़दूर आन्दोलन एवं किसान आन्दोलन, नव साहित्यन्दोलन आदि प्रगतिशील तत्वों को अपनी कविताओं में विशेष महत्व दिया। निराला की छोटी बड़ी सारी कविताएँ जन-जीवन के उत्कर्ष के साधन के रूप में समर्पित थी। अतः कवि के रूप में निराला की देन का सही मूल्यांकन उनसे प्रस्तुत प्रगतिशील तत्वों के विवेचन से ही संभव है।

1. रूढ़िवाद का खण्डन- प्रगतिशील कवि निराला स्वभावतः क्रांतिकारी थे। वे पुरातनता के रूढ़िग्रस्त मार्गों के कट्टर शत्रु थे। तत्कालीन जगत की परंपराओं, अंधविश्वासों और अनाचारों को वे पसंद नहीं करते थे। प्रगति के उन्नायक विशिष्ट तत्वों के आविष्कार एवं समर्थन कवि अपने जीवन का लक्ष्य मानते थे। निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा रूढ़िवाद के विरुद्ध प्रस्तुत कविताओं से ही प्राप्त हो सकता है। उद्बोधन, ध्वनि, बादल-राग, पास ही रे हीरे

को खान, बापू के प्रति, भगवान बुद्ध के प्रति, क्या दुख दूर कर के बन्धन, तुलसीदास और सरोज-स्मृति में रूढ़िवाद की यथासंभव चर्चा हुई है, जो निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा परिचय कराने वाले हैं।

▶ उद्बोधन, ध्वनि, बादल-राग, पास ही रे हीरे को खान, बापू के प्रति, भगवान बुद्ध के प्रति, क्या दुख दूर कर के बन्धन, तुलसीदास और सरोज-स्मृति में रूढ़िवाद की यथासंभव चर्चा हुई है, जो निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा परिचय कराने वाले हैं।

'उद्बोधन' में प्राचीनता का ध्वंस करने का आह्वान है। निराला नव जीवन का पक्षपाती है। उनका यह आग्रह है कि सदियों से बने रहने वाले अन्धविश्वास नष्टभ्रष्ट हो जाएँ। वे चाहते हैं कि जीवन के आकाश और भूमि में एक नया सुगन्ध छा जाए। एक नूतन स्वर और ताल से दिशाएँ मुखरित हो जाएँ। जीर्ण-शीर्ण नियमों के अवशिष्ट तक लुप्तप्राय हो जाए। सदियों से जकड़े हृदय कपाट खुल जाए। निराला का यह आह्वान है:-

▶ निराला नव जीवन का पक्षपाती है। उनका यह आग्रह है कि सदियों से बने रहने वाले अन्धविश्वास नष्टभ्रष्ट हो जाएँ

"छोड़, छोड़ दे शंकाएँ, रे निर्झर-गर्जित वीर!
उठा केवल निर्मल निर्घोष;
देख सामने, बना अचल उपलो को उत्पल, धीर!
प्राप्त कर फिर नीख सन्तोष।"

कवि आशा करते हैं कि सारी शंकाएँ दूर हो जाएँ। देश के गौरव-गान से पृथ्वी एवं आकाश मुखरित हो उठे। यहाँ नवीनता एवं परिवर्तन के प्रति निराला का पक्षपात स्पष्ट किया गया है।

'ध्वनि' कविता में दुखियों एंव निराशा-पीड़ित लोगों में आशा भरा देना कवि का लक्ष्य है। इधर नये जीवन की आशा निहित है। प्रकृति में कवि एक मनोहर प्रत्यूष जगा पाते हैं। नींद का आलस्य एवं अकर्मण्यता रूढ़िगत प्रवृत्तियाँ हैं उनको त्यागकर भगवान की सहायता से नये प्रभात तक पहुँचना एक नवीन साधना है।

"मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण,
इसमें कहाँ मृत्यु
हे जीवन ही जीवन।
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन;
स्वर्ग-किरण-कल्लोलो पर बहता रे यह बालक मन"

नवीनता का ग्रहण करने पर नयी ध्वनि मुखरित हो जाएगी। अतः कवि की यह आशा है कि कभी न होगा मेरा अन्त। 'बादल राग' में पुरानी प्रथा से जन्य आलस्य को दूर करके नवीनता की वर्षा करने वाले बादल का संगीत प्रस्तुत हुआ है। कवि आशा करते हैं कि एक नया अमर राग आकाश में भर जाए।

'भगवान बुद्ध के प्रति' कविता में रूढ़िगत विद्वेष-भावना का त्याग करके राष्ट्रों के बीच में मैत्री और प्रेम की भावना को जाग्रत करने का प्रयास दिखाया गया है। राष्ट्र सबके सब वैज्ञानिक जड़ता पर गर्वित होकर सर्वनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। वैज्ञानिक साधन सुख के खिलौने हैं। जीवन का लक्ष्य पैसा कमाना बन गया है। वर्गों और राष्ट्रों के बीच संघर्ष चल रहे हैं। इस परिस्थिति में स्वार्थ त्याग कर और रूढ़ि से विमुख होकर सत्य की खोज में निकले बुद्ध का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है -

▶ 'भगवान बुद्ध के प्रति' कविता में रूढ़िगत विद्वेष-भावना का त्याग करके राष्ट्रों के बीच में मैत्री और प्रेम की भावना को जाग्रत करने का प्रयास दिखाया गया है

"जैसे जीवन में निश्चित
विमुख भाग से, राजकुँवर, त्यागकर सर्वस्थित

एकमात्र सत्य केलिए, रूढ़ि से विमुख, रत
कठिन तपस्या में, पहुँचे लक्ष्य को, तथागत।”

> ▶ स्वार्थ एवं स्वाभिमान से प्रेरित मनुष्य अपने को दूसरों की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं

2. अछूत प्रथा- स्वार्थ एवं स्वाभिमान से प्रेरित मनुष्य अपने को दूसरों की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं। वर्णाश्रम-धर्म के बिगड़ जाने के कारण जातिगत उच्चनीचता भारतीय जनजीवन में स्थान पर चुकी थी। अठारहवीं सदी तक आते आते हिन्दू-समाज पर तांत्रिक नियमों का पालन करने की प्रथम रूढमूल हो गयी। परिणामस्वरूप चाण्डालों तथा निम्न जातिवालों के स्पर्श एवं सामाजिक संबन्ध से जातिगत श्रेष्ठता के गिर जाने का भय समाज में फैल गया।

> ▶ 'प्रेमसंगीत' में कवि के ब्राह्मण का लड़का होने पर भी निम्न जातिवाली पनहारिन पर मुग्ध हो जाने का जीता-जागता वर्णन किया है

'प्रेमसंगीत' में कवि के ब्राह्मण का लड़का होने पर भी निम्न जातिवाली पनहारिन पर मुग्ध हो जाने का जीता-जागता वर्णन मिलता है। पनहारिन कोयल सी काली एवं मतवाली चालों से हीन होने पर भी उसके आचरण को देखकर कवि का दिल प्रेम से तड़प उठता है। प्रेम-भावना ही महत्वपूर्ण है और छुआछूत की प्रथा और रूढ़िगत अनाचार उसके सामने नहीं टिक सकते। कवि अपने हृदय का भावातिरेक यो प्रकट करते हैः-

“ले जाती है मटका-बडका
मैं देख-देखकर धीरज धरता हूँ।”

निम्न जाति वाली पनहारिन से प्रेम-संबन्ध को मना करने वाली अछुत प्रथा को इधर कवि अपने आचरण से चुनौती देते हैं।

> ▶ निराला जी ने अपनी 'प्रेमसंगीत' और 'गर्म पकौड़ी' मुक्तकों और 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'कुकुरमुत्ता', 'स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज' आदि लंबी कविताओं में भी यत्र-तंत्र जातिवाद का खण्डन किया है

3. **जातिवाद**- निराला जी के युग में जातिवाद की पराकाष्ठा थी। सामाजिक एकता के अभाव से देश को विदेशियों की दासता स्वीकार करनी पड़ी थी। जातिवाद के फलस्वरूप निम्न जाति में जन्में शूद्र को अंगीकार न मिलता था और समाज ने उसको हीन जाति का माना। यह वर्णाश्रम धर्म को बिगाड़कर 'जन्मकर्म विभागच्छ' मान लेने का दुष्परिणाम भी था। व्यक्तिगत गुण नहीं, जन्म को जाति ही श्रेष्ठता का आधार माना गया। राजा राममोहनराय ने इसको देश की एकता में भारी बाधा मान लिया था। निराला जी ने अपनी 'प्रेमसंगीत' और 'गर्म पकौड़ी' मुक्तकों और 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'कुकुरमुत्ता', 'स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज' आदि लंबी कविताओं में भी यत्र-तंत्र जातिवाद का खण्डन किया है।

'प्रेमसंगीत' में छुआछूत की प्रथा एवं अस्पृश्यता को जातिवाद की उपज दिखायी गयी है। कवि ब्राह्मण का लड़का है, तो भी निम्नजातिवाली पनहारिन से व्याह करता है प्रभात में नियम से आने वाले पनहारिन कोयल-सी काली है, उसकी चाल मतवाली नहीं है। पनहारिन का व्याह नहीं हुआ है। उसे देखकर जाति की परवाह किये बिना कवि आहें भरता है और बार-बार देखकर प्यार करने की धीरज बाँधता है। यहीं प्रेम के सहज आर्कषण को जातिवाद के कठोर नियमों से अधिक महत्व दिया गया है। उतना ही नहीं, कवि ने यह स्थापित किया है कि जातिगत भेद-भावना प्रेम के क्षेत्र में मान्यता नहीं प्राप्त कर सकती।

> ▶ 'प्रेमसंगीत' में छुआछूत की प्रथा एवं अस्पृश्यता को जातिवाद की उपज दिखायी गयी है

अपनी प्रतीकात्मक कविता गर्म पकौड़ी में निरालाजी ने सुधारवादियों के पथ में बाधाएँ उपस्थित करने वाले निम्नजातिवालों को कटाक्ष किया। कवि कहते हैं-

‘‘अरी तेरे लिये छोड़ी

बम्हन की पकायी

मैं ने घी की कचैड़ी।"

ब्राह्मण की सहज श्रेष्ठता की उपेक्षा करने निम्नजातिवालों का उद्धार करने के लिए प्रयत्न किये गये। तेल की भुनी और नमक-मिर्च की मिली गर्म पकौड़ी जीभ को जला देती है। उसको दाढ के तले खाये बिना दबाकर रखना ही पड़ा। दिल लेने के बाद उसने कपड़े-सा फींचना ही चाहा। अतः कवि की यह निवेदन है कि हे निम्नजाति वाले, तुम अपने हितैषियों और सुधारकों का पूर्ण समर्थन करो और उनकी खुशी के लिए अपने को समर्पित करो। इससे इस निष्कर्ष हम निकाल सकते है कि निम्नजातिवालों के पूर्ण जागरण एवं सहयोग के बिना जातिवाद को हम भारतीय जन-जीवन से हटा नहीं सकते।

▶ निम्नजातिवालों के पूर्ण जागरण एवं सहयोग के बिना जातिवाद को हम भारतीय जन-जीवन से हटा नहीं सकते

'तुलसीदास' कविता में निराला जी तुलसी के समकालीन भारतीय जन-जीवन पर प्रकाश डालते हैं। शूद्र निम्नजातिवाले समझे जाते थे। कवि रोते हैं कि वे समाज के लिए अभिशाप और कलंक माने जाने लगे थे।

4. **नारी विवेचन**- सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने तत्कालीन नारी-विमोचन आन्दोलन का पूर्णतः समर्थन किया। उन्होंने अपनी 'विधवा', 'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति', 'प्रेम संगीत', 'रानी और कानी' मुक्तकों और 'पंचवटी-प्रसंग' एवं 'सरोज-स्मृति' इन लंबी कविताओं में नारी की दुःस्थिति का जीता-जागता वर्णन यत्र-तत्र किया है।

"वह दुनिया की नज़रों से दूर बचाकर,

रोती है अस्फुट स्वर में,

दुख सुनता है आकाश धीर,

निश्चल समीर,

सरिता की वे लहरें भी ठहर-ठहरकर।

कौन उसको धीरज दे सके?

दुख का भार कौन ले सके?"

▶ 'विधवा', 'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति', 'प्रेम संगीत', 'रानी और कानी' मुक्तकों और 'पंचवटी-प्रसंग' एवं 'सरोज-स्मृति' इन लंबी कविताओं में नारी की दुःस्थिति का जीता-जागता वर्णन यत्र-तत्र किया है

कोई भी उसको धीरज देने और उसके आँसओं को पोंछने के लिए नहीं। कवि अंत में यह बता देते हैं कि सारा भारत उसके आँसुओं से तर गया है। इधर नारी-विमोचन की सार्थकता पर बल दिया गया है और कवि का यह पवित्र आग्रह है कि नारी-सुधार के प्रयत्न प्रशस्त हो जाएँ। 'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति' कविता में कवि ने नारी के अनश्वर महत्व का गीत गाया है। उन्होंने धन के, मान के बाँध को जर्जर का अपूर्व विवके के द्वारा प्रणय का समर्थन करने वाले सम्राट का समर्थन किया है। चाहे विदेशी हो या स्वदेशी, श्वेतवाले हो या कृष्णवर्णवाले, मानव मानने को तैयार हैं।

सम्राट विशाल ब्रिटिश साम्राज्य के सिंहासन पर आसीन थे, परन्तु वे उधर नही रह सके-

"बन्ध का सुखद भार भी सह न सके।

उर की पुकार

जो नव संस्कृति की सुनी।"

▶ 'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति' कविता में कवि ने नारी के अनश्वर महत्व का गीत गाया है

वे सिंहासन छोड़कर साधारण मानव की तरह भूमि पर उतर पड़े और उन्होंन ब्रिटिश शासक संबन्धी नियमों को तोड़कर अपनी प्रेमिका का हाथ ग्रहण किया और उसे अपनी पत्नी बनायी। कवि एडवर्ड अष्टम की इस साहसिकतापूर्ण कदम पर अभिनन्दन करते हैं।

कवि के रूप में निराला का योगदान जनजीवन के उत्कर्ष के लिए प्रस्तुत ये प्रगतिशील विचार हैं। उद्‌बोधन, ध्वनि, बादल-राग, पास ही रे हीरे की खाने, बापू के प्रति, भगवान बुद्ध के प्रति, क्या दुख दूर कर दे बन्धन, तुलसीदास और सरोज-स्मृति में रूढिवाद का खण्डन हुआ है। बापू के प्रति समर करो जीवन में, राजे ने अपनी रखवाली की, यमुना के प्रति, महाराज शिवाजी का पत्र आदि कविताओं में निराला ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी आवाज उठायी है। सुधारवादी आन्दोलनों के बावजूद जो अछूत प्रथा समसामयिक समाज में चलती थी, उसकी आलोचना 'प्रेमसंगीत' स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज आदि कविताओं में कवि ने प्रस्तुत की है। निराला के समय में जातिवाद का बोलबाला था। प्रेमसंगीत, गर्म पकौडी, तुलसीदास, स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज आदि कविताओं में निराला ने जातिवाद, का खण्डन करके विश्व-मानवता का समर्थन करने का प्रयास किया है। अपने समय के नारी विमोचन आन्दोलन का परिपूर्ण समर्थन निराला जी ने किया। विधवा, सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति प्रेमसंगीत, रानी और कानी , पंचवटी प्रसंग , सरोज - स्मृति आदि कविताओं में यद्यपि नारी की चिरंतन समस्याओं का व्यापक प्रतिपादन नहीं हुआ है तो भी निराला जी ने यथासंभव नारी जीवन की समस्याओं की चर्चा की है। अनुदिन सचेत होने वाले भारतीय मजदूर आन्दोलन का जोरदार समर्थन निरालाजी ने अपनी 'अधिवास', 'प्रकाश', 'दीन', 'भिक्षुक', 'स्वप्न-स्मृति', 'समर करो जीवन में' आदि मुक्तकों में किया है। निराला जी समसामयिक किसान आन्दोलन से प्रभावित थे। उन्होंने अपने हताश, सड़क के किनारे दुकान है, वेश-रूखे अधर-सूखे मुक्तक और कुकुरमुत्ता, 'देवी सरस्वती' जैसी लंबी कविताओं में इस आन्दोलन का जोरदार पक्ष लिया है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला नव साहित्यान्दोलन के अग्रदूत थे। उन्होंने भिक्षुक, तोडती पत्थर, विधवा, जुही का कली, दीन, अधिवास, उदबोधन, स्वप्न-स्मृति, ध्वनि आदि मुक्तकी और सरोज-स्मृति और कुकुरमुत्ता जैसी लंबी कविताओं में साधारण जन-जीवन से लिये गये प्रमेयों की चर्चा की है। राम की शक्तिपूजा, पंचवटी-प्रसंग, यमुना के प्रति और देवी सरस्वती पुराणेतिहासों पर आधारित हैं, तो भी इनके पात्र नवीन विचारों एवं नवयुग के समर्थक है।

▶ कवि के रूप में निराला का योगदान जनजीवन के उत्कर्ष के लिए प्रस्तुत प्रगतिशील विचार हैं

3.2.4 निराला और मुक्त छंद

▶ निराला ने कविता को छंद के बंधन से मुक्त किया। मुक्त छंद की कविताएँ- जागो फिर एक बार, बादल राग, कुकुरमुत्ता आदि हैं।

मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मो के बंधन से छुटकारा पाना है। कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। इसने कविता को तुक, मात्रा आदि बंधनों से मुक्त किया। मगर लय का पूर्ण निर्वाह किया गया है। निराला ने कविता को छंद के बंधन से मुक्त किया। मुक्त छंद की कविताएँ- जागो फिर एक बार, बादल राग, कुकुरमुत्ता आदि हैं।

छायावादी कवि निराला ने अपनी पहचान अलग से बनाने के लिए चली आ रही रूढ़िबद्ध छंद परम्परा का निषेध कर, नूतन छंद का आविष्कार किया। छायावाद काल में कवियों के पास नए-नए विचार थे तो उन नवीन विचारों के अभिव्यंजन हेतु नये छंदों की आवश्यकता हुई। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सम्मति में इस प्रकार कहा कि, "नये छंद नये मनोभावों को जन्म देता है।" निराला के छंद निर्माण के संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी ने कहा कि, "छंद

के संदर्भ में निराला का विद्रोह अधिक स्पष्ट और मुखर दिखता है। छंद-विधान के अनेक पक्षों में निराला की रुचि आरंभ से रही। एक ओर उनकी चिंता थी कि उनके लिखे हुये खड़ी बोली के गीत सामान्य जन और कलावंतों के होंठों पर वैसे ही बस जाएँ जैसे अब तक ब्रजभाषा में रचे गए खयास के बोल और पदों की स्थिति रही है। दूसरी ओर पारंपरित छंद को तोड़कर उसे नये ढंग से बनाने में उनका विशेष ध्यान रहा। मुक्त छंद को यहाँ उन्होंने जातीय मुक्ति के व्यापक सन्दर्भ से जोड़ा। तीसरी ओर छंद-विधान के आतंरिक स्वरूप को नये-नये ढंग से व्यवस्थित करने की मन में तीव्र उत्सुकता थी।" नेमिचन्द्र जैन ने कहा कि, "इस प्रकार नई अनुभूतियों, भावनाओं, कल्पना-चित्रों तथा नवीन परिस्थितियों की अभिव्यक्ति करने के लिए नये-नये माध्यमों की भाषा, छंद और शैली के नये रूपों की खोज होने लगी।" मुक्तछंद के प्रवर्त्तक के संदर्भ में डॉ. संतोष गोयल कहते हैं कि, "निराला जी को मुक्त छंद का प्रवर्त्तक माना जाता है, यद्यपि उसके पीछे कोई मनोवैज्ञानिक आधार ढूँढना अत्यंत कठिन है।"

▶ छायावादी कवि निराला ने अपनी पहचान अलग से बनाने के लिए चली आ रही रूढ़िबद्ध छंद परम्परा का निषेध कर, नूतन छंद का आविष्कार किया

निरालाकृत मुक्त छंद को आज जो इतना महत्त्व दिया जाता है, वही प्रारंभ में 'केंचुआ' अथवा 'रबड़' छंद के उपहासास्पद नामों से अभिहित हुआ था। मुक्त छंद वह है, जिसके चरणों की संख्या और विस्तार अनिश्चित एवं स्वतंत्र रहते हैं, केवल लायाधार आध्योपांत एक सा रहता है अर्थात् मुक्त छंद का आधार मात्रा, वर्ण, तुक कुछ भी नहीं केवल 'लय' है। निराला मुक्त छंद को भी छंद की भूमि में मानते हैं, चाहे उसमें वर्ण, मात्रा, गण सभी का ध्यान रखा गया हो। 'परिमल' की भूमिका में उन्होंने लिखा भी है, ऊपर जितने प्रकार के आतुकांत काव्य के उदाहरण दिये गये हैं, सब एक-एक सीमा में बाँधे हैं, एक-एक प्रधान नियम सब में पाया जाता है। गन वृत्तों में गणों की श्रृंखला, मात्रिक वृत्तों में मात्राओं का साम्य, वर्णवृत्तों में अक्षरों की समानता रहती है। कहीं भी इस नियम का उल्लंघन नहीं किया गया। इस प्रकार के दृढ नियमों में बाँधी हुई कविता कदापि मुक्त नहीं हो सकती। मुक्त छंद तो वह है जो छंद की भूमि में रहकर भी मुक्त है, इस प्रकार की हैं। 'लय' काव्य का प्राण है। "छंद एक धारण है और लय एक संवेदना।" पंत ने कहा कि, "कविता का स्वभाव ही छंद में लयमान होता है।"

▶ मुक्त छंद वह है, जिसके चरणों की संख्या और विस्तार पूर्व अनिश्चित एवं स्वतंत्र रहते हैं, केवल लायाधार आध्योपांत एक सा रहता है अर्थात् मुक्त छंद का आधार मात्रा, वर्ण, तक कुछ भी नहीं केवल 'लय' है

निराला जी ने घनाक्षरी अथवा कवित्त को ही मुक्त छंद का आधार माना है। निराला ने कहा कि, "हिन्दी में मुक्त-काव्य कवित छंद की बुनियाद पर सफल हो सकता है। कारण, यह छंद चिरकाल से इसी जाति का कंठहार हो रहा है। दूसरे, इस छंद में एक विशेष गुण यह भी है कि इसे लोग चौताल आदि खड़ी तालों में तथा ठुमरी की तीन तालों में सफलतापूर्वक गा सकते हैं और नाटक आदि के समय इसे काफी प्रवाह के साथ पढ़ सकते हैं।" इस प्रकार निराला ने मुक्त छंद का आरंभ 'विजन-वल-वल्लरी' से मुड़ कर अंत तक किया। बहुत कठिन छंद से 'तुलसी दास' नामक शतक काव्य की रचना की। यथा-

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्धया-सुंदरी परी-सी
धीरे धीरे धीरे,
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर,

किन्तु गंभीर, नहीं है उनमें हास-विलास। संध्या सुंदरी के अलावा सबसे कठिन छंद तुलसीदास में-

"जागा, जागा संस्कार, प्रबल,
रे गया काम तत्क्षण वह जल,देखा, वामा, वह न थी, अनल-प्रतिमा वह;
इस ओर ज्ञान, उस ओर ज्ञान,
हो गया भस्म वह प्रथम मान,
छूटा जग का जो रहा ध्यान, जाड़िया वह।"

वहीं राम की शक्तिपूजा में-

"शत-शेल-सम्वरण-शील नील-नभ गर्जित-स्वर,
प्रतिफल-परिवर्तित व्यूह,- भेद-कौशल, समूह-"

- निराला जी ने घनाक्षरी अथवा कवित्त को ही मुक्त छंद का आधार माना है

अंततः कह सकते हैं कि निराला ने मुक्तछंद प्रणीत करते समय अनेकशः प्रयोग किए हैं। 'जुही की कली' में प्रयुक्त मुक्त छंद, जागो फिर एक बार, बादल राग, शेफालिका, बेला, कुकुरमुत्ता में प्रयुक्त छंद पूर्ववर्ती छंद से इतर है। निराला के यहाँ छंद के बंध खुल गये।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

निराला के काव्य में प्रगतिशील और प्रयोगशील तत्व बड़ी मात्रा में विद्यामान है। युग चेतना से प्रेरित कवि ने कई प्रगतिशील तत्वों को कविताओं में विशेष महत्व दिया। वे स्वभावतः क्रांतिकारी थे। पुरातन रूढ़िग्रस्तमार्गों का उन्होंने खुलकर विरोध किया। साहित्य में 'मुक्त छंद' की अवधारणा निराला की विशिष्ट देन रही। वे मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की मुक्ति की कामना करते थे। उन्होंने चली आ रही छंद परंपरा का निषेध कर नूतन छंद का आविष्कार किया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'राम की शक्ति पूजा' की मौलिक उद्भावना क्या है?
2. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की साहित्यिक तथा सास्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए?
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला को नवजागरण के कवि कहते हैं- उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए?
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के अध्ययन और दर्शन पर प्रकाश डालें?
5. राम की शक्ति पूजा कविता का सारांश तैयार कीजिए?

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. निराला, डॉ. रामविलास शर्मा
2. निराला काव्य का अध्ययन, डॉ. भगरिथ मिश्र
3. छायावाद का काव्य शिल्प, डॉ. प्रतिमा

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय साहित्य के निर्माता निराला- परमान्द श्रीवास्तव- साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
2. निराला की साहित्य साधना- रामविलास शर्मा- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. राम की शक्तिपूजा-सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला- भारतीय साहित्य संग्रह- नई दिल्ली

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3

सुमित्रानंदन पंत- प्रथम रश्मि, पंत का प्रकृति चित्रण, पंत की काव्य-भाषा, पंत के काव्य में कोमल कल्पना, पंत की काव्य यात्रा के विविध सोपान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवी सुमित्रानंदन पंत से परिचित होता है
- पंत का प्रकृति चित्रण और पंद की काव्य-भाषा समझता है
- पंत के काव्य में कोमल कल्पना, पंत की काव्य यात्रा के विविध सोपान से अवगत होता है
- प्रथम रश्मि कविता का भाव समझता है

Background / पृष्ठभूमि

'प्रकृति के सुकुमार कवि' सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई 1900 को बागेश्वर जिले (वर्तमान उत्तराखंड) के कौसानी में हुआ था। उनके जन्म के कुछ ही घंटों बाद उनकी माँ की मृत्यु हो गई और उनका पालन-पोषण उनकी दादी ने किया। बचपन में उन्हें गोसाईं दत्त कहा जाता था। प्रयाग में अपनी उच्च शिक्षा के दौरान, 1921 के असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के बहिष्कार के आह्वान के बाद उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी भाषाओं और साहित्य का अध्ययन करने के लिए कॉलेज छोड़ दिया। उनकी काव्य-चेतना का विकास प्रयाग में ही हुआ, हालाँकि नियमित रूप से कविताएँ वह किशोर आयु से ही लिखने लगे थे। उनका रचनाकाल 1916 से 1977 तक लगभग 60 वर्षों तक विस्तृत है। ऐसे प्रतिभा संपन्न कवि द्वारा रचित प्रथम रश्मि कविता का अध्ययन विस्तार से करेंगे। साथ ही पंत का प्रकृति चित्रण, पंत की काव्य-भाषा, पंत के काव्य में कोमल कल्पना, पंत की काव्य यात्रा के विविध सोपान पर भी अध्ययन करेंगे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सुकुमार कवि, असहयोग आंदोलन, बहिष्कार, आह्वान, कोमल कल्पना

Discussion / चर्चा

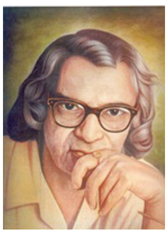

सुमित्रानंदन पंत

हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से सुमित्रानंदन पंत एक है। झरना, बर्फ, पुष्प, लता, प्रलाप-गुंजन, उषाकिरण, शीतल पवन, तारों से सुसज्जित आकाश से उतरती संध्या, इन सबको उन्होंने स्वाभाविक रूप से अपने काव्य का अवयव बनाया। प्रकृति के तत्वों का उपयोग पंत कविता की विशेषता थी। 1918 के आसपास उन्हें हिन्दी की नई लहर के प्रवर्तक के रूप में पहचाना जाने लगा। उनका पहला काव्य संग्रह 'पल्लव' 1926-27 में प्रकाशित हुआ। कुछ समय बाद वह अपने भाई देवीदत के साथ अल्मोडा पहुँचे। इसी दौरान वह कार्ल मार्क्स और फ्रायड की विचारधारा के प्रभाव में आये। 1938 में उन्होंने 'रूपाभ' नामक मासिक पत्र निकाला। 'वीणा' और 'पल्लव' में संकलित उनके लघु गीत उनकी अद्वितीय सौंदर्य-बोध की मिसाल हैं। उनके जीवनकाल में उनकी 28 पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें कविताएँ, नाटक और निबंध शामिल हैं। उनकी सबसे कलात्मक कविताएँ 'पल्लव' में संग्रहीत हैं, जो 1918 और 1925 के बीच लिखी गई 32 कविताओं का संग्रह है। हिन्दी साहित्य की सेवाओं के लिए उन्हें 1961 में पद्म भूषण, 1968 में ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे सम्मानों से अलंकृत किया गया। अतः छायावादी युग के बारे में सीखते समय सुमित्रानन्तन पंत और उनकी साहित्यिक यात्रा के बारे में जानना आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य भी यह है।

- ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

3.3.1 प्रथम रश्मि(सुमित्रानन्तन पंत)

प्रथम रश्मि कविता में कवि ने सुबह की प्रथम किरण के साथ प्रकृति में होने वाले स्वाभाविक बदलाव का बड़ा ही सुंदर और मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है। प्रथम रश्मि के आने से पहले जैसे पूरा विश्व स्तब्ध था। जड़ चेतन सब एकाकार थे, एक जैसे थे। विश्व में जैसे शुन्यावाकाश था। इसमें सिर्फ सांसों का आना-जाना था लेकिन अब चेतना जाग गई है। कवि इस परिवर्तन को कौतूहल से देखता है। कवि को आश्चर्य होता है कि चिड़ियों को सूर्य के आने का पता कैसे चल जाता है। कवि जिज्ञासु बनकर उनसे प्रश्न करता है?

प्रथम रश्मि

प्रथम रश्मि का आना रंगिणी!
तूने कैसे पहचाना?
कहाँ, कहाँ है बाल विहंगिनी!
पाया तूने यह गाना?

शब्दार्थ-

रश्मि	=	किरण
रंगिणि	=	रंगमयी, प्रेममयी
बाल-विहंगिनी	=	छोटी-सी चिड़िया

प्रसंग-भावार्थ- सुबह होने पर, पूर्व दिशा में उषा के खिलते ही पक्षी जाग उठते हैं और चह्चाने लगते हैं। उन्हें आभास हो जाता है कि अब सूर्य की पहली किरण फूटने वाली है। उन्हें इस बात का पता कैसे चल जाता है, इसी बात को नन्हीं-सी चिड़िया से पूछता हुआ कवि कह रहा है- हे रंगीली नन्हीं-सी विहंगिनी! यह बता कि तूने सूर्य की इस पहली किरण के आगमन को पहले से ही कैसे जान लिया था? अर्थात् तुझे कैसे मालूम हो गया कि शीघ्र ही

सूरज की पहली किरण फटने वाली है? साथ ही यह भी बता कि तूने उस किरण के स्वागत में गाए जाने वाला यह गाना कहाँ से सीखा है, किससे सीखा है?

अलंकार- 'रंगिणि' में श्लेष, तथा अन्यत्र मानवीकरण और अनुप्रास।

विशेष-

1. यहाँ कवि किसी विहंग या विहंगिनी को संबोधित न कर बाल-विहंगिनी, एक नन्हीं-सी, शिशु-रूप चिड़िया को संबोधित किया है। क्योंकि पक्षियों के उस प्रभातकालीन कलरव में बच्चों का-सा निर्मल उल्लास, निश्छलता, उन्मुक्तता और पवित्रता भरी रहती है। यहाँ सूरज की पहली किरण नव-जीवन, जागृति और उल्लास की प्रतीक है। मानव प्रकृति से दूर हट जाने के कारण प्रकृति के रहस्यों को जानने की शक्ति खो बैठा है। इसी कारण यहाँ कवि उस बाल-विहंगिनी से उस रहस्य को बता देने का आग्रह कर रहा है।
2. प्रकृति के रहस्यों को जानने की इच्छा छायावाद की एक विशेषता मानी गई है। यहाँ कवि अपनी उसी जिज्ञासा को बड़े सहज-कोमल भाव से व्यक्त कर रहा है। इसी कारण भाव और शैली, दोनों ही दृष्टियों से यह कविता छायावादी-शैली की कविता बन गई है। ऐसी ही कविताओं में छायावादी काव्य-शैली का रूप प्रस्फुटित हुआ था।

> ▶ कवि बालाविहंगनी से पूछती हैं कि प्रभात का आगमन तूने कैसे जान लिया

सोई थी तू स्वप्न नीड़ में
पंखों के सुख में छिपकर,
ऊँघ रहे थे घूम द्वार पर
प्रहरी से जुगून नाना;
शशि किरणों से उतर-उतरकर,
भू पर कामरूप नभचर
चूम नवल कलियों का मृदु मुख
सिखा रहे थे मुसकाना;
स्नेह हीन तारों के दीपक,
श्वास शून्य थे तरु के पात,
विचर रहे थे स्वप्न अवनि में,
तम ने था मंडप ताना;
कूक उठी सहसा तरुवासिनी!
गा तू स्वागत का गाना,
किसने तुझको अंतर्यामिनी!
बतलाया उसका आना?

शब्दार्थ-

स्वप्न-नीड़	=	स्वप्नों का घोंसला, स्वप्न देखती
प्रहरी	=	पहरेदार
कामरूप	=	इच्छानुसार रूप धारण कर लेने वाले

नभचर	=	आकाश में विचरण करने वाले; पक्षी
नवल	=	नई
स्नेह हीन	=	तेल रहित, प्रेम रहित
श्वास-शून्य	=	निश्चल
अवनि	=	धरती
तरुवासिनी	=	वृक्ष पर रहने वाली
अन्तर्यामिनी	=	रहस्य को जान लेने वाली

प्रसंग-भावार्थ- उस विहंग-बालिका के जागने से पहले की उसकी स्थिति का वर्णन करता हुआ कवि उससे कह रहा है- हे बाल-विहंगिनी! उस समय तो तू अपने घोंसले में, अपने पंखों की सुखद ऊष्मा (गर्मी) में अपना मुँह छिपाए, मधुर स्वप्नों में डूबी सो रही थी। तेरे घोंसले के द्वार पर रात-भर घूम-घूम कर पहरा देने वाले पहरेदार जुगनूं थक कर आलस्य के कारण ऊँघ रहे थे। अर्थात् जुगुनुओं का घूमना बन्द-सा हो गया था। मनमाना रूप धारण करने वाले, रात के समय आकाश में विचरण करनेवाले मायावी देवता आदि चन्द्रमा की किरणों की डोर पकड़, नीचे धरती पर उतर, नव-उपवन में सोती हुई नई कलियों के मधुर-कोमल मुखों को मुस्कराना सिखा रहे थे। (यहाँ 'कामरूप नभचर' से ओस की बूँदों से अभिप्राय लिखा जा सकता है। ओस की बूँदें देवता आदि के निवास-स्थान आकाश से धरती पर आती हैं। मानो देवता ही ओस की बूँदों का रूप धारण कर कलियों को जगाकर मुस्कराना, खिलना सिखा जाते हैं। यह कल्पना बहुत ही सुन्दर है।)

▶ प्रकृति में क्रिया-कलाप रात-दिन चल रहा है

(उषा खिलने से पूर्व तारों की ज्योति मन्द हो जाती है, हवा का चलना कहता है-) तारागणों-रूपी दीपकों का तेल समाप्त हो जाने से उनकी ज्योति मन्द हो उठी थी और हवा का चलना बन्द हो जाने से वृक्षों के पत्ते मानो श्वास-रहित अर्थात् जड़ के समान निश्चल हो उठे थे। धरती के प्राणी गहरी नींद में डूबे स्वप्न-जगत में विचरण कर रहे थे, स्वप्न देख रहे थे, और अन्धकार ने सारी धरती पर चारों ओर अपना मण्डप-सा तान रखा था, अर्थात् धरती पर चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था।

वृक्ष पर रहने वाली हे बाल-विहंगिनी! ऐसे शान्त और स्तब्ध वातावरण में तू सूरज को उस पहली किरण के स्वागत में गीत गाती हुई सहसा कूक उठी थी। हे अंतर्यामिनी! यह बता कि उसके आगमन की सूचना तुझे किसने दी थी? अर्थात् तुझे उसके आगमन का रहस्य पहले से ही कैसे ज्ञात हो गया था?

अलंकार- रूपक, उपमा, पुनरुक्ति अनुप्रास, श्लेष और मानवीकरण।

विशेष- यहाँ कवि ने ब्रस्मा-मुहूर्त के शान्त वातावरण का प्रकृति के विभिन्न उपादनों की सहायता से प्रभावशाली वर्णन किया है। इस छंद की शैली-विशुद्ध रूप से छायावादी है। सांकेतिकता, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, मानवीकरण आदि छायावाद की विभिन्न विशेषताएँ यहाँ मूर्त हो उठी हैं। कवि के बाल-मन की सहज जिज्ञासा ने इस चित्र में अद्भुत प्रभाव और आकर्षण उत्पन्न कर दिया है।

▶ ब्रस्म-मुहूर्त के शान्त वातावरण का प्रकृति चित्रण

निकल सृष्टि के अंध गर्भ से
छाया तन बहु छाया हीन,

चक्र रच रहे थे खल निशिचर
चला कुहक, टोना माना;
छिपा रही थी मुख शशि बाला
निशि के श्रम से हो श्रीहीन,
कमल क्रोड़ में बंदी था अलि
कोक शोक से दीवान;
मूर्छित थीं इन्द्रियाँ, स्तब्ध जग,
जड़ चेतन सब एकाकार,
शून्य विश्व के उर में केवल
साँसों का आना-जाना;
तूने ही पहले बह दर्शिनी!
गाया जागृति का गाना,
श्री सुख सौरभ का नभचारिणी!
गूँथ दिया ताना-बाना!

शब्दार्थ-

अन्ध गर्भ से	=	अन्धकार के भीतर से
छाया तन	=	छाया के मान अस्पष्ट रूप वाले
चक्र	=	षडयन्त्र
खल	=	धूर्त। निशिचर रात के समय विचरण करने वाले भूत, प्रेत आदि
कुहक	=	माया, जादू
टोना माना	=	जादू
श्रीहीन	=	शोभा रहित, निष्प्रभ
कोड	=	गोद
अली	=	भ्रमर
कोक	=	चकवा
एकाकार	=	एकरूप
बहुदार्शिनी	=	सब कुछ देखने-सुनने वाली
जागृति	=	जागरण
नभ-चारिणी	=	आकाश में विचरण करने वाली

प्रसंग-भावार्थ- ब्रह्म मुहूर्त के उपर्युक्त वातावरण के चित्रण को आगे बढ़ाता हुआ कवि उस विहंग-बालिका को सम्बोधित कर आगे कहता है- रात्रि के इस अन्तिम पहर में सम्पूर्ण संसार में छाए सघन अन्धकार के भीतर से छाया के समान धुँधले और बिना छाया वाले, रात के समय विचरण करने वाले अनेक दुष्ट भूत-प्रेत-राक्षस आदि बाहर निकल कर चारों ओर अपनी माया और जादू-टोने द्वारा नाना प्रकार के कुचक्र रच रहे थे, अनेक प्रकार के कुकर्म

कर रहे थे। रात के समय भ्रमण के अनवरत परिश्रम से शिथिल होकर चन्द्रमा-रूपी सुन्दरी की मुख-कान्ति श्रीहीन हो उठी थी। अर्थात् चन्द्रमा का प्रकाश फीका पड़ने लगा था। भ्रमर कमल की गोद में बन्दी बना पड़ा था। (सूर्यास्त होते ही कमल की पंखुड़ियाँ बन्द हो जाती हैं और उनके ऊपर बैठा भ्रमर भी कमल के भीतर बन्द हो रात भर वहीं पड़ा रहता है) तथा चकवा रात को अपनी चकवी से बिछुड़ जाने के कारण, उसके विरह में पागल-सा बैठा सिर धुन रहा था। संसार के सारे प्राणियों की इन्द्रियाँ (उनके सोते रहने के कारण) स्तब्ध अर्थात् निष्क्रिय, शांत पड़ी थीं। सारा जगत मानो स्तब्ध-सा निश्चल हो रहा था। उस समय संसार की जड़ और चेतना सारी वस्तुएँ एकरूप हो रही थीं। अर्थात् चेतन प्राणी भी निद्रा-मग्न होने के कारण जड़ से प्रतीत हो रहे थे। उन सारी गतिविधियों से शून्य विश्व में केवल साँसों का आना-जाना ही एकमात्र क्रिया हो रही थी। अर्थात् संसार गहरी नींद में डूबा हुआ था।

▶ रात में संसार गहरी नींद में डूबा था

सब-कुछ देख लेने वाली है बाल विहंगिनी! ऐसे शान्त-स्तब्ध वातावरण में केवल तूने ही सबसे पहले जागृति का गीत गाना आरम्भ किया था। अर्थात् तूने ही अपने अंतर्ज्ञान द्वारा उषा के आगमन का आभास पाकर अपने मधुर कलरव द्वारा संसार को निद्रा त्याग कर जाग उठने का सन्देश दिया था, तूने ही अपने उस जागरण-गान द्वारा सारे जगत में सौन्दर्य, सुगन्ध और सुख का ताना-बाना बुन दिया था। अर्थात् आकाश में विचरण करने वाली है विहंग बालिका! तूने अपने उस कलरव-संगीत द्वारा संसार को जाग उठने का सन्देश दे सारे विश्व में चेतना उत्पन्न कर दी थी।

अलंकार- विशेषण-विपर्यय, विरोधाभास, रूपक, मानवीकरण, अनुप्रास और हेतुत्प्रेक्षा।

विशेष- ब्राह्म मुहूर्त के शान्त-निस्तब्ध वातावरण का चित्र दृष्टव्य है। इस छंद में 'छायातन' और 'छाया विहीन' का साभिप्राय प्रयोग किया गया है। राक्षसों का रंग काला होने के कारण वे रात के अन्धकार में छाया से अस्पष्ट और धुंधले दिखाई देते हैं, इसलिए उनके लिए 'छायातन' का प्रयोग किया गया है। और भूत-प्रेतों के सम्बन्ध में यह लोक-विश्वास प्रचलित है कि उनके शरीर की परछाई नहीं पड़ती, इसलिए उन्हें 'छाया विहीन' कहा गया है। 'बहुदार्शिनी' शब्द बाल विहंगिनी की उस प्राकृतिक सूक्ष्म चेतन शक्ति के प्रति संकेत कर रहा है, जिसकी सहायता से वह प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों का पहले से ही आभास पा जाती है। यह छंद छायावादी काव्य-शैली का एक सुन्दर उदाहरण है। इसमें मानवीकरण का रूप विशेष दृष्टव्य है।

▶ प्रकृति में मानवीकरण को शैली का चित्रण

निराकार ताम मानो सहसा
ज्योति-पुंज में हो साकार,
बदल गया द्रुत जगत् जाल में
धर कर नाम रूप नाना;
सिहर उठे पुलकित हो द्रुम दल
सुप्त समीरण हुआ अधीर
झलका हास कुसुम अधरों पर,
हिल मोती का-सा दाना;
खुले पलक, फ़ैली सुवर्ण छवि,
खिली सुरभि, डोले मधु बाल;

स्पंदन कंपन औ' नव जीवन
सीखा जग ने अपनाना;
प्रथम रश्मि का आना, रंगिणि!
तूने कैसे पहचाना?
कहाँ, कहाँ हे बाल विहंगिनी!
पाया यह स्वर्गिक गाना?

शब्दार्थ-

निराकार	=	आकारहीन
तम	=	अन्धकार
ज्योति पुंज	=	प्रकाश का समूह
द्रुत	=	शीघ्र
सिहर	=	रोमांचित
द्रुम दल	=	वृक्षों के पत्ते
समीरण	=	वायु
सुवर्ण छवि	=	सुनहरी छवि, प्रकाश
सुरभि	=	सुगंध
मधु बाल	=	भ्रमरों के बच्चे
स्वर्गिक	=	दिव्या

प्रसंग-भावार्थ- अब कवि रात्रि के उस अन्धकारपूर्ण वातावरण के समाप्त हो जाने के उपरान्त चतुर्दिक छा जाने वाली सूर्य-रश्मियों से आलोकित हो उठने वाले वातावरण का वर्णन करता हुआ उस विहंग बालिका को संबोधित कर आगे कहता है- सहसा ऐसा लगा जैसे चारों ओर छाया हुआ वह आकार-हीन (अन्धकार में किसी भी चीज या प्राणी का कोई आकार नहीं दिखाई देता, इसलिए उसे आकारहीन कहा गया है) अन्धकार प्रकाश के समूह के रूप में बदल साकार हो उठा हो। और चारों ओर प्रकाश छा जाने से संसार शीघ्र ही नाना प्रकार के नाम और रूप धारण कर प्रकट हो गया। अर्थात् अब संसार के विभिन्न प्राणी और वस्तुएँ स्पष्ट दिखाई पड़ने से पहचान में आने लगी। सूर्य-रश्मियों के उस सुखद ऊष्मा भरे प्रकाश का स्पर्श पाकर वृक्षों के पत्ते पुलकित हो रोमांचित हो उठे; नीचे न झुके रहकर चैतन्य हो सीधे खड़े हो गए। और सोया हुआ पवन अधीर हो जाग उठा, जिससे पत्ते हिलने लगे; उनमें चेतना का संचार हो गया। फूलों के अधरों पर हँसी झलकने लगी और उन पर पड़ी ओस की बूँदें मोती के दानों के समान हिलने लगीं। उस दृश्य को देख ऐसा लगता था मानो फूलों के अधरों पर उन बूंदों के रूप से हँसी खिल रही हो। नींद में बंद संसार की पलकें खुल गई, सब जाग उठे। चारों ओर सूर्य-किरणों का सुनहरा प्रकाश छा गया। फूलों की सुगंध चारों ओर फ़ैल गई और उससे आकर्षित होकर भ्रमरों के बच्चे फूलों पर मँडराने लगे। मानो संसार ने उन किरणों द्वारा ही चेतना, स्फूर्ति और नव-जीवन का उत्साह प्राप्त करना, अपनासा सीखा हो। अर्थात् सारा संसार उत्साह और नव-जीवन से गतिशील हो उठा।

▶ प्रथम रश्मि का आगमन और प्रकृति में बदलाव

प्रकृति के इन दो परस्पर विरोधी-रूपों- एक रात्रिकालीन शान्त, जड़ निस्तब्ध रूप तथा दूसरा प्रभातकालीन नव-जीवन की चेतना से स्पन्दित गतिशील रूप- का चित्रण कर कवि इस परिवर्तन के आसन्न आगमन के रहस्य को पहले से ही जान लेने वाली उस बाल विहंगिनी से पुनः पूछता है कि हे रंगिणी! तूने सूर्य की पहली किरण के आगमन के रहस्य को पहले से ही, ब्राह्म मुहूर्त के उस निस्तब्ध वातावरण में ही कैसे जान लिया था तथा उसका स्वागत करने वाला यह दिव्य गान, यह आलौकिक संगीत तूने किससे पाया था, किसने तुझे यह गाना सिखाया था?

▶ सूरज के पहली किरण आने पर पक्षी अलैकिक गाना शुरू करते है

अलंकार- उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, उपमा और अनुप्रास।

विशेष-

1. कुछ टीकाकारों ने इन पंक्तियों में विशिष्टाद्वैत दर्शन का हल्का-सा प्रतिपादन हुआ सिद्ध किया है। परन्तु यह धारण भ्रान्त है। यहाँ तो केवल प्रकृति चित्रण ही कवि का प्रधान और मूल उद्देश्य रहा है। साथ ही उसकी बाल-सुलभ जिज्ञासा भी अपना मनोरम रूप लिए सामने आ खड़ी हुई है। इस कविता का सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि यह विशुद्ध छायावादी-शैली की रचना होते हुए भी छायावाद की दुरूहता और जटिलता से सर्वथा मुक्त रही है। इसमें छायावादी काव्य-शैली का सहज-स्वाभाविक सौन्दर्य उद्‌भासित हो उठा है।
2. इस कविता की विहंग बालिका आलस्य के त्याग और नव-चेतना की प्रतीक है। इस कविता का मूल सन्देश यह है कि मानव प्रकृति के सान्निध्य से दूर हो जाने के कारण अपने सारे प्राकृतिक गुणों और शक्तियों को खो बैठा है और आलसी बन गया है। इसके विपरीत पशु-पक्षी प्रकृति के सतत-सान्निध्य में रहने के कारण प्रकृति के रहस्यों से पूर्णतः परिचित रहते हैं और कर्मशील जीवन व्यतीत करते हैं। प्रकृति से दूर हट जाना ही मानव का सबसे बड़ा दुर्भाग्य बन गया है।

▶ पशु-पक्षी प्रकृति क सतत सान्निध्यमें रहते है

3.3.2 सुमित्रानंदन पंत का प्रकृति चित्रण

आधुनिक युग में प्रकृति चित्रण की विविध प्रणालियाँ प्रचलित हैं। आज का कवि प्रकृति का अपने काव्य का मूलाधार मानता है, और प्रकृति के माध्यम से अपनी कल्पनाओं को अभिव्यक्त करता है। यही कारण है कि आधुनिक कविता में प्रकृति विविध रूपों में चित्रित हुई है। आधुनिक हिन्दी कविता में जो पद प्रकृति को मिला है। वह अपने निखरे प्रिय रूप में हिन्दी प्रेमियों के सामने आये हैं; उसका बहुत कुछ श्रेय निःसंदेह कवि सुमित्रानंदन पंत को मिला है। पंतजी के हृदय को प्रकृति ने बड़े वेग से आकर्षित किया है। जिसका जन्म ही रम्य प्राकृतिक दृश्यों से पूर्ण प्रदेश में हुआ था। कवि बचपन से ही निर्झरों, पर्वतों के साहचर्य में रहा है। कवि पंतजी ने सौंदर्य को कल्याणकारी माना है। नारी का पहला बालिका रूप 'वीणा' में मिलता है। किन्तु उस काल में कवि पंतजी नारी की अपेक्षा प्रकृति से अधिक प्रभावित था -

▶ पंतजी के हृदय को प्रकृति ने बड़े वेग से आकर्षित किया है। कवि पंतजी ने सौंदर्य को कल्याणकारी माना है

'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले, तेरे बाल जाल में कैसे उलझ दूँ लोचन।
भूल अभी से इस जग को।'

ग्रन्थ में वह प्राकृतिक सौंदर्य के साथ साथ शारीरिक सौंदर्य के प्रति आकर्षित होता है। कहीं

कहीं शारीरिक सौंदर्य प्राकृतिक सौंदर्य से अधिक महत्वशाली हो गया है -

"इंदु पर उर इंदु मुख पर साथ ही,
थे पड़े मेरे नयन, जो उदस से,
लाज से रक्तिम हुए थे पूर्व को
पूर्व था, पर वह द्वितीय अपूर्व था।"

▶ कवि समित्रानदंन पंत की कविता में प्रकृति की शोभा के अनुपम चित्र दृष्टिगत होते हैं

कवि सुमित्रानंदन पंत की कविता में प्रकृति की शोभा के अनुपम चित्र दृष्टिगत होते हैं। अलमौड़ा की संध्या का चित्र कविता में साकार हुआ है।

प्रकृति का मानवीकरण कर प्रकृति को नारी रूप में चित्रित करना भी पंत का प्रिय स्वभाव है। पंत जी अपनी कलात्मकता के कारण प्रकृति को अनेक स्थलों पर नारी रूप में चित्रित किया है। परन्तु 'छाया' कविता में पंतजी ने जिन अप्रस्तुतों का प्रयोग किया है। वह अपने आप में मौलिक होता हुआ भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। एक चित्र बन जाता है। संध्या का वर्णन भी दर्शनीय हैं-

▶ प्रकृति का मानवीकरण कर प्रकृति को नारी रूप में चित्रित करना भी पंत का प्रिय स्वाभाव है

"कहो तुम रूपसि कौन?
व्योम से उतर रही चुपचाप,
सुनहला फैला केशकलाप,
मधुर मथर मृदु मौन।"

पंत काव्य तो प्रकृति काव्य है। प्रकृति के माध्यम से उन्होंने दार्शनिक भावनाओं की अभिव्यक्ति की ओर प्रकृति पर नारी का आरोपण करके विविध रूप भी दिए। सारी प्रकृति में असीम भावों की प्रतिच्छाया चेतना है; पंतजी इसी भावना को व्यक्त करते है-

▶ पन्त की कविताएँ प्रकृति की कविताएँ हैं

"कनक छाया में जब कि सकाल, खोलती कलिका उर के द्वार,
सुरभि पीड़ित मधुपों के बाल, तड़प बन जाते हैं गुज्जार,
न जाने ढुलक ओस में कौन, खींच लेता मेरे दृग मौन।

कवि पंत के काव्य के कई सोपान हैं। उनकी 'युगांत' काव्य कृति से पूर्ववर्ती कृतियों में प्रकृति चित्रण का सौंदर्य है। अनन्त शक्ति के प्रति एक आकर्षण उन कृतियों में हैं। अपने काव्य में कवि पंतजी ने प्रकृति चित्रण के अनेक रूपों का उभारा है। वे प्रकृति के अंग अंग का चित्रण करने में अत्यधिक सफल कवि रहे हैं......

"शांत स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्जवल।
अपलक अनन्त नीरव भूतल।
सैकत शय्या पर मुग्ध धवल तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रांत, कलान्त निश्छल।"

▶ अपने काव्य में कवि पंतजी ने प्रकृति चित्रण के अनेक रूपों का उभरा है

प्रकृति के अंक में पलनेवाला पंत उस सुन्दर सौम्य रूप प्रकृति के प्रति सदा प्रभावित रहेगा। वास्तव में काव्य में पंत और प्रकृति समन्वित रूप से साकार है।

पंतजी ने प्रकृति की एक एक वस्तु में चेतना पहचानी है, यह उनकी रचनाओं में स्पष्ट कर चुके हैं। प्रकृति का उन्होंने शरीर ही नहीं देखा, मन भी देखा है, और देखी है उस मन की

भावनाएं भी। नदी, सुमन, नक्षत्र, बादल आदि के संपर्क में वे आते हैं तो उनके रूप निहारने की अपेक्षा उनके हृदय की बात सुनना चाहते हैं। सरिता के सम्बन्ध में अपनी आध्यात्मिक माँ से वे कहते हैं-

> ▶ कवि पंत ने प्रकृति का शरीर ही नहीं मन भी देखा है।

"मैं भी उसके गीत सीखने
आज गई थी उसके पास,
उसके कैसे मृदुल भाव है,
उज्जवल तन, मन भी उज्ज्वल।"

वास्तव में पंतजी ने प्रकृति पर सबसे अधिक लिखा है। 'वीणा' से 'काला और बूढा चाँद' तक उनके समस्त काव्य ग्रथ उनके प्रकृति प्रेम के परिचायक है। उनका प्रकृति प्रेम यहाँ तक बढ़ा हुआ है कि उन्होंने एक एक विषय भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से अनेकबार लिखा। छाया, प्रकाश, संध्या, प्रभात, नक्षत्र, चांदनी, सूर्य, चंद्र, पशु, पक्षी, लहर, सरोवर, लता, बादल, पवन, सावन, शरद, पतझर, बसंद, पर्वत, समुद्र, पृथ्वी, आकाश, आदि। केवल वर्णन की दृष्टि से बड़ी भारी प्राकृतिक निधि उसके काव्य ग्रंथों में सुरक्षित है।

> ▶ प्रकृति पंतजी की आत्मा में समाई हुई है

प्रकृति पंतजी की आत्मा में समाई हुई है। वही उनका प्राण है। वे प्रकृति साहचर्य के वास्तविक आनंद के भोक्ता है। उसी से उसका प्रत्यक्ष संबंध है।

3.3.3 पंत की काव्य भाषा

पल्लव को उसकी भूमिका के कारण छायावाद का मनीफेस्टो कहा गया है। भाषा एवं भाव की एकता पर पंत जी विशेष बल देते हैं। अनुभूति को प्रेषणीय बनाने के लिए वे व्याकरण की लौह-शृंखलाओं को तोड़ते हुए विचलन प्रवृत्ति का भी परिचय देते हैं। पल्लव की भूमिका में कवि ने खड़ी बोली को हिन्दी काव्य भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की जोरदार वकालत करते हुए लिखा- "हिन्दी ने अब तुतलाना छोड़ दिया, वह प्रिय को 'प्रिय' कहने लगी। उसका किशोर कण्ठ फूट गया, अस्फुट अंग कट-छट गए।" पल्लव की भाषा को भावानुकूल बनाने के लिए कवि ने पर्याप्त श्रम किया है। पल्लव की भूमिका में इसका संकेत निम्न पंक्तियों में प्राप्त होता है- "जिस प्रकार बड़ी चुवाने से पहले उड़द की पीठी को मथकर हल्का तथा कोमल कर लेना पड़ता है, कविता के स्वरूप में भावों को सांचे में ढालने के पूर्व भाषा को भी हृदय के ताप में गलाकर कोमल, करुण, सरस एवं प्रांजल कर लेना पड़ता है।"

काव्य भाषा सामान्य भाषा से अलग होती है क्योंकि उसमें रागात्मकता, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता एवं ध्वनि आदि तत्व रहते हैं। काव्य भाषा अपनी अर्थवत्ता के लिए नये-नये उपादानों का संधान करती है। इसीलिए वह सामान्य भाषा की तुलना में विचलित और अटपटी, स्वच्छन्द और लचीली, सुसंस्कृत और परिमार्जित, जीवंत और प्रभावी बहुव्यंजक और अनुभूति प्रेषक होती है। अपनी अभिव्यक्ति को धारदार बनाने के लिए पंत जी ने भी कहीं-कहीं व्याकरणीय नियमों का उल्लंघन कर नवीन प्रयोग किए हैं। कवि के लिए नितान्त आवश्यक तत्व है- प्रेषणीयता। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए वह सामान्य भाषा से काव्य भाषा को विचलित कर देता है। शब्द के स्तर पर उपलब्ध वह अनेक विकल्पनों में से ऐसे विकल्प का चयन करता है जो उसके विचार तथा विषय को भली-भाँति व्यक्त करने में समर्थ होता है।

> ▶ कवि के लिए नितान्त आवश्यक तत्व है- प्रेषणीयता

पंत की भाषा उनकी संवेदनाओं को चित्रोपम ढंग से अभिव्यक्ति करती है अर्थात् उसमें

चित्रोपमता का गुण विद्यमान है। उदाहरणार्थ-

एक पल मेरे प्रिया के दृग पलक,
थे उठे ऊपर सहज नीचे गिरे
चपलता ने इसे विकम्पित पुलक से
दृढ़ किया मानों प्रणय सम्बन्ध था।

पंत की भाषा में सुकुमारता, कोमलता, नाद सौन्दर्य एवं माधुर्य भी विद्यमान है। उदाहरण के लिए नौका विहार कविता की निम्न पंक्तियाँ उद्धृत है-

मृदु मन्द-मन्द मन्थर-मन्थर
लघुतरणि हंसिनी सी सुन्दर
तिर रही खोल पालों के पर।

पंत की भाषा में नाद सौन्दर्य प्रतीकात्मकता एवं अलंकारिकता जैसे गुण भी उपलब्ध होते हैं। उनकी उपमायें भावव्यंजना को तीव्र करने में सहायक हुई हैं जैसे-

जब अचानक अनिल की छवि में पला
एक जलकण जलद शिशु-सा पलक पर
आ पड़ा सुकुमारता का गान-सा
चाह-सा सुधि-सा सगुन-सा स्वप्न-सा॥

▶ पंत की भाषा में सुकुमारता, कोमलता, नाद सौन्दर्य एवं माधुर्य भी विद्यमान है

पंत जी अलंकारों को काव्य के वाह्य रूप की सजावट करने वाला साधन मात्र नहीं मानते। अनुसार, "अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभव्यक्ति के विशेष उनके द्वार हैं। हे वाणी के हास, अश्रु, स्वप्न पुलक, हाव-भाव हैं।"

▶ पंत की शब्द चयन की शक्ति अभूतपूर्व है

पंत की शब्द चयन की शक्ति अपूर्व है। युगवाणी युगान्त एवं ग्राम्या में उनकी भाषा का स्वरूप बदला हुआ है तो अन्तश्चेतनावादी एवं नवमानवतावादी कृतियों में भी भाषा का स्वरूप अलग है। पल्लव में संकलित परिवर्तन कविता में भाषा का संस्कृतिनिष्ठ रूप है। जैसे-

लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरन्तर।
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षस्थल पर।

3.3.4 पंत काव्य में कोमल कल्पना

▶ काव्यवस्तु का सम्पूर्ण मूर्त-विधान कल्पना से ही सम्पन्न होता है।

काव्यवस्तु का सम्पूर्ण मूर्त-विधान कल्पना से ही सम्पन्न होता है। इसकी महत्ता को ब्लेक (Black) ने इस प्रकार स्वीकार किया है- "केवल एक शक्ति कवि का निर्माण करती है वह है कल्पना दिव्य दृष्टि।" स्वच्छन्द काव्य का तो कल्पना प्राण ही है। उसका सीधा सम्बन्ध हृदयगत अनुभूतियों से होने के कारण काव्य में उसकी उपादेयता निर्विवाद है। कल्पना वह मानसिक क्रिया है जो नवीन रूपों की सृष्टि बिम्ब निर्माण या मूर्ति निर्माण करती है।"

पंत और कल्पना- पंत की सभी रचनाओं में कल्पना की अधिकता मिलती है, जिससे बौद्धिकता की प्रधानता उभर आयी है। बच्चन जी के अनुसार- "पंत जी कल्पना के गायक हैं, अनुभूति के नहीं- इच्छा के गायक हैं- वासना, तीव्रतम इच्छा के नहीं, वैसे तो उनके काव्य में कई प्रकार की कल्पना के दर्शन होते हैं- कहीं क्लिष्ट, कहीं दुरारूढ़, कहीं मधुर एवं रंगीन

पर अधिकांश स्थलों पर उसमें कोमलता एवं सुकुमार की ही प्रधानता है।

▶ पंत की सभी रचनाओं में कल्पना की अधिकता मिलती है, जिससे बौद्धिकता की प्रधानता उभर आयी है।

प्रकृति-चित्रण में कोमलता- प्रकृति के नाना रूपों को जिस भाव बोध के साथ उन्होंने उभारा है, उसमें उनकी कल्पना के कई रूप उभरकर सामने आये हैं-कवि प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण करके, जब आत्मविभोर होकर तल्लीनता में हृदय की मुक्तावस्था को प्राप्त होकर कल्पना द्वारा उस सौंदर्य की अभिव्यक्ति नाना रूपों में इस प्रकार करता है कि पाठक को प्रत्यक्ष दर्शन का सा आनन्द मिलता है, तब वहाँ यही सौन्दर्यानुभूति सौंदर्य चेतना सक्रिय दिखाई देती है-

आज सोने का संध्याकाल

जल रहा लाक्षागृह सा विकराल

पटक रवि को बलि सा पाताल

एक ही वामन पग में

लपकता है तमिका तत्काल

▶ सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति से गहरा प्रेम था।

प्रेम और सौन्दर्य सम्बन्धी कल्पना- 'ग्रन्थि' जो कवि के ही शब्दों में एकदम काल्पनिक है, एक विरह-प्रधान काव्य है। इसी प्रकार 'उच्छ्वास' भी है। ऐसे चित्रों में कल्पना भावना की सहेली बनकर ही उभरी है।

प्रेम के सम्बन्ध में कवि ने अनेक कल्पनाएँ की हैं। कहीं प्रेम झूमते गज सा विचर रहा है 'वह हृदय रखता है मस्तिष्क नही' कहीं उनका प्रेम वारि पीकर पूछता है वर सदा, प्रणय के बाद प्रिया की प्रत्येक चेष्टा उन्हें अहलादित करती है। रूप चित्रण की कल्पना-

▶ 'ग्रन्थि' जो कवि के ही शब्दों में एकदम काल्पनिक है

तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में पावन गंगा स्नान।

तुम्हारी वाणी में कल्याणि त्रिवेणी की लहरों का गान।

भाव निरूपण में कोमलता- पंत जी में अनुभूति से अधिक कल्पना है। कल्पना के सहारे ग्रन्थि में विरह-वेदना का जो भावोन्मादपूर्ण चित्र अंकित किया है वह अत्यन्त सजीव एवं अनूठा है। इसी कारण कवि हताश होकर तीव्र वेदना में चीखता हुआ कहता है-

शैवालिनी! जाओ मिलो तुम सिन्धु से

अनिल! आलिंगन करो भू गगन का।

*****

पर हृदय! सब भाँति तू कंगाल है।

▶ पंत जी में अनुभूति से अधिक कल्पना है

वस्तु-वर्णन में कोमलता- पंत जी की कोमल-कल्पना वस्तु-वर्णन में भी अत्यन्त सजीव हो उठी है। उन्होंने जिस वस्तु का भी वर्णन किया है उसकी अमिट छाप उभर आती है। 'पल्लव' कविता में पल्लवों के रंगीन चित्र अंकित करते हुए कवि की कोमल कल्पना प्रखर हो उठी है और कवि ने अपनी कल्पना की तूलिका से पल्लवों के रंगीन चित्र उभारे हैं-

▶ 'पल्लव' कविता में पल्लवों के रंगीन चित्र अंकित करते हुए कवि की कोमल कल्पना प्रखर हो उठी है

दिवस का इनमें रजत प्रसार उषा का स्वर्ण सुहास

निशा का तुहिन अश्रु-शृंगार साँझ का निःखल राग।

नवोढ़ा की लज्जा सुकुमार, तरुणमय सुन्दरता की आग

जीवन की विभिन्न दशाओं के चित्रण में कोमलता- 'युगान्त' में कवि सौन्दर्य से शिव की

ओर मुड़ता दिखायी देता है। अतः उसकी कल्पना ऐसे जीवन सत्य की ओर बढ़ती है जो समाज को मानवता के सूत्र में बाँध सके। नवीन परिणीता के सद्य वैधव्य के इस स्केच में अपनी कोमल कल्पना के द्वारा कवि ने वेदना, करुणा एवं पीड़ा का चित्र अंकित किया है-

अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हलदी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल, खिले भी चुम्बन शून्य कपोल।
हाय! रुक गया यहीं संसार, बना सिंदूर अंगार,
बातहत लतिका वह सुकुमार, पड़ी है छिन्नाधार।

▶ 'युगान्त' में कवि सौन्दर्य से शिव की ओर मुड़ता दिखायी देता है

आध्यात्मिक कल्पना- 'स्वर्ण किरण' से 'लोकायतन' की रचनाओं में इसी गूढ़ रहस्यात्मक, किन्तु आकर्षक अध्यात्मिक चेतना की सहयोगिनी कल्पना के दर्शन होते हैं-

स्वर्ग और वसुधा का करने स्वर्णिम परिणय,
इन्द्रचाप का सेतुश्च रहे तुम ज्योर्तिमय।

▶ 'स्वर्ण किरण' से 'लोकायतन' की रचनाओं में अध्यात्मिक कल्पना का झलक देख सकती है

भविष्यत कल्पना- डॉ. (श्रीमती) ब्रजरानी भार्गव की मान्यता है कि 'लोकायतन' भविष्योन्मुखी काव्य है। जीवन-साधना के अनुभूत सत्य के आधार पर वर्तमान से ऊपर उठकर मंगलप्रद सुखमय भविष्य का अंकन करना ही यहाँ महाकाव्यकार का प्रमुख उद्देश्य है। अतः नव सृजन की प्रेरणा भी कवि की कल्पना शक्ति का ही आधार है-

देख रहा मैं मनश्चक्षु के सम्मुख,
के जन भविष्य का स्वप्न तुम्हारा उज्ज्वल।
चूम रहा नत स्वप्न मुग्ध भू पद तल,
विहंस रहा जड़िमा बन चेतन मङ्गल॥

▶ 'लोकायतन' भविष्योन्मुखी काव्य है

नश्वरता में कोमलता- नश्वरता के भाव में भी पंत जी ने कोमलता का ही आश्रय लिया है। उनकी कल्पनाएँ आकर्षक और मधुर हैं-

मोतियों जड़ी ओस की डार,
हिला जाता चुपचाप बयार।

▶ नश्वरता के भाव में पंत जी ने कोमलता का आश्रय लिया है

भाषा में कोमलता- पन्त जी भावानुकूली शब्द चयन में बड़े दक्ष हैं।

घूम धुँआरे काजरे-कारे, हम ही बिकरारे बादर,
मदनराज रे बीर बहादुर, पावस के उड़ते फणिधर।

▶ पन्त जी भावानुकूली शब्द चयन में बड़े दक्ष हैं

अलंकार योजना में कोमलता- इस कल्पना का प्रयोग उन्होंने सादृश्य विधान में किया है। उनके उपमा, रूपक अत्यन्त सरस और प्रभावी हैं जिनमें सुकुमार कल्पना के सहारे ही नवीनता लाने का प्रयास पंत जी ने किया है-

मेरा पावस ऋतु-सा जीवन
मानस-सा उमड़ा अपार मन।

▶ पंत जी के उपमा, रूपक अत्यन्त सरस और प्रभावी हैं

छन्द योजना- लय, सौन्दर्य कोमलकान्त पदावली से छन्दों में एक प्रकार की चिकनाहट सी आ गयी है

> ▶ पन्त जी छन्द योजना में भी दक्ष हैं

> ▶ पंत सुकुमार कल्पना के सिद्धहस्त कवि थे

आज बचपन का कोमल गात जरा का पीला पात।

चार दिन सुखद चाँदनी रति और फिर अन्धकार अजात।।

उपसंहार- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पंत सुकुमार कल्पना के सिद्धहस्त कवि थे। बाजपेयी के अनुसार, कल्पना ही पंतजी की कविता की विशेषता, रमणीयता का विस्तार करती है।

3.3.5 पंत की काव्य यात्रा के विविध सोपान

छायावादी कवियों में विकास के सोपान जितने स्पष्ट रूप से पन्त जी की कविताओं में दृष्टिगत होते हैं उतने अन्य कवियों में नहीं। इसका कारण विकासमान कवि के विचारों में होने वाला परिवर्तन है जो समय-समय पर उनकी रचनाओं को गहरे स्तर पर प्रभावित करता है। इस दृष्टि से पंत जी की रचनाओं को निम्नांकित क्रम में रखा जा सकता है।

> ▶ पन्त जी के काव्य-ग्रन्थ निम्नांकित हैं- वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुन्जन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि मधुज्वाल, युगपथ, उत्तरा, अतिमा, वाणी, कला और बूढ़ा चाँद, अभिषेकिता; लोकायतन, गीतहंस, चित्रांगदा, संयोजिता, पतझर, एक भाव क्रांति, पुरुषोत्तम राम आदि

(1) **पहला सोपान**- पंत जी ने अपनी प्रथम कविता सन् 1907 में लिखी थी। 1907 से 1917 तक इनकी कविताओं का प्रथम सोपान है। इसी बीच इन्होंने एक छोटा सा उपन्यास 'हार' लिखा जो साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित हुआ

(2) **दूसरा सोपान**- 1918 से 1922 ई. तक का समय दूसरे सोपान के अंतर्गत आता है। इसमें ग्रंथ, उच्छ्वास, वीणा, छायण, स्वप्न आदि कविताओं का प्रणयन हुआ। डॉ. रामदेव शुक्ल लिखते हैं- "इस काल के पंत अत्यन्त भावुक, प्रकृति के प्रति अतिरिक्त मोह से ग्रस्त, वयः सन्धि की वायवी प्रेमाकुलता और अप्रकट पीड़ा से छटपटाते कवि के रूप में सामने आते हैं। इसी काल की कविताओं ने सबसे पहले छायावाद के समर्थकों और विरोधियों का ध्यान आकृष्ट किया। इस काल की रचनाओं में प्रकृति के भावुक किशोर के समर्पण का प्रमाण अनेक कविताएँ हैं।" इसी काल की 'मोह' कविता में पंत जी लिखते हैं:

छोड़ द्रुमो की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया,

बोले, तेरे बाल जाल में, कैसे उलझा दूं लोचन

भूल अभी से इस जग को।"

> ▶ **पन्त जी की अन्य रचनाएँ इस प्रकार हैं**- (1) हार (उपन्यास, (2) ज्योत्स्ना, रजतशिखर, शिल्पी, उत्तरशती (काव्य-रूपक), (3) मैं और मेरा जीवन, साठ वर्षः एक रेखांकन (जीवन-चरित्), (4) पाँच कहानियाँ (कहानी), (5) शिल्प-दर्शन (कला-समीक्षा), (6) छायावादः पुनर्मूल्यांकन (साहित्य समीक्षा), (7) कला और संस्कृति, गद्य-पथ (विविध)

(3) **तीसरा सोपान**- पंत जी की रचनाओं का तीसरा सोपान 1922 से 1928 ई. तक है कवि के लिए यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काल है। इसी काल में 'पल्लव' प्रकाशित हुआ था। डॉ. शुक्ल का कथन है- "1926 ई. में 'पल्लव' प्रकाशित हुआ जिसकी लम्बी भूमिका में पंत जी ने प्राचीन ब्रजभाषा- कविता, उनकी भाषा, उसकी अलंकरणप्रियता, छन्दप्रियता और स्त्री-सौंदर्य के प्रति उनकी आसक्ति की भर्त्सना की। उन्होंने भाषा के स्थान पर राष्ट्रभाषा का आह्वान किया। उनकी सबसे बड़ी देन है खड़ी बोली को काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए उसे अधिक अभिव्यंजनात्मक, संकेतात्मक, ध्वन्यात्मक, संगीतपूर्ण और श्रुति मधुर बनाना। इसी बीच 'पल्लव' की सभी और 'गुंजन' की अधिकांश कविताओं की रचना हुई। पंत जी की प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ प्रतिफलन इन्हीं दोनों संग्रहों की रचनाओं में देखा जा सकता है।

(4) **चौथा सोपान**- यहाँ तक आते-आते पन्त प्रगतिवादी हो गए हैं। 'युगान्त' का प्रकाशन सन् 1936 ई. में हुआ। यह विचित्र बात है कि पन्त के इस रूप को प्रगतिवादी कवियों ने स्वीकार नहीं किया। फिर भी प्रगतिवाद की सुन्दर अभिव्यक्ति इस काल की रचनाओं में हुई है।

(5) **अन्तिम सोपान**- यहाँ पहुँच कर पन्तजी को योगवादी, दार्शनिक एवं नयी कविता से प्रभावित देखा जा सकता है किन्तु इतना होने पर भी पन्त जी कभी छायावादी काव्यधारा से अलग नहीं हुए। हाँ, इतना अवश्य है कि अन्तिम सोपान में पन्त जी गम्भीर दार्शनिक भावों के कवि-रूप में स्मरणीय हैं। विद्वानों का ऐसा विचार है कि इस क्रम में अरविन्द दर्शन का प्रभाव उन पर सर्वाधिक गहरा है। 1961 में आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पन्त जी की कविताओं के अनेक संकलन भी प्रकाशित हो चुके हैं। 'लोकायतन' के सम्बन्ध में डॉ. शुक्ल लिखते हैं- 'लोकायतन' पन्त जी का महाकाव्य जो 'कविर्मनीषी की अप्रतिम प्रतिभा की प्रतिष्ठा के लिए लिखा गया है।' जीवन भर पन्त जी कवि कर्म द्वारा मानवीय कल्याण की चेष्टा में लगे रहे। लोकायतन में कवि के कर्त्तव्य का संकेत देते हुए वे लिखतें हैं-

"कविर्मनिषी का कर्त्तव्य सनातन

जीवन-मंगल का करना सुख-सर्जन।"

लोकायतन में पन्त ने कवि-कर्म को अत्यन्त उच्च भूमिका पर प्रतिष्ठित किया है लोकायतन में दो मुख्य पात्र हैं माधो गुरु और युग कवि वंशी। माधो गुरु वंशी को शिष्यवत् स्वीकार करते हैं, किन्तु शिष्य वंशी को यह लगता रहता है कि-

'मोहते गुरु रख शत छल वेश/असत् का होता गूढ़ स्वभाव

सरल था वंशी सहृदय प्राण/न मन में था भय द्वेष दुराव

आत्मतन्मयता कवि की शक्ति/ध्यान दल कौशल से कर भंग,

पिलाते उसे अचित-तम घूँट/कपट कर गुरु वंशी के संग।

माधे गुरु को यह लगता था कि -/"छीनकर उनका कीर्ति-किरीट,

घूमता वंशी बन सम्राट।"

> ▶ लोकायतन में पन्त ने कवि-कर्म को अत्यन्त उच्च भूमिका पर प्रतिष्ठित किया है

> ▶ पंत के काव्य में छायावाद की समस्त विशेषताएँ अपने पूर्ण वैभव के साथ उपस्थित हैं

डॉ. रामविलास शर्मा मानते हैं, माधो गुरु निराला हैं और पन्त हैं शिष्य वंशी।

उपसंहार- प्रस्तुत विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पन्त जी का काव्य-विकास एक निश्चित दिशा में हुआ है तथा उनके काव्य में छायावाद की समस्त विशेषताएँ अपने पूर्ण वैभव के साथ उपस्थित हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति के 'सुकुमार कवि' के रूप में जाने जाते हैं। वे छायावादी काव्य के चार स्तंभों में एक थे, और प्रकृति के तत्वों को प्रतीकों और छवियों के रूप में उन्होंने काव्य का आधार बनाया। 'पल्लव' को उसकी भूमिका के कारण छायावाद का 'मानीफेस्टो' कहा गया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रथम रश्मि के आगमन के बाद प्रकृति में क्या परिवर्तन होते हैं - 'प्रथम रश्मि' कविता के संदर्भ में व्यक्त कीजिए।
2. सुमित्रानन्दन पंत का जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिए।
3. सुमित्रानंदन पंत के दार्शनिक विचारों पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. सुमित्रानंदन पंत के नवचेतनावादी दृष्टि के बारे में व्यक्त कीजिए।
5. छायावादी काव्य और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पर अपना विचार प्रकट कीजिए।
6. 'निराला- नवजागरण के कवि'- स्पष्ट कीजिए।
7. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की भाषा शैली पर विचार कीजिए।
8. राम की शक्ति पूजा कविता की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
9. राम की शक्ति पूजा के उद्देश्य पर विचार प्रकट कीजिए।
10. 'प्रकृति का सुकुमार कवि' पंत पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. छायावादी कवियों की गीत सृष्टि, डॉ. उपेन्द्र
2. पन्त और पल्लव, निराला
3. पन्त जी का नूतन काव्य और दर्शन, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. कविवर सुमित्रानंदन पंत - डॉ. सुरेशतन्द्र गुप्त - उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ
2. सुमित्रानंदन पंत रचना संचयन - कुमार विमल - साहित्य आदमी, नई दिल्ली
3. छायावाद का पुनःपाठ - राजेश कुमार गर्ग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

महादेवी वर्मा- मैं नीर भरी दुःख की बदली

Detailed Study

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवियत्री महादेवी वर्मा से परिचित होता है
- महादेवी वर्मा कृत मैं नीर भरी दुख की बदली काव्य का विस्तृत अध्ययन करता है
- महादेवी वर्मा के काव्य में व्याप्त विरह से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

'आधुनिक काल की मीरा' के नाम से मशहूर महादेवी वर्मा का जन्म 1907 में होली के दिन फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उज्जैन में हुई, जहाँ उन्होंने एम.ए. पूरा किया। प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए.। छोटी उम्र से ही चित्रकला, संगीत और कविता की ओर रुझान रखने वाली महादेवी को अपने छात्र जीवन के दौरान ही काव्यात्मक प्रसिध्दि मिलनी शुरू हो गई थी। बाद के वर्षों में वे लम्बे समय तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या रहीं। वह इलाहाबाद से प्रकाशित 'चाँद' पत्रिका की संपादक थीं और उन्होंने प्रयाग में 'साहित्यकार संसद' नामक संस्था की स्थापना की। 'निराला वैशिष्टिय' की स्वामिनी महादेवी वर्मा को छायावाद का चौथा स्तंभ भी कहा जाता है। उनके मुख्य काव्य विषय प्रेम और दर्द की भावना, निर्जीव और चेतन एकता की भावना, सौंदर्य की भावना, मूल्य और रहस्य की भावना हैं। वह मुख्य रूप से एक गीतकार हैं और उनकी कविता में परंपरा और मौलिकता का अनूठा मिश्रण दिखता है। उन्होंने कविताओं के साथ ही रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध, डायरी आदि गद्य विधाओं में भी योगदान किया है। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्य गीत', 'यामा', 'दीपशिखा', 'संधिनी, 'प्रथम आयाम', 'सप्तपर्णा', 'अग्निरेखा' उनके काव्य-संग्रह हैं। रेखाचित्रों का संकलन 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में किया गया है। 'शृंखला की कड़ियाँ', 'विवेचनात्मक गद्य', 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध', 'संकल्पिता', 'हिमालय', 'क्षणदा' उनके निबंधों का संकलन है। इस अध्याय के माध्यम से 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता का विस्तृत अध्ययन है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

छायावाद, चौथा स्तंभ, अनूठा, मौलिकता, रहस्य, मूल्य, सौन्दर्य भावना

Discussion / चर्चा

'मैं नीर भरी दुख की बदली' महादेवी वर्मा द्वारा रचित चर्चित कविता है। यह गीत एक बदली पर आधारित है। बदली अपना सीधा परिचय देती है। इसमें सबसे पहले मैं को समझना चाहिए। प्रथम तो स्पष्ट है कि बदली अपना परिचय दे रही है तो बदली ही मैं है। यहाँ वाक्य का स्त्रीलिंग होने के कारण मैं कवयत्री केलिए या किसी दुखभरी स्त्री के लिए भी हो सकता है। इसलिए पूरी कविता को दो अर्थों में देखा जा सकता है। पहला जलपूर्ण उमड़ते-घुमड़ते बादल, और दूसरा दुखी और वेदनाग्रस्त स्त्री। इस पाठ का उद्देश्य इस कविता की पंक्तियों के माध्यम से कविता को गहराई से समझने का प्रयास करना है।

महादेवी वर्मा

मैं नीर भरी दुःख की बदली

स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली !

अर्थ- कवयित्री कहती है कि कंपन में ही चिर शांति निवास करती है। रुदन के बाद ही दुःखी मन प्रसन्नता महसूस करता है। आँखों में दीपक के समान वेदना की भावना ज्वलित रहती है जिस कारण आँसू झरना के समान गिरते रहते हैं। कवयित्री के कहने का भाव है कि वियोग की दशा में मानसिक व्यथा आँसू बनकर जब गिर जाती है तो मन में एक विशेष शांति महसूस होती है।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियाँ विरह की गायिका कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा विरचित कविता 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' शीर्षक पाठ से ली गई हैं। इसमें कवयित्री ने विरह-वेदना की दशा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है।

▶ विरह वेदना का मार्मिक चित्रण

वेदना की गायिका का मानना है कि अभाव से उत्पन्न दुःख अति प्रिय होता है, क्योंकि इससे प्रेमी के प्रति प्रेम दृढ़ होता है। विरही अपनी वेदना रूपी आँसू से प्रेम रूपी बेलि को सींचती रहती है, जिससे प्रेमी की याद दीपक के समान आँखों में जलती रहती है। साथ ही, आँसू के गिरने से मन हल्का हो जाता है और कवयित्री अपने अन्दर एक अलौकिक शांति का अनुभव करती है। इसीलिए कवयित्री अपने को बदली कहकर यह स्पष्ट करना चाहती है कि बदली जल बरसाकर रिक्त हो जाती है और वह आँसू बहाकर शून्यता की स्थिति प्राप्त

करना चाहती है।

मेरा पग-पग संगीत भ्रा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली !

अर्थ- कवयित्री कहती हैं कि उसका हर कदम संगीत से पूर्ण है तथा उसकी साँसो से स्वप्न रूपी पुष्प की धूलि (गंध) निकलती है। आकाश के नये-नये रंग टुपट्टा जैसे प्रतीत होते हैं तथा जिसकी छाया में चंदन वन से आने वाली हवा पलती है।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियाँ कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखित कविता 'मैं नीर भरी -दुःख की बदली' शीर्षक पाठ से ली गई हैं। इनमें कवयित्री ने वेदना की दशा का वर्णन किया है।

▶ मिलन की व्यग्रता एवं मन में उभरनेवाले विभिन्न भावों का वर्णन

कवयित्री का कहना है कि वेदना की इस दशा में उसके हर कदम संगीतमय हो गये हैं। उसकी साँसों से कल्पना रूपी पुष्प की धूलि झरती प्रतीत होती हैं तो आकाश उसके दुपट्टे के समान नये-नये रंग उपस्थित कर रहा है। कवयित्री के कहने का भाव यह है कि वह अपने प्रियतम से मिलने के लिए इस प्रकार सज-धज जाना चाहती हैं कि उसका प्रियतम सहजता के साथ उसे स्वीकार कर ले। इस प्रकार मिलन की व्यग्रता के कारण कवयित्री के मन में तरह-तरह के भाव जाग्रत होते हैं।

मैं क्षितिज-भृकुटी पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव जीवन-अंकुर बन निकली!

अर्थ- कवयित्री कहती हैं कि वह अपने अज्ञात प्रियतम-मिलन की क्षीण आशा अथवा निराशा के कारण उसकी चिंता लगातार बढ़ती जा रही है। उसे लगता है जैसे प्यासी धरती पर बादल जल बरसा कर नया जीवन प्रदान करता है अर्थात् तप्त धरती को शांति प्रदान करता है, वैसे ही वेदना रूपी आँसू के जल गिरने से उसके मन की- मलिनता अथवा निराशा दूर होती है तथा मन में नई आशा का संचार होता है।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियाँ वेदना की गायिका कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखित कविता 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' शीर्षक पाठ से ली गई हैं। इसमें कवयित्री ने वेदना को चरमावस्था का वर्णन किया है।

▶ आँसुओं की तुलना बदली से करती हैं

कवयित्री का कहना है कि वेदना की ज्वाला जितनी तीव्र होती जाती है. उसकी आँखों से अश्रुजल जितने गिरते जाते हैं, उसकी भावना उतनी ही परिपुष्ट होती जाती है। तात्पर्य कि कवयित्री के प्रेमी-मिलन की लालसा लगातार बढ़ती जाती है। इसीलिए कवयित्री अपने आँसुओं की तुलना बदली से करती हुई यह बताना चाहती है कि जिस प्रकार बदली जलपूर्ण होकर सारे आकाश में छा जाती है और जल बरसाकर सारे विश्व को नया जीवन प्रदान करती है, उसी प्रकार कवयित्री वेदना का भार वहन करती हुई अपने करूणा जल से सबको नया

जीवन प्रदान करना चाहती है।

पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अंत खिली।

अर्थ- कवयित्री अपने अज्ञात, असीम प्रियतम से आग्रह करती है कि वह इस प्रकार आए कि आने वाला पथ न तो मलिन हो और न ही कोई पदचिह्न ही शेष रह जाए, बल्कि वह इस प्रकार आए कि मात्र सुख या आनंद का ही अनुभव हो।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखित कविता- 'मैं नीर भरी दुख की बदली' शीर्षक पाठ से ली गई हैं।

इसमें कवयित्री ने अपने अज्ञात प्रियतम से आग्रह किया है कि वह इस प्रकार आए कि उसका प्रेम-पथ न तो मलिन होने पाए और न ही अपना पद-चिह्न छोड़े ताकि कवयित्री की अनंत में समाहित होने की भावना क्षीण न हो। कवयित्री का मानना है कि तृप्ति मिलते ही व्यक्ति का प्रयास मंद हो जाता है, इसलिए कवयित्री चाहती है कि उसकी वेदना उसे सतत् कर्मपथ पर अग्रसर रखे। साथ ही, कवयित्री यह भी चाहती है कि संसार में उसकी याद करके लोग आनंद का अनुभव करें।

▶ अज्ञात प्रियतम से कवयित्री आग्रह प्रगट करते है

विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आजचली।

अर्थ- कवयित्री कहती है कि चाहे इस विस्तृत संसार में कोई अपना न हो। उसका परिचय तथा उसके जीवन का इतिहास यही हो। उसके मन में इतिहास में अमर बनने के विचार आये थे,जो स्वतः नष्ट हो गए हैं।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियाँ वेदना की अमर गायिका कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा विरचित कविता 'मैं नीर भरी दुख की बदली' से ली गई हैं। इनमें कवयित्री ने अस्तित्वहीन बनकर रहने की इच्छा प्रकट की है।

कवयित्री का कहना है कि वह संसार से किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं रखती। वह मात्र वेदना की गायिका के रूप में अपना इतिहास रचना चाहती है, परन्तु यह विचार भी क्षण भर में लुप्त हो जाते हैं, क्योंकि वह तो नीर भरी दुख की बदली बनकर रहना चाहती है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कवयित्री अपनी वेदना के माध्यम से उस असीम में समाहित होना चाहती है। उसमें मिलने के बाद व्यक्ति अस्तित्वहीन हो जाता है और उसकी स्मृति ही शेष रह जाती है।

▶ अपनी वेदना में समाहित होने की मानसिक इच्छा

3.4.1 महादेवी वर्मा की रहस्यभावना

रहस्य-भावना महादेवी के काव्य की सर्वप्रमुख विशेषता है। विद्वानों ने आत्मा और ब्रह्म की

पारस्परिक प्रणयानुभूति को रहस्यवाद की संज्ञा दी है। महादेवी रहस्यवादी कवयित्री है कण-कण में जिस महाशक्ति का आभास मिलता है उस अज्ञात, असीम ब्रह्म के प्रति जिज्ञासा होना स्वाभाविक है उस अज्ञात सत्ता से भावुक हृदय कवि एक सम्बन्ध-भाव स्थापित कर लेता है। इस सम्बन्ध के द्वारा हृदय की अनेक वृत्तियाँ अभिव्यक्त हो सकती हैं, जैसे- रूप-वर्णन, शृंगार-वर्णन, विरह-मिलन-अभिसार आदि। इन सभी अन्तर्वृत्तियों का प्रकाशन लौकिक प्रेम-वर्णन में भी होता है और रहस्यवाद में भी। महादेवी वर्मा की वेदना वैयक्तिक है अथवा रहस्यात्मक, इस पर अनेक विद्वानों ने प्रश्न-चिह्न लगाये हैं। उनके काव्य में अनुस्यूत करुणा का कारण उनका विफल दाम्पत्य जीवन है। यह भाव भी अनेक विद्वानों ने व्यक्त किया है, परन्तु उनके काव्य में लौकिक प्रिय के स्थान पर अलौकिक ब्रह्म को ही आलम्बन बनाकर हृदयोद्गार व्यक्त किये गये हैं, यह भी सर्वस्वीकृत है।

> ▶ महादेवी रहस्यवादी कवयित्री है कण-कण में जिस महाशक्ति का आभास मिलता है

ब्रह्म को प्रियतम मानकर हृदयोद्गारों की अभिव्यक्ति में तीन तत्त्व प्रधान होते हैं-

1. प्रियतम- साध्य-तत्त्व, 2. प्रेयसी-साधिका-तत्त्व, 3. प्रकृति साधना-भूमि उनकी रहस्य-भावना के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- (1) 'मैं मतवाली इधर उधर प्रिय अलबेला-सा है।' (2) 'सखि मैं हूँ अमर सुहाग भरी, प्रिय के अनन्त अनुराग भरी।'

महादेवी जी की रहस्य-भावना की प्रायः विद्वान् आलोचकों ने प्रशंसा करते हुए उन्हें उच्चकोटि की रहस्यवादी कवयित्री माना है। महादेवी का रहस्यवाद जहाँ एक ओर पूरा-का पूरा बौद्धिक है, वहीं दूसरी ओर उनकी रहस्यानुभूति सांस्कृतिक है। कवयित्री ने अपनी रहस्य-भावना के बारे में लिखा है, "आज गीत जिसे नये रहस्यवाद के रूप में ग्रहण कर रहे हैं, वह इन सबकी विशेषताओं से युक्त होने पर भी उन सबसे भिन्न है। उसने परा विद्या की अपार्थिवता ली, वेदान्त के अद्वैत की छायामात्र ग्रहण की, लौकिक प्रेम से तीव्रता उधार ली और इन सबको कबीर के सांकेतिक दाम्पत्य-भाव-सूत्र में बाँधकर एक निराले स्नेह-सम्बन्ध की सृष्टि कर डाली, जो मनुष्य के हृदय को आलम्बन दे सका, उसे पार्थिव प्रेम से ऊपर उठा सका तथा मस्तिष्क को हृदयमय और हृदय को मस्तिष्कमय बना सका।" महादेवी जी की रहस्यभावना पर मध्ययुगीन सन्त एवं भक्त कवियों का प्रभाव तो अवश्य पड़ा है किन्तु उन्होंने आज के चिर संतप्त पृथ्वी के आम आदमी की करुणा-पीड़ा चीत्कार को ग्रहण करते हुए सर्वत्र एक चेतना अथवा आत्मा की अनुभूति की है। उन्होंने वर्तमान युगीन मानवता की पीड़ा-वेदना के साथ निज का सम्मेल कर अपनी रहस्य-भावना को अभिव्यंजित किया है। अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी कि महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति विशुद्ध राष्ट्रीय एवं मानवतामूलक है।

> ▶ महादेवी का रहस्यवाद जहाँ एक ओर पूरा-का पूरा बौद्धिक है, वहीं दूसरी ओर उनकी रहस्यानुभूति सांस्कृतिक है

महादेवी की रहस्यभावना पूर्ण रूप से वैयक्तिक है। वैयक्तिकता से तात्पर्य यह है कि कवि ने जिन भावों को सर्वसाधारण भाव बना दिया है, वह प्रारम्भ में उसके अपने राग-विरागों के मनन के द्वारा अनुरंजित चित्र में उपस्थित हुए है। विचारपूर्वक देखें तो महादेवी का विरह निवेदन संत कवियों के सादृश्य हैं किन्तु इनकी अभिव्यक्ति उनसे अधिक सूक्ष्म और प्रभावोत्पादक है। संतों का रहस्यवाद साधनात्मक है। अतः उसमें बौद्धिकता का भार और चिन्तन का आभास पाया जाता है। महादेवी के रहस्यवाद में भावों का आवेश भी विद्यमान है। महादेवी ने दीपक के माध्यम से सर्वत्र आत्म-वेदना, विश्व करुणा एवं आध्यात्मिक प्रेम को व्यक्त किया है। महादेवी की रहस्यानुभूति उनकी वैयक्तिक वृत्तियों, उनके पारिवारिक

संस्कारों, भारतीय साहित्य की परम्पराओं मध्यकालीन सन्तों की भाव-धाव तथा सामयिक कवियों की रचनाओं के प्रभाव से युक्त है। महादेवी का रहस्यवादी काव्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा हुआ है। उसकी रहस्यानुभूति शुद्ध एवं यथार्थ रहस्यानुभूति है। उसकी अभिव्यक्ति लौकिक शब्दावली में हुई है। 'नीहार' के प्रथम गीत से लेकर 'दीप-शिखा' तक रहस्यानुभूति की धारा अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित हुई है। रहस्यानुभूति की पाँच अवस्थाएँ मानी गई हैं- (1) जिज्ञासा, (2) आस्था, (3) अद्वैत-भावना, (4) मिलन की अनुभूति महादेवी के काव्य जीवन के प्रारम्भ में ही अलौकिक सत्ता के प्रति दृष्टिकोण एवं बोध एक गम्भीर रागात्मक भाव में परिणत हो चुका था। अतः उनकी रहस्यानुभूति में जिज्ञासा का अस्तित्व नहीं मिलता। आस्था की अभिव्यक्ति सर्वत्र गम्भीरता के साथ हुई है।

- ▶ रहस्यानुभूति की पाँच अवस्थाएँ मानी गई हैं- (1) जिज्ञासा, (2) आस्था, (3) अद्वैत-भावना, (4) मिलन की अनुभूति

छिपा है जननी का अस्तित्व, रुदन में शिशु के अर्थ विहीन।

मिलेगा चित्रकार का ज्ञान, चित्र की जड़ता में लीन।

साधक और साध्य की एकात्मक अनुभूति रहस्यवाद का मूलाधार है। महादेवी की दार्शनिक मान्यताओं में भारतीय अद्वैतवाद के सभी तत्त्व मिलते हैं। उन्होंने सर्वत्र आत्मा और परमात्मा की अद्वैतता का निरूपण किया है-

मैं तुमसे हूँ एक एक है, जैसे रश्मि प्रकाश।

मैं तुमसे हूँ भिन्न भिन्न ज्यों, धन में तड़ित् विलास।

महादेवी प्रत्येक स्थिति में स्वयं को अभिन्न देखती हैं।

"बीच भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।"

महादेवी की रहस्यानुभूति अत्यन्त सुदृढ़ आधार पर अवस्थिति है। अलौकिक प्रणयानुभूति का वर्णन महादेवी ने स्थान-स्थान पर किया है।

मूक प्रणय से मधुर व्यथा से, स्वप्न लोक के से आह्वान।

वे आये चुपचाप सुनाने, तब मधुमय मुरली की तान

महादेवी का अलौकिक प्रणय मिलन की कहानी से प्रारम्भ होता है, परन्तु क्षणिक प्रारम्भिक मिलन सदा के लिए विरह में परिणत हो जाता है। प्रियतम की एकमात्र चिरमय ने विरह वेदना का स्थायी साम्राज्य दे दिया-

इन ललचाई पलकों पर, पहरा जब था क्रीड़ा का।

साम्राज्य मुझे दे डाला, उस चितवन ने पीड़ा का।

वे जीवन दीप जलाये हुए उसी की मौन प्रतीक्षा में लीन हैं:

अपने इस सूनेपन को, मैं हूँ रानी मतवाली।

प्राणों का दीप जलाकर, करती रहती दीवाली।

- ▶ महादेवी की रहस्यानुभूति अत्यन्त सुदृढ़ आधार पर अवस्थिति है

- ▶ महादेवी के रहस्य की अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता, संपूर्णता, गंभीरता और कलात्मकता आधुनिक काल के हिन्दी कवियों में देखी जा सकती है

महादेवी की रहस्यमय अनुभूति की धारा क्रमशः आरंभिक मिलन, दीर्घ वियोग और क्षणिक मिलन के तटों को छूती हुई अंततः वहीं पहुँच जाती है। साधिका के रूप में वह परमात्मा के अस्तित्व को समझने लगती है। द्वैत और द्वैत के बीच एकता स्थापित होती है। महादेवी के रहस्य की अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता, संपूर्णता, गंभीरता और कलात्मकता आधुनिक काल के हिन्दी कवियों में देखी जा सकती है।

> ▶ महादेवी के प्रगीति काव्य में आत्माभिव्यंजकता, रागात्मकता, काल्पनिकता, संगीतात्मकता, भावगत एकरूपता और शैलीगत सुकुमारता का मिला-जुला रूप मिलता है

3.4.2 महादेवी वर्मा के काव्य में प्रगीति तत्व

महादेवी के प्रगीति काव्य में आत्माभिव्यंजकता, रागात्मकता, काल्पनिकता, संगीतात्मकता, भावगत एकरूपता और शैलीगत सुकुमारता का मिला-जुला रूप मिलता है। रागात्मकता की प्रधानता के कारण उसमें अद्‌भुत प्रेषणीयता आ जाती है। अपने गीतों के कारण ही महादेवी को आधुनिक मीरा कहा जाता है।

गीत एक आदिम राग है और लयात्मकता उसकी अस्थि मज्जा। छायावाद में भावनाओं की तीव्रता और कल्पना के अत्यधिक विस्तार ने गीत को सर्वथा नवीन रूप दिया है। इसमें महादेवी का स्थान प्रमुख है। महादेवी कहती है- "साधारण तथा गीत वैयक्तिक सभी में तूव्र सुख-दुःखात्मकता में गेय हो सके।" महादेवी के गीतों में वैयक्तिक विरहानुभूति की व्यजना और कलात्मक गेयता का पर्याप्त अंश विद्यमान है। किन्तु अनुभूति की वैसी तीव्रता उनमें नहीं पाई जाती जो कथन में विद्यमान है।

> ▶ महादेवी वर्मा में स्त्री सुलभ संवेदना और संयम के कारण वे अपनी गीत रचना में बड़ी सजग दिखायी देती है

स्त्री सुलभ संवेदना और संयम के कारण वे अपनी गीत रचना में बड़ी सजग दिखायी देती है। जिसके लिए उन्हें पग-पग पर प्रतीकों का साहारा लेना पड़ता है, परिणामस्वरूप गीतों की सहज भावधारा अवरुद्ध होकर बौद्धिक तर्कजाल में उलझ जाती है जिसके कारण गीतों के अर्थबोध और रागात्मक व्यंजना के नष्ट हो जाने की संभावना बढ़ती गयी है।

महादेवी ने अपने गीतों का ढांचा बहुत अनुशासन बद्ध कर दिया है। उनके गीत गणित के नियमों में बंधे गीत हैं। पहली पंक्ति गीत का देह बनकर आती है और पूरे गीत में उसी का अनुकरण होता रहता है। इनके गीत की सहजता एक हद पर नष्ट हो गयी है। क्योंकि गीत में बुसअत की आवश्यकता होती है, परन्तु महादेवी के गीत में बुसअत का अभाव है जबकि गजल में इसकी प्रधानता होती है। वस्तुतः पहली पंक्ति की तानाशाही का आरंभ महादेवी से ही होता है। महादेवी के गीत के चार प्रमुख तत्व हैं-

> ▶ महादेवी ने अपने गीतों का ढांचा बहुत अनुशासन बद्ध कर दिया है। उनके गीत गणित के नियमों में बंधे गीत हैं

1. अभिव्यंजना अथवा वैयक्तिकता
2. गेयता
3. भाव प्रवणत
4. काल्पनिकता

> ▶ अभिव्यंजना महादेवी जी के पूरे काव्य का केन्द्र बिंदु है

अभिव्यंजना महादेवी जी के पूरे काव्य का केन्द्र बिंदु है। वेदना और करुणा के सहारे इसकी आत्माभिव्यक्ति ने इनके एकान्त को और भी तपोवन बना दिया है। इस दृष्टि से इन गीतों में उनके सुख-दुःखात्मक जीवन की मर्म कथा का व्यापक प्रसाद दिखायी देता है-

जो तुम आ जाते एक बार।

महादेवी की आत्माभिव्यक्ति की सूक्ष्म वेदना एवं उसकी पीड़ा बोध से गीत और प्रभावशाली हो गये हैं-

मैं नीर भरी दुख की बदली।

इन गीतों में भाव व्याकुलता ही प्रमुख हैं जिसकी रागात्मक अभिव्यक्ति के लिए सांगतिक शव्दों की सहायता ली गयी है-

मधुर पिक हौले बोल।

> ▶ महादेवी की गीतों में आत्माभिव्यक्ति की सूक्ष्म वेदना एवं उसकी पीड़ा बोध देख सकते हैं

> ▶ निराला के गीत जहाँ पर्वत से उतरता प्रवाह है तो महादेवी के गीत मैदान में मंथर गति से बहने वाली सरिता

हठीले हौले-हौले बोल।।

कुछ पंक्तियाँ हमारे भावभूमि को ही छूती है-

तोड़ दे यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है।

महादेवी के गीतों में जो भाव प्रवाह है, वह समानान्तर एक रेखिय है उसमें निराला के गीतों के समान भावों का उतार-चढ़ाव नहीं मिलता। दरअसल भावों के प्रवाह के ही कारण महादेवी और निराला के गीतों की संरचना में भी फर्क आता है। निराला के गीत जहाँ पर्वत से उतरता प्रवाह है तो महादेवी के गीत मैदान में मंथर गति से बहने वाली सरिता। शब्दों का अद्भुत तराश उनका आवयविक संगठन और कसाव महादेवी के गीतों की अन्यतम् विशेषता है।

3.4.3 महादेवी वर्मा के काव्य में विरह

महादेवी वर्मा हिन्दी की प्रतिभावान कवयित्रियों में से एक है जिनकी गणना छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में की जाती है। अनुभूतियाँ जब तीव्र होकर कवि हृदय से उच्छलित होती है तो उन्हे कविता के रूप में संजोया जाता है। महादेवी वर्मा ने मन की इन्हीं अनुभूतियों को अपने काव्य में मर्मस्पर्शी, गंभीर तथा तीव्र संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। महादेवी जी ने अपना काव्य वेदना और करुणा की कलम से लिखा उन्होने अपने काव्य में विरह वेदना को इतनी सघनता से प्रस्तुत किया कि शेष अनुभूतियाँ भी उनकी पीड़ा के रंगों में रंगी हुई जान पड़ती है। महादेवी का विरह उनके समस्त काव्य में विद्यमान है। वे वेदना से प्रारंभ करके वेदना में ही अपनी परिणति खोज दिखाई देती है। महादेवी जी की वेदनानूभूति संकल्पात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। उनकी काव्य की पीड़ा को मीरा की काव्य पीड़ा से बढकर माना गया है। महादेवी के काव्य का प्राण तत्व उनकी वेदना और पीड़ा रहे। वे स्वंय लिखती है, 'दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता है।' महादेवी की विरह वेदना में परम तत्व की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उनके काव्य का मुख्य प्रतिपाद्य प्रिय से बिछुडना और उसे खोजने की आतुरता है। महादेवी जी ने अपने काव्य में आत्मा और परमात्मा के वियोग को विरहानुभूति के रूप में प्रस्तुत किया है।

> ▶ महादेवी जी की वेदनानूभूति संकल्पात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है

विरहानुभूति छायावाद की ओर एक विशेषता है। विरह का अर्थ है, वियोग और वेदना का अर्थ है, मानसिक या मन की पीड़ा। इस प्रकार विरह वेदना का अर्थ हुआ वियोग से उत्पन्न मन की पीड़ा। हिन्दी काव्य में विरह भावना को अभिव्यक्त करने वाली कवयित्रियों में महादेवी जी का प्रमुख स्थान है। महादेवी के अपने काव्य में आत्मा और परमात्मा के बिछ्रोह को विरह वेदना के रूप में अभिव्यक्त किया है। विरह के ताप को सहकर भी वे उससे उबरना नही चाहती है। वे नही चाहती कि उनकी पीड़ा कभी समाप्त हो, उनकी पीड़ा को कोई करुणा, सहानूभूति या सुख से भर दे। सम्पूर्ण साहित्य में उनकी पीड़ा की समानता करने वाला कोई नही है। उन्हे पीड़ा की रानी कहा जाता है। नंद दुलारे वाजपेयी ने महादेवी की वेदना के बारे में लिखा कि "प्रसाद के आंसू, निराला की स्मृति जैसी उद्वात और एक तान कल्पना तथा पल्लव का सा सौन्दर्योन्मेव महादेवी जी में नही है किन्तु वेदना का विन्यास, उसकी वस्तुमता (आब्जेक्टिविटी) का बहुरूप और विवरणपूर्ण चित्रण जितना महादेवी जी ने दिया है, उतना वे तीनो कवि नही दे सके हैं।" महादेवी के काव्य में भावोद्रेक की नैसर्गिकता के कारण वेदना भाव अकृत्रिम रूप में अभिव्यक्त किया हुआ है। उनका विरह बाहय आडम्बरों से मुक्त है। इसमें छल कपट, बड़बोलापन और हाहाकार नही है।

> ▶ विरह का अर्थ है, वियोग और वेदना का अर्थ है, मानसिक या मन की पीड़ा। इस प्रकार विरह वेदना का अर्थ हुआ वियोग से उत्पन्न मन की पीड़ा

> ▶ विरह वेदना की अभिव्यक्ति प्रकट करनेवाली श्रेष्ट कवयित्री

महादेवी की विरह वेदना में निश्चलता और सात्विकता के दर्शन होते हैं। विरह रूपी संगीत महादेवी की आत्मा को झंकृत करता है तथा वेदना इनके जीवन को प्रकाशमान करती है। विरह की सात्विकता महादेवी की कविताओं में विश्व वेदना बन जाती है। उनके प्रथम काव्य संग्रह 'नीहार' के एक गीत में विरह जन्य व्याकुलता के साथ संयोग की इच्छा भी छिपी हुई है।

"जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करुणा कितने संदेश पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणो का तार-तार अनुराग भरा उन्माद राग,
छा जाता जीवन में बसन्त लुट जाता चिर संचित विराग,
आंखे देती सर्वस्ववार।"

उनकी पीड़ा हृदय की शांत और गंभीर पीड़ा थी। चिर विरह की भावना के कारण महादेवी की कविताओं में उनके हृदय की करुणा दिखाई देती है। करुणा से भरी होने के कारण महादेवी की वेदना भी परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त हुई है। महादेवी जी ने अपने काव्य में एक तरफ तो भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और अकांक्षा स्वर मुखरित किया है। उनकी कविताओं "मैं नीर भरी दुख की बदली विरह वेदना का नाम ले, मैं विरह में चिरलीन हूँ, मैं अपने सूनेपन की रानी हूं मतवाली, तुमको पीड़ा में ढूंढा आदि में उन्होने वेदना, करुणा, विरह तथा दुख को अभिव्यक्त किया है। कवयित्री ने सदैव परमार्थ व परहित को महत्व दिया। वे दूसरे के दुखों में स्वंय दुखी हो उठती है। वे सदैव मानव कल्याण की कामना करती हुई दिखाई देती है। महादेवी जी को करुणा की कवयित्री कहा जाता है। अपने करुणा और विरह वेदना सम्बन्धी दृष्टिकोण को लेकर उन्होने अपने काव्य संकलन में स्वंय से ही प्रश्न किया है, "सुख दुख के धूप छाही डोरे से बने हुए जीवन में मुझे केवल दुख ही क्यों इतना प्रिय है" महादेवी जी को विरहानूभूति में आध्यात्मिकता का भाव विद्यमान है। जीवन भर विवाद के गीत गाने वाली महादेवी कल्पना करती है कि इस जीवन के संध्याकाल के समय लम्बी यात्रा करने के बाद जब जीवन अपने ही भार से दब जाएगा और कातर क्रदंन करने लगेगा तब विश्व के सभी कोनो से एक अज्ञात सुख की वर्षा होगी। उनकी यही कल्पना और कामना उनकी वेदना को आध्यात्मिकता से जोडती है। वे अपनी आध्यात्मिकता को इस लोक जीवन से जोडे रखना चाहती है। मैं फूलों में रोती वे बालकण में मुस्काते, मैं पथ में बिछ जाती वे सौरभ में उठ जाते, जैसी पंक्तियों में उनकी लौकिक तथा अलौकिक वेदना का चित्रण हुआ है।

> ▶ महादेवी जी के काव्य में एक तरफ तो भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और अकांक्षा स्वर मुखरित हुई है

महादेवी वर्मा ने अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख को समष्टि में लीन करने का प्रयास किया है। उनमें गीतों में व्यक्तिगत सुख-दुःख, वेदना और आशा-निराशा, समष्टि के सुख-दुःख, वेदना और आशा-निराशा बन कर सामने आते हैं। ऐसा लगता है मानो वे अपने दुःख का समाजीकरण कर रही हो।

> ▶ महादेवी वर्मा ने अपने व्यक्तिगत सुख दुःख को समष्टि में लीन करने का प्रयास किया है

"सब बुझे दीपक जला लूं।
घिर रहा तम आज, दीपक रागिनी अपनी जला लूं।"

महादेवी के गीतों में विरह की सात्विकता पाई जाती है। उनकी वेदना का आधार नारी का कोमल हृदय है। उनकी यही सात्विकता उनकी कविताओं में भावुकता, स्निग्धता, भावोद्रेक युक्त प्रतीक्षा और लोक मंगल की भावना के साथ दिखाई देती है। महादेवी के काव्य में जो

विरह वेदना हमें देखने को मिलती है। वह उनकी अश्रुधारा बनकर सीधे पाठक के हृदय को प्रभावित करती है। वे एक जगह स्वंय को "मैं नीर भरी दुख की बदली" कहती है। महादेवी जी के काव्य में जो विरह दिखाई देता है, वह अपने प्रियतम से मिलने की आतुरता के कारण है। 'नीहार' महादेवी के किशोर जीवन की वह रचना है, जिसमें उसका मन प्रणय और पीड़ा के वशीभूत हो रहा था। कवयित्री का मन एक ऐसा अनोखा संसार बसाना चाहता है जहाँ वेदना की मधुर धारा बह रही हो।

▶ महादेवी के काव्य में जो विरह वेदना हमें देखने को मिलती है वह उनकी अश्रुधारा बनकर सीधे पाठक के हृदय को प्रभावित करती है

"चाहता है यह पागल प्यार।
अनोखा एक नया संसार।।
कलियों के उच्छवास शून्य में ताने एक वितान
तुहिन कणों पर मृदु कम्पन से सेज बिछादे गान।।"

महादेवी की रचनाओं में विरह और वेदना की प्रबलता के कारण 'एकान्त' का भाव भी देखा जा सकता है। "अपने इस सूनेपन की मैं हूं रानी मतवाली, प्राणों का दीपक जलाकर, करती रहती दीवाली।" कवयित्री अपने प्रियतम को पाने के लिए बार-बार प्रयत्न करती और विफलता का अनुभव करती है। अपने प्रियतम को पाने के लिए उसके प्राणों में एक आकांक्षा मचल उठती है तथा उसकी व्याकुलता बढ जाती है।

▶ महादेवी की रचनाओं में विरह और वेदना की प्रबलता के कारण एकान्त का भाव भी देखा जा सकता है

"अली कैसे उनको पाऊं?
वे आंसू बन कर मेरे
इस कारण ढुल-ढुल जाते
इन पलकों के बंधन में
मैं बांध-बांध पछताऊं।"

महादेवी के काव्य में दुःखवाद को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। कुछ लोगों ने उनकी पीड़ा को "अरोपित" पीड़ा कहा है। लेकिन उनकी कविताओं को देखकर उनकी पीड़ा सहन प्रतीत होती है। वे अपने दुःख को प्रकट करते हुए कहती है

▶ महादेवी के काव्य में दुःखवाद को प्रमुखता से स्थान दिया गया है

"विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करुणा में किया आवास
अश्रु चूमता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।
आंसूओ का कोष उर, दृग अश्रु की टकसाल,
तरल जब कण से बने घन सा क्षणिक मृदुगात।"

महादेवी के काव्य में एक ओर विरह वेदना है तो दूसरी ओर आशामय जीवन है। वे दुःख में भी सुख को देखती है तथा अपने प्रिय का स्मरण करते हुए खिल उठती है।

"नैनों में आंसू है,
और हृदय में सिहरन है,
पुलक-पुलक उर सिहर-सिहर तन,
आज नयन आते क्यों भर-भर।"

इस आनन्द का कारण यह है कि कवयित्री अपने प्रिय के प्रेम से भरी हुई है। अपने प्रिय तक संदेश पहुँचाने के लिए कवयित्री छटपटाने लगती है।

"कैसे संदेश प्रिय पहुँचाती?
दृग जल की सिल मसि है अक्षय,
मसि प्याली झरते तारक द्वय।"

▶ महादेवी के काव्य में एक ओर विरह वेदना है तो दूसरी ओर आशामय जीवन है

महादेवी के काव्य में मिलने वाले दुःखवाद को देखते हुए कुछ विद्वान मानते हैं कि उनके काव्य में क्रन्दन और रूदन के दर्शन होते हैं। "महादेवी के गीतों में क्रन्दन और रूदन का रूप देखा जाता है, उसके पीछे भी समाज का बंधन छिपा हुआ है। जीवन के सुख एंव स्वप्नों के टूट जाने के कारण दुख एंव रूदन के प्रति इतना लगाव देखा जाता है।"

▶ महादेवी की सांध्यगीत रचना में चिंतन प्रधान अनुभूतियाँ विद्यमान है जो कवयित्री की मानसिक स्थिति को व्यक्त करने में सक्षम है

विरह की लम्बी साधना के बाद प्रिय का साक्षात्कार सृष्टि में व्याप्त करूणा में ही होता है। कवयित्री को विरह वेदना से मिलने का सुख प्राप्त हुआ है। वेदना के पश्चात अंत में उसकी परिणति आंनद में होती है। महादेवी की सांध्यगीत रचना में चिंतन प्रधान अनुभूतियाँ विद्यमान है, जो कवयित्री की मानसिक स्थिति को व्यक्त करने में सक्षम है। महादेवी ने स्वंय स्पष्ट किया है कि "नीरजा और सांध्यगीत मेरी उस मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सकेगें जिसमें अनायास ही मेरा हृदय सुख-दुःख में सामंजस्य का अनुभव करने लगा।"

महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में अपने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख-दुःख, हास्य-रूदन, हर्ष-शोक तथा आनंद और करूणा की अभिव्यक्ति की है। कवयित्री का हृदय सुख दुखात्मक अनुभूतियों से भरा है। जब ये अनुभूतियाँ विचलित और उद्वेलित करने लगती है तो हृदय से मनोभाव कविता के रूप में फूट पडते हैं। महादेवी जी ने भी अपने काव्य में विरह वेदना के रूप में अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की। उनके काव्य में विरह वेदना और प्रेम की मूक पीड़ा अत्यन्त मार्मिकता के साथ व्यक्त की गई है। अपनी विरहानुभूति में कल्पना, करूणा, सात्विकता, भावोद्रेक, आशावादी दृष्टिकोण आदि सम्मलित करते हुए महादेवी जी ने अपने काव्य को सुसज्जित किया है। उनकी विरह वेदना एक कवयित्री की वेदना है। उनका काव्य चिन्तन प्रधान है। उन्होने अपने काव्य द्वारा चिन्तन को नई दिशा प्रदान की। संपूर्ण भारतीय साहित्य में विरह वेदना को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करने के लिए महादेवी का स्मरण किया जाता है। यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि जो अभिव्यक्ति महादेवी जी ने अपने काव्य के द्वारा की है उसमें कोई अन्य कवि उनके आस पास तक नही फटकता। छायावादी युग में एक मात्र ऐसी भाव-यौवना कवयित्री है जिन्होंने नवीन विचारों को अपनी प्रखर बुध्दि की कसौटी पर कसा, खरे उतरने पर उन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य के सांचे में ढाल कर निर्भीकतापूर्वक अपनाया। वे वैयक्तिक सुख को विश्व वेदना में घोलकर अपने जीवन को सार्थक मानती है तथा वैयक्तिक दुःख को विश्व सुख में घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती है। उनकी विरहानुभूति को देखकर उन्हें आधुनिक काव्य की मीरा कहा जाता है।

▶ अपनी विरहानुभूति में कल्पना, करूणा, सात्विकता, भावोद्रेक, आशावादी दृष्टि कोण आदि सम्मलित करते हुए महादेवी जी ने अपने काव्य को सुसज्जित किया है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता महादेवि वर्मा मुख्य रूप से गीतकार हैं। उनके काव्य में विरह, वेदना की मात्रा इतनी अधिक है कि उन्हें 'आधुनिक युग के मीरा' की नाम से अभिहित किया जाता है। अपनी विरहानुभूति में कल्पना, करुणा, सात्विकता एवं आशावादी दृष्टिकोण का मिश्रण उन्होंने किया है। वे वैयक्तिक सुख को भी विश्व वेदना में धोलकने में ही सार्थकता मानती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रकृति चित्रण- विचार कीजिए?
2. महादेवी वर्मा के काव्य में दार्शनिकता पर प्रकाश डालें?
3. महादेवी के भाषा और शिल्प संबंधी नवीनताओं पर अपना विचार प्रकट कीजिए?
4. छायावादी कविताओं की विशेषताओं के आधार पर 'मैं नीर भरी दुख की बदली' पर टिप्पणी तैयार करें।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. महादेवी का वेदना भाव, जयकिशन प्रसाद
2. महादेवि, सं इन्द्रनाथ मदान
3. महादेवी की रहस्य साधना - विश्वम्भर मानव

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. छायावाद का पुनःपाठ - राजेश कुमार गर्ग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. महादेवी रचना संचयन - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
3. छायावाद का शताब्दी वर्ष - बलदेव पाण्डेय, प्रलेख प्रकाशन, मुंबई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

प्रगतिवादी काव्य

BLOCK-04

Block Content

Unit 1: प्रगतिवादी काव्य की सामाजिक दृष्टि

Unit 2: प्रगतिवाद और चेतना, प्रगतिवादी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ- मार्क्सवाद और रूस की क्रांति में विश्वास, पूँजीवादी व्यवस्था से घृणा और शोषितों के प्रति संवेदना

Unit 3: प्रमुख प्रगतिवादी कवि-नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, बालकृष्ण शर्मा नवीन

Unit 4: डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद, हालावाद की प्रेरक पृष्ठभूमि

इकाई : 1

प्रगतिवादी काव्य की सामाजिक दृष्टि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रगतिवादी आंदोलन के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- प्रगतिवादी साहित्य में प्रत्येक समाज के सुख-दुख का यथार्थ चित्रण से अवगत होता है
- प्रगतिवादी साहित्यिक आंदोलन कैसे समाज में स्वीकृत है उससे परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया गया वह साहित्यिक आंदोलन है जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु-सत्य को उत्तर छायावाद काल में प्रश्रय मिला और जिसने सर्वप्रथम यथार्थवाद की ओर समस्त साहित्यिक चेतना को अग्रसर होने की प्रेरणा दी। प्रगतिवाद का उद्देश्य था साहित्य में उस सामाजिक यथार्थवाद को प्रतिष्ठित करना जो छायावाद के पतनोन्मुख काल की विकृतियों को नष्ट करके एक नये साहित्य और नये मानव की स्थापना करें और उस सामाजिक सत्य को, उसके विभिन्न स्तरों को, साहित्य में प्रतिपादित होने का अवसर प्रदान करें।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सामाजिक यथार्थवाद, उत्तर छायावाद काल, प्रगतिवादी रचनाएँ, मार्क्सवादी विचारधारा

Discussion / चर्चा

साहित्य में हर नया आन्दोलन,जीवन के प्रति बदलते दृष्टिकोण से शुरू होता है। प्रगतिवाद रचना और आलोचना के क्षेत्र में सर्वथा नवीन दृष्टिकोण लेकर आया। प्रगतिवाद ने अपनी सीमाओं के बावजूद हिन्दी काव्यधारा के विकास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ा। उसने काव्य को व्यक्तिवादी धरातल से उठाकर सामाजिक यथार्थवाद के धरातल पर प्रतिष्ठित किया। इस बीच उसकी यात्रा कैसे हुई इस पर विस्तार से देखना ज़रूरी है।

1.1.1 प्रगतिवादी काव्य की सामाजिक दृष्टि

प्रगतिवाद मूलतः रचना और आलोचना के क्षेत्र में नये दृष्टिकोण का वाहक बनकर आया

है। उसकी दृष्टि समाज की ओर रही है, उसने उपयोगितावादी मूल्यों को न केवल कविता से जोड़ दिया, अपितु अनिवार्य बनाकर भी प्रस्तुत किया। वस्तुतः प्रगतिवाद और छायावाद की दृष्टि में दो ध्रुवों का अंतर है। एक समाज से कटकर कल्पना कानन में विचरण करता हुआ निजी सुख-दुःख से पीड़ित रहा और दूसरा वर्ग-वैषम्य और ऊँच नीच आदि के बीच में बंटे इन्सान के दर्द को सहनुभूतिपरक शब्दावली में व्यक्त करता रहा। छायावादी कवियों की दृष्टि आकर्षण के तार से इस तरह बिधी रही कि वे जनमानस शब्दावली में व्यक्त करता रहा। अतः किसी स्वस्थ सामाजिक दर्शन की अनुपस्थिति में जनमानस क्षुब्ध से उठा। इसी क्षुब्ध मानस की प्रतिक्रिया है प्रगतिवादी कविता। यही कारण है कि प्रगतिवाद में समाज की ओर विशेष ध्यान दिया है। इसमें उस समाज की तस्वीर है जो पीड़ित है और शोषित है।

▶ प्रगतिवाद में उस समाज की तस्वीर है जो पीड़ित और शोषित है

प्रगतिवाद ने वर्ग-भेद की खाई को मिटाने का काम तो किया ही, साथ ही मनुष्य को सामाजिक और राजनीतिक भूमिका भी प्रदान की। इसके मूल में कार्ल मार्क्स की विचारधारा का प्रमुख हाथ है। मार्क्सवाद की प्रायः सभी प्रवृत्तियों और मान्यताओं को प्रगतिवाद काव्य में देखा जा सकता है। हाँ, कुछ विशेषताएँ ऐसी भी हैं जो प्रगतिवाद की प्रगतिशील चेतना को व्यक्त करती हैं। प्रगतिवाद की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों को इस प्रकार विवेचित विश्लेषित किया जा सकता है- सामाजिक जीवन के प्रति आग्रह, रूढ़ियों के प्रति विरोध और विद्रोह, शोषितों और पीड़ितों के प्रति सहानुभूति की भावना। यथार्थपरक दृष्टि के वाहक इन कवियों ने प्रकृति, प्रेम, नारी, ईश्वर और धर्म को जिस नजरिये से देखा है वह प्रशनशीलता का ही एक आयाम है। इस काव्यधारा में एक ओर तो मार्क्स व रूस का प्रशस्ति वाचन है तो दूसरी ओर पूँजीपति वर्ग को विरोध है, एक ओर वर्ग संघर्ष का चित्रण है तो दूसरी और ग्राम्य संस्कृति की प्रतिष्ठापना का प्रयास भी है।

▶ प्रगतिवादी रचना के मूल में कार्ल मार्क्स की विचारधारा का प्रमुख हाथ है

प्रगतिवादी कवियों ने जन-जीवन को देखा, हृदयंगम किया और कविताबद्ध किया। इस प्रक्रिया में जन-जीवन की भीतरी और बाहरी दोनों ही तस्वीरें: फिर सामने आयी हैं। सामाजिक उन्नति और नव निर्माण के दौरान सबसे पहले रूढ़ियों पर प्रहार किया गया। वे धार्मिक और मान्यताएँ ताक में रख दी गयीं जो युगों से चली आ रही थीं। शोषितों और पीड़ितों के करूण गायक इन कवियों ने एक ओर मानवतावादी भावना का प्रसार किया तो दूसरी ओर शोषक वर्ग के प्रति उपेक्षा भाव भी दिखलाया। इन्होंने किसान, मजदूर और मध्यवर्ग के लोगों की सामाजिक स्थिति को देखा और उनके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए अपनी काव्य सर्जना की। सामाजिक चेतना के पक्षधर और यथार्थ बोध के वाहक कवि मुक्तिबोध, सुमन और नागार्जुन की संवेदना का प्रसार उन लघु मानवों तक है जो दलित, शोषित और जीवनहीन हैं। मुक्तिबोध का कवि सभी दलितों पतितों और उपेक्षितों के भीतर तक की यात्रा पर आया है और उसने अपनी इस अंतर्यात्रा की सहानुभूतियों को जो निष्कर्ष दिया है, वह यथार्थ है, काव्यात्मक है और है संवेदनात्मक-

“मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है,
पल भर में सब में से गुजरना चाहता हूँ,

प्रत्येक उर में से तिर आना चाहता हूँ
इस तरह खुद को ही दिये दिये फिरता हूँ।"

सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से प्रगतिवादी कविता, आशा, आस्था और निष्ठा की किरणें प्रसारित करती हैं। यद्यपि प्रगतिवादी कवि वर्तमान जीवन की विषमता, दुख दैन्य और त्रासद स्थितियों से भली भाँति परिचित रहा है, किन्तु फिर भी वह विचलित नहीं होता है। कारण, उसकी बुद्धि उसे भविष्य के प्रति आश्वस्त करती है और कवि विश्वास का सम्बल लिए जीवन की कुरूपताओं, विकृतियों और आर्थिक वैषम्य-जनित पीड़ा को भी सहता जाता है। आस्था की इस डोर को थामकर ही प्रगतिवादी घुटन, निराशा और पराजय की अनुभूतियों पर विजय पाता रहा है। एकाकीपन का बोध यदि उसे उदासी के खाई में फेंकता भी है तो वह व्यापक सामाजिकता की भूमिका पर खड़ा होकर उस खाई से निकल आता है। इसी भूमिका पर खड़े होकर त्रिलोचन का कवि सोचता है कि- "मैं न अकेला कोटि-कोटि हैं मुझ जैसे तो"। यही भावना प्रगतिवादी कवि को आशा, विश्वास और दृढ़ता की ओर ले जाती है। केदारनाथ सिंह, रामविलास शर्मा और नागार्जुन सभी में इस आस्था प्रेरित भाव और तज्जनित मानवतावादी दृष्टि को देखा जा सकता है।

- सामाजिक चेतना के पक्षधर और यथार्थ बोध के वाहक प्रगतिवादी कवियों की संवेदना का प्रसार उन लघु मानवों तक है जो दलित, शोषित और जीवनहीन हैं

1.1.2 मार्क्सवादी विचारधारा और प्रगतिवाद

हर साहित्यकार का लक्ष्य अपने वर्तमान समाज की जनता को कम से कम एक सीढ़ी तक ले जाना है। जो गौरवपूर्ण रचना है, वही मानवराशी की प्रगति चाहती है। भविषयोन्मुख दृष्टिकोण रखनेवाले लोग हैं प्रगतिशील। दर्शन के क्षेत्र में जो dialectical materialism है, वह समाजवाद के क्षेत्र में साम्यवाद है,वही साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद है। तीनों का आधार मार्क्सवाद है। प्रगतिवादी काव्य एक विशिष्ट विचारधारा का द्योतक है। यह विचार-कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद पर आश्रित है। सन् 1934 ई. में गोर्की के नेतृत्व में रूस में 'सोवियत लेखक संघ' की स्थापना हुई। यह विश्व का पहला लेखक संगठन था। सन् 1935 ई. में हेनरी बारबूस की पहल पर पेरिस में एक अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ ई एम फॉस्टर जिसके अध्यक्ष थे। ई. एम. फारस्टर ने ही 1935 ई. में 'प्रगतिशील लेखक संघ' (Progressive Writers Association) की स्थापना की। इसी वर्ष मुल्कराज आनन्द, सज्जाद जहीर, ज्योति घोष, के. एम. भट्ट, हीरेन मुखजी, एस. सिन्हा और मोहम्मद्दीन तासीन ने भारत की तरफ से सर्वप्रथम इंग्लैण्ड (जुलाई 1935ई.) में 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' का गठन किया। सन् 1935 में पेरिस में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई थी, जिसने साहित्य के माध्यम से समाजवादी विचारों का प्रचार करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। इसी की शाखा भारत में स्थापित हुई। सन् 1936 में लखनऊ में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ का पहला अधिवेशन हुआ। सभापति पद से बोलते हुए प्रेमचन्द जी ने समाजहित को साहित्य का लक्ष्य घोषित किया। अगले अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी प्रगतिशीलता को उदात्त एवं व्यापक रूप में प्रस्तुत किया। प्रगतिशीलता से भिन्न प्रगतिवाद मार्क्सवादी विचारों का द्योतक बन गया। मार्क्स से पहले डार्विन विकासवाद का सिद्धान्त प्रतिपादित कर चुका था। मार्क्स ने बताया कि भौतिक शक्तियों के द्वन्द्व से ही सृष्टि का विकास होता है न कि ईश्वर या किसी अलौकिक शक्ति से। मार्क्स के अनुसार संसार जो है वह 'material' है। मार्क्सवादी मानते हैं कि जगत ही सत्य है, ब्रह्म मिथ्या है। मार्क्स ने कहा कि यहाँ कोई ईश्वर नहीं है, परिवर्तन ही सत्य हैं। मार्क्स आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग, नरक और मृत्यु के बाद जीवन के अस्तित्व को

- ई. एम. फारस्टर ने 1935 ई. में 'प्रगतिशील लेखक संघ' (Progressive Writer's Association) की स्थापना की

स्वीकार नहीं करता। वह मानता है कि दो विरोधी शक्तियों के संघर्ष से, द्वन्द से तीसरी वस्तु विकसित होती है। यही द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है। तीसरी को चौथी से, चौथी को पांचवी से संघर्ष करना पड़ता है। यह क्रम अनवरत रूप से चलता रहता है।

मार्क्स की मान्यता थी कि समाज में सदा शोषण एवं शोषित वर्ग रहे हैं। पूँजीपति शोषण किया करते हैं। मार्क्स पूरी दुनिया के लोगों को शोषण और शोषित इन जातियों का मानता है। मार्क्स दास-प्रथा, सामंती प्रथा, पूंजीवादी व्यवस्था और साम्यवादी व्यवस्था की चर्चा करता है और मानता है कि इनमें उत्तरोत्तर व्यवस्थाएँ अच्छी होती गई हैं। वह चाहता है कि अब साम्यवादी व्यवस्था लागू हो ताकि व्यक्ति को उसके श्रम के अनुसार फल मिले। रूस की क्रांति का विश्व साहित्य पर बहुत प्रभाव पड़ा था। क्रांति के बाद रूसी साहित्य में यथार्थवाद शुरू हुआ। अंग्रेजी साहित्य में भी मार्क्सवादी विचार धारा प्रचलित हुई। भारत में अंग्रेजी शासन के दौरान उच्च वर्ग निम्न वर्ग पर मनमानी करता था। स्वतंत्रता के लिए चलने वाले आन्दोलनों में किसान, मज़दूर हुए जिनमें बड़ी संख्या में भाग लेते थे। देश में प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन साहित्य को मानवता की सेवा का माध्यम बनाने पर जोर दिया जाने लगा। 'हंस', 'रूपाभ', 'जागरण' जैसे पत्रों में प्रगतिवादी विचारों का प्रकाशन होने लगा था। देश में अंग्रेजों के प्रत्याचार जारी थे। जापान ने रूस जैसे बड़े देश को परास्त कर दिया था जिससे भारतीयों को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए और भी प्रेरणा मिली। और हिन्दी-काव्य में व्याप्त वैयक्तिक चेतना, वेदना, निराशा आदि का मोर्चा बनाकर विरोध होने लगा। प्रगतिवादी विचार धीरे-धीरे साहित्य के विभिन्न विधाओं पर छाने लगे छायावादी पंत भी प्रगतिवादी ढंग की रचना में प्रवृत्त हुए। उनकी 'युगांत' और 'युगवाणी' जैसी प्रगतिवादी कृतियाँ प्रकाशित हुईं। निराला ने 'कुकुर मुत्ता', 'बेला', 'नये पत्ते' काव्य-संग्रहों तथा 'विधवा', 'भिक्षुक' आदि कविताओं में प्रगतिवादी चेतना व्यक्त की।

▶ प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन ने साहित्य को मानवता की सेवा का माध्यम बनाने पर जोर दिया

1.1.3 मार्क्सवादियों का साहित्यिक दृष्टिकोण

दरअसल साहित्य जिस समाज में लिखा जाता है और जिसके लिए लिखा जाता है, उसमें साहित्य, समाज में प्रभावी उत्पादन और उपभोग की पद्धतियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। साहित्य की भूमिका क्या है? इसकी जरूरत क्यों? मार्क्स की दृष्टि में साहित्य अभिव्यक्ति का साधन भर नहीं है, वह काफी हद तक आत्मनिर्माण का साधन भी है। मनुष्य और पशु के बीच एक बहुत बड़ा फर्क यह है कि मनुष्य अपनी भौतिक जरूरतों और वासनाओं को संतुष्ट करने के लिए ही श्रम नहीं करता बल्कि 'सौन्दर्य के नियमों के अनुसार' रचना करता है। इसलिए साहित्य एक मानवीय जरूरत की पूर्ति करता है और अन्य कलाओं की तरह उन इंद्रियों को रचता तथा गढ़ता है जिनके जरिए हम इसका आस्वादन करते हैं। और कलाकृतियों की रचना और आस्वादन हमें अधिक पूर्ण मानव बनने में मदद देता है।

रचना, आस्वाद के साथ उस रचना की सोद्देश्यता और प्रस्तुतिकरण महत्वपूर्ण है। साहित्यिक सौन्दर्यशास्त्र, विषयवस्तु और उद्देश्य की प्राथमिकता के कारण ही वे मानते थे कि रूप का कोई मूल्य नहीं अगर वह अपनी अंतर्वस्तु का रूप नहीं है। अन्तर्वस्तु का रूप, साहित्य का उद्देश्य, विषयवस्तु का स्वरूप, साहित्यिक इन सब कसौटियों पर कसकर मार्क्स ने साहित्य पर अपने विचार रखे। यही विचार बाद में चलकर मार्क्सवादी कला-साहित्य-चिंतन और सौन्दर्यशास्त्र संबंधी मूल्यांकन के आधार को निर्मित करता है। मार्क्सवाद की इसी अवधारणा को केन्द्र में रखते हुए लेनिन ने 'पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन' में सर्वहारा कला और साहित्य की बात कही है। सर्वहारा साहित्य पर अपनी स्थापना देते हुए लेनिन ने कहा कि यह साहित्य स्वतंत्र होगा, लालच अथवा पदलोलुपता की वजह से नहीं, बल्कि समाजवाद की भावना तथा श्रमजीवी जनता के प्रति सहानुभूति की वजह से नित नयी-नयी शक्तियाँ उसके साथ जुड़ती जाएेगी। यह साहित्य स्वतंत्र होगा और मेहनतकश जनता के करोड़ों और अरबों लोगों की- देश के सर्वश्रेष्ठ भाग की, उनकी शक्ति और उनके भविष्य की सेवा करेगा।

- अन्तर्वस्तु का रूप, साहित्य का उद्देश्य, विषयवस्तु का स्वरूप, साहित्यिक इन सब कसौटियों पर कसकर मार्क्स ने साहित्य पर अपने विचार रखे जिसका सीधा प्रभाव प्रगतिवाद पर पड़ा

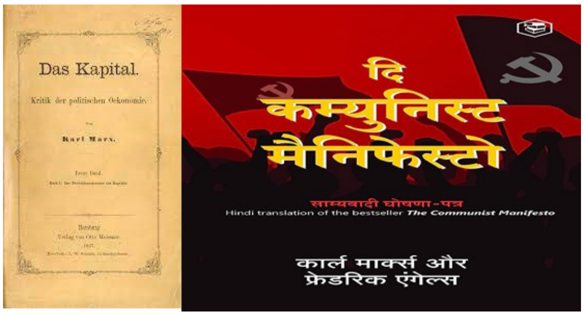

लेनिन के बाद जिस महान राजनीतिक विचारक ने साहित्य और कला को मार्क्सवादी विचारधारा और सर्वहारा की राजनीति से जोड़ के देखा वो माओ-त्से-तुंग हैं। माओ-त्से-तुंग ने इसे चीनी क्रांति के सांस्कृतिक मोर्चे से जोड़ के जनता की मुक्ति संघर्ष का अनिवार्य अंग बना दिया। उनका मानना था कि "क्रांतिकारी लेखक व कलाकार अपने सृजनात्मक श्रम से जनता के जीवन में मौजूद कच्चे माल को कला-साहित्य के एक ऐसे विचारात्मक रूप में ढाल देते हैं जो विशाल जन-समुदाय की सेवा करता है।" इस तरह माओ-त्से-तुंग साहित्य को व्यापक जन समुदाय से जोड़ते हैं और उसे उनके जीवन से ही निकला हुआ (उत्पाद) मानते है। मार्क्स-एंगेल्स के कला, साहित्य, सौन्दर्यशास्त्र संबंधी सारे चिंतन के मूल में विकास का ऐतिहासिक-भौतिकवादी अवधारणा है। इन चिंतनों का विकास आगे चलकर जिन राजनीतिक विचारकों में हुआ है, उनमें लेनिन, स्टालिन, माओ-त्से-तुंग प्रमुख हैं। इन लोगों ने साहित्य की मार्क्सवादी धारा का उपयोग सर्वहारा के संघर्ष, उनकी क्रांति के लिए किया। इन विचारकों ने साहित्य को सामाजिक विकास के साथ जोड़कर क्रांतिकारी स्वरूप प्रदान किया।

- मार्क्स-एंगेल्स के कला, साहित्य, सौन्दर्यशास्त्र संबंधी सारे चिंतन के मूल में विकास का ऐतिहासिक-भौतिकवादी अवधारणा है

साहित्य क्या है? साहित्य का जीवन से क्या लगाव है? हमारे सौन्दर्य को साहित्य किस रूप में प्रभावित करता है? साहित्य का स्वाधीनता से क्या रिश्ता है? श्रम से साहित्य का संबंध। साहित्य का आदर्श। साहित्य और राजनीति इन सभी बिन्दुओं पर प्रेमचंद ने अपनी बात रखी। साहित्यिक परम्पराओं के मूल्यांकन के साथ साहित्य के मूल्य की पहचान प्रेमचंद के अभिभाषण का केन्द्रीय बिन्दु है। अभिभाषण की शुरूआत ही प्रेमचंद 'भाषा' के सवाल से करते हैं, उसका उद्देश्य, विचारों और भावों पर असर डालना नहीं, किन्तु केवल भाषा

का निर्माण करना था। वह भी एक बड़ा महत्व का कार्य था। जब तक भाषा एक स्थायी रूप न प्राप्त कर ले उसमें विचारों और भावों को व्यक्त करने की शक्ति ही कहाँ से आएगी? भाषा के महत्व को स्वीकार करते हुए प्रेमचंद उसे 'साधन' मानते हैं, 'साध्य' नहीं। जो भाषा जितनी ही प्रौढ़ और सशक्त होगी, उस भाषा का साहित्य उतना ही विकसित होगा। विकास का स्वरूप सकारात्मक होगा। नए-नए मौलिक विचार से लेकर कल्पना तक भाषा के माध्यम से ही मूर्त्तिमान होते हैं। भाषा जितनी अच्छी होगी विचार और साहित्य भी उतना ही अच्छा होगा। भाषा के इसी स्वरूप का विकास बाद में हम प्रगतिशील आंदोलन के दौरान देखते हैं। प्रगतिशील आंदोलन से जुड़े या उससे प्रभावित साहित्यकारों की भाषा आम बोल-चाल के करीब है। उनके यहाँ भाषा की दुरूहता या चमत्कारपूर्ण-अलंकारिक शैली देखने को नहीं मिलती।

- प्रगतिशील आंदोलन से जुड़े या उससे प्रभावित साहित्यकारों की भाषा आम बोल-चाल के करीब है

जीवन की सच्चाइयों और अनुभूतियों से युक्त साहित्य ही प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, जिस साहित्य में न सच्चाई हो और न अनुभूति वह साहित्य के अलावा कुछ और हो सकता है, साहित्य नहीं हो सकता है। प्रेमचंद साहित्य को 'जीवन की आलोचना' के रूप में देखते हैं। उनका मानना है कि चाहे वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानियों के या काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए। प्रेमचंद साहित्य की परिभाषा और व्याख्या कर रहे थे तो उनके सामने पूर्ववर्ती पीढ़ी का साहित्य सामने था। जिस साहित्य का जीवन से कोई लगाव है, यह कल्पनातीत था। प्रेम, श्रृंगार, विरह, वेदना का काल्पनिक-चमत्कारिक प्रदर्शन ही काव्यगत श्रेष्ठता के प्रतिमान हुआ करते थे। "श्रृंगारिक मनोभाव मानव-जीवन का एक अंग मात्र हैं। लेकिन जिस साहित्य का बहुलांश इसी मनोभाव को व्यक्त करने में लगा हो, उस साहित्य और वहाँ के साहित्यिक विकास को समझने में चूक नहीं हो सकती। साहित्य के ऐसे काल खण्ड के बारे में लिखते हुए प्रेमचंद कहते हैं" जब साहित्य पर संसार की नश्वरता का रंग चढ़ा हो और उसका एक-एक शब्द नैराश्य में डूबा, समय की प्रतिकूलता के रोने से भरा और श्रृंगारिक भावों का प्रतिबिम्ब बना हो तो समझ लीजिए कि जाति जड़ता और ह्रास के पंजे में फँस चुकी है और उसमें उदयोग तथा संघर्ष का बल बाकी नहीं रहा। उसने ऊँचे लक्ष्यों की ओर से आँखें बन्द कर ली हैं और उसमें से दुनिया को देखने-समझने की शक्ति लुप्त हो गई है। ऐसी परिस्थिति में साहित्यकार का दायित्व काफी बढ़ जाता है।

- जिस साहित्य में न सच्चाई हो और न अनुभूति वह साहित्य के अलावे कुछ और हो सकता है, साहित्य नहीं हो सकता है

मार्क्स साहित्य में कलाकार या रचनाकार की स्वतन्त्रता के विरोधी हैं। उनके अनुसार व्यक्ति स्वातन्त्र्य का सिद्धान्त असंगत और भ्रान्तिपूर्ण है। मार्क्स का कथन है- 'जो लेखक अपने लेखन को व्यावसायिक बनाता है, उसे भौतिक जरूरतों का साधन समझता है, वह अपनी आन्तरिक स्वतन्त्रता के अभाव में बाहरी स्वतन्त्रता से भी वंचित किए जाने के काबिल होता है। अतः व्यक्ति कभी भी स्वतन्त्र नहीं होता, वह तो परिस्थितियों का दास होता है। जैसी सामाजिक स्थिति होती है वैसी ही व्यक्ति की दशा होती है। व्यक्ति का निर्माण समाज के द्वारा ही होता है। व्यक्तित्व समाज की कृति है और इस व्यक्तित्त्व की कृति है साहित्य। इस प्रकार साहित्य कृति की कृति है। साहित्य में सामाजिकता अनिवार्य रूप से आती है, क्योंकि कला-सृजन व्यक्तिगत चेतना का परिणाम नहीं है, वह तो सामाजिक चेतना का प्रतिफल है। कलात्मक सर्जन और आस्वादन के संबंध में मार्क्स का विचार है कि आर्थिक उत्पादन केवल आवश्यकता को संतुष्ट करने के लिए ही वस्तु उपलब्ध नहीं कराते, अपितु वे वस्तु की आवश्यकता भी उत्पन्न करते हैं। जब उपभोग अपनी आरम्भिक, अपरिष्कृत अवस्था

और तात्कालिकता से मुक्त हो जाता है तब वह स्वयं वस्तु से उत्पन्न एक इच्छा बन जाता है। वस्तु की आवश्यकता की इच्छा वस्तु के बोध से प्रभावित होती है। इस प्रकार एक कला वस्तु कलात्मक अभिरुचि से सम्पन्न ऐसे पाठक और दर्शक समुदाय को तैयार करती है जो सौन्दर्यानुभूति के योग्य होता है। इस प्रकार उत्पादन केवल चेतना के लिए वस्तु ही उत्पन्न नहीं करता, अपितु यह वस्तु के लिए चेतना भी पैदा करता है, जो कलात्मक सर्जन के आस्वाद का आधार है।

- ▶ व्यक्तित्व समाज की कृति है और इस व्यक्तित्व की कृति है साहित्य

कला-साहित्य की समालोचना के दो मानदण्ड होते हैं- राजनीतिक और कलात्मक इस प्रकार अच्छे और बुरे के बीच प्रयोजन (मनोगत इच्छा) अथवा परिणाम (सामाजिक व्यवहार) द्वारा अन्तर कम किया जा सकता है। इनमें आदर्शवादी प्रयोजन पर बल देते हैं और परिणाम की उपेक्षा करते हैं, जबकि भोतिकवादी परिणाम पर बल देते हैं और प्रयोजन की उपेक्षा करते हैं। किन्तु मार्क्सवादी (द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी) प्रयोजन और परिणाम दोनों की एकता पर बल देते हैं। जनसामान्य की सेवा करने का प्रयोजन उसका समर्थन प्राप्त करने के परिणाम से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, अतः इन दोनों की एकता जरूरी है। इसलिए कला या साहित्य का मूल्यांकन कलाकार या साहित्यकार के कथनों के आधार पर नहीं, बल्कि समाज में आम जनता पर उसके कार्यों का (मुख्य रूप से उसकी रचनाओं का) जो असर पड़ता है उसके आधार पर करना चाहिए। इस प्रकार मार्क्स साहित्य के मूल्यांकन का एकमात्र मानदण्ड सामाजिक उपयोगिता को मानते हैं। उनके अनुसार साहित्य सामाजिक कृति है, अतः उसका मूल्यांकन भी सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से होना चाहिए। क्योंकि मार्क्स सभी मानवीय भावनाओं के निर्माण की पृष्ठभूमि में 'अर्थ' को प्रमुख मानते हैं। मार्क्स के कला और साहित्य विषयक दृष्टिकोण का विश्व साहित्य पर गम्भीर प्रभाव पड़ा है। हिन्दी का प्रगतिवादी साहित्य भी मार्क्सवाद की गूंज से अनुप्राणित है।

- ▶ मार्क्स साहित्य के मूल्यांकन का एकमात्र मानदण्ड सामाजिक उपयोगिता को मानते हैं

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रगतिवाद विशेष रूप से कॉर्ल मार्क्स की साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित है। मार्क्सवादी विचारधारा का समर्थक प्रगतिवादी साहित्यकार आर्थिक विषमता को ही वर्तमान दुःख एवं अशांति का कारण स्वीकार करता है। आर्थिक विषमता के फलस्वरूप समाज दो वर्गो मे बंटा है- पूँजीपति वर्ग अथवा शोषक वर्ग और दूसरा शोषित वर्ग या सर्वहारा वर्ग। प्रगतिवाद अर्थ, अवसर और संसाधनों के समान वितरण द्वारा ही समाज की उन्नति मे विश्वास रखता हैं। सर्वहारा या सामान्य जन की प्राण प्रतिष्ठा के साथ श्रम की गरिमा को प्रतिष्ठित करना और साहित्य मे प्रत्येक समाज के सुख-दुख का यर्थाथ चित्रण प्रस्तुत करना ही प्रगतिवाद का लक्ष्य है। प्रगतिवादी चेतना के बीज छायावाद मे ही पल्लवित होने लगे थे किन्तु तीसरे और चौथे दशक मे प्रगतिशील आंदोलन ने काव्य को सामाजिकता की ओर उन्मुख किया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रगतिवादी काव्य की अंतर्वस्तु स्पष्ट कीजिए।
2. प्रगतिवाद के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. मर्क्सवादियों के साहिलिक दृष्टिकोण पर पर्चा लिखिए।
4. मार्क्सवादी विचारधारा और प्रगतिवाद पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रगतिवाद - शिवकुमार मिश्र
2. आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका - डॉ. शम्भूनाथ पांडे
3. हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद और अन्य निबंध - विजयशंकर मल्ल
4. हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान - मैनेजर पांडे

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक साहित्य - नंददुलारी वाजपेयी
2. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां - डॉ. नामवर सिंह
3. छायावाद - नामवर सिहं
4. हिन्दी कविता में युगान्तर - सत्येन्द्र
5. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी - नंददुलारी वाजपेयी
6. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नागेंद्र
7. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
8. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डॉ गणपति चंद्र गुप्त।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

प्रगतिवाद और चेतना, प्रगतिवादी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ- मार्क्सवाद और रूस की क्रांति में विश्वास, पूँजीवादी व्यवस्था से घृणा और शोषितों के प्रति संवेदना

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रगतिवादी चेतना के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- प्रगतिवादी साहित्य के विभिन्न प्रवृत्तियों से परिचित होता है
- प्रगतिवादी कवियों की साहित्यिक दृष्टिकोण से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

हिन्दी-साहित्य का इतिहास में आधुनिक काल में छायावाद के बाद आरंभ के चौथे चरण को प्रगतिवादी विचारधारा से प्रभावित साहित्य-रचना का युग स्वीकार किया गया है। इसका आरंभ सन् 1936 के आस-पास से स्वीकारा जाता है। इससे पहले वाले छायावादी-युग की कविता कल्पना-प्रधान थी, पर अब कविगण कल्पना के आकाश से उतरकर जीवन के यथार्थ से प्रेरणा लेकर धरती पर पैर जमाने लगे। फलस्वरूप कविता की जो नई धारा चली, वह प्रगतिवादी काव्यधारा कहलाई। गद्य-साहित्य के विधायक रूपों में भी अब काल्पनिक आदर्शों के स्थान पर यथार्थ समस्याओं और प्रश्नों का चित्रण होने लगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रगतिवादी चेतना ने साहित्य के गद्य-पद्यात्मक सभी रूपों को समान स्तर पर प्रभावित किया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रगतिवाद, मार्क्सवाद, पूँजीवाद, छायावाद

Discussion / चर्चा

2.1.1 प्रगतिवाद और चेतना

प्रगतिवादी चेतना की बात करें तो इसका शुभारम्भ कबीर से हो गया था जो भारतेन्दु काल में यथार्थवादी दृष्टिकोण के रूप में विकसित हुआ। बाद में यह चेतना राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन और मार्क्सवाद से प्रेरणा ग्रहण करती हुई आगे बढ़ी। मार्क्सवादी विचारधारा का साहित्य में उदय ही प्रगतिवाद कहलाया। प्रगतिवादी समाज में प्रगतिवादी शोषक वर्ग के खिलाफ शोषित वर्ग में चेतना लाने तथा उसे संगठित कर शोषण मुक्त समाज की स्थापना की

कोशिशों का समर्थन करता है। यह पूँजीवाद, सामंतवाद, धार्मिक संस्थाओं को शोषक के रूप में चिन्हित कर उन्हें उखाड़ फेंकने की बात करता है। मानव अपने मूल स्वभाव से ही परिवर्तन्-ाशील और प्रगतिवादी माना जाता है। फिर दूसरे विश्व-युद्ध के प्रभाव ओर परिणामस्वरूप अब जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन आने लगा था। फ्रांस और रूस से होने वाली जन-क्रांतियों ने तो मानव-चेतना को प्रभावित किया ही, रूसो, वाल्तेयर, कार्लमार्क्स और फ्रॉयड आदि चिंतकों के विचारों ने भी जीवन और समाज में आमूल-चूल परिवर्तन लाने की प्रेरणा प्रदान की। वर्ग-संघर्ष ने आर्थिक-औद्योगिक क्षेत्रों में संघर्ष की नींव डाली। वैज्ञानिक खोजों के कारण भी जीवन और समाज के परंपरागत रूपों में क्रांति आई। अब मनुष्य महज अपनी या व्यक्ति की नहीं, बल्कि समूह की बात सोचने लगा। जीवन में यांत्रिकता के बढ़ जाने के कारण कई तरह की जटिलताएं भी आती गई। भेद-भावों से ऊपर उठकर समानता का भाव भी जीवन-समाज में जागृत हुआ। इन सारे परिवर्तनों के मूल में विद्यमान चेतना को ग्रहण कर अपने गद्य-पद्यात्मक रूपों में साहित्य जो नए रूप में सिरजा जाने लगा, वही वास्तव में प्रगतिवाद कहलाता है। एक आलोचक के अनुसार- 'साहित्य अपने मूल स्वभाव में जीवन का अनुगामी तो होता ही है, कई बार उससे आगे बढक़र वह मानव-जीवन के लिए संभावित सत्यों एंव प्रगतियों की खोज भी करता है। इसी कारण वह जीवन के समान ही प्रगतिशील है।'

▶ प्रगतिवादी चेतना राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन और मार्क्सवाद से प्रेरणा ग्रहण करती हुई आगे बढ़ी

कवि और साहित्यकार किसी भी रूढ़ परंपरा के अधिक दिनों तक अनुयायी बनकर नहीं रह सकते। उनकी चेतना जीवन में आने वाले परिवर्तनों से अनुप्राणित होकर स्वतः ही नव्यता की ओर अग्रसर होती रहती है। उसी नव्यता की ओर अग्रसर होने वाली प्रवृति ने ही छायावादी युग के अंतराल से एक नई प्रवृत्ति को जन्म दिया। वह प्रवृत्ति थी मानव-प्रगतियों का दमन, शोषित-पीड़ित मानव के अधिकारों की ओर जीवन-समाज का ध्यान आकर्षित करना एंव नई सहज परिवर्तित बौद्धिक-वैज्ञानिक प्रगतियों की ओर मानव-चेतना को उन्मुख करने का सशक्त प्रयास। परिणामस्वरूप छायावादी स्वरों के मध्य से ही जो नया स्वर प्रस्फुटित किया गया। यह मान्यता स्पष्ट संकेत करती है कि छायावादी वायवता के प्रतिकारस्वरूप ही हिन्दी-काव्य क्षेत्र में प्रगतिवाद का आरंभ एंव विकास संभव हो सका। यह एक निश्चित सत्य है। ऊपर यह कहा जा चुका है कि प्रगतिवाद का आरंभ सन् 1936 के आस-पास हुआ था। उसके चार वर्षो अर्थात सन् 1940 तक इसका क्रमशः विकसित रूप सामने आने लगा। उसके बाद से आज तक की हिन्दी-काव्य की यात्रा वास्तव में प्रगतिवाद के विभिन्न एंव विविध आयामों की यात्रा कही जा सकती है। छायावाद की एक धारा हालावाद और दूसरी राष्ट्रवाद के रूप में विकसित हुई थी। इस राष्ट्रवादी-काव्यधारा का ही अगला पड़ाव प्रगतिवाद कहा जा सकता है। राष्ट्‍्रवादी कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' द्वारा रचित एक कविता से प्रगतिवाद का आरंभ स्वीकार किया गया है। उस प्रसिद्ध कविता के आरंभ की पंक्तियाँ देखिए-

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए।
नियम और उपनियमों के ये,
बंधन टूक-टूक हो जाएं,
विश्वभर की पोषक वीणा-
के सब तार मूक हो जाएं।"

यहाँ जो उथल-पुथल यानि क्रांति मचाने और विश्वभर की वीणा के तार टूटने अर्थात परंपराओं, अंध रूढ़ियों के समाप्त होने की कामना की गई है, वास्तव में वही प्रगतिवाद की मूल चेतना, लक्ष्य, प्रयोजन एंव हुंकार भी है। विद्वान यह भी मानते हैं कि छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की 'परिवर्तन' शीर्षक कविता से भी प्रगतिवादी चेतना के भाव और विचार दिखाई देने लगते हैं। जीवन का कोई भी क्षेत्र प्रगति-कामना से बचा न रह सका। सभी जगह अस्तित्व रक्षा का गहरा भाव जागकर 'सड़े-गले अतीत के विरुद्ध गहरा असंतोष एंव विद्रोह का स्वर मुखरित करने लगा।' कवि और साहित्यकार उन सबके स्वर-से-स्वर मिलाकर अपने-अपने सृजन में दत्तचित हो उस सबका प्रतिनिधित्व करने लगे।

▶ छायावादी कवि पंत की 'परिवर्तन' कविता से प्रगतिवादी चेतना के भाव और विचार देना

फलस्वरूप यह नई प्रगतिवादी चेतना चारों ओर हर स्तर पर मानव-मन और जीवन-समाज को आंदोलित करने लगी। इसी संबल को पाकर शोषित-पीड़ित जन अपने को मानव समझकर संघर्षरत होने लगा। उस संघर्षमयी चेतना का काव्यात्मक चित्रण ही साहित्य-जगत में प्रगतिवाद के नाम से जाना और पुकारा जाने लगा।कार्ल मार्क्स के द्वंदात्मक भौतिकवादी जीवन-दर्शन में प्रभावित प्रगतिवाद, पूंजीवाद और पूंजीवादी चेतना को मानवता का सबसे बड़ा दुश्मन स्वीकार करता है। इसकी मान्यता है कि जब श्रम और पूंजी का समान विभाजन होने लगेगा, तभी जाति-वर्गहीन समाज की स्थापना संभव हो सकेगी। जो इस वाद का चरम लक्ष्य है। जन-कल्याण और समाजवादी समाज की स्थापना के इस लक्ष्य को पाने के लिए प्रगतिवाद वर्ग-संघर्ष को आवश्यक मानता है। इसके लिए ही कवि सर्वहारा वर्ग की समस्याओं को काव्यों में उतराते, व्यक्ति का विरोध कर समूह का महत्व स्वीकारते, सभी रूढ़ियों का विरोध करते हुए दिखाई देते हैं। कवि और लेखक आम जनों को सभी तरह की कुंठाओं से छुटकारा दिलाने का प्रयास भी करते हैं। यही कारण हे कि प्रगतिवादी साहित्य में कल्पना को कतई महत्व नहीं दिया जाता। उसके परे जीवन में यथार्थ का ही उदघाटन किया जाता है। सभी परंपरागत विषयों की युगानुकूल नवीन एंव उपयोगितावादी व्याख्यांए की जाती हैं ताकि सभी प्रकार के आडंबरों, पाखंडों और कुरूपताओं से जीवन को मुक्ति मिल सके। धर्म, राज्य और भगवान को भी नितांत अनुपयोगी, मात्र विडंबना और शोषित-पीड़ित को और भी धोखे में रखकर शोषण के अस्त्र कहा जाता है। कुल मिलाकर सामूहिक स्तर पर और भौतिक मूल्यों के आधार पर मानवता का हित साधना ही प्रगतिवादी काव्यधारा का चरम लक्ष्य है।

▶ प्रगतिवादी साहित्य में कल्पना को कतई महत्व नहीं दिया जाता

2.1.2 प्रगतिवादी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

साहित्य के क्षेत्र में कोई काव्यधारा सहसा उदित या विलुप्त नहीं हो जाती। काव्यधारा विशेष की जब विशिष्ट प्रवृत्तियाँ क्षीण पड़ जाती है और युगीन परिस्थितियों के अनुरूप दूसरी प्रकार की प्रवृत्तियाँ प्रमुख होने लगती हैं तब नयी काव्यधारा का सूत्रपात होता है। ऐसी नयी काव्यधारा का प्रारंभ सुविधा की दृष्टि से किसी नयी घटना से जोड़ दिया जाता है। प्रगतिवादी काव्य के साथ भी ऐसा ही हुआ । भारत में सन् 1936 में लखनऊ में पेरिस के 1935 में स्थापित प्रगतिशील लेखक संघ से प्रेरणा लेकर प्रतिष्ठित साहित्याकार श्री प्रेमचन्दजी की अध्यक्षता में जो 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' का प्रथम अधिवेशन हुआ, उसी वर्ष को प्रगतिवादी काव्यधारा का प्रारंभ मान लिया गया। भारत में भी उस समय तक वे ही परिस्थितियाँ नहीं रह गयी थीं जो छायावादी काल में थीं। बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप भिन्न प्रकार के साहित्य-सृजन की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। दूसरी बात यह कि जो प्रवृत्तियाँ प्रगतिवाद में प्रमुख रही हैं उनके सूत्र तो भारतेन्दु युग से ही दिखाई देने लगे

▶ प्रेमचन्दजी की अध्यक्षता में जो "भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ" का प्रथम अधिवेशन हुआ, उसी वर्ष को प्रगतिवादी काव्यधारा का प्रारंभ मान लिया गया

थे। उसमें रीतिकाल से भिन्न प्रकार की परिस्थितियों के अनुरूप नये स्वर काव्य में उभरे थे।

प्रगतिवादी युग तक परिस्थितियां और बदल गयीं थीं। भारतेन्दु युग में झलकी नयी प्रवृत्तियों को हवा देने में सहायक हुई यूरोप के देशों में पनपी समाजवादी विचारधारा, जिसे भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन ने अपनी मुहर लगाकर काव्य के लिए ग्राह्य घोषित कर दिया था। भारतेन्दु युग से ही काव्य में नयी मानसिक चेतना तथा यथार्थ दृष्टि झलकने लगी थी। उस युग में परिस्थितियों के दबाव से देशभक्ति और समाज-सुधार जैसी प्रवृत्तियाँ ही प्रमुखता प्राप्त कर पाई थीं। प्रेमचन्द और टैगोर ने प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशनों में परम्पराओं की बुद्धि एवं तर्कों के प्रकाश में व्यापक, उदात्त प्रगतिशील दृष्टि कोण अपनाने का सुझाव दिया था। परन्तु आगे मार्क्सवाद को प्रमुखता देकर लेखकों ने अपने दृष्टिकोण को कुछ संकीर्ण बना लिया और तब उसे नाम भी प्रगतिशील साहित्य के बजाय प्रगतिवादी साहित्य दे दिया। कवियों ने समाज को प्रगति की ओर ले जाने वाले विचारों, भावों में से मार्क्सवादी विचारों को वाणी देना आरंभ कर अपना दृष्टिकोण संकीर्ण बना लिया और उसका नाम प्रगतिवाद रख लिया। इस प्रगतिवादी काव्य की भी अपनी प्रवृत्तियाँ हैं। आगे इसके बारे में विस्तार से देखा जाएगा ।

- प्रगतिवादी चिन्तन मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित है

2.1.3 मार्क्सवाद और रूस की क्रांति में विश्वास

विश्व में मार्क्सवादी विचारधारा का उदय तीव्र वेग के साथ हुआ और इस विचारधारा ने सम्पूर्ण विश्व को बहुत तेजी से प्रभावित किया। इस विचारधारा ने सिर्फ यूरोप ही नहीं, बल्कि विश्व का कोई भी ऐसा देश नहीं था जो इससे अप्रभावित रहा हो। मार्क्सवादी विचारधारा ने संसार के प्रायः सभी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक चिंतन के साथ-साथ साहित्यिक चिंतन को प्रभावित किया। भारत उस समय ब्रिटिश हुकूमत का उपनिवेश था, जिसके शासनकाल में आम जनता का सर्वाधिक शोषण होता था। भारतीय समाज के प्रत्येक अंग पर मार्क्सवाद का प्रभाव पड़ा और हिन्दी साहित्य भी वैश्विक साहित्य की राह पर चल निकला या यूँ कहें की उस दौर से में मार्क्सवादी साहित्य एवं विचारधारा के प्रमुख केन्द्रों में एक भारत था, जिसकी आवाज सम्पूर्ण मार्क्सवादी दुनिया में गूंजती थी। यूँ तो मार्क्सवाद का प्रभाव हिन्दी साहित्य के सभी विधाओं पर समान रूप से परिलक्षित होता है।

- मार्क्सवादी विचारधारा ने संसार के प्रायः सभी राजनीतिक,सामाजिक, आर्थिक चिंतन के साथ-साथ साहित्यिक चिंतन को प्रभावित किया

प्रगतिवादी चिंतन मार्क्सवादी विचारधारा से अभिप्रेरित है जो साम्यवाद के आदर्श को पूरा करने में विश्वास रखता है। मार्क्स के अनुसार, पूंजीवादी व्यवस्था हिंसक क्रांति के साथ समाप्त होगी जिसके परिणाम स्वरूप पहले समाजवादी तथा अंततः साम्यवादी व्यवस्था आएगी जिसमें कोई शोषक और शोषित नहीं होगा। प्रगतिवादी साहित्यकारों का मार्क्स और रूस की क्रांती पर पूरा विश्वास था। इस संदर्भ में नरेंद्र शर्मा की पंक्तियाँ देखिए-

"लाल रूस है ढाल साथियों, मजदूर किसानों की,
वहाँ राज्य है पंचायत का वहाँ नहीं है बेकारी,
लाल रूस का दुश्मन साथी! दुश्मन सब इंसानों का।
दुश्मन है सब मजदूरों का,
दुश्मन सभी किसानों का।"

सामान्यतः हिन्दी कविता का मूल स्वर क्रांतिकारी भावना से ओत-प्रोत रहा है। आदिकाल

में नाथों और सिद्धों की कविता में क्रांति भावना का उन्मेष दिखाई पड़ता है, जिसका विकास संतों की कविता में विस्तार से परिलक्षित होता है। भारतेन्दु युग में भारतेन्दु हरिश्चंद्र और उनके सहयोगियों में क्रांति की चिनगारी अंदर-अंदर सुलगती दिखाई पड़ती है। भारतेन्दु युग के समान द्विवेदी युग में भी क्रांति भावना दिखाई पड़ती है। उसके उपरांत पूंजीवाद ने साहित्य जगत (छायावाद) को भी ग्रसित कर लिया। छायावादी कविता में मार्क्सवादी अंतर्वेदना छिपी हुई थी। छायावादी अंतर्वेदना ही कार्ल मार्क्स से प्रेरणा के माध्यम से प्रगतिवादी साहित्य में वर्ग-संघर्ष की कहानी के रूप में प्रस्तुत हुई। प्रगतिवाद का मूल स्वर मार्क्सवाद रहा, यही कारण है कि विद्वानों ने मार्क्सवाद और प्रगतिवाद को एक ही माना है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार- 'प्रगति का अर्थ है- मार्क्सवाद ढंग से आगे बढ़ाना।' (सिंह, 2011, पृ. 59) रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार 'प्रगतिवाद की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसने काव्य में राजनीति कि स्थापना की है।' (सिंह, 2011, पृ. 59)

- छायावादी कविता में मार्क्सवादी अंतर्वेदना छिपी हुई थी

पहले ही बताया जा चुका है कि प्रगतिवादी काव्य में क्रांति का बहुत ऊंचा स्वर सुनाई पड़ता है। प्रगतिवादियों को जिस तरह रूस की क्रांति पर विश्वास था वैसे ही वे क्रांति का आह्वान अपने देश में भी करना चाहते थे। अपने साहित्य के द्वारा उन्होंने इसे व्यक्त भी किया है। प्रगतिवादियों द्वारा निर्दिष्ट इस क्रांति का आह्वान भी इस ढंग का है जैसा कि पहले के और बाद के किसी युग के काव्य में नहीं रहा। ये कवि सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक-सभी क्षेत्रों में साम्यमूलक बौद्धिक क्रांति का समर्थन करते हैं। इतना ही क्यों वे रक्त क्रांति लाने का आह्वान करते हैं। उन्हें साय का सारा पुरातन तो जीर्ण और त्याज्य लगता ही है, मौजूदा भी नष्ट करने योग्य प्रतीत होता है। नवीन जी पानी के बजाय आग की वर्षा होते देखना चाहते हैं और उस माध्यम को, पर्वत को ही नष्ट कर देना चाहते हैं जिससे रुककर हवाएँ वर्षा करती हैं-

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाये,
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए,
प्राणों के लाले पड़ जाएँ"

(बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता "विप्लव गान" की पंक्तियाँ)

ऐसी क्रांति का विचार प्रगतिवादियों को रूस से मिला इसलिए वे रूस के प्रति आस्था रखते हैं। सुमित्रानंदन पंत भी मार्क्स के क्रांतिकारी विचारों की प्रशंसा करते हैं-

"धन्य मार्क्स चिरतमाच्छन्न पृथ्वी के उदय शिखर पर,
तुम त्रिनेत्र के ज्ञान चक्षु से प्रकट हुए प्रयलंकर"

शिवमंगल सिंह सुमन ('प्रलय सृजन') की कविता की पंक्तियाँ

"लाल निशान, लाल सैनिक,
आँखो में लाल सुरूर है,
दस हफ्ते दस साल बन गए,
मॉस्को अब भी दूर है।"

शमशेर बहादुर सिंह की पंक्तियाँ देखिए-

"भारत का आत्मराग
भूत और भविष्य का वितान लिए
कल-मान - विज्ञ
मार्क्स गाँ में तुला हुआ
वाम वाम वाम ! दिशा -
समय साम्यवादी !"

▶ प्रगतिवादी साहित्य के आक्रोश पूँजीवाद के प्रति था

प्रगतिवादी कवि रूस के नेताओं और रूस की व्यवस्था का गुणगान करने में गौरव का अनुभव करते हैं । वे रूस की क्रांति से बहुत प्रभावित हुए हैं। रूस और वहां की क्रांति की चर्चा कर ये कवि देश में ऐसी स्थिति लाने के लिए लोगों को उकसाना चाहते थे ।

2.1.4 पूँजीवादी व्यवस्था से घृणा

प्रगतिवादी साहित्य के आक्रोश का केन्द्र पूँजीवादी व्यवस्था एवं पूँजीपति वर्ग है। मार्क्स के अनुसार पूँजीपतियों द्वारा स्थापित उद्योगों में उत्पादन का कार्य मजदूर करते हैं किन्तु उससे पैदा होने वाले धन को पूँजीपति हड्प कर जाते हैं। इस अधिशेष मूल्य को हस्तगत करके वे मजदूर का शोषण करते हैं। इसलिए प्रगतिवादी कवि पूंजीवाद के प्रति विरोध का भाव रखते हैं।

"तू है मरण, तू है रिक्त, तू है व्यर्थ,

तेरा ध्वंस केवल एक तेरा अर्थ।" (मुक्तिबोध)

मार्क्स के चितन से प्रभावित इनके काव्य का मूल स्वर शोषक, शोषित वर्ग विभाजन है। इनका विश्वास है कि सामाजिक विषमता का मूल कारण और सामान अर्थव्यवस्था है। पूंजी के कुछ हाथों में सिमट जाने से मानव-मानव में, छोटे-बड़े का भेद उत्पन्न होता है। पूंजी का संग्रह भी शोषित की प्रक्रिया पर आश्रित है। मजदूरों और किसानों के श्रम से उत्पन्न पूंजी में उनको पूरा हिस्सा नहीं मिलता। साधनों पर स्वामित्व रखने वाले व्यक्ति दूषित मार्गों से उत्पादन पर अधिकार कर लेते हैं। इस प्रकार मजदूर वर्ग शोषित बन जाता है यह शोषण आर्थिक क्षेत्र में नहीं रहता। अपितु धर्म और समाज को भी प्रभावित करता है, शोषक वर्ग संपन्न होने के कारण समाज के अंगों पर प्रभावी हो जाता है। यही कारण है कि शोषित जन आर्थिक सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से पिछड़ जाते हैं और शोषक वर्ग की दृष्टि में हेय बन जाता है।इसीलिए प्रगतिवादी कवि कह उठता है -

"दो वर्गों में बट-बटकर यह विश्व भरा जाता है,

छीना झपटी का इसमें रण रोग लगा जाता है।"

प्रगतिवादी कवि शोषक वर्ग के प्रति अपनी घृणा और रोष भी प्रकट करते है । शोषित वर्ग के प्रति करुणा का भाव भी प्रकट करते है। इस संदर्भ में दिनकर जी की पंक्तियाँ देखिए:-

"श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं

युवती के लज्जा वसन बेच जब ब्याज चुकाए जाते हैं
मालिक जब तेल-फुलेलों पर पानी-सा द्रव्य बहाते हैं
पापी महलों का अहंकार देता तब मुझको आमन्त्रण"

इस वाद के कवि मानते हैं कि पूंजीवादी शासन व्यवस्था की नींव मूलतः शोषण पर आधारित है, इसलिए उनकी कविताओं में पूंजीवादी के प्रति स्पष्ट विरोध है।

2.1.5 समसामयिक बोध

प्रगतिवादी कवियों ने केवल रूस का ही गुणगान नहीं किया, अपितु अपने समय की समस्याओं पर भी विचार किया है। वे अपने युग की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं की ओर से बेखबर नहीं रहे। उन्होंने बंगाल में अकाल, साम्प्रदायिक दंगों, बेकारी, गरीबी, देश विभाजन, गांधीजी की हत्या आदि का भी उल्लेख किया है। प्रगतिवादी कवि को आँखें खोले रहने के लिए सचेत करता है-'ओ घनी कलम के आँख खोल/अव वर्तमान बन सत्य बोल।'

गांधीजी की मृत्यु पर रक्त क्रांति के समर्थक प्रगतिवादी लेखक ने लिखा है-

"बापू मरे
अनाथ हो गयी भारत माता
अब क्या होगा ?"

अफ्रीका के 'लुमुम्बा' की हत्या पर नागार्जुन उसी तरह दुख व्यक्त करते हैं, जिस प्रकार कि गांधीजी की हत्या पर। वे कहते हैं-

"मैं सुनता हूँ अफ्रीका की आत्मा का प्राण
मैं सुनता हूँ धरती के कण-कण का रोष।"

इन कवियों की दृष्टि में पूर्व-पश्चिम का कोई भेद नहीं रहा। शमशेर की 'अमन का राग' कविता अन्तर्राष्ट्रीय बोध की भूमिका पर आधारित है, उसे सभी संस्कृतियों से प्यार है-

"सब संस्कृतियाँ मेरी सरगम में विभोर हैं,
क्योंकि मैं, हृदय की सच्ची सुख शांति का राग हूँ।"

कवि रणजीत ने 'ये सपने ये प्रोत' में न्यूयार्क में रंगभेद के खिलाफ उमड़ते आक्रोश, सिंगापुर का आन्दोलन, जंजीवार का जुलूस आदि बहुत कुछ वर्णित किया है। निरालाजी ने बंगाल के अकाल से उत्पन्न स्थिति का मार्मिक ढंग से चित्रण किया है-

"बाप बेटा बेचता है
भूख से बेहाल होकर
धर्म-धीरज प्राण खोकर
हो रही अनरीति बार्बर।"

हिरोशिमा के पतन पर कवि की वेदना इन शब्दों में व्यक्त हुई है-

"हिरोशिमा में मनुज मर गया

दौड़ रही है गंधक और फास्फोरस की पीली लपटें

जिसमें उस जापान देश का सदियों का संगीत मर गया।”

इस प्रकार प्रगतिवादी लेखक में जन-जन की चिंता समाई हुई है।

2.2.4 यथार्थ चित्रण और मानवतावादी दृष्टिकोण

प्रगतिवाद से पहले के साहित्य में उच्च वर्ग या मध्य वर्ग का चित्रण होता था। प्रगतिवादी कवियों ने निम्न वर्ग को भी देखा। ग्रामीण जनता के जीवन यथार्थ को अपने साहित्य के माध्यम से पेश किया। सौन्दर्य में डूबा हुआ साहित्य यथार्थ की धरातल पर उतरा। शोषण के दुष्परिणामों को भी दर्शाने का प्रयास किया। उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त की।

“सडे घूर की गोबर की बदबू से दबकर

महक ज़िंदगी के गुलाब की भर जाती है।” (केदारनाथ अग्रवाल)

कवि को व्यक्ति के कटु सत्यों के सामने ऐश्वर्य, विलासिता सब फीके लगते हैं। ताजमहल के संबंध में सुमित्रानंदन पंत की पंक्तियाँ देखिए -

“हाय मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन,

जब विषण्ण निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन”

कवि पंत भारत के ग्रामों के दुर्दशा पर भी अपनी चिंता व्यक्त करते हैं -

“यह तो मानव लोक नहीं है, यह है नरक अपरिचित,

यह भारत का ग्राम सभ्यता, संस्कृति से निर्वासित।”

मार्क्स का मानना था कि मनुष्य के भविष्य का निर्माण करनेवाला कोई ईश्वर नहीं है, बल्कि मनुष्य ही है। इसी लिए प्रगतिवादी कवि भी मानवतावाद पर ज्यादा ज़ोर देने लगा। प्रगतिवाद कवियों के दो समुदाय हैं- एक तो अपनी मातृभूमि के लिए लिखता है और अपने ही देश के भिखमंगों, किसानों, मजदूरों, वेश्याओं और विधवाओं का उद्धार करना चाहता है। दूसरा समुदाय समस्त मानवता का उद्धार चाहता है। उसे संसार के सब पीड़ित लोगों से प्यार एवं सहानुभूति है। उसे संसार के किसी भी कोने में किये गये अत्याचार के प्रति रोष है। उसके लिए हिन्दू और मुसलमान, हब्शी और यहूदी मानव के नाते सब बराबर हैं। कवि पन्त ‘स्वर्ण-धूलि’ में लिखते हैं-

▶ प्रगतिवादी कवि मानवतावाद पर ज़ोर देने लगे

“नहीं छोड़ सकते रे यदि जन,
देश राष्ट्र राज्यों के हित नित्य युद्ध करना,
हरित जनाकुल धरती पर विनाश बरसाना,
तो अच्छा हो छोड़ दें. अगर हम
अमरीकन, रूसी औ इंगलिश कहलाना,
देशों में आये घरा निखर, पृथ्वी हो सब मनुजों का घर,
हम उनकी सन्तान बराबर। - पंत

“जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के ?

जाने कब तक सच्चे होंगे, सपने सबकी समता के?" -नरेन्द्र शर्मा

2.2.5 प्रगतिवादी कवियों का नारी चित्रण

प्रगतिवादी कवि के लिए मजदूर तथा किसान के समान नारी भी शोषित है, जो कि युग-युग से सामन्तवाद की काया में पुरुष-दासता की लौहमयी शृंखलाओं से बद्ध बंन्दिनी के रूप में पड़ी है। वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खो चुकी है और वह केवल मात्र रह गई है पुरुष की वासना-तृप्ति का उपकरण। उसमें आत्मा की उज्ज्वलता पुरुष की दृष्टि से एकदम विलुप्त हो गई है-

▶ प्रतिवादी कवियों की दृष्टि में नारियाँ शोषित वर्ग है

"योनि नहीं है रे नारी वह भी मानवी प्रतिष्ठित।

उसे पूर्ण स्वाधीन करो वह रहे न नर पर अवसित।" -पन्त

नरेन्द्र शर्मा ने वेश्या के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए उसके पतन का दायित्व समाज पर ठहराया है-

"गृह-सुख से निर्वासित कर दी हाय मानवी बनी सर्पिणी,
यह निष्ठुर अन्याय, आओ बहिन!
अरी सर्पिणी अरे तेरे मणिमय मस्तक पर मैं,
अंकित कर दूं निर्धन चुम्बन आ सर्पिणी, आ
ले भाई का निर्बल आलिंगन।"

कवि पन्त पुकार उठता है-

"मुक्त करो नारी को।"

प्रगतिवादी कवि ने शृंगार रस के अन्तर्गत नारी के 'प्रेम' का भी चित्रण किया है ।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रगतिवादी छायावाद के कोमल स्वप्नों का यथार्थ की कटुता से छिन्न-भिन्न करके काव्य जगत में अवतारित हुआ था। इसलिए वह जीवन के अधिक निकट है। प्रगतिवादियों ने आदर्श के तरह वायुमण्डल यथार्थ धरती पर उतरकर जनजीवन की जीती जागती प्रतिभा को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुतीकरण भी इस प्रक्रिया में जनजीवन की भीतरी और बाहरी दोनों ही तस्वीरें उभर कर सामने आयी है। समाज की उन्नति और नव निर्माण के लिए सबसे पहले रूढ़ियों का प्रहार किया गया। युगो से चली आ रही धार्मिक और नैतिक मान्यताओं को छोडकर शोषित और पीड़ितों का करूण गान प्रस्तुत होने लगा। इन कवियों ने मजदूरो और किसानों के प्रति सहानुभूतिपरक दृष्टिकोण अपनाया साथ ही मध्यवर्गीय समाज की विलखती जिन्दगी भी इनकी दृष्टि से अलग नही रह सकी।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों के बारे में लिखिए।
2. मानवतावाद के उन्नायक थे प्रगतिवादी कवि। स्पष्ट कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रगतिवाद - शिवकुमार मिश्र
2. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
3. हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद और अन्य निबंध - विजयशंकर मल्ल
4. हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान - मैनेजर पांडे

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक साहित्य - नंददुलारी वाजपेयी
2. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां - डॉ. नामवर सिंह
3. छायावाद - नामवर सिहं
4. हिन्दी कविता में युगान्तर - सत्येन्द्र
5. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी - नंददुलारी वाजपेयी
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नागेंद्र
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
8. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डॉ गणपति चंद्र गुप्त।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3

प्रमुख प्रगतिवादी कवि- नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, बालकृष्ण शर्मा नवीन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रगतिवादी कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- प्रत्येक कवि के प्रगतिवादी दृष्टिकोण से परिचित होता है
- प्रगतिवादी काव्यों में प्रस्तुत विषयों से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

छायावाद के अन्त में वैशिष्ट्य, वैयक्तिकता के और काल्पनिकता के स्थान पर सामूहिकता और सामाजिकता का प्रभाव बढ़ने लगा था। निराला ने सामाजिक विसंगतियों की ओर संकेत किया था। फलतः छायावादोत्तर काव्य में हृदयवाद के स्थान पर यथार्थोन्मुख बुद्धिवाद का विकास हुआ। सन् 1936 ई. में प्रगतिशीत लेखक संघ की स्थापना के बाद ज़िन्दगी की ठोस हकीकत को सामने रखा गया। छायावाद का अन्तर्जगत प्रगतिवाद के बहिर्जगत के दबाव में पिघल गया। प्रगतिवादी कवियों ने सामाजिक यथार्थ, शोषित और सर्वहारा के वर्णन को केन्द्र में रखकर सामाजिक सच्चाई को आक्रोश और तेवर के साथ अभिव्यक्त किया। नया हुनर, वसुधा, हंस आदि पत्रिकाएँ प्रगतिशील चेतना की वाहक बनीं। शिवमंगल सिंह सुमन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, शमशेर बहादुर सिंह प्रगतिवाद के विशिष्ट कवि हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

समाजवादी विचारधारा, प्रगतिशील लेखक संघ, शोषित, सर्वहारा, भौतिकवाद

Discussion / चर्चा

3.1 प्रमुख प्रगतिवादी कवि

सन् 1936 के आस-पास काव्य लेखन के क्षेत्र में बहुत अमूल चूल परिवर्तन हुए, इन परिवर्तनों के फलस्वरूप कविता के नए स्वरूप का आगमन हमारे सम्मुख हुआ, जिसे प्रगतिवादी कवितायें और हिन्दी साहित्य में इस युग को प्रगतिवादी युग (Pragativadi Yug) कहा जाता है। प्रगतिवाद की कविताओं ने जीवन को यथार्थ से जोड़ा। प्रगतिवादी युग के अधिकांश कवि कार्ल मार्क्स की समाजवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। प्रगतिवादी कवियों को हम तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम श्रेणी में उन काव्य लेखकों को सम्मिलित

किया गया मूल रूप से पूर्ववर्ती काव्यधारा छायावाद से सम्बंधित हैं, दूसरी श्रेणी में वे कवि हैं जो मूल रूप से प्रगतिवादी कवि हैं और तृतीय श्रेणी में वे कवि है जिन्होंने अपनी काव्य-साधना प्रगतिवादी कविताओं से शुरु की परन्तु बाद में उन्होंने प्रयोगवादी या नई प्रकार की कविताओं की ओर अपने काव्य को सृजित किया।

प्रगतिवादी धारा में समाज के शोषित वर्ग, मज़दूर एवं किसानों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गयी, इसके साथ साथ धार्मिक रूढ़ियों, ऊँच नीच की भावना और सामाजिक विषमताओं पर चोट की गयी। इस युग में हिन्दी कविता एक बार फिर किसानों, मजदूर, खेतों और खलिहानों से जुड़ी।

3.1.1 सुमित्रानंदन पंत

श्री सुमित्रानंदन पंत हिन्दी-काव्य में प्रगतिवाद के सूत्रपात कर्ताओं में से है। छायावाद की ओर से प्रगतिवादी आंदोलन की ओर इनके मुड़ जाने से नवयुवक कवियों पर बहुत प्रभाव पड़ा और वे भी उस ओर प्रवृत्त हुए। मार्क्सवाद की ओर पंतजी का झुकाव सामूहिक हित की दृष्टि से है। व्यक्तिगत रूप से गाँधीवाद से भी ये प्रभावित प्रतीत होते हैं और भारतीय आत्मवाद का भी इन पर गहरा रंग है। मार्क्सवादी आत्मा की सत्ता नहीं मानते। 'पदार्थ' को ही सब कुछ समझते हैं। पंत इस पर असहमति प्रकट करते हैं। पंतजी 'पदार्थ' को ही सब कुछ नहीं स्वीकार करते और संकीर्ण भौतिकवादियों से प्राप्ति के लिए ये भौतिकवाद को साधन मात्र मानते हैं। स्पष्ट है कि मार्क्स के भौतिकवाद की ओर इनका झुकाव वर्तमान विषमता के उन्मूलन का आशा से ही है। इस प्रकार ये आत्मा और जगत का सामंजस्य ही घटित करना चाहते हैं। भौतिकता की जो उपेक्षा हुई है उसका परिहार मात्र इनका आशय प्रतीत होता है। पंत जी प्रगतिवाद के भीतर भी आकर अपना सौंदर्यवादी रूप बनाए हुए हैं। युगवाणी और ग्राम्या में जो सबसे बड़ा परिवर्तन उनमें हुआ वह है यथार्थोन्मुखता। कल्पना के लोक से उतर कर यथार्थ जगत् के वैषम्य और उसकी पीड़ा का अनुभव करने के साथ ही निम्नवर्गीय जन-जीवन के नानाविध चित्र आँकने का प्रयास इन्होंने किया है।

> ▶ 'युगांत' सुमित्रानन्दन पंत का ही नहीं हिन्दी का भी प्रथम प्रगतिवादी कविता-संकलन है

उनके 'युगांत' का रचना-काल 1934 से 1936 है, यद्यपि इसमें एक रचना 1930 की भी सम्मिलित कर दी गई है। इसका प्रकाशन 1936 के अन्त में प्रथम बार इन्द्र प्रिंटिंग वर्क्स, अल्मोड़ा से हुआ। इसमें छोटी-चड़ी कुल 33 रचनाएँ संकलित हैं। 'युगांत' सुमित्रानन्दन पंत का ही नहीं हिन्दी का भी प्रथम प्रगतिवादी कविता-संकलन है। इसके पूर्व की मध्ययुगीन तथा आधुनिकयुगीन कुछ कविताओं में प्रगतिवादी चेतना की स्फुट झलक तो है या कुछ कविताएँ ही प्रगतिवादी विचारधारा को व्यक्त करती हैं। लेकिन एक विधिवत् संकलन के रूप में वे नहीं हैं। केवल इतना ही नहीं 'युगांत' के पूर्व इस प्रकार की समान विचारधारा वाली विभिन्न कवियों की कविताओं का भी कोई संकलन हिन्दी में नहीं है। ऐसी स्थिति में 'युगांत' निश्चय ही हिन्दी में प्रगतिवाद का प्रवर्तक काव्य-संकलन है। 'युगांत' के प्रकाशन के साथ हो हिन्दी में प्रगतिवाद की चर्चा व्यापक रूप में आरम्भ हुई। 'युगांत' नामकरण से ही यह बोध होता है कि उसके प्रकाशन के द्वारा स्वयं पंत जी ने जैसे एक युग- छायावादी युग का अन्त कर दिया।

> ▶ 'युगांत' के प्रकशन से हीं हिन्दी में प्रगतिवादी की चर्चा का आरंभ

3.1.2 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-

निराला साहित्य के क्षेत्र में छायावाद के प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। लेकिन परवर्ती रचनाओं में उनका क्रांतिकारी रूप हम देख सकते हैं। निराला का कवि यहीं पर प्रगतिवाद से

जुड़ता हैं। 'निराला' प्रगतिवादी चेतना के कवि हैं, इनका यथार्थ अत्यंत व्यापक विराट तथा इनका सौन्दर्य इतना विलक्षण है कि उसमें जीवन का सर्वस्व समाहित हो गया है। निराला ने समाज में व्याप्त दोषों के प्रति केवल आक्रोश ही प्रकट नहीं किया बल्कि उन्हें व्यक्तिगत जीवन में जड़ से नष्ट करने का प्रयास भी किया। निराला ने समाज में जो देखा, जो सुना, जो अपने अन्दर महसूस किया। उसी को कवितादि के माध्यम से व्यक्त किया। वे आदर्शों का सम्मान करते हैं किन्तु यथार्थ को झुठला नहीं सकते। अगर हम प्रगतिवादी चेतना की बात करें तो इसका शुभारम्भ कबीर से हो गया था जो भारतेन्दु काल में यथार्थवादी दृष्टिकोण के रूप में विकसित हुआ। बाद में यह चेतना राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन और मार्क्सवाद से प्रेरणा ग्रहण करती हुई आगे बढ़ी। मार्क्सवादी विचारधारा का साहित्य में उदय ही प्रगतिवाद कहलाया। प्रगतिवादी समाज को शोषक और शोषित के रूप में देखता है। प्रगतिवादी शोषक वर्ग के खिलाफ शोषित वर्ग में चेतना लाने तथा उसे संगठित कर शोषण मुक्त समाज की स्थापना की कोशिशों का समर्थन करता है। यह पूँजीवाद, सामंतवाद, धार्मिक संस्थाओं को शोषक के रूप में चिन्हित कर उन्हें उखाड़ फेंकने की बात करता है।

- ▶ मार्क्सवादी विचारधारा का साहित्य में उदय ही प्रगतिवाद कहलाया

'निराला' की सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि वे किसी वाद में बंधना नहीं चाहते या बंधे बंधाये रास्ते पर नहीं चलते, बल्कि भारतीय जनमानस के संघर्षों और जनजीवन की विसंगतियों से उद्वेवलित होकर साहित्य रचना में संलग्न होते हैं। 'निराला' की प्रगतिशीलता जनसामान्य के जीवन में निहित है, क्योंकि वे जन-जन के कवि हैं, अपने आप को वे प्रत्येक जन में देखते हैं, उनके सभी कष्टों को अपना समझते हैं और कष्टों से बचाने के लिए तत्पर रहते हैं। कहा जाता है कि वह समाज ही क्या जिसमे प्रगति का गुण विद्यमान न हो। प्रगति का अर्थ तभी सार्थक हो सकता है जब समग्र विकास हो। समग्र विकास नहीं तो प्रगति का कोई अर्थ नहीं। प्रगति का पहला स्वर कबीर की वाणी से प्रस्फुटित हुआ था। वे समाज के हर वर्ग को एक साथ देखना चाहते थे। कबीर के मनोभावों की झलक 'निराला' में दिखाई देती है। निराला स्व-दुःख से नहीं पर दुःख से पीड़ित थे। जनता को दुःखी देखकर उनकी अन्तरात्मा रोती थी। जिसकी परिणति काव्य में प्रगतिशीलता के रूप में दिखती है। वे चाहते थे कि जनसामान्य में व्याप्त विसंगतियों एवं विषमताओं को समाप्त कर सुखी सम्पन्न समाज की स्थापना हो। इसी बात का प्रमाण है उनके प्रगतिवादी काव्य संग्रह।

- ▶ प्रगति का पहला स्वर कबीर की वाणी से प्रस्फुटित हुआ था

'निराला' की प्रगतिशील दृष्टि अपनी आरम्भिक रचना 'जुही की कली' से ही दिखाई देने लगती है। जिसमें निराला छंद के बंधनों को तोड़ मुक्त छन्द में कविता की रचना करते हैं। यह प्रयास उनकी प्रगतिशील दृष्टि का परिचायक है। इस रचना को लेकर अनेक आरोप निराला पर आलोचकों द्वारा लगाये गये परन्तु वह मदमस्त हाथी अपनी गति से आगे बढ़ता रहा। उसके बाद 'परिमल' की बात करें जिसमें कवि एक ओर तो प्रकृति एवं सौन्दर्य का सृष्टा है तो दूसरी ओर वह क्रान्तिकारी एवं विद्रोही भी है-

"जब कड़ी मारे पड़ी, दिल हिल गया,
पर न कर चूँ भी, कभी पाया यहाँ,
दीन का तो हीन यह वक्त है
रंग करता भंग जो सख-संग का
मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण"

'निराला' केवल राजनीतिक जागरण नहीं चाहते, वे तो समाज की इस पुरानी जर्जर व्यवस्था में बदलाव चाहते हैं। यही स्वर 'बादल राग' और 'आह्वान' कविताओं में स्पष्ट है। 'भिक्षुक' कविता में उनके संवेदनशील व मार्क्सवादी दृष्टिकोण की प्रस्तुति होती है-

"दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते,

घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे जूठी पत्तल ये कभी सड़क पर खड़े हुए,

और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।"

▶ निराला ने उन विषयों को अपनी कविताओं में चुना जो उस समय अस्पृश्य मानी जाती थी

यह भाव किसी भी मानव की अन्तरात्मा को झकझोरने में सक्षम हैं। निराला ने उन विषयों को अपनी कविताओं के लिए चुना जो उस समय कवि लोक में अस्पृश्य व अग्राह्य समझे जाते थे। इसीलिए उनकी कविताओं के शीर्षक जन सामान्य के निकट 'विधवा', 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' और 'कुकुरमुत्ता' बने।

निराला के काव्य में चारो तरफ प्रगतिवादी के साथ मानवतावादी दृष्टिकोण व्याप्त है। उनके हृदय में पीड़ितों, पद- दलितों एवं शोषितों के प्रति गहन संवेदना व्याप्त हैं। वह तोड़ती पत्थर में लिखा है-

"वह तोड़ती पत्थर

देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर

वह तोड़ती पत्थर

कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,

श्याय तन, भर बंधा यौवन

नत नयन, प्रिय-कर्म- रत- मन

गुरू हथौड़ा हाथ,

करती बार-बार प्रहार

सामने तरु- मालिका अट्टालिका, प्राकार।"

3.1.3 केदारनाथ अग्रवाल

प्रगतिवादी धारा के सबसे प्रमुख कवियों में केदारनाथ अग्रवाल का नाम आता है। वे मूलतः प्रगतिवादी आन्दोलन से जुड़े हुए कवि हैं। उनकी प्रारंभिक कविताओं में छायावादी रूमानियत का प्रभाव स्पष्ट रूप से दर्शित होता है। लेकिन जनवादी दृष्टि उनमें धीरे धीरे घर कर गई है। केदारनाथ अग्रवाल का जन्म राजस्थान में 9 जुलाई, 1911 ई, को हुआ था। ये बी. ए. ए. एल. बी. करके बांदा में वकालत करते रहे। वे छायावाद में कविताएं करते थे और बाद में मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित होकर प्रगतिवादी काव्य का सृजन करने लगे। केदार का काव्य अनुभूति की ठोस भूमि पर प्राप्त है। इनके कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें से 'नींद के बादल' (1947), 'युग की गंगा' (1947), 'लोक श्रीर प्रालोक' (1957) प्रमुख हैं। इनकी 'फूल नहीं रंग बोलते' भी महत्त्वपूर्ण काव्यकृति है। इनकी 'नींद के बादल' काव्य-कृति में छायावादी और प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्तियों का समावेश है। इसके बाद की 'युग की

▶ केदारनाथ ने मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित होकर वर्तमान व्यवस्था के प्रति असंतोष जगाने का प्रयत्न किया है

▶ मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित

गंगा' 'लोक और आलोक' तथा 'फूल नहीं रंग बोलते है' कविताओं में प्रयोगवादी काव्य की प्रवृत्तियाँ विद्यमान है। युग की गंगा से ईश्वर का उपहास उडाया गया है, समाज की बर्थ-नीति पर प्रहार किया गया है, ग्राम की प्रकृति का चित्रण किया गया है और जीवन की यथार्थता को दर्शाया है। कवि का दृष्टिकोण प्रगतिवादी और यथार्थ है। सामाजिक विसंगतियों के प्रति घृणा तथा विद्रोह का भाव भी उनकी कविताओं में व्यक्त हुआ है। जीवन की कुरूपता घोर विसंगतियाँ यहाँ अपने वास्तविक रूप में उभरकर सामने आई है।

कविताओं में कवि की जीवन दृष्टि महत्व की है। कवि ने मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित होकर वर्तमान व्यवस्था के प्रति असंतोष जगाने का प्रयत्न किया है। इस काव्य संग्रह में कही तो जमींदारों को साम्राज्यवाद के प्रति रोष की अभिव्यक्ति की गयी है तथा कहीं उच्चवर्ग तथा निम्न वर्ग, पूंजीपति और मजदूर, गांव और शहर के जीवन की तुलना की गयी है। शहर के लड़कों का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है-

"झूठी जली बीड़ियों को बीनकर
घूमते निकलते हैं पीते हुए
माओं और बहिनों को
पाप की दृष्टि से ताकते हैं।
शहर के छोकड़े
गंदा धुआँ छोड़ते हैं समाज में।"

यहाँ शहरी सभ्यता के प्रति कवि का असंतोष झलक उठा है। वहीं कवि ने काव्यसंग्रह मे गांवों की प्रकृति का सफलतापूर्वक मनोरम चित्रण किया है।

"ज्वार खड़ी खेतों में ऊंची लहराती है,
कहती है मेरे यौवन को बढ़ने देता ।
____
आती है जो प्रिय बालाए आने देना
काली आँखों में मुझको बस जाने देना ।"

'लोक और आलोक' में युग गंगा की अपेक्षा अधिक ओजपूर्ण वर्णन है। कहीं शुष्क उपदेश है तो कहीं क्रांति का आह्वान। 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' की 'बसंती हवा' और 'माझी न बजाओ बंशी' कविताओं में प्रगतिवादी कविताओं की भांति ही प्रकृति के सौंदर्य का उद्‌घाटन किया गया है। इस संग्रह की कविताओं में सामाजिक यथार्थ के चित्रण के साथ-साथ व्यंग्य भी देखने को मिलते है।

कवि अपने परिवेश से विक्षुब्ध भी हो जाता हैं । उसे अपनी धरती की सौंधी गन्ध अभिभूत करती है। यह क्रांति की भावना उकसाने का भी प्रयत्न करता रहा है-

"काटो काटो काटो कल जो साइत और कुसाइत क्या है।
मारो मारो मारो हंसिया, हिंसा और अहिंसा क्या है।"

कृषकों की दुरवस्था पर भी कवि चिंतित है।

"कृषकों के पौरुष से उपजा कन-कन सोना
लढियों में लद-लद कर आ आ
बीच हाट में बिककर कोठों गोदामों में
गहरी खोओं में खो जाता है जा जाकर।"

इस तरह देख सकते है कि प्रगतिवादी कविता के क्षेत्र में केदारनाथ अग्रवाल का योगदान कितना महत्वपूर है। उन में शोषित वर्ग के प्रति, ग्राम्य जीवन के प्रति लगाव है और अनुभूति की सच्चाई है।

3.1.4 नागार्जुन

प्रगतिवादी कवियों में अगले प्रमुख कवि है नागार्जुन। उनका जन्म दरभंगा जिले के तरीनी स्थान पर सन् 1910 ई. में हुआ था। इन्हें कष्टपूर्ण जीवन यापन करना पड़ा। इनको स्कूली शिक्षा नसीब नहीं हो सकी। नागार्जुन ने घर पर ही हिन्दी, संस्कृत का अध्ययन किया। इनका वास्तविक नाम बैद्यनाथ मिश्र था। पहले वे 'यात्री' नाम से मैथिली में कविताएँ लिखते थे। ये स्वतंत्र लेखन करते रहे है। कविताओं के अलावा इन्होंने उपन्यास भी लिखे हैं। घुमक्कड़ वृत्ति वाले नागार्जुन मे संघर्षो का सामना किया है, समाज को बहुत करीब से देखा है तभी तो इनकी रचनाओं में अनुभूति की आग है जो अभिव्यक्ति को स्वतः ही प्रभावपूर्ण बना देती है। आजादी के बाद के भारत की बहुत साफ तस्वीर इनके काव्य में देखने को मिल जाती है। नागार्जुन के काव्य संग्रहों में 'युगधारा', 'सतरंगे पंखो वाली', 'प्यासी पथराई आँखें' उल्लेखनीय है। 'भसमांकुर' इनका खण्डकाव्य है। नागार्जुन ने देश की अर्थव्यवस्था, समाज-व्यवस्था, राजनीतिक स्थिति का बड़ा यथार्थपरक चित्रण किया है। इन्होंने सरकार की बुराइयों पर भी प्रहार किये हैं। ये नहरूजी पर भी व्यंग्य करने से नहीं चूके हैं। महात्मा गांधी की हत्या में सम्प्रदायवाद, फासिस्टवाद और गृहमंत्री की असावधानी की गंध उन्हें मिली और यह बात उन्होंने डंके की चोट कही। हरिश्चन्द्र युग के कुछ साहित्याकारों को छोड़कर पिछले पचास वर्षो में नागार्जुन जैसा तीखी और सीधी चोट करने वाला व्यंग्यकार साहित्य में नहीं है।

▶ नागार्जुन ने देश की अर्थव्यवस्था, समाज-व्यवस्था, राजनीतिक स्थिति का बड़ा यथार्थपरक चित्रण किया है

नागार्जुन की कविताएँ मोटे तौर पर तीन प्रकार की हैं। उनकी एक प्रकार की कविताएँ वे हैं जो गंभीर संवेदनात्मक और कलात्मक हैं। इनमें मानव मन की रागात्मक छवियाँ तथा मानवीय संभावनाएँ रेखांकित हैं। दूसरे प्रकार की कविताएँ वे हैं जिनमें सामाजिक बुराइयों, राजनीतिक अव्यवस्था और धार्मिक अव्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। इनमें बुराइयों पर तीखे व्यंग्य किये गये हैं। तीसरे प्रकार की कविताओं में उद्‌बोधन देने एवं प्रचार करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। ये कुछ हल्के स्तर की हैं।

कवि की 'युगधारा' सन् 1956 में, 'सतरंगे पंखों वाली' 1959 में और 'प्यासी पथराई आँखें' 1962 में प्रकाशित कृतियां हैं। 'भस्मांकुर' इनकी बाद की प्रबन्ध कृति है। कवि के प्रथम काव्य-संग्रह 'युगधारा' का प्रमुख स्वर व्यंग्य का है। गांधीजी के नाम पर जो कुछ हो रहा है उसे कवि के व्यंग्य के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है-

"बेच-बेचकर गांधीजी का नाम
बटोरो वोट
बैंक बैलेंस बढ़ाओ

राजघाट पर बापू की वेदी के आगे अश्रु बहाओ।"

कवि को देश की कैसी चिन्ता है, इसका अनुमान बापू की मृत्यु से सम्बन्धित 'शपथ' की इन पंक्तियों से लगाया जा सकता है जिनमें कवि तो दुखी हुआ ही है, उसे प्रकृति भी दुखी होती दिखाई देती है-

"तीन-तीन गोलियां बाप रे ! !
मुंह से कितना खून बहा है
महामौन यह पिता तुम्हारा
रह-रह मुझे कुरेद रहा है
इसे न कोई कविता समझे
यह तो पितृ वियोग व्यथा है।"

इसी काव्य संग्रह में कवि की बहुचर्चित कविता 'प्रेत का बयान' है जिसमें देशव्यापी अकाल और शासकों की कमजोरी पर व्यंग्य किया गया है। 'रवि ठाकुर' जैसी कविताओं में कवि ने देश की महान विभूतियों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। 'सतरंगे पंखों वाली' काव्यकृति में प्रकृति के मनोरम चित्र मिल जाते हैं। 'वसंतागम' की 'दूर कहीं अमराई में कोयल बोली। परत लगी चढ़ने झींगुर की शहनाई पर' इन पंक्तियों वाली कविता उदाहरण के रूप में देखी जा सकती है। 'देखना ओ गंगा मैया।' और 'खुरदरे पैर' जैसी कविताओं में नागरिक तथा ग्राम्य जीवन की विषमताएँ स्पष्ट की गयी है। 'सतरंगे पंखों वाली' काव्यकृति में प्रणय, प्रकृति, आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं का प्रतिफलन हुआ है। 'प्यासी पतराई प्रांखों' की अधिकतर कविताओं में तीखे व्यंग्य देखने को मिलते हैं। 'आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी' कविता इंगलैण्ड की रानी के भारत आगमन के संदर्भ में लिखी गयी है जिसमें नेहरूजी को भी व्यंग्य का शिकार बना लिया गया है। 'यह उन्मत्त प्रदर्शन' में धनवानों द्वारा विवाह के अवसर पर किये जाने वाले फिजूल खर्च पर कटाक्ष किया गया है। इस संग्रह में रोजमर्रा की जिन्दगी का खुलासा किया गया है। 'भस्मांकर' प्रबंधकाव्य में 'तारक' राक्षस के अत्याचारों से त्रस्त देवताओं द्वारा कामदेव को शिव की तपस्या भस्म कराने के उद्देश्य से भेजने की घट ना का वर्णन है। देवता तपस्यारत शिव का एक पुत्र प्राप्त करना चाहते थे जिससे 'तारक' का वध कराया जा सके। इसमें कवि ने मौलिक उद्भावना भी की है।

- नागार्जुन के काव्य में राष्ट्रीयता, समसामयिक अवस्था पर आक्रोश, क्रांति का आह्वान, प्रकृति सौंदर्य, दृढ प्रास्था, व्यंग्यशीलता, रागात्मकता, संवेद-नात्मकता और युगीन चित्रण की प्रवृत्तियाँ विद्यमान है

नागार्जुन के पूरे काव्य पर विचार करने पर यह धारणा बनती है कि उनके काव्य में राष्ट्रीयता, समसामयिक अवस्था पर आक्रोश, क्रांति का आह्वान, प्रकृति सौंदर्य, व्यंग्यशीलता, रागात्मकता, संवेदनात्मकता और युगीन चित्रण की प्रवृत्तियाँ विद्यमान है। नागार्जुन कथ्य को अधिक महत्त्व देते हैं और शिल्प को सजाने-संवारने का प्रयास नहीं करते। सच मे नागार्जुन जनवादी कवि हैं।

3.1.5 रामविलास शर्मा

रामविलास शर्मा का जन्म झांसी में सन् 1912 में हुआ था। इन्होंने अंग्रेजी विषय में एम. ए. और पी. एच. डी की। ये बलवन्त राजपूत कॉलेज, आगरा में प्राध्यापक भी रहे और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में निदेशक भी रहे । इन्होंने 'हंस' का सम्पादन किया। वे प्रगतिशील लेखक संघ के मंत्री रह चुके। रामविलासजी हिन्दी के कवि है परन्तु प्रगतिवादी

समीक्षक के रूप में अधिक विख्यात है। उन्होंने हिन्दी भाषा के पक्ष में बहुत प्रयास किया है। उन्होंने निबन्धों को नयी चेतना और नया रूप दिया है। उनके कई निबन्ध संग्रह है जैसे 'प्रगति और परम्परा', 'संस्कृति और साहित्य' तथा 'लोक जीवन और साहित्य' आदि। आप निरालाजी के सम्पर्क में बहुत रहे है। रामविलासजी के कविता-संग्रह हैं- 'रूप तरंग' और 'ऋतु संहार' उनकी कई कविताएं अज्ञेयजी द्वारा संपादित 'तार सप्तक' में संगृहीत हैं। बाद में रामविलासजी तारसप्तक के कवियों से अलग हो गये।

▶ रामविलासजी हिन्दी के कवि है परन्तु प्रगतिवादी समीक्षक के रूप में अधिक विख्यात है

रामविलासजी की 'रूपरंग' की कविताओं में प्रकृति सौंदर्य, ग्रामीण जीवन तथा अन्य विविध परिस्थितियों का चिवरण हुआ है। इन्होंने 'ऋतु संहार' में विभिन्न ऋतुओं का वर्णन किया है। कवि ने अवध प्रदेश के आँचलिक जीवन का यथार्थपरक चित्रण किया है। उन्होंने शोषण और अत्याचार की शिकार जनता के दुख-दर्द व्यक्त किये हैं। प्रगतिवादी अन्य कवियों की भांति उन्होंने शोषण के प्रति घृणा एवं दुखी वर्ग के प्रति सहानुभूति का भाव दर्शाया है। कृषक की दयनीय दशा का मार्मिक ढंग से चित्रण करते हुए उन्होंने लिखा है-

"इस धरती पर जो अठवासे श्रम करते हैं
उनके तन की पत पर अब सूख गया है रक्त
रेत पर गिरी हुई जल की बूंदों-सा।"

शर्माजी को कोमल, संवेदनशील हृदय मिला है। उन्होंने सन् 43 के अकाल सेंतालीस के हत्याकाण्ड, खजुराहो की मूर्तियों, बेसवाड़े के जीवन, दारा शिकोह की मृत्यु, किसान के जीवन, प्राचीन संस्कृति, प्रकृति सभी में से अपने अनुकूल सामग्री ढूंढ ली है। गरीबों की दशा देखकर वे दुखी हुए हैं। उन्होंने जन-साधारण के दुख भरे जीवन के बारे में असंतोष को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

"धरती के पुत्र की
होगी कौन जाति, कौन मत, कहो मौन धर्म ?"

बोना महातिक्त वहां बीज असंतोष का
काटनी है नए साल फागुन में फसल जो क्रांति की।"

रामविलासजी के प्रारम्भिक गीतों में तो कोई खासियत नहीं दिखाई देती। उनकी शैली पर निरालाजी का प्रभाव भी झलकता है। आगे वे अपना पथ निश्चित कर लेते हैं। वे विचारों में साम्यवादी हैं पर जीवन विषयक उनका दृष्टिकोण बड़ा ही स्वस्थ है। उनकी भाषा सरल, सपाट है। उसमें कहीं-कहीं प्रतीकात्मकता है, सहज आलंकारिता है। उनकी कविताएँ उनके भीतर के विश्वास से युक्त अवश्य हैं-

"बंध न सकेगा लघु सीमाओं में लघु जीवन
लघु जीवन से अमर बनेगा बह जन-जीवन।"

3.1.6 शिवमंगलसिंह 'सुमन'

सुमनजी का जन्म सन् 1916 में हुआ था। उन्होंने अपने काव्य-जीवन का प्रारम्भ वैयक्तिक प्रणयजनित निराशापूर्ण भावों की अभिव्यक्ति से किया। उन्होंने कविता को अपने ऊपर

आरोपित नहीं किया है। उन्हें वस्तुतः कवि हृदय प्राप्त है। प्रेम के आघात ने उनके हृदय में कविता जगाई। आघात पाकर उन्होंने जीवन संघर्ष से मुंह नहीं मोड़ा, उल्टे उन्होंने व्यक्तियों को संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। वे अत्याचारों को सहन नहीं करना चाहते थे अपितु उन्हें कुचल देना चाहते थे -

"विस्तृत पथ है मेरे आगे उस पर ही मुझको चलना है

चिर शोषित प्रसहायों के संग प्रत्याचारों को दलना है।"

अत्याचारों को देखकर वे क्रांति का आह्वान करने वाले कवि बन गये। उनके भीतर प्रेम का भाव भी बना रहा परन्तु वह उनकी प्रगति में बाधक नहीं बन सका। उन्होंने अपने प्रेम को मानव मात्र के प्रेम में तब्दील कर लिया। इस प्रकार उनके काव्य में विप्लव और प्यार ये दो प्रवृत्तियाँ बराबर बनी रही हैं। विप्लव या क्रांति के स्वर में राष्ट्रीयता का स्वर भी दिखाई देता है और आगे चलकर यही राष्ट्रीयता मानववाद में परिवर्तित हो गयी। कवि को मानव समाज के दुःख का मूल सामाजिक विषमता में दिखाई देता है। इसी कारण कवि पूंजीवादी और साम्राज्यवाद पर ही प्रहार करने लगा है। इसी कारण वह समाजवाद का समर्थक प्रतीत होता है।

▶ प्रेम के आघात ने उनके हृदय में कविता जगाई

सुमनजी के काव्य-संग्रह हैं- 'जीवन के गान', 'हिल्लोल', 'प्रलय- सृजन' 'पर आँख नहीं भरी' और 'आँखें भरी-भरी'। इनमें रोमांस, करुणा, सहानुभूति, राष्ट्र-प्रेम और क्रांति प्रादि भावों की अभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण शैली में की गयी है। कवि ने रूस के प्रति अनुराग व्यक्त किया है। 'मास्को अब दूर नहीं', 'स्तालिन-ग्रेद', 'सोवियत रूस के प्रति' और 'लाल सेना' रचनाएँ इसका प्रमाण हैं। सुमनजी में क्रांति और विद्रोह के ही स्वर नहीं हैं, करुणा और सहानुभूति के कोमल भाव भी विद्यमान हैं-

"हाय! यहां मानव-मानव में समता का व्यवहार नहीं है,

हाहाकारों की दुनियां में सपनों का संसार नहीं है।"

उसी प्रकार सुमनजी ने कोमल, कठोर भावों की सरल, सपाट, मधुर गीतों में अभिव्यक्ति की है। उनकी वाणी जहाँ क्रांति का आह्वान करती है वहाँ वह निराला और दिनकर का ओज भी अपना लेती है। उन्होंने कहीं प्रकृति का चित्र प्रस्तुत किया है तो कही देश के लिए कुर्बानी देने वाले वीरों का स्मरण किया है-

"भगतसिंह अशफाक
लालमोहन गणेश बलिदानी,
सोच रहे होंगे हम सबको,
व्यर्थ गयी कुरबानी।"

3.1.7 त्रिलोचन शास्त्री

इनका जन्म सन् 1917 में हुआ। इनकी कविताएं 'घरती' (1945) में संग्रहीत हैं। इनके काव्य में प्रकृति प्रेम एवं समाजवाद के बारे में काफी लिखा गया है। काव्य संग्रह की घाघी से अधिक कविताएं प्रकृति से सम्बन्धित है। प्रकृति का वर्णन विवरणात्मक शैली में हुआ है। कवि ने प्रकृति की सुन्दरता का चित्रण किया है। उसने प्रकृति की गंध, रूप, रंग को भली

प्रकार उभारा है जिनके कारण रचनाएं हृदय को आकृष्ट कर लेती है। त्रिलोचन ने प्रेम को प्रेरणा के रूप में अपनाया है। उनके प्रेम में समर्पण का भाव है, निराशा का नहीं। उन्होंने देश की जनता को सन्देश भी दिया है पर वह उपदेशात्मक है। त्रिलोचन ने किसानों के सम्बन्ध में भी लिखा है और अपनी रचनाओं द्वारा किसानों में आशा और उत्साह का भाव जगाने का प्रयास किया है। कुछ कविताओं में कवि ने वैयक्तिक अनुभूतियों को संजो दिया है-

"आभारी हूं मैं पथ के प्राघातों का

मिट्टी जिनसे वज्र हुई उन उत्पातों का।"

जहाँ कवि ने साम्यवादी विचार व्यक्त किये हैं वहीं पूंजीवाद के ऊपर अपना आक्रोश भी व्यक्त किया है।

"पूंजीवाद ने महत्व नष्ट कर दिया सबका

बिना पूंजीवाद को मिटाये किसी तरह भी

यह जीवन स्वस्थ नहीं हो सकता।

इनकी कविताओं में किसानों, मजदूरों की विपन्नता और पूंजीपतियों के शोषण का चित्रण हुआ है।

3.1.8 बालकृष्ण शर्मा नवीन

'कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ,

जिससे उथल-पुथल मच जाए।

एक हिलोर इधर से आए,

एक हिलोर उधर से आए....।'

ये पंक्तियाँ हैं द्विवेदी युग के प्रगतिशील, फक्कड़ कवि पद्म भूषण बालकृष्ण शर्मा नवीन की है।

बालकृष्ण शर्मा नवीन ने जिस वक्त में साहित्य साधना शुरू की, उस समय द्विवेदी युग समाप्त हो रहा था, स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन साहित्य में मुखर होने लगा था। वह ऐसे सेतु समय में यशस्वी हुए, जब दो युगों की प्रवृत्तियाँ संधि-सम्मिलन कर रही थीं। 'महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा ने ही कवियों की चिर-उपेक्षिता 'उर्मिला' का लेखन उनसे 1921 में प्रारम्भ कराया, जो सन् 1934 में पूरा हुआ। इस पुस्तक में द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता, स्थूल नैतिकता या प्रयोजन स्पष्ट देखे जा सकते हैं।

उनके सृजनकाल की पहली रचना एक कहानी 'सन्तू' थी। इसे उन्होंने छपने के लिए सरस्वती में भेज दिया था। उसके बाद वह कविताओं की रचना करने लगे। आजादी के पूरे आंदोलन के दौरान उनकी जेल यात्राओं का सिलसिला चलता रहा। नमक सत्याग्रह, फिर व्यक्तिगत सत्याग्रह और अंत में 1942 के ऐतिहासिक भारत छोड़ो-आंदोलन में भी वह शामिल हुए। उन्होंने कुल छः जेल यात्राएँ कीं। उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ जेल यात्राओं के दौरान ही रची गईं। उनके महत्वपूर्ण काव्यग्रंथ हैं- कुमकुम, रश्मिरेखा, अपलक, क्वासि, उर्मिला, विनोबा स्तवन, प्राणार्पण तथा हम विषपायी जन्म के।

- बालकृष्ण शर्मा नवीन का संपूर्ण काव्य राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत काव्य है

बालकृष्ण शर्मा नवीन का संपूर्ण काव्य राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत काव्य है। स्वाधीनता

आंदोलन के भागीदार होने के साथ-साथ इन्होंने अपनी काव्य रचनाओं में देश के प्रति अपने प्रेम एवं आस्था को सटीक अभिव्यक्ति दी है। राष्ट्रधर्म की रक्षा तत्कालीन समय की मांग थी। अंग्रेजों के समक्ष निडरता से हृदय की अभिव्यक्ति को प्रकट करना साहस भरा कार्य था। 'नवीन' जी ने राष्ट्रीय भावों को काव्य का विषय बनाकर भारतीय जनता की स्वातंर्त्र्य चेतना को विकसित किया। विदेशी दासता के विरूद्ध शंखनाद करती उक्त पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं-

"कोटि कोटि कंठों से निकली, आज यही स्वरधारा है।

भारत वर्ष हमारा है यह, हिन्दुस्थान हमारा है।"

'प्रभा' का झंडा अंक द्वारा राष्ट्रीय जागरण करते हुए पत्रकारिता को भी राष्ट्रीयता के रंग में रंग दिया। 'नवीन' जी का संदेश स्पष्ट था-

"भारतखंड के तुम, हे जन-गण।

चमक रहे हैं तब शोणित में, इस भारत माता के रज-कण।"

वे हिन्दी साहित्य में कांतिकारी चेतना के कवियों में शामिल हैं। 1936 ई. में इनका प्रथम काव्य संग्रह 'कुंकुंम' प्रकाशित हुआ जिसकी कविता 'विपल्व गायन' से कवि को क्रांतिकारी कवि के रूप में ख्याति प्राप्त हुई। वे राष्ट्र को सशक्त एवं नवचेतना से भरने हेतु पुरानी गली-सड़ी मान्यताओं के विनाश की बात करते हैं। उनकी क्रांतिकारी पुकार का एक उदाहरण देखिए-

"बरसे आग, जलद जल जाएँ,
भस्मसात भूधर हो जाएँ,
पाप-पुण्य सद्सद भावों की,
धूल उड़ उठे दायें-बायें

उनके काव्य में सामाजिक जागरूकता ग्रामीण जीवन में व्याप्त अंधविश्वासों, कुप्रथाओं, जड़ता, पारस्परिक वैमनस्य, आर्थिक विषमता और हिंसात्मक प्रवृत्तियों के विरोध के रूप में प्रकट हुए। भारतीय समाज में व्याप्त जाति प्रथा को वे समाज के लिए घातक मानते थे। समाज में जाति, धर्म और संप्रदाय के नाम पर भेदभाव और मानसिक संकीर्णता को वे सामाजिक विकास में सबसे बड़ी रूकावट मानते हैं तथा इनके प्रति जनमानस को सचेत करने का प्रयास करते हैं। वे कहते हैं कि समाज-विकास के इस चक्र में घूमते हुए मनुष्य आज जिस स्थान पर जा पहुँचा है, वहाँ केवल विनाश ही है। यदि मनुष्य ने अपना हृदय मंथन कर अपना विकास न कर लिया, तो उनके विचार से वर्तमान बुद्धिवाद की प्रचण्ड अग्नि सबकुछ भस्मीभूत कर देगा।

"आ पहुंचा है जिस ठौर मनुष्य, उस ठौर आज है सर्वनाश।

यदि वह अपने हिय को मथकर, कर ले न आज अपना विकास॥"

बालकृष्ण शर्मा नवीन की प्रगतिवादी कविता में शोषण व अन्याय की चक्की में पिसते हुए मजदूर एवं किसान वर्गों के प्रति करूणा व आस्था का भाव है। नवीन शोषण की चक्की में पिसते निम्न वर्ग को देखकर उत्तेजित हो जाते हैं। वे इस वर्ग के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन ही नहीं करते बल्कि उन्हें शोषणकारियों के प्रति विद्रोह करने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

वह शोषित वर्ग के भीतर उनके अधिकारों के प्रति सचेतना लाने का प्रयास करते हैं। उनको गहरा विश्वास है कि मजदूर व किसान वर्ग के वंचित लोग ही अंततः समाज की नियति बदलने की शक्ति रखते हैं-

“ओ भीखमंगे अरे पराजित ओ मजलूम अरे चिरदोहित
तू अखंड भंडार शक्ति का जाग अरे निद्रा सम्मोहित
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल थल भर दे
अनाचार के अखबारों में अपना ज्वलित पलीता घर दे”

बालकृष्ण शर्मा नवीन के संबंध में हम यही कह सकते है कि उनमें सामाजिक सच्चाई को सटीकता से कहने की, यथार्थ के मर्म को उद्घाटित करने की आश्चर्यजनक शक्ती थी।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिन्दी में प्रगतिवादी काव्य का सृजन बड़ी तेजी से शुरू हुआ था परन्तु वह स्थिर न रह सका। प्रगतिवादी कवियों ने आध्यात्मिकता का पूर्णतया तिरस्कार कर स्थूल, भौतिकता को अपनाया। उनके मार्क्सवादी विचार हृदय की अनुभूति न बन सके, इस कारण उनका काव्य नीरस् भी हो गया। सामान्यतया कवियों ने मार्क्स, लेनिन, ऐंजिल्स के विचारों का कविता के माध्यम से प्रचार करने का प्रयास किया। काव्य जब प्रचार का साधन बना लिया जाता है और अनुभूति की उपेक्षा कर दी जाती है तब उसमें हृदय का स्पर्श करने की क्षमता नहीं रह जाती। इतना अवश्य है कि प्रगतिवादी कवियों ने जनसाधारण की दयनीय दशा के बारे में सोचने, उस ओर ध्यान देने की प्रेरणा दी है। उसने रूढ़ियों का विरोध करने का साहस जगाया, स्वातंत्र्य भावना जगाई, काव्य को भी काव्य-शास्त्र के कड़े नियमों से मुक्ति दिलाई है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रगतिवादी कवियों का काव्य जीवन से अछूता नहीं है। स्पष्ट कीजिए
2. मार्क्स के आदर्शों का प्रचार का में प्रगतिवादी कवि सक्षम हुए है। व्यक्त कीजिए
3. प्रगतिवादी कवि नागार्जुन
4. प्रगतिवादी कवियों पर टिप्पणी

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रगतिवाद - शिवकुमार मिश्र
2. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
3. छायावादोत्तर काव्य - प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद
4. हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान - मैनेजर पांडे

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक साहित्य - नंददुलारी वाजपेयी
2. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ - डॉ. नामवर सिंह
3. छायावाद - नामवर सिहं
4. हिन्दी कविता में युगान्तर - सत्येन्द्र
5. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी - नंददुलारी वाजपेयी
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नागेंद्र
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
8. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डॉ गणपति चंद्र गुप्त।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद, हालावाद की प्रेरक पृष्ठभूमि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनकी रचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- हिन्दी के हालावादी काव्य प्रवृत्ति और उसकी पृष्ठभूमि पर जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

हिन्दी साहित्य में 'हालावाद' की शुरुआत 'छायावाद' के बाद हुई। हालावाद की कविताओं में वैयक्तिकता की प्रधानता रही। इसके कवि दुनिया को भूलकर स्वयं अपने प्रेम-संसार की प्रेमपूर्ण मस्ती में डूब गए। संसार के सारे दुःख, सारी निराशा और सारी कठिनाइयाँ इसी 'हालावाद' की मस्ती में डूब गईं। उभरा तो सिर्फ प्रेम और सभी प्रेम की दुनिया में तिरोहित हो गए। कवि और श्रोता दोनों ही मस्ती के रंग में रँग गए। 'प्रेम' को सर्वस्व मानना सभी हालावादी कवियों का मूल सिद्धांत बनकर उभरा। ये कविताएँ अपने समय में अतीव लोकप्रिय हुईं तथा इनका व्यापक प्रचार हुआ। इस धारा के अग्रणी हैं- हरिवंश राय बच्चन, भगवतीचरण वर्मा, पं. नरेंद्र शर्मा आदि। मस्ती और अल्हड़पन से भरे मधु के गीत गानेवाले कवि बच्चन का हिन्दी साहित्य से सर्वप्रथम परिचय 'उमर खययाम' की रूबाइयों के अनुवाद से हुआ था। यह अनुवाद मात्र शब्दजाल न होकर बच्चन के हृदय-रस से परिपूर्ण है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

हालावाद, वैयक्तिकता, मस्ती, अल्हड़पन

Discussion / चर्चा

4.1.1 डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद

हालावादी काव्य का संबंध ईरानी साहित्य से है जिसका भारत में आगमन अनूदित साहित्य के माध्यम से हुआ। हिन्दी साहित्य में 'हालावाद' की शुरुआत 'छायावाद' के बाद हुई। हालावाद की कविताओं में वैयक्तिकता की प्रधानता रही। इसके कवि दुनिया को भूलकर स्वयं अपने प्रेम-संसार की प्रेमपूर्ण मस्ती में डूब गए। संसार के सारे दुःख, सारी निराशा और सारी

कठिनाइयाँ इसी 'हालावाद' की मस्ती में डूब गईं। उभरा तो सिर्फ प्रेम और सभी प्रेम की दुनिया में तिरोहित हो गए। कवि और श्रोता दोनों ही मस्ती के रंग में रँग गए। 'प्रेम' को सर्वस्व मानना सभी हालावादी कवियों का मूल सिद्धांत बनकर उभरा। ये कविताएँ अपने समय में अतीव लोकप्रिय हुईं तथा इनका व्यापक प्रचार हुआ। इस धारा के अग्रणी हैं- हरिवंश राय बच्चन, भगवतीचरण वर्मा, पं. नरेंद्र शर्मा आदि। मस्ती और अल्हड़पन से भरे मधु के गीत गानेवाले कवि बच्चन का हिन्दी साहित्य से सर्वप्रथम परिचय 'उमर खययाम' की रूबाइयों के अनुवाद से हुआ था। यह अनुवाद मात्र शब्दजाल न होकर बच्चन के हृदय-रस से परिपूर्ण है।

▶ 'प्रेम' को सर्वस्व मानना सभी हालावादी कवियों का मूल सिद्धांत बनकर उभरा

4.1.2 हालावाद की प्रेरक पृष्ठभूमि

छायावादी काव्य में हाला, प्याला, मधुशाला, नियतिवा, व सामाजिक जीवन से पलायन आदि निष्क्रियतावादी विचारों की प्रेरणा मूल रूप में फिटजेराल्ड द्वारा अनूदित रूबैयत-उमर खय्याम से मिली थी। बच्चन के हाथ में 'सरस्वती' की मार्फत उमर खय्याम की रुबाईयत का हिन्दी अनुवाद बचपन में पड़ गया था। उन्होंने आगे चलकर बच्चन के भावुक हृदय को अत्यंत प्रभावित किया।

हिन्दी साहित्य में फिटजेराल्ड के अनुवाद का प्रवेश द्विवेदी युग में पत्र-पत्रिकाओं द्वारा होने लगा था। किंतु द्विवेदी युग राष्ट्रीय जागरण एवं राष्ट्रीय संघर्ष का युग था अतः लोगों का ध्यान उमर खय्याम की ओर विशेष ना गया। सन् 1928 से 1930-31 के बीच में राष्ट्रीय आंदोलन में एक प्रकार की स्थिरता आ चुकी थी और इसी बीच खय्याम की धूम हिन्दी साहित्य में मारने लगी। फिटजेराल्ड के अनुवाद पर अनुवाद बड़ी धूमधाम से प्रकाशित होने लगे सन् 1931 में बाबू मैथिलीशरण गुप्त का अनुवाद निकला 1 वर्ष बाद केशव प्रसाद पाठक और बलदेव प्रसाद मिश्र की अनुवाद भी उतनी ही सजधज से प्रकाशित हुए। बच्चन का अनुवाद खय्याम की मधुशाला के नाम से सन् 1935 में प्रकाशित हुआ। सुमित्रानंदन पंत ने भी सन् 1929 में उसका अनुवाद किया था किंतु वह बहुत दिनों बाद 1940 में प्रकाशित हुआ। इन प्रमुख वादों के अतिरिक्त डॉ.. गया प्रसाद गुप्त, पंडित सूर्य, पंडित जगदंबा प्रसाद हितेषी के अनुवाद भी इसी समय प्रकाशित हुए। इस प्रकार चार-पांच वर्षो की लघु अवधि में फिटजेराल्ड के अनुवादों की एक धूम हिन्दी साहित्य में मच गई।

▶ उमर खय्याम अपनी प्रेयसी के साथ प्रकृति के अंदर किसी कोने में बैठ कर प्याले पर प्याले पीना चाहता है

उमर खय्याम का जीवन दर्शन जिस रूप में अंग्रेजी साहित्य में प्रस्तुत किया गया था उसके आधार पर उसे निराशावादी कहा जा सकता है और आशावादी। खय्याम अपनी प्रेयसी के साथ प्रकृति के अंदर किसी कोने में बैठ कर प्याले पर प्याले पीना चाहता है। वह भावी जीवन की चिंताओं से मुक्त होने के लिए एवं विगत जीवन के पश्चाताप का विवरण करने के लिए प्याले पर प्याले डालता रहता है। खय्याम की विचार अति व्यक्तिवादी है कर्मण्यता के नाम पर वह नियतीवादी है आध्यात्मिकता के नाम पर संदेहवादी हैं। उनका जीवन दर्शन बस इतना सा है कि जब तक जीवन है पियो एक बार मरने के पश्चात फिर कौन लगता है। खय्याम की रुबाईयों में भोगवाद के साथ-साथ नियतिवादी की भावना भी घुली मिली है। नियतिवाद इस सृष्टि के संचालन में किसी ईश्वर जैसी न्याय सत्ता में विश्वास नहीं करता। संसार में न्याय नहीं है, क्योंकि उसका संचालन किसी विवेकपूर्ण सत्ता के द्वारा नहीं होता। अपितु एक ऐसी आंधी सत्ता के द्वारा होता है जो क्रूर और विवेकशून्य है। उमर खय्याम की इस निराशावादी, नियतिवादी और भोगवादी विचारों का युवा कवियों पर सामान्य रूप से तथा बच्चन पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ा।

▶ भोगवाद के साथ-साथ नियतिवादी की भावना

4.1.3 डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद

आधुनिक काल में उमर खय्याम की इस निराशावादी, नियतिवादी और भोगवादी विचारों को 'हालावाद' नाम मिल गया। इसके प्रवर्तक हरिवंशराय राय बच्चन थे। हिन्दी साहित्य में 'हालावाद' की शुरुआत छायावाद के बाद शुरू हुई थी। इन कविताओं में व्यक्तिकता की प्रधानता रही है। हालावाद के कवि सभी को भुलाकर अपने प्रेम-रूपी सागर में डूबकी लगाते रहे।

> ▶ हिन्दी शब्दकोष के अनुसार- "साहित्य, विशेषतः काव्य की वह प्रवृति या धारा है, जिसमे 'हाला' या 'मदिरा' को वर्ण्य विषय मानकर काव्य रचना हुई हो"

4.1.3.1 हालावाद

'हाला' का शाब्दिक अर्थ होता है- मद, मदिरा, आसव, शराब, वारुणी, सुरा, मधु, सोम आदि। किन्तु बच्चन जी ने अपनी कविताओं में इसे प्रियतम, गंगाजल, हिमजल, सुख का अभिराम स्थल, जीवन का कठोर सत्य, क्षणभंगुरता आदि अनेक प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया है। हालावादी काव्य का संबंध ईरानी साहित्य से है, जिसका भारत में आगमन अनुदित साहित्य के माध्यम से हुआ।

हालावाद के संबंध में कई विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए हैं। डॉ. रामदरश मिश्र के शब्दों में- "व्यक्तिवादी कविता का प्रमुख स्वर निराशा का है, अस्वाद का है, थकान का है, टूटन का है, चाहे किसी भी परिप्रेक्ष्य में हो।" डॉ बच्चन सिंह ने हालावाद को "प्रगति प्रयोग का पूर्वाभास" कहा है। सुमित्रानंदन पंत जी कहते हैं- "मधुशाला में हाला, प्याला, मधुबाला और मधुशाला के चार प्रतीकों के माध्यम से कवि ने अनेक क्रांतिकारी, मर्मस्पर्शी, रागात्मक एवं रहस्यमय भावों को वाणी दी है।" हजारी प्रसाद द्विवेदी उसे "मस्ती, उमंग और उल्लास की कविता" है। डॉ. नगेन्द्र ने हालावादी कविता को वैयक्तिक कविता कहा है "वैयक्तिक कविता छायावाद की अनुजा और प्रगतिवाद की अग्रजा है।"

> ▶ हिन्दी साहित्य में हालावाद का प्रचलन बच्चन से ही माना जाता है

हरिवंशराय बच्चन 'हालावाद' के प्रवर्तक माने जाते हैं। हिन्दी साहित्य में हालावाद का प्रचलन बच्चन से ही माना जाता है, किन्तु हालावाद का नामकरण करने का श्रेय रामेश्वर शुक्ल अंचल को प्राप्त है।

4.1.3.2 हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद

आधुनिक हिन्दी कविता की विकास इतिहास में बच्चन के कृतित्व को एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में लेना चाहिए। छायावाद की कुहासे को काटने में इनकी कविताओं ने बड़ा काम किया है। हिन्दी कविता का पाठक समुदाय उस समय छायावाद अतिशय अलंकृत शैली,काल्पनिक विरह वेदना और रहस्यवादीता से ऊब सा गया था। उसे किसी नए स्वर और नए जीवन बोध की कमी महसूस हो रही थी। इस कमी को पूरा किया बच्चन जी ने। इन्होंने सीधी-सादी भाषा शैली में स्वानुभूत जीवन मूल्यों की संवेदनशील अभिव्यक्ति करते हुए एक खास तरह की ताज़गी का परिचय दिया। उनकी रचनाओं में व्यक्ति मन की निजी अनुभूतियाँ अत्यंत स्पष्ट किंतु मर्मस्पर्शी शैली में व्यक्त हुई और इस प्रकार के मार्मिक उक्ति कौशल द्वारा इन्होंने सहृदय जनों को चमत्कृत सा कर दिया।

> ▶ भोगवादी जीवन दर्शन

भावनानुभूतियों की दृष्टि से बच्चन की कविताओं में कम से कम तीन प्रकार के स्वरों की प्रधानता है। पहला स्वर भोगवादी दृष्टिकोण को पोषित करता है। खाओ, पियो, मौज उड़ाओ। क्योंकि आने वाले कल का कुछ भरोसा नहीं है। जीवन के संघर्षशील प्रवाह में से जितने क्षण पकड़ में आ सके उनका जमकर भोग करो क्योंकि सुख दुख तो आते जाते

रहते हैं। बच्चन जी की यह भोगवादी जीवन दर्शन फारसी के सुप्रसिद्ध कवि उमर खय्याम से प्रभावित है। इनकी मधुशाला, मधुबाला और मधुकलश नामक कृतियाँ इस दर्शन को प्रस्तावित करती हैं। बच्चन जी के काव्य का दूसरा प्रमुख स्वर आनंद और भोगवाद के ठीक प्रतिकूल निराशा, वेदना और नीतिवाद की दिशा ग्रहण करता है। तीसरे स्वर में वे कभी गांधीवादी और राष्ट्रवादी बनने की चेष्टा करते हुए दिखते हैं। कभी तरह-तरह के प्रयोग भी उन्होंने किया है।

- बच्चन जी की भोगवादी जीवन दर्शन फारसी के सुप्रसिद्ध कवि उमर खय्याम से प्रभावित है

बच्चन के हालावाद की चर्चा करें तो संसार के सारे दुःख, सारी निराशा और सारी कठिनाइयाँ इसी 'हालावाद' की मस्ती में डूब गईं। उभरा तो सिर्फ प्रेम और सभी प्रेम की दुनिया में तिरोहित हो गए। कवि और श्रोता दोनों ही मस्ती के रंग में रँग गए। 'प्रेम' को सर्वस्व मानना सभी हालावादी कवियों का मूल सिद्धांत बनकर उभरा। ये कविताएँ अपने समय में अतीव लोकप्रिय हुईं तथा इनका व्यापक प्रचार हुआ। पहले ही बताया जा चुका है कि मस्ती और अल्हड्पन से भरे मधु के गीत गानेवाले कवि बच्चन का हिन्दी साहित्य से सर्वप्रथम परिचय 'उमर खययाम' की रूबाइयों के अनुवाद से हुआ था। यह अनुवाद मात्र शब्दजाल न होकर बच्चन के हृदय-रस से परिपूर्ण है।

- प्रेम हालावादी कवियों के लिए सर्वस्व रहा

बच्चन की 'मधुशाला' हालावाद की उत्कृष्ट कृति मानी जा सकती है क्योंकि यह जितनी लोकप्रिय हुई उतनी किसी भी अन्य कवि की काव्य कृतियाँ प्रसिद्ध नहीं हुईं। रूढ़िवादियों ने 'मधुशाला' का विरोध तो किया, पर उन लोगों ने उस कृति को अमरता प्रदान कर दी, जो मस्ती के दीवाने थे। जब पहली बार दिसंबर 1933 में रूबाइयाँ बच्चन द्वारा झूम-झूमकर शिवाजी हाल, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के एक कवि सम्मेलन में सुनाई गईं, तब सभी श्रोता मदमस्त होकर झूम उठे। नवयुवक विद्यार्थी ही नहीं, बड़े-बूढ़े भी आह्वादित हो उठे। उनकी मधुशाला को जीवन या संसार, मधुबाला को प्रेयसी अथवा आत्म चेतना, तथा मधुकलश को प्रेम रस अथवा जीवन रस के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। मधुशाला नामक कविता संग्रह का एक छंद निम्नांकित है जिसमें प्रेम सुरा को अथक भाव से पीने और निरंतर पीते रहने की व्यंजना हुई है।

- आनंदवादी दृष्टिकोण

"आज सजीव बना लो प्रेयसी अपने अधरों का प्याला
भरलो, भरलो, भरलो इसमें ,यह मधुरस की हाला,
और लगा मेरे होठों से भूल हटाना तुम जाओ-
अथक बनू मैं पीने वाला, खुले प्रणय की मधुशाला।"

बच्चन जी के भोगवाद अथवा आनंदवादी दृष्टिकोण में कभी कोई परिवर्तन दिखाई नहीं दिया। यह बराबर संसार और समाज के विभिन्न संघर्षों के बीच जीवन का यथासंभव उपभोग करने के पक्ष में रहे हैं। अपने मन की मौज और मस्ती की तुलना में इन्होंने जीवन के बोझ और जग के दायित्व को बहुत कम महत्व दिया है। अपनी 'आत्म परिचय' शीर्षक रचना में ये अपने व्यक्तित्व के इस पहलू को बहुत स्पष्ट शब्दों में रूपायित कर देना चाहते हैं।

"मैं जग -जीवन का भार लिए फिरता हूं,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूं,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,

मैं सांसो में दो तार लिए फिरता हूं।

मैं स्नेह सुरा का पान किया करता हूं

मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूं

जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते-

मैं अपने मन का गान किया करता हूं।"

▶ प्रेम और मस्ती का काव्य

बच्चन ने 'मधुशाला' के संबोधन ! में 'मादक' को संबोधित किया है और लिखा है: "आज मदिरा लाया हूँ- मदिरा जिसे पीकर भविष्य के भय भाग जाते हैं भूतकाल के दारूण दुःख दूर हो जाते हैं, जिसे पाकर मान-अपमान का ध्यान नहीं रह जाता और गर्व लुप्त हो जाता है, जिसे ढालकर मानव अपने जीवन की व्यथा, पीड़ा और कठिनता को कुछ नहीं समझता और जिसे चखकर मनुष्य श्रम, संकट, संताप सभी को भूल जाता है।... यह मेरे हृदय की मदिरा है। मत समझ, तू अकेले जलता है। तू जलता है पर प्रभाव मुझपर पड़ता है...।" 'मधुशाला' वास्तव में एक रहस्यमय गुफा है, जिसे पढ़ने पर उसमें तमाम द्वार स्वतः ही खुलते जाते हैं और हर द्वार पर एक नई मस्ती से भरी 'मधुशाला' का एहसास होता है।

"मधुकलश वह पात्र है, जिसमे मदिरा रखी जाती है-" है आज भरा जीवन मुझमे, है आज भरी मेरी गागर!

प्रेम और मस्ती के इस काव्य में जीवन के प्रति किसी व्यापक दृष्टि का आभास नहीं मिलता है लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि रचनाकार ने जीवन में एक ऐसी प्रेम की भावना पर बल दिया है, जिसमे न अध्यात्मिक अमूर्तता है और न ही लौकिक संकीर्णता। मधुशाला, मधुकलश और मधुबाला, मदिरालय, प्याला आदि प्रतीकों के माध्यम से रचनाकार ने एक धर्मनिरपेक्ष और जीवन सापेक्ष दृष्टिकोण को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है। बच्चन जी ने प्रेम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए 'मिलन यामिनी' में लिखा है-

"यदि प्रणय जगा न होता इस निशा में

सुप्त होती विश्व की संपूर्ण सत्ता

वह मरण की नींद होती जड़ भयंकर

और उसका टूटना होता असंभव

प्यार से संसार सोकर जागता है

इसलिए है प्यार की जग में महत्ता"

▶ कविता को जीवन की स्वस्य धरातल पर प्रतिष्ठित किया

मधुबाला में कवि उमर खय्याम की विचार को स्वीकार करते है कि यह सृष्टि की सम्पूर्ण व्यवस्था ही दोषपूर्ण है। इस विश्व को अपनी भवन के अनुकूल पुनः निर्मित करना चाहिए। उदाहरण के लिए मधुबाला संग्रह के 'मालिक-मधुशाला' में मदिरा पीने की उपयोगिता का बखान करता हुआ जनता को नेक सलाह देता है -

"कटु जीवन में मधुपान करो,
जग के रोदन में गान करो,
मादकता का सम्मान करो-

यह पाठ पढ़ाने वाला हूँ,

मैं ही मालिक - मधुशाला हूँ !"

संक्षेप में यह कहेंगे कि हिन्दी कविता को छायावाद के सूक्ष्म तथा काल्पनिक माया-महल से बाहर निकालकर और जीवन की स्वस्थ तथा सहज धरती पर उसकी प्रतिष्ठा करके प्यार की प्याला पिलाकर हरिवंश राय बच्चन ने एक युग निर्माता जैसा कार्य किया है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'हालावाद' विकास की एक कड़ी के रूप में हिन्दी साहित्य का एक खास अंग बन गया और यह अंग आज भी उपस्थित है, भले ही इसकी मात्रा अब कम हो गई है और एक खास समय के बाद मस्ती और प्रेम का रूपांतरण यथार्थ जगत् की करुणा और सहानुभूति में हो जाती है। हालावाद में उन्माद क दर्शन समाहित है। हालावाद बच्चन का स्वप्न है, संघर्ष की छलना है, वासनाओं का विस्फोट है, अरमानों का तांडव है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्यार के गायक थे हरिवंशराय बच्चन। व्यक्त कीजिए
2. हालावाद के स्वरूप को बच्चन की कविताओं द्वारा स्पष्ट कीजिए
3. हालावाद क्या है? स्पष्ट कीजिए
4. हालावाद के कवी बच्चन।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रगतिवाद - शिवकुमार मिश्र
2. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
3. हालावाद और बच्चन - भागीरथ मिश्र
4. हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान - मैनेजर पांडे

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक साहित्य - नंददुलारी वाजपेयी
2. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां - डॉ. नामवर सिंह
3. छायावाद - नामवर सिहं
4. हिन्दी कविता में युगान्तर - सत्येन्द्र
5. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी - नंददुलारी वाजपेयी
6. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नागेंद्र
7. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
8. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डॉ गणपति चंद्र गुप्त।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

Model
Question Paper Sets

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ………..............
Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD01DC- हिन्दी साहित्य का इतिहासःआदिकाल से रीतिकाल तक

(CBCS - PG)

2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. राम भक्त काव्यधारा से क्या तात्पर्य है?
2. प्रमुख कृष्ण भक्त कवियों का नाम लिखिए?
3. वीरगाथाकाल का परिचय दीजिए।
4. रीति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या-क्या हैं?
5. आदिकाल का परिचय दीजिए।
6. हिन्दी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण का आधार क्या है?
7. सिद्ध-सामंत काल का परिचय दीजिए।
8. रीतिकालीन कवि आलम का परिचय दीजिए। **(5X2 = 10 Marks)**

SECTION B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. हिन्दी साहित्येतिहास लेखन के आधार क्या है?
10. आदिकाल के नामकरण पर अपना मत व्यक्त कीजिए।
11. सिद्ध साहित्य का परिचय दीजिए।
12. भक्तिकालीन साहित्य का समाज पर क्या प्रभाव रहा है?
13. निर्गुण भक्ति काव्य की विशेषताएँ क्या हैं?
14. रीतिकालीन कवि घनानन्द।
15. मिश्रबंधु विनोद की विशेषताएँ क्या हैं?
16. रीति सिद्ध कवियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
17. रामभक्ति और कृष्णभक्ति काव्य पर प्रकाश डालिए।
18. भक्ति आंदोलन का महत्व क्या है? **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हों।

19. अपभ्रंश साहित्य और उसके कवियों पर आलेख तैयार कीजिए।

20. सगुण और निर्गुण भक्ति काव्य धारा का परिचय दीजिए।

21. हिन्दी साहित्येतिहास के आधार पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

22. रीतिकाव्य की मूल प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। **(2X15 = 30 Marks)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ………...............
Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD01DC- हिन्दी साहित्य का इतिहासःआदिकाल से रीतिकाल तक

(CBCS - PG)

2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. रासो काव्य के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।
2. पृथ्वीराज रासो और उसके रचनाकार का परिचय दीजिए।
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के साहित्येतिहास लेखन के आधार क्या है?
4. भक्तिकालीन साहित्य की विशेषताएँ क्या -क्या हैं ?
5. रीतिबद्ध कवि कौन है?
6. चिंतामणी त्रिपाठी और उनकी रचनाओं का परिचय दीजिए।
7. निर्गुण भक्ति काव्य से तात्पर्य क्या है?
8. रीति मुक्त काव्यधारा के विकास में किन-किन कवियों का योगदान रहा है? **(5X2 = 10 Marks)**

SECTION B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. आदिकाल की परिस्थितियाँ क्या-क्या हैं ।
10. रीति सिद्ध कवियों का परिचय दीजिए।
11. भक्तिकाल की परिस्थितियाँ क्या-क्या हैं ।
12. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन के आधारभूत तत्व क्या-क्या हैं ।
13. आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ क्या हैं ।
14. अपभ्रंश साहित्य एवं प्रमुख कवियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
15. भक्तिकाल के उदय का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
16. रासो काव्य परंपरा का परिचय दीजिए।
17. भक्ति आंदोलन की आवश्यकता क्या है?
18. काल विभाजन और नामकरण की समस्याएँ क्या-क्या हैं? **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हों।

19. रासो काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए ।

20. रीतिकालीन साहित्य की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

21. भक्तिकालीन काव्यधारा पर टिप्पणी लिखिए।

22. हिन्दी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण की समस्या पर आलेख लिखिए। **(2X15 = 30 Marks)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……… Reg. No : ……….............

Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD02DC- प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी काव्य

(CBCS - PG)

2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. सिद्ध कवि कौन है? सिद्धों की संख्या कितनी है?
2. भक्तिकाल की शाखाएँ क्या-क्या हैं?
3. प्रेमाश्रयी संत काव्य धारा से तात्पर्य क्या है?
4. निर्गुण भक्ति शाखा से तात्पर्य क्या है? इसके प्रमुख कवि कौन -कौन हैं?
5. मध्यकालीन भारत में भक्ति का उदय कब और कहां हुआ था?
6. भक्ति आंदोलन में दक्षिण आचार्यो के योगदान क्या-क्या हैं?
7. कबीर दास कौन थे?
8. भक्ति आंदोलन से काव्य में क्या-क्या परिवर्तन आए? **(5X2 = 10 Marks)**

SECTION B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. ज्ञानाश्रयी शाखा की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?
10. निर्गुण भक्ति के महत्वपूर्ण बिंदु क्या-क्या हैं?
11. 'भक्ति आंदोलन का काव्य पर प्रभाव'- विषय पर टिप्पणी लिखिए।
12. मध्यकालीन भारत की सांस्कृतिक परिस्थितियों पर अपना विचार क्या है?
13. राम भक्ति काव्य क्या है? इसके प्रमुख कवि कौन-कौन हैं?
14. भक्तिकालीन सामाजिक परिस्थितियाँ क्या-क्या हैं ?
15. कृष्णभक्ति की विशेषताओं पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
16. सगुण भक्ति काव्य की विशेषताएँ लिखिए।
17. प्रेमाश्रयी संत काव्य धारा के बारे में टिप्पणी लिखिए।
18. निर्गुण काव्य की विशेषताएँ लिखिए? **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हों।

19. 'मध्यकालीन भारत में भक्ति का उदय'- विषय पर टिप्पणी लिखें।

20. भक्ति आंदोलन की विशेषताओं के बारे में परिचय दीजिए।

21. रीतिकालीन काव्य की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?

22. पूर्व मध्यकालीन राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए। **(2X15 = 30 Marks)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………　　　　　　　　　　Reg. No　　: ………...............
　　　　　　　　　　　　　　　　　Name　　　: ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD02DC- प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी काव्य

(CBCS - PG)
2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours　　　　　　　　　　　　　　　　**Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. नाथ साहित्य किसे कहते हैं? नाथों की संख्या कितनी है?
2. 'रीति' का अर्थ क्या है? प्रमुख रीतिकालीन कवि कौन-कौन हैं?
3. भक्तिकाल के उदय के कारण क्या-क्या हैं ?
4. निर्गुण भक्ति शाखा से तात्पर्य क्या है? इसके प्रमुख कवि कौन -कौन हैं?
5. मध्यकालीन भारत में भक्ति का उदय कब और कहां हुआ था?
6. भक्ति आंदोलन में दक्षिण आचार्यों के योगदान क्या-क्या हैं?
7. भूषण कौन थे? भक्तिकाल में आपका स्थान निर्धारित कीजिये।
8. भक्ति आंदोलन से काव्य में क्या-क्या परिवर्तन आए?　　　　**(5X2 = 10 Marks)**

SECTION B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. निर्गुण भक्ति के महत्वपूर्ण विंदु क्या-क्या हैं?
10. 'भक्ति आंदोलन का काव्य पर प्रभाव'- विषय पर टिप्पणी लिखिए।
11. सूरदास कौन है? भक्तिकाल में सूरदास का स्थान निर्धारित कीजिये?
12. राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ लिखिए?
13. भक्तिकालीन सामाजिक परिस्थितियाँ क्या-क्या हैं?
14. कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि कौन-कौन हैं?
15. सगुण भक्ति काव्य की विशेषताएँ लिखिए।
16. ज्ञानाश्रयी शाखा पर टिप्पणी लिखिए।
17. ज्ञानाश्रयी शाखा की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?　　　　**(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हों।

18. पूर्व मध्यकालीन राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।
19. भक्तिकाल के वर्गीकरण पर टिप्पणी लिखिए।
20. 'मध्यकालीन भारत में भक्ति का उदय'- विषय पर टिप्पणी लिखें।
21. रीतिकालीन प्रवृर्तियों पर चर्चा कीजिये। **(2X15 = 30 Marks)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ………..............
Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD03DC- हिन्दी भाषा का इतिहास और भाषा विज्ञान

(CBCS - PG)

2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. भाषा की उत्पत्ती से जुड़े सिद्धांत क्या क्या है?
2. भाषा और बोली में क्या अंतर है ?
3. लौकिक संस्कृत की विभिन्नताएँ क्या-क्या है?
4. भाषा के विविध रूप क्या है ?
5. लिपि का विकास क्रम लिखिए।
6. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का सामान्य परिचय दीजिए।
7. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का परिचय दीजिए।
8. अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी का संबन्ध क्या है? **(5X2 = 10 Marks)**

SECTION B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. देवनागरी लिपि का गुण और दोष क्या-क्या है?
10. अयोगात्मक भाषा क्या है?
11. वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत की समानताएँ क्या-क्या हैं।
12. रूप विज्ञान क्या है?
13. मानक भाषा से क्या तात्पर्य है? व्यक्त कीजिए।
14. देवनागरी लिपि का मानकीकरण के बारे में अपना मत प्रकट कीजिए।
15. बोलचाल की भाषा, संपर्क भाषा इसका अंतर क्या है ?
16. भारोपीय परिवार की विशेषताएँ दीजिए।
17. भाषाविज्ञान से क्या तात्पर्य है?
18. अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी का संबन्ध क्या है? **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हों।

19. लिपि क्या है? लिपि की उत्पत्ति से सम्बंधित एक टिप्पणी लिखिए।

20. देवनागरी लिपि की उद्‌भव और विकास के बारे में अपना मत प्रकट कीजिए।

21. भाषा की परिभाषा और उत्पत्ती के बारे में अपना मत व्यक्त कीजिए।

22. भाषाविज्ञान विज्ञान है या कला स्पष्ट कीजिए। **(2X15 = 30 Marks)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ………...............
Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD03DC- हिन्दी भाषा का इतिहास और भाषा विज्ञान

(CBCS - PG)

2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. भाषा क्या है?
2. मूल भाषा से क्या तात्पर्य है?
3. अर्थ विज्ञान से क्या तात्पर्य है?
4. स्वनिम की परिभाषा दीजिए
5. ब्रह्मी लिपि से क्या तात्पर्य है?
6. लिपि का प्रकार क्या है?
7. अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी का संबन्ध क्या है ?
8. बोलचाल की भाषा. संपर्क भाषा इसका अंतर क्या है ? **(5X2 = 10 Marks)**

SECTION B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. अपभ्रंश की मुख्य विशेषताएं व्यक्त कीजिए।
10. काव्य भाषा के रूप में अवधि का विकास कैसे था? अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
11. भारोपीय परिवार की विशेषताएँ क्या क्या है?
12. आकृतिमूलक वर्गीकरण से क्या तात्पर्य है?
13. भाषा क्या है और भाषा की उत्पत्ति संबंधित सिद्धान्तों के बारे में व्यक्त कीजिए।
14. भाषाविज्ञान से क्या तात्पर्य है?
15. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता से क्या तात्पर्य है?
16. खरोष्ठी लिपि क्या है? इस नाम के हेतु बातें क्या है?
17. मुक्त रूप और बद्ध रूप से क्या तात्पर्य है?
18. भाषा और व्याकरण का सम्बन्ध के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए। **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हों।

19. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा को कितने वर्गों में बाँटा गया है और उनकी विशेषताएँ क्या-क्या है।

20. वाक्य विज्ञान की प्रकार के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।

21. प्रमुख हिन्दी प्रचार संस्थाओं के बारे में टिप्पणी लिखिए।

22. भारत की प्राचीन लिपियों के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए। **(2X15 = 30 Marks)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ………...............
Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD04DC- आधुनिक कविताःप्रगतिवाद तक

(CBCS - PG)
2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. द्विवेदी युगीन प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
2. खड़ी बोली की प्रतिष्ठा में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का योगदान क्या रहा?
3. छायावादी काव्य की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए?
4. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को नवजागरण का कवि क्यों कहते हैं?
5. सुमित्रानन्दन पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि क्यों कहा जाता है?
6. प्रथम रश्मि के आगमन के बाद प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन होता है?
7. कला - साहित्य की समलोचना के कितने मानदंड है और वे कौन-कौन से हैं?
8. हालावाद काव्य का मूल सिद्धांत क्या है? हालावाद के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए? **(5X2 = 10 Marks)**

SECTION B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का भावार्थ लिखिए।
10. सुभद्राकुमारी चौहान पर टिप्पणी लिखिए।
11. 'साकेत' के नवम सर्ग के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।
12. 'राम की शक्ति पूजा' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए?
13. सुमित्रानन्दन पंत की काव्यभाषा का वैशिष्ट्य उद्घाटित कीजिए?
14. छायावादी काव्य के महाकाव्य कामायनी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?
15. महादेवी वर्मा के रहस्यवाद की विशेषताएँ क्या-क्या है?
16. प्रगतिवादी कवियों के नारी चित्रण के बारे में लिखिए ?
17. कवि नागार्जुन के काव्य प्रगतिवादी चेतना से ओतप्रोत है। स्पष्ट कीजिए?
18. हालावाद की प्रेरक पृष्ठभूमि पर टिप्पणी लिखिए? **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हों।

19. उर्मिला के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

20. जयशंकर प्रसाद की कविताओं में अभिव्यक्त राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को उद्घाटित कीजिए?

21. सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि क्यों कहा जाता है? स्पष्ट कीजिए

22. प्रगतिवाद के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए? **(2X15 = 30 Marks)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ………...............
Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD04DC- आधुनिक कविताःप्रगतिवाद तक

(CBCS - PG)

2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. हिन्दी साहित्य के विकास में द्विवेदी जी का क्या योगदान रहा?
2. उर्मिला के विरह-वर्णन की विशेषताएँ बताइए।
3. 'प्रथम रश्मि' कविता की विशेषताएँ व्यक्त कीजिए?
4. कामायनी के पात्र मनु के मन में प्रलय के बाद क्या-क्या विचार आते हैं?
5. छायावादी काव्य में प्रकृति चित्रण की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?
6. 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' कविता का प्रतिपाद्य विषय क्या है?
7. प्रगतिवादी काव्य का मूल स्वर क्या है ?
8. हालावाद क्या है? **(5X2 = 10 Marks)**

SECTION B

II. किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. 'यही आता है इस मन में जाती जाती गाती गाती कह जाऊँ यह बात धन के पीछे
   जन जगती में उचित नहीं उत्पात' सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए।
10. माखनलाल चतुर्वेदी जी का साहित्यिक परिचय दीजिए।
11. मैथिलीशरणगुप्त जी की नारी भावना को रेखांकित कीजिए।
12. जयशंकर प्रसाद के काव्य की विशेषताएँ बताइए?
13. निराला के काव्य में स्वच्छन्दतावादी और यथार्थवादी प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए?
14. कामायनी काव्य का महत्व स्पष्ट कीजिए ?
15. महादेवी वर्मा की प्रतीक योजना पर प्रकाश डालिए?
16. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य की विशेषताएँ क्या हैं ?
17. प्यार के गायक थे हरिवंशराय बच्चन। व्यक्त कीजिए ?
18. मानवतावाद के उन्नायक थे प्रगतिवादी कवि। स्पष्ट कीजिए? **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हों।

19. द्विवेदी युगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

20. महादेवी वर्मा की वेदना में भारतीय स्त्री का दुःख बोलता है।- इस कथन पर अपना विचार प्रकट कीजिए?

21. सुमित्रानन्दन पंत की काव्य यात्रा पर प्रकाश डालिए?

22. प्रगतिवादी काव्य और कवियों के बारे में एक आलेख तैयार कीजिए? **(2X15 = 30 Marks)**

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ………...............
Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD01AC- अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग

(CBCS - PG)
2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. अनुवाद क्या है ?
2. स्रोत भाषा से तात्पर्य क्या है ?
3. सारानुवाद क्या है ?
4. वैज्ञानिक अनुवाद से तात्पर्य क्या है?
5. पद्यानुवाद क्या है ?
6. रूपांतरण से तात्पर्य क्या है ?
7. निम्नलिखित पद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए ?

   Ridding as anchor in a bay
   It shakes them not out of mischief,
   And not in aimless fury,
   But to find for you,out of it's grief,
   The words of a lullaby.

8. निम्नलिखित पद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए ?

   This is the end of me but you live on
   The wind, crying and complaining,
   Rocks,the house and the forest.
   Not each pine tree separately
   With the whole boundless distance,
   Like the hulls of sailing-ships

(5X2 = 10 Marks)

SECTION B

II. (अ) किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. 'अनुवाद' अर्थ एवं स्वरूप पर टिप्पणी लिखिए?
10. अनुवादक और दुभाषिया के बीच के अंतर को स्पष्ट कीजिए?

11. स्रोत और लक्ष्य भाषा से क्या तात्पर्य है?

12. भावानुवाद से क्या तात्पर्य है ?

13. भाषा की अभिव्यक्ति के आधार पर अनुवाद कितने प्रकार हैं? टिप्पणी लिखिए?

II.(आ) निम्नलिखित गद्याशों में किन्हीं तीन का अनुवाद कीजिए।

14. स्वतंत्र प्रेस या प्रस की स्वतंन्त्रता से वास्तविक अभिप्राय है- अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता। प्रेस शब्द यहाँ मूलतः समाचार-पत्रों का पर्याय एवं द्योतक है। समाचार-पत्र अपनी मूल नैतिकता में वही कहते और छापते हैं कि जो किसी युग या देश-विशेष की जनता की सामूहिक या बहुमत की भावना इच्छा-आकांक्षा और माँग हुआ करती है। प्रेस ही वह माध्यम है जिससे जनता अपनी जागरूकता का परिचय देकर निर्वाचित सरकार और उसकी निरंकुशता पर अपना अंकुश लगाए रख सकती है। देश की सही स्थिति का, इच्छा-आकांक्षा का पता सरकार को देकर उसे तदर्थ उचित कार्य करने केलिए अनुप्रेरित एवं सतत यत्नशील रख सकती है। प्रेस की स्वतंत्रता के रूप में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता वस्तुतः जनतांत्रिक देशों मे प्रेस का विशेष महत्व समझा जाता है, जबकि तानाशाही, एकतन्त्र और कुछ विशिष्ट रीति-नीतियों वाले देशों में प्रेस के कण्ठ पर हमेशा शासक वर्ग की अंगुली रहा करती है, जिसे स्वतन्त्रता के बुनियादी अधिकार को मान्यता देनेवाला कोई भी राष्ट्र या व्यक्ति अच्छा नहीं मानता। प्रेस पर अंकुश तानाशाही प्रवृत्तियों का द्योतक और पोषक ही माना जा सकता है।

15. ഒരു അന്ധനായ ബാലന്റെ കഥയാണ് കളർ ഓഫ് പാരഡൈസ്. സ്പെഷൽ സ്കൂൾ വിദ്യാർഥിയായ മുഹമ്മദിനെ കൂട്ടിക്കൊണ്ടുപോകാൻ അച്ഛൻ വന്നില്ല. ഏറെ നേരത്തെ കാത്തിരിപ്പിനുശേഷം എത്തിയ അച്ഛൻ അവനെ തുടർന്ന് സ്കൂളിൽ താമസിപ്പിക്കണമെന്ന് ഹെഡ്മാസ്റ്ററോട് ആവശ്യപ്പെടുന്നു. വെക്കേഷനിൽ കുട്ടികളെ സ്കൂളിൽ പാർപ്പിക്കാൻ കഴിയില്ലെന്ന് ഹെഡ്മാസ്റ്റർ അറിയിച്ചപ്പോൾ അയാൾ നിരാശനായി. മകനെയും കൊണ്ട് സ്വന്തം ഗ്രാമത്തിലെത്തുന്നു. മുഹമ്മദിന്റെ സാന്നിധ്യം അനുജത്തിമാരെയും മുത്തശ്ശിയെയും ആവേശം കൊള്ളിച്ചു. ഗന്ധവും സ്പർശവുംകൊണ്ട് തന്റെ ഗ്രാമത്തിന്റെ മനോഹാരിത മുഹമ്മദ് അനുഭവിക്കുകയാണ്. അവൻ അനുജത്തിയോടൊപ്പം അവളുടെ സ്കൂളിൽ ചെന്നു. അധ്യാപകൻ അവനെ അതിഥിയായി സ്വീകരിച്ചു. മറ്റു കുട്ടികൾ പാഠം വായിച്ചതിൽ വരുത്തിയ തെറ്റുകൾ മുഹമ്മദ് തിരുത്തി. ബ്രയിൽ ലിപിയിൽ അവൻ എഴുതിവെച്ചിരുന്ന പാഠഭാഗം വായിച്ചുകേൾപ്പിച്ച് അധ്യാപകരെയും കുട്ടികളെയും അമ്പരപ്പിച്ചു. തുടർന്നും ക്ലാസിൽ വരണമെന്നു പറഞ്ഞ് അധ്യാപകൻ മുഹമ്മദിനെ അനുമോദിച്ചു.

16. Plato is the earliest important educational thinker and education is an essential element in “The Republic” (his most important work on philosophy and political theory, written around 360 B.C.). In it, he advocates some rather extreme methods: removing children from their mothers’ care and raising them as wards of the state,and differentiating children suitable to the various castes, the highest receiving the most education, so that they could act as guardians of the city and care for the less able. He believed that education should be holistic, including facts, skills, physical discipline, music, and art. Plato believed that talent and intelligence are not distributed genetically and thus are found in children born to all classes, although his proposed system of selective public education for an educated minority of the population does not follow a democratic model.

17. बच्चे को जितने भी उपहार हम दे सकते हैं, उनमें पुस्तकों से बढ़कर और कोई भी उपहार उत्तम नहीं होता । पुस्तकों से बढ़कर अन्य कोई भी उपहार उसके वर्तमान और भविष्य की सुख संतुष्टि में उतना सहायक नहीं हो सकता। वस्तुतः यह अभिप्राय पुस्तकों से नहीं, बल्कि पुस्तक पढ़ने की आदत से संबंधित है। अगर बच्चे में पढ़ने की आदत डाल दी जाए तो वह आजीवन आपका आभारी रहेगा। पुस्तकों बच्चे की रोज़मर्रा की जिंदगी का साथी होनी चाहिए ,और उन्हें स्कूली शिक्षा से अलग रखना चाहिए । यह आभास बच्चों नहीं होने देना चाहिए कि पढ़ना कोई स्कूल से दिया गया पाठ है । इस

बात पर बल देने की आवश्यकता है कि पढ़ना उसे मनोरंजक लगे और वह यह महसूस करे कि इसके द्वारा उसके समय का सदुपयोग हो रहा है। तुम्हें इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि पढ़ना उसको रुचिकर लगे और वह उसके जीवन का बहुमूल्य अंग बन जाए ।

18. आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ़ की दावत थी।

शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फ़ुर्सत न थी। पत्नी ड्रेसिंग गाउन पहने, उलझे हुए बालों का जूड़ा बनाए मुँह पर फैली हुई सुर्ख़ी और पाउडर को मले और मिस्टर शामनाथ सिगरेट पर सिगरेट फूँकते हुए चीज़ों की फ़ेहरिस्त हाथ में थामे, एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे।

आख़िर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज़, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल, सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इंतज़ाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा?

इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ, श्रीमती की ओर घूम कर अँग्रेज़ी में बोले-'माँ का क्या होगा?' **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर तीन पृष्ठों के अन्दर लिखिए।

19. अनुवाद किसे कहते है ? एक अनुवादक में क्या क्या विशेषताएँ होनी चाहिए लिखिए?

20. वर्तमान युग में अनुवाद के महत्व पर टिप्पणी लिखिए?

21. साहित्यिक अनुवाद की समस्याओं पर टिप्पणी लिखिए ?

22. नीचे दिए गए कहानी के अंश को मलयालम या अग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए ? अनुवाद करते समय उपस्थित समस्याओं पर भी प्रकाश डालिए?

पत्तियाँ जल चुकी थीं। बाग़ीचे में फिर अंधेरा छा गया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाक़ी थी। जो हवा का झोंका आने पर ज़रा जाग उठती थी, पर एक लम्हा में फिर आँखें बंद कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके जिस्म में गर्मी आ गई थी। पर जूँ-जूँ सर्दी बढ़ती जाती थी, उसे सुस्ती दबा लेती थी।

दफ़अ'तन जबरा ज़ोर से भौंक कर खेत की तरफ़ भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवर का एक ग़ोल उसके खेत में आया। शायद नीलगाय का झुंड था। उनके कूदने और दौड़ने की आवाज़ें साफ़ कान में आ रही थीं। फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही हैं... उसने दिल में कहा, "हुँह जबरा के होते हुए कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले, मुझे वहम हो रहा है। कहाँ, अब तो कुछ सुनाई नहीं देता मुझे भी कैसा धोका हुआ।"

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई, "जबरा..., जबरा...।"

जबरा भौंकता रहा। उसके पास न आया।

जानवरों के चरने की आवाज़ चर-चर सुनाई देने लगी। हल्कू अब अपने को फ़रेब न दे सका, मगर उसे उस वक़्त अपनी जगह से हिलना ज़हर मालूम होता था। कैसा गर्माया हुआ मज़े से बैठा हुआ था। इस जाड़े पाले में खेत में जाना जानवरों को भगाना उनका तआक़ुब करना उसे पहाड़ मालूम होता था। अपनी जगह से न हिला। बैठे-बैठे जानवरों को भगाने के लिए चिल्लाने लगा। लिहो लिहो, हो, हो।

मगर जबरा फिर भौंक उठा। अगर जानवर भाग जाते तो वो अब तक लौट आया होता। नहीं भागे, अभी तक चर रहे हैं।

शायद वो सब भी समझ रहे हैं कि इस सर्दी में कौन बीधा है, जो उनके पीछे दौड़ेगा। फ़स्ल तैयार है, कैसी अच्छी खेती थी। सारा गाँव देख देखकर जलता था, उसे ये अभागे तबाह किए डालते हैं।

अब हल्कू से न रहा गया। वो पक्का इरादा कर के उठा और दो-तीन क़दम चला। फिर यका-यक हवा का ऐसा ठंडा चुभने वाला, बिच्छू के डंक का सा झोंका लगा, वो फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेद-कुरेद कर अपने ठंडे जिस्म को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था। नील-गायें खेत का सफ़ाया किए डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास बेहिस बैठा हुआ था। अफ़्सुर्दगी ने उसे चारों तरफ़ से रस्सी की तरह जकड़ रखा था।

आख़िर वही चादर ओढ़ कर सो गया।

सवेरे जब उसकी नींद खुली तो देखा चारों तरफ़ धूप फैल गई है। और मुन्नी खड़ी कह रही है, क्या आज सोते ही रहोगे तुम। यहाँ मीठी नींद सो रहे हो और उधर सारा खेत चौपट हो गया। सारा खेत का सत्यानास हो गया। भला कोई ऐसा भी सोता है। तुम्हारे यहाँ मंडिया डालने से क्या हुआ।

हल्कू ने बात बनाई। मैं मरते-मरते बचा। तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दर्द उठा कि मैं ही जानता हूँ।

दोनों फिर खेत के डांडे पर आए। देखा खेत में एक पौदे का नाम नहीं और जबरा मंडिया के नीचे चित्त पड़ा है। गोया बदन में जान नहीं है। दोनों खेत की तरफ़ देख रहे थे। मुन्नी के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। पर हल्कू ख़ुश था।

मुन्नी ने फ़िक्र-मंद हो कर कहा। अब मजूरी कर के माल-गुजारी देनी पड़ेगी।

हल्कू ने मस्ताना अंदाज़ से कहा, "रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।"

"मैं इस खेत का लगान न दूँगी, ये कहे देती हूँ। जीने के लिए खेती करते हैं, मरने के लिए नहीं करते।"

"जबरा अभी तक सोया हुआ है। इतना तो कभी ना सोता था।"

"आज जाकर शहना से कह दे, खेत जानवर चर गए। हम एक पैसा न देंगे।"

"रात बड़े ग़ज़ब की सर्दी थी।"

"मैं क्या कहती हूँ, तुम क्या सुनते हो।"

"तू गाली खिलाने की बात कह रही है। शहना को इन बातों से क्या सरोकार, तुम्हारा खेत चाहे जानवर खाएँ, चाहे आग लग जाए, चाहे ओले पड़ जाएँ, उसे तो अपनी माल-गुजारी छोड़ दो खेती, मैं ऐसी खेती से बाज़ आई।"

हल्कू ने मायूसाना अंदाज़ से कहा, "जी मन में तो मेरे भी यही आता है कि खेती-बाड़ी छोड़ दूँ। मुन्नी तुझ से सच कहता हूँ, मगर मजूरी का ख़याल करता हूँ तो जी घबरा उठता है। किसान का बेटा हो कर अब मजूरी न करूँगा। चाहे कितनी ही दुर्गत हो जाए। खेती का मरजाद नहीं बिगाड़ूँगा। जबरा..., जबरा...। क्या सोता ही रहेगा, चल घर चलें।"

(2X15 = 30 Marks)

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ……….............
Name : ………………...

FIRST SEMESTER MA HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE - 1- M23HD01AC- अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग

(CBCS - PG)
2023-24 - Admission Onwards

Time: 3 Hours **Max Marks: 70**

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. लक्ष्य भाषा से तात्पर्य क्या है ?
2. अनुवाद क्या है ?
3. रूपांतरण क्या है?
4. कार्यालयी अनुवाद क्या है ?
5. वैज्ञानिक अनुवाद से तात्पर्य क्या है?
6. गद्यानुवाद से तात्पर्य क्या है ?
7. निम्नलिखित पद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए?

   This is the end of me but you live on
   The wind, crying and complaining,
   Rocks,the house and the forest.
   Not each pine tree separately
   With the whole boundless distance,
   Like the hulls of sailing-ships

8. निम्नलिखित पद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए

   And very few to love:
   A violet by a mossy stone
   Half hidden from the eye!
   —Fair as a star, when only one
   Is shining in the sky.

(5X2 = 10 Marks)

SECTION B

II. (अ) किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अन्दर लिखिए।

9. एक अच्छे अनुवादक के गुण लिखिए ?
10. अनुवादक और दुभाषिया में क्या अंतर है?
11. अनुवाद की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखिए ?
12. भावानुवाद से तात्पर्य क्या है ?
13. 'अनुवाद कला, विज्ञान या शास्त्र' विषय पर टिप्पणी लिखिए?

II (आ) निम्नलिखित गद्याशों में किन्हीं तीन का अनुवाद कीजिए

14. Khadi was acceptable to most people as a symbol of freedom . During the struggle for independence it had political importance. Since independence, however, even some of those who were devoted to khadi have begun to look askance at it . With the decrease in the demand , khadi workers have been thrown out of employment . Some living near towns have been taken to casual labor , while others in far away villages have joined the ranks of unemployed. The economic importance of khadi is obviously realized by few. Khadi had political meaning when the fight for freedom was on. It has equal importance today as a means of consolidating that freedom . Khadi can lessen both unemployment and under-employment.

15. प्रत्येक राष्ट्र के स्वतन्त्र अस्तित्व के साथ उसकी कुछ स्वतंत्र विशेषताएँ होती हैं, जिनके आधार पर उसकी राष्ट्रीयता का निर्माण होता है । प्रत्येक राष्ट्र का एक राष्ट्रीय ध्वज होता है, एक राष्ट्रीय चिह्न और एक राष्ट्रभाषा। भारत के संविधान के अनुसार हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है । इसके साथ ही एक ओर शब्द राजभाषा व्यवहृत होता रहा है, जिसका अर्थ है - भारत के विभिन्न राज्यों में सामान्य सम्पर्क की ऐसी भाषा - जो केन्द्र और राज्यों में तथा एक राज्य और दूसरे राज्य मे सम्पर्क का माध्यम बनी रहे। एक ऐसी भाषा की आवश्यकता इसलिए है कि इससे प्रशासनिक कार्यों में सुविधा होगी और राष्ट्रीय स्तर पर भावात्मक एकता का निर्माण होगा। राज्यों में विद्यमान भाषायी अजनबीपन मिट कर एकत्व का प्रावधान सम्भव हो सकता है । भारत, भाषा की दृष्टि से बहुभाषा-भाषी राष्ट्र है। यहाँ इसके विभिन्न राज्यों में विभिन्न भाषायें बोली जाती है । विभिन्न भाषाओं के प्रयोग में होने से जो विभेद की स्थिति उत्पन्न होती है और राज्यों के मध्य सम्पर्क में जो कठिनाई होती है , उसे एक सामान्य-सर्वमान्य राजभाषा द्वारा दूर किया जा सकता है । उस भाषा के सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग से विभिन्न राज्यों में बँटा हुआ भारत राष्ट्रीय एकता में बंधा रहेगा । प्रशासनिक कार्यो में केन्द्र और राज्यों को विशेष सुविधा भी रहेगी । यही दृष्टि एक राजभाषा या राष्ट्रभाषा की संरचना के मूल में रहती है ।

16. The country in which we are born, where we grow and live is our motherland. We are born in this country, we live here, we grow here, and in the end we are absorbed in it. We must love our land as much as we love our mother. Those who live with us have equal rights in this land and hence they are our brethren. Just as the head of a big family thinks of the good of the entire family rather than his own individual welfare at heart, we must also have in our hearts the welfare of our brethren and the progress of our country. Even if we have to suffer losses or meet with difficulties in fulfilling this, we should not mind them.

17. ഒരു അന്ധനായ ബാലന്റെ കഥയാണ് കളർ ഓഫ് പാരഡൈസ്. സ്പെഷൽ സ്കൂൾ വിദ്യാർഥിയായ മുഹമ്മദിനെ കൂട്ടിക്കൊണ്ടുപോകാൻ അച്ഛൻ വന്നില്ല. ഏറെ നേരത്തെ കാത്തിരിപ്പിനു ശേഷം എത്തിയ അച്ഛൻ അവനെ തുടർന്ന് സ്കൂളിൽ താമസിപ്പിക്കണമെന്ന് ഹെഡ്മാസ്റ്ററോട് ആവശ്യപ്പെടുന്നു. വെക്കേഷനിൽ കുട്ടികളെ സ്കൂളിൽ പാർപ്പിക്കാൻ കഴിയില്ലെന്ന് ഹെഡ്മാസ്റ്റർ അറിയിച്ചപ്പോൾ അയാൾ നിരാശനായി. മകനെയും കൊണ്ട് സ്വന്തം ഗ്രാമത്തിലെത്തുന്നു.

മുഹമ്മദിന്റെ സാന്നിധ്യം അനുജത്തിമാരെയും മുത്തശ്ശിയെയും ആവേശം കൊള്ളിച്ചു. ഗന്ധ വും സ്പർശവുംകൊണ്ട് തന്റെ ഗ്രാമത്തിന്റെ മനോഹാരിത മുഹമ്മദ് അനുഭവിക്കുകയാണ്. അവൻ അനുജത്തിയോടൊപ്പം അവളുടെ സ്കൂളിൽ ചെന്നു. അധ്യാപകൻ അവനെ അതിഥി യായി സ്വീകരിച്ചു. മറ്റു കുട്ടികൾ പാഠം വായിച്ചതിൽ വരുത്തിയ തെറ്റുകൾ മുഹമ്മദ് തിരുത്തി. ബ്രെയിൽ ലിപിയിൽ അവൻ എഴുതിവെച്ചിരുന്ന പാഠഭാഗം വായിച്ചുകേൾപ്പിച്ച് അധ്യാപകരെയും കുട്ടികളെയും അമ്പരപ്പിച്ചു. തുടർന്നും ക്ലാസിൽ വരണമെന്നു പറഞ്ഞ് അധ്യാപകൻ മുഹമ്മ ദിനെ അനുമോദിച്ചു.

18. हल्कू ने आ कर अपनी बीवी से कहा, "शहना आया है लाओ जो रूपये रखे हैं उसे दे दो। किसी तरह गर्दन तो छूटे।" मुन्नी बहू झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिर कर बोली, "तीन ही तो रूपये हैं, दे दूँ, तो कम्बल कहाँ से आएगा। माघ-पूस की रात खेत में कैसे कटेगी। उस से कह दो फ़स्ल पर रूपये देंगे। अभी नहीं है।"

हल्कू थोड़ी देर तक चुप खड़ा रहा। और अपने दिल में सोचता रहा पूस सर पर आ गया है। बग़ैर कम्बल के खेत में रात को वो किसी तरह सो नहीं सकता। मगर शहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ देगा। ये सोचता हुआ वो अपना भारी जिस्म लिए हुए (जो उसके नाम को ग़लत साबित कर रहा था) अपनी बीवी के पास गया। और ख़ुशामद कर के बोला, "ला दे दे गर्दन तो किसी तरह से बचे। कम्बल के लिए कोई दूसरी तदबीर सोचूँगा।"

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई। और आँखें टेढ़ी करती हुई बोली, "कर चुके दूसरी तदबीर। ज़रा सुनूँ कौन तदबीर करोगे? कौन कम्बल ख़ैरात में दे देगा। न जाने कितना रूपया बाक़ी है जो किसी तरह अदा ही नहीं होता। मैं कहती हूँ तुम खेती क्यों नहीं छोड़ देते। मर मर कर काम करो। पैदावार हो तो उस से क़र्ज़ा अदा करो। चलो छुट्टी हुई, क़र्ज़ा अदा करने के लिए तो हम पैदा ही हुए हैं। ऐसी खेती से बाज़ आए। मैं रूपये न दूँगी, न दूँगी।" **(6X5 = 30 Marks)**

SECTION C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अन्तर्गत हो।

19. अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार पर प्रकाश डालिए
20. साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद करते समय उपस्थित समस्याओं पर टिप्पणी लिखिए?
21. वर्तमान युग में अनुवाद के महत्व पर टिप्पणी लिखिए?
22. नीचे दिए गए कहानी के अंश का हिंदी या अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए? अनुवाद करते समय उपस्थित समस्याओं पर भी प्रकाश डालिए?

आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ़ की दावत थी।

शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फ़ुर्सत न थी। पत्नी ड्रेसिंग गाउन पहने, उलझे हुए बालों का जूड़ा बनाए मुँह पर फैली हुई सुर्ख़ी और पाउडर को मले और मिस्टर शामनाथ सिगरेट पर सिगरेट फूँकते हुए चीज़ों की फ़ेहरिस्त हाथ में थामे, एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे।

आख़िर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज़, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल, सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इंतज़ाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा?

इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ, श्रीमती की ओर घूम कर अँग्रेज़ी में बोले-'माँ का क्या होगा?'

श्रीमती काम करते-करते ठहर गईं, और थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोलीं-'इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो,

रात-भर बेशक वहीं रहें। कल आ जाएँ।'

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिला कर बोले-'नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहें कि जल्दी ही खाना खा के शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।'

सुझाव ठीक था। दोनों को पसंद आया। मगर फिर सहसा श्रीमती बोल उठीं-'जो वह सो गईं और नींद में ख़र्राटे लेने लगीं, तो? साथ ही तो बरामदा है, जहाँ लोग खाना खाएँगे।'

'तो इन्हें कह देंगे कि अंदर से दरवाज़ा बंद कर लें। मैं बाहर से ताला लगा दूँगा। या माँ को कह देता हूँ कि अंदर जा कर सोएँ नहीं, बैठी रहें, और क्या?'

'और जो सो गई, तो? डिनर का क्या मालूम कब तक चले। ग्यारह-ग्यारह बजे तक तो तुम ड्रिंक ही करते रहते हो।'

शामनाथ कुछ खीज उठे, हाथ झटकते हुए बोले-'अच्छी-भली यह भाई के पास जा रही थीं। तुमने यूँ ही ख़ुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी!'

'वाह! तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यों बुरी बनूँ? तुम जानो और वह जानें।'

मिस्टर शामनाथ चुप रहे। यह मौक़ा बहस का न था, समस्या का हल ढूँढ़ने का था। उन्होंने घूम कर माँ की कोठरी की ओर देखा। कोठरी का दरवाज़ा बरामदे में खुलता था। बरामदे की ओर देखते हुए झट से बोले-मैंने सोच लिया है,-और उन्हीं क़दमों माँ की कोठरी के बाहर जा खड़े हुए। माँ दीवार के साथ एक चौकी पर बैठी, दुपट्टे में मुँह-सिर लपेटे, माला जप रही थीं। सुबह से तैयारी होती देखते हुए माँ का भी दिल धड़क रहा था। बेटे के दफ़्तर का बड़ा साहब घर पर आ रहा है, सारा काम सुभीते से चल जाए।

माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना। मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जाएँगे।

माँ ने धीरे से मुँह पर से दुपट्टा हटाया और बेटे को देखते हुए कहा, आज मुझे खाना नहीं खाना है, बेटा, तुम जो जानते हो, माँस-मछली बने, तो मैं कुछ नहीं खाती।

जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निबट लेना।

अच्छा, बेटा।

और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे। उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना। फिर जब हम यहाँ आ जाएँ, तो तुम ग़ुसलख़ाने के रास्ते बैठक में चली जाना।

माँ अवाक बेटे का चेहरा देखने लगीं। फिर धीरे से बोलीं-अच्छा बेटा।

और माँ आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे ख़र्राटों की आवाज़ दूर तक जाती है।

माँ लज्जित-सी आवाज़ में बोली-क्या करूँ, बेटा, मेरे बस की बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूँ, नाक से साँस नहीं ले सकती। **(2X15 = 30 Marks)**

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

आधुनिक कविता: प्रगतिवाद तक

Course Code: M23HD04DC

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

ISBN 978-81-966843-4-1

YouTube

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841